वैश्विक लघुकथा पीयूष

प्रधान सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता

वैश्विक हिन्दी संस्थान
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

वैश्विक लघुकथा पीयूष

सम्पादक मण्डल

अलका प्रमोद (भारत)
आरती 'लोकेश' (यू.ए.ई.)
उषा श्रीवास्तव (भारत)
ऋतु ननंन पाँडे (नीदरलैंड)
चित्रा गुप्ता (सिंगापुर)
दुर्गा अशोक सिन्हा (यू.एस.ए.)
मधु चतुर्वेदी (भारत)
यूरी बोत्वींकिन (यूक्रेन)
राजरानी शर्मा (भारत)
रेखा भाटिया (यू.एस.ए.)
वुत्थिफोंग थाविनसोम्बत (थाइलैंड)
शैल अग्रवाल (यू.के.)
हरिहर झा (ऑस्ट्रेलिया)

अनुकृति सम्पादक

मधु गोयल (भारत)

प्रबंध सम्पादक

शिवप्रकाश अग्रवाल (भारत)

प्रधान सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता (यू.एस.ए.)

प्रकाशक
वैश्विक हिन्दी संस्थान
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

Publisher
Vaishvik Hindi Sansthan
Houston, USA

प्रथम संस्करण 2024
First Edition 2024

ISBN: 978-1-960627-05-6

पुस्तक में निहित विषयवस्तु, तथ्य, विचार अथवा विश्लेषण के लिए उसके लेखक पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं। इसके समस्त अधिकार भी लेखकों के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक अथवा संपादक मंडल का विषयवस्तु के प्रति सहमति और उत्तरदायित्व नहीं है। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा; चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलैक्ट्रॉनिक; जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में संदर्भ-सूत्र का उल्लेख करते हुए आंशिक उद्धरण अवतरित करने की छूट रहेगी।

The contents, facts, views, and analysis in this work are entirely the responsibility of the authors and they reserve all rights. Neither the editorial board nor the publisher is responsible of contents by the authors. No part of this book may be reproduced in any form on by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing, except by a reviewer who may quote brief passages in a review along with the reference.

आवरण

आकृति और आकार से किसी की महत्ता का आकलन नहीं किया जा सकता। एक चींटी भी हाथी को छटपटाने के लिए बाध्य कर सकती है। पुस्तक के आवरण की सज्जा के लिए हमने भगवान विष्णु के पाँचवे अवतार 'वामन' को चुना जिन्होंने अति लघु रूप में धरती पर अवतरित होकर त्रिलोक विजेता विशाल दैत्य बलि को अपने चातुर्य से पराजित करने जैसा दुष्कर व महति कार्य किया। उस लघु रूप के समक्ष यह विशाल समुद्र तथा ऊँचा ताड़ का पेड़ भी कमतर हैं। ऐसी ही भावना से हम विश्व भर से आई वामनाकार लघुकथाओं को इस साहित्य-सिंधु में अर्पित करते हैं।

लघुकथाकार की लघुकथा

ओमप्रकाश गुप्ता

ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

डॉ. नील कुमार श्रीवास्तव हिन्दी के जाने-माने साहित्यकार हैं। गद्य साहित्य में उनकी विशेष पहचान है। उनके कई उपन्यास और कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। पिछले कुछ समय से उन्होंने लघुकथाएँ लिखना आरंभ किया है, और अब उनकी गणना हिन्दी लघुकथा के सर्वश्रेष्ठ लेखकों में होने लगी है। एक दिन वे अपने ऑफिस में कुछ लिख रहे थे तब उनका चौदह वर्षीय बेटा रोहन वहाँ आया।

"पापा! आप क्या लिख रहे हैं? कोई नया उपन्यास?" रोहन ने पूछा।

"नहीं बेटा, 'वैश्विक लघुकथा पीयूष' में प्रकाशन हेतु एक लघुकथा लिख रहा हूँ।"

"लघुकथा! हम सत्यनारायण कथा और भागवद् कथा के बारे में तो जानते हैं; आप भी कोई धार्मिक कथा लिख रहे हैं पापा?"

"अरे नहीं बेटा! लघुकथा यानी लघु कथा, छोटी कहानी, ऐसी कहानी जो छोटी-सी हो।" उन्होंने प्रेम से समझाया।

"तो फिर, लघुकविता, लघुनाटक, लघुउपन्यास, लघुनिबंध.. आदि भी होते होंगे?"

"पता नहीं बेटा!" उन्होंने कंधे उचका दिए।

"पापा, फिर लघुकथा और कहानी में क्या अंतर है?" रोहन ने फिर प्रश्न दागा।

"वही, जो कहानी और उपन्यास में होता है।" उन्होंने सुना-सुनाया जबाव देकर उसे शांत करना चाहा।

"कहानी और उपन्यास में क्या अंतर होता है?"

"अरे! मुझे क्या पता बेटा!" वे झुँझलाए।

"एक और प्रश्न, पापा!..." रोहन भी कहाँ मानने वाला था। आगे बोला, "आपने कहा- लघुकथा यानी छोटी कहानी, पर कितनी छोटी?"

"मात्र थोड़े से शब्दों में कही गई कथा, जिसे बस कहानी न कहा जा सके।"

"थोड़े शब्दों में! यानी कितने थोड़े?"

"पता नहीं बेटा। जाकर अपनी पढ़ाई करो" साहित्यकार जी की तल्खी जिह्वा पर उतर आई थी।

"अंतिम प्रश्न पापा! और क्या-क्या अलग होता है लघुकथा में?"

"रुको, लघुशंका होकर आता हूँ..." लघुकथाकार बचकर भागे।

"लघुशंका क्या होता... " रोहन तेजी से बाहर जाते पिता में लघुकथाकार की विशेषताएँ ढूँढ रहा था। वह पापा के लिखे हुए को पढ़ने की कोशिश कर रहा है और अभी भी असमंजस में है कि आखिर लघुकथा है क्या बला!

प्रस्तावना

लघुकथा क्या है? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढने के लिए नवंबर 2023 में वैश्विक हिन्दी संस्थान ने कई परिचर्चाओं का आयोजन किया। इन परिचर्चाओं में विश्व भर से कई साहित्यकारों ने सहभागिता की और अपने-अपने विचार व्यक्त किए। एक बात तो स्पष्ट है, लघुकथा अर्थात लघु कथा, अर्थात लघु कहानी। किन्तु 'लघु' का अर्थ क्या है, इस पर साहित्यकारों में सर्वसम्मति नहीं दिखाई देती। क्या हर लघु कहानी को लघुकथा कहा जा सकता है? इन बातों को ध्यान में रखते हुए इस प्रस्तावना के पूर्व ही इस संकलन की पहली लघुकथा है, 'लघुकथाकार की लघुकथा।' इस व्यंग्यात्मक लघुकथा का उद्देश्य साहित्यकारों का ध्यान इस बात पर खींचना है कि वे मिलकर यह तय करने को प्रेरित हों कि लघुकथा में 'लघु' की परिभाषा अथवा व्याख्या क्या है!

इन परिचर्चाओं के प्रेरित होकर गत विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर 13 जनवरी 2024 को वैश्विक हिन्दी संस्थान, ह्यूस्टन, यू.एस.ए. ने एक 'अंतरराष्ट्रीय लघुकथा संगोष्ठी' का आयोजन किया जिस में कई देशों के लेखकों द्वारा 75 से अधिक श्रेष्ठ स्वरचित लघुकथाएँ प्रस्तुत की गईं। इस गोष्ठी की सफलता से यह भाव जागृत हुआ कि देश-विदेश में बसे हिन्दी साहित्यकारों की स्वरचित और पूर्व-अप्रकाशित उत्कृष्ट लघुकथाओं का एक संकलन किया जाए जिससे इस विधा को एक नई दिशा मिले, और नवोदित लेखकों को प्रेरणा। फलस्वरूप, 'वैश्विक लघुकथा पीयूष' की रचना हुई, जो आप के करकमलों में है।

वैश्विक लघुकथा पीयूष में 201 रचनाएँ हैं, जिनका चयन सम्पादक मण्डल ने बड़ी सावधानी और विवेक के साथ किया है। इन लघुकथाओं को 9 देशों (ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैन्ड, भारत, यूनाइटेड किंगडम, यू.ए.ई., यू.एस.ए., यूक्रेन, सिंगापुर और स्पेन) में बसे 112 कथाकारों ने लिखा है। ये लघुकथाएँ जीवन के विविध आयामों को छूती हैं। सभी रचनाएँ मौलिक और पूर्व अप्रकाशित हैं।

अनेक दिव्य आत्माओं के प्रोत्साहन और समर्थन के बिना 'वैश्विक लघुकथा पीयूष' का संकलन संभव नहीं था, मैं उनका बड़ा ऋणी हूँ। उन सब लेखकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस संग्रह के लिए अपनी-अपनी रचनाएँ

भेजीं, और उन से क्षमाप्रार्थी हूँ, जिनकी रचनाएँ शामिल करने में हम असमर्थ रहे। सब से अधिक ऋणी तो अपने संपादक मित्रों का हूँ, जिन के अहर्निश श्रम के कारण यह संकलन संभव हुआ। श्रीमती अलका प्रमोद, डॉ. आरती ‘लोकेश’, श्रीमती मधु गोयल, डॉ. मधु चतुर्वेदी, श्रीमती शैल अग्रवाल, श्रीमती उषा श्रीवास्तव, सुश्री ऋतु ननंन पाँडे, श्रीमती चित्रा गुप्ता, श्रीमती दुर्गा अशोक सिन्हा, श्री यूरी बोत्वींकिन, डॉ. राजरानी शर्मा, श्रीमती रेखा भाटिया, सुश्री वुत्थिफोंग थाविनसोम्बत, श्री शिवप्रकाश अग्रवाल व श्री हरिहर झा; आप सब के अथक परिश्रम से ही यह संकलन संभव हुआ। पुस्तक में आप के अमूल्य योगदान को सराहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। परमपिता आप सब पर सदैव अनुकम्पा बनाए रखें, यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

अंत में, अपने साकेतवासी माता-पिता और सभी गुरुओं के चरणों में सादर प्रणाम करता हूँ, जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे जीवन में कुछ भी संभव नहीं। यद्यपि पूरा प्रयास रहा है कि पुस्तक में त्रुटियाँ न रहें; तथापि जो भी त्रुटियाँ रह गई हों, उनके लिए मैं अपना दोष स्वीकार कर पुनश्च क्षमा प्रार्थना करता हूँ। मुझे विश्वास है कि ‘वैश्विक लघुकथा पीयूष’ में संकलित ये लघुकथाएँ आपको लघुकथा का आनंद तो प्रदान करेंगी ही, साथ ही लघुकथा के कलेवर को समझने में मदद भी करेंगीं। पुस्तक के विषय में आपके विचारों, सुझावों, समीक्षाओं और टिप्पणियों की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर,

ओमप्रकाश गुप्ता

प्रधान सम्पादक

वैश्विक लघुकथा पीयूष

ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

हिन्दी दिवस, 14 सितंबर 2024

अनुक्रमणिका

2 बी.एच.के.	*ओमप्रकाश गुप्ता*	1
अंश	*दुर्गा सिन्हा 'उदार'*	2
अधूरी ख्वाहिश	*अपराजिता शर्मा*	3
अनकही बातें	*वीणा पाठक*	4
अनकहे	*सौरभ सोनी*	5
अनजाना भय	*चित्रा गुप्ता*	6
अनपढ़	*मधु जैन*	7
अनुभव	*सन्दीप तोमर*	8
अनोखी पाजेब	*राजरानी शर्मा*	9
अनोखी फीस	*प्रतिभा त्रिवेदी*	10
अपनी दीवाली	*राजरानी शर्मा*	11
अपनी संस्कृति	*शीतल गुप्ता*	12
अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे	*सविता मिश्रा 'अक्षजा'*	13
अबोध	*वासवदत्ता अग्निहोत्री*	14
अभागा	*कान्ता रॉय*	15
अमीर	*पूनम पाण्डे*	16
अमेरिका के स्कूल का एक दिन	*रेखा भाटिया*	17
असर कहाँ तक	*ऋता शेखर 'मधु'*	18
आईसोर	*आरती 'लोकेश'*	19
आदमी बेचारा!	*सुरेंद्र कुमार अरोड़ा*	20
आदर्श और यथार्थ	*हरिहर झा*	21
आधा गिलास	*मधु चतुर्वेदी*	22
आरक्षण	*सरिता श्रीवास्तव*	23
आस्था	*राजेश अरोड़ा*	24
इंसानियत तो बचेगी	*मधु चतुर्वेदी*	25
इज्जत	*रशीद ग़ौरी*	26
इफ़्तार पार्टी	*ओमप्रकाश गुप्ता*	27
इवेंट वाली शादी	*प्रेमलता माहेश्वरी*	28
ईर्ष्या	*मंजू राय शर्मा*	29

ईश्वर का विश्वास	*ओमप्रकाश गुप्ता*	30
उधारी	*हरिहर झा*	31
उम्र से बड़ा दबाव	*रेखा भाटिया*	32
उसकी दुआ	*कोमल वाधवानी 'प्रेरणा'*	33
उसके हिस्से की रोटी	*रीता सिंह 'सर्जना'*	34
एक नई सोच	*कविता अग्रवाल*	35
एजेंडा	*आरती 'लोकेश'*	36
कंप्लीट फैमिली	*नमिता सिंह 'आराधना'*	37
कच्चा लालच	*चित्रा गुप्ता*	38
कथनी और करनी	*दीप्ति मिश्रा*	39
कन्या पूजन	*मीरा सिंह 'मीरा'*	40
कर्त्तव्य और धर्म	*रेखा सक्सेना*	41
कर्त्तव्य बोध	*अन्नपूर्णा श्रीवास्तव*	42
कलेजे का टुकड़ा	*प्रीति अग्रवाल*	43
कारण	*हरिहर झा*	44
कितने लोग	*दुर्गा सिन्हा 'उदार'*	45
किस्मत वाला	*शील कौशिक*	46
कुछ नहीं बदला	*शैली*	47
कृतघ्न	*निहाल चन्द्र शिवहरे*	48
कैरम की रानी	*ऋता शेखर 'मधु'*	49
कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट	*ज्योत्स्ना शर्मा*	50
कौन ऊँचा	*अलका प्रमोद*	51
कौवे का न्याय	*यूरी बोत्वींकिन*	52
खरपतवार	*विनीता राहुरीकर*	53
खिलवाड़	*अलका प्रमोद*	54
खून से नहान	*मधु चतुर्वेदी*	55
गंगू का चुनाव	*रेखा सक्सेना*	56
गणित	*दुर्गा सिन्हा 'उदार'*	57
गणेश चतुर्थी	*उषा श्रीवास्तव*	58
गरीब का बेटा	*रेणु चन्द्रा माथुर*	59

ग़लत-फ़हमी	*रेखा भाटिया*	60
गुरुदक्षिणा	*सोनाली जोशी*	61
गुलाम	*शैल अग्रवाल*	62
गृहप्रवेश	*मंजु तिवारी कुमार*	63
घर	*सुषमा देवी*	64
घर वापसी	*शबनम सुल्ताना*	65
चक्रव्यूह	*दुर्गा सिन्हा 'उदार'*	66
चश्मे का फ्रेम	*राजरानी शर्मा*	67
चीख़	*हरीश कुमार 'अमित'*	68
चीफ गेस्ट	*ओमप्रकाश गुप्ता*	69
चोट	*आरती 'लोकेश'*	70
छूट	*मधूलिका श्रीवास्तव*	71
छोटा घर	*बृजबाला गुप्ता 'अर्चना'*	72
जड़ें	*योगेन्द्र नाथ शुक्ल*	73
जन्मोत्सव	*शेफालिका श्रीवास्तव*	74
जाड़ा	*पायल गुप्ता 'पहल'*	75
जान-पहचान	*शकुन्तला पालीवाल*	76
जानवर	*वासवदत्ता अग्निहोत्री*	77
जीवन मूल्य	*उषा श्रीवास्तव*	78
जीवनदान धरा का	*मधूलिका सक्सेना 'मधुआलोक'*	79
जीवन रंग	*उषा श्रीवास्तव*	80
झुनझुना	*रमेश यादव*	81
टाइम-बेटाइम	*राम मूरत 'राही'*	82
टिकट कलेक्टर	*ओमप्रकाश गुप्ता*	83
टूटते तारे	*चित्तरंजन गोप 'लुकाठी'*	84
डर	*शकुन्तला पालीवाल*	85
डॉल्फ़िन शो	*आरती 'लोकेश'*	86
तमाचा	*इंद्रजीत कौशिक*	87

तस्वीर	*शैल अग्रवाल*	88
तिकड़ी	*यूरी बोत्वींकिन*	89
तुम्हारी माँ	*दुर्गा सिन्हा 'उदार'*	90
तैयारी का महत्त्व	*अरविन्द रामगुलाम कुरील*	91
त्याज्य	*सुमन लता शर्मा*	92
दान	*माला प्यासी*	93
दुःख का अंतर	*करुणा पांडे*	94
दूध का कर्ज़	*विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'*	95
दूसरे की खाल में	*मंजू राय शर्मा*	96
देशप्रेम	*शैल अग्रवाल*	97
देहरी लाँघ गयी	*सविता मिश्रा 'अक्षजा'*	98
दो बूढ़ी आँखें	*मंजु महिमा भटनागर*	99
धन्यवाद ताऊजी	*चित्रा गुप्ता*	100
नजरबट्टू	*अंजु दुआ जैमिनी*	101
नया जन्म	*अलका गुप्ता*	102
नवरात्रि का भंडारा	*विनीता राहुरीकर*	103
निगाह	*मंजु महिमा भटनागर*	104
नीले टिक के निशान	*राजरानी शर्मा*	105
न्यारा बँगला	*कोमल वाधवानी 'प्रेरणा'*	106
पत्नी प्रेम	*ओमप्रकाश गुप्ता*	107
पथ प्रदर्शक	*मधु जैन*	108
परजीवी कीड़ा	*पूजा अनिल भारवानी*	109
परवाह	*प्रेमलता माहेश्वरी*	110
पशु प्रेमी	*अलका प्रमोद*	111
पहचान	*उषा किरण*	112
पिता के सामने	*पूजा अनिल भारवानी*	113
पितृदोष	*उषा किरण*	114
पुकार	*उर्मिला त्रिपाठी*	115
पुरस्कार	*पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'*	116
प्रणाम	हरिहर झा	117

फरक	*यशोधरा भटनागर*	118
बड़बोला	*आरती 'लोकेश'*	119
बड़ी अम्मा	*राजरानी शर्मा*	120
बाजरे की रोटी	*अंजू अग्रवाल 'लखनवी'*	121
बारिश और धूप	*नमिता सिंह 'आराधना'*	122
बिना पते का ख़त	*राजरानी शर्मा*	123
बिना विचारे जो करे	*जयंती प्रसाद नौटियाल*	124
बुद्धि का फ़र्क	*रेखा भाटिया*	125
बेटी	*सरिता श्रीवास्तव*	126
बेबस लगाम	*रेनू सक्सेना*	127
बेस्ट फ्रेंड्स	*अलका गुप्ता*	128
बैकवर्ड इंडिया	*ओमप्रकाश गुप्ता*	129
भविष्यवाणी	*ओमप्रकाश गुप्ता*	130
भिखारी	*पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'*	131
भुगतान	*अंजु दुआ जैमिनी*	132
भूख	*शुभदा भार्गव*	133
भेड़िया	*अलका प्रमोद*	134
मछेरे! बाँधो न जाल	*दीप्ति मिश्रा*	135
मजदूर दिवस	*मीरा सिंह 'मीरा'*	136
मदद	*रजनी प्रभा*	137
मन की संक्रान्ति	*राजरानी शर्मा*	138
मर्द साथ था न...	*इन्दु गुप्ता*	139
मर्यादा	*हरिहर झा*	140
माँ	*विकास बिश्नोई*	141
माँ का प्रसाद	*उषा श्रीवास्तव*	142
माँ का हौसला	*ज्योति जैन*	143
माँ की सज़ा	*एकता अमित व्यास*	144
माँ के कपड़े	*शैली*	145
माटी की गंध	*त्रिलोक सिंह ठकुरेला*	146
मातृत्व	*रेखा शर्मा*	147
मातृशक्ति	*प्रतिभा जोशी*	148

मायका	*शैल अग्रवाल*	149
मास्क	*अनिता कपूर*	150
मिलूँगी जरूर…	*सुनीता शर्मा*	151
मुक्त	*मंजु शर्मा जांगिड़ 'मनी'*	152
मुफ़्त की नौकरानी और चौकीदार	*गोवर्धन यादव*	153
मुफ्त की शिक्षा	*मधु चतुर्वेदी*	154
मुफ़्त शिक्षा	*मधूलिका श्रीवास्तव*	155
मुराद	*सुरेंद्र कुमार अरोड़ा*	156
मुर्दाघर	*नितिन उपाध्ये*	157
मृत्युभोज	*राम रतन श्रीवास*	158
मेहनत का मोल	*विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'*	159
मैसेज	*प्रतिभा द्विवेदी*	160
मोर बोला	*कैलाश गिरि गोस्वामी*	161
रंगों की दुनिया	*उषा श्रीवास्तव*	162
राजा और ये सब!	*चंद्रेश कुमार छतलानी*	163
राष्ट्रधर्म	*बृजबाला गुप्ता 'अर्चना'*	164
रील्स	*सीमा वर्मा*	165
लक्ष्मण मन्दिर	*ओमप्रकाश गुप्ता*	166
लानत	*शैल अग्रवाल*	167
लौटते कदम	*रामकुमार घोटड़*	168
विकृत मानसिकता	*राजेंद्र सिंह*	169
विवश	*अलका प्रमोद*	170
विषाण	*आरती 'लोकेश'*	171
वैरी गुड	*सन्तोष सुपेकर*	172
शगुन से पहले	*प्रतिभा त्रिवेदी*	173
शराब बंदी	*रेणु चन्द्रा माथुर*	174
शिंगल्स	*चित्रा गुप्ता*	175
शिखर	*नितिन उपाध्ये*	176
संघर्ष की जीत	*अलका श्रीवास्तव*	177
संवाद-विपर्यय	*गिरिजा कुलश्रेष्ठ*	178

सच्ची आहुति	*अनिल कुमार जैन*	179
सफ़ाई	*टी. रवीन्द्रन*	180
समझदारी	*मीरा ठाकुर*	181
समान अधिकार	*अलका प्रमोद*	182
सर्दी	*मनीषा पाल*	183
सर्वे परिणाम	*आरती 'लोकेश'*	184
सलाह	*नीलम जैन*	185
सही निर्णय	*ममता जैन*	186
सही सोच	*चित्रा गुप्ता*	187
सारे जहाँ से अच्छा...	*ओमप्रकाश गुप्ता*	188
सूखे पत्ते	*बबीता गुप्ता*	189
सेंसर वाला मोबाइल	*आरती 'लोकेश'*	190
सेल्फ शिफ्ट	*नीना छिब्बर*	191
सोच सर्जरी	*मधु चतुर्वेदी*	192
सोने की चेन	*रेखा भाटिया*	193
स्त्री	*अंजू अग्रवाल 'लखनवी'*	194
स्थितप्रज्ञ	*अन्नपूर्णा श्रीवास्तव*	195
स्वयं में विश्वास	*अलका प्रमोद*	196
स्वर्ग और नरक का द्वार	*गोवर्धन यादव*	197
हाउ डिड..	*हरिहर झा*	198
हैप्पी न्यू ईयर	*रेखा भाटिया*	199
हैलो 911	*अनिता कपूर*	200

2 बी.एच.के.

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

सतीश माथुर पत्नी राधा और पाँच वर्षीय बेटे रोहन के साथ मुंबई के उत्तरी उपनगर वसई में रहते हैं। उनका 2 बी.एच.के. का छोटा-सा फ्लैट है। पति-पत्नी दोनों सर्विस करते हैं, जिससे उन्हें घूमने-फिरने का समय कम ही मिल पाता है।

छुट्टी के दिन रोहन बोला,“पापा आज रविवार है, हमें मुंबई घुमाने ले चलो।” सतीश ने अपनी पुरानी मारुति ८०० निकाली और पत्नी और बेटे के साथ मुंबई सैर के लिए निकल पड़े। करीब एक घंटे बाद उनकी कार ने दक्षिण मुंबई के समृद्ध इलाके में प्रवेश किया। वहाँ बड़े-बड़े मकान, ऊँची-ऊँची इमारतें देखकर रोहन भौंचक्का रह गया।

“पापा, ये फ्लैट तो हमारे फ्लैट से बहुत बड़े हैं। हैं न?”

“हाँ बेटा।”

“कितने बी.एच.के. के होंगे ये फ्लैट?”

“कोई 4, कोई 5, कई और तो इनसे भी अधिक बड़े!”

“तो फिर घर के हर मेम्बर के पास अपना-अपना बेडरूम होता होगा?”

“हाँ बेटा।”

“मम्मी-पापा! हमारे पास 3 बी.एच.के. का फ्लैट कब होगा?” मायूसी से रोहन ने पूछा।

राधा ने कहा, “क्यों, तुम्हें क्या परेशानी है? तुम्हारे पास अपना खुद का बेडरूम है तो!”

“पापा-मम्मी, काश हमारे पास भी 3 बी.एच.के. का फ्लैट होता; आप को बेडरूम साझा तो नहीं करना पड़ता!”

अंश

दुर्गा सिन्हा 'उदार'
सैन डिएगो, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" राधिका ने धीमे से कहा,"अभी डॉक्टर के पास जाने की क्या ज़रूरत है?"

"तीन माह हो चुके हैं, अब तो एक बार दिखा लेना चाहिए। पता तो चले, (राधिका की नज़रों से घबरा कर मोहन कुछ अचकचा गया, हकलाते हुए वाक्य पूरा कर पाया) पता तो चले....कि बच्चा स्वस्थ है?"

राधिका मोहन के मन का चोर भाँप गई। उसने उसी दिन दृढ़ संकल्प किया; चाहे जो हो, लड़का हो या लड़की, मुझे मेरा बच्चा चाहिए। उसे पहले से कुछ भी पता नहीं करना कि अंदर क्या पल रहा है। जो भी है, उसका ही तो हिस्सा है। एक जीवन है। उसे हर हाल में जीवन बचाना है। वह अपनी ही दुश्मन कैसे बन सकती है। बेटी हो तो बेटी, वह अवश्य जन्म देगी।

उसे अच्छी तरह याद है, मोहन के घर वाले बुझे-बुझे से थे; किन्तु राधिका खुश थी। उसने जीवन बचाया था। नवजात तीसरी कन्या को लेकर वह पूरे आत्मविश्वास से घर आई थी। स्वागत तो न हुआ था; पर मरने न दिया था राधिका ने। जीव-हत्या के पाप से बचा लिया था सभी को। आज तीसरी बेटी ही सबसे लायक और सबकी लाड़ली है। तीसरी बेटी डॉक्टर है।

अधूरी ख्वाहिश

अपराजिता शर्मा

रायपुर, भारत

डिलीवरी टेबल पर प्रसूता की जोरदार चीख के साथ जानकी के हाथ में आ गया गोलमटोल प्यारा सा शिशु। जानकी ने एक पल उसे अपने सीने से लगा लिया। आँखों से आँसू बरसने लगे। उसके आँसू देख साथ खड़ी रमाबाई समझ गई कि उसको पोते की याद आ गई। उसकी बहू रीना पूरे 9 महीने बिस्तर पर थी। जानकी ने पूरे जी जान से उसकी सेवा की। मनुहार कर खिलाती, उठने बैठने की हिदायत भी देती। 9 महीने पूरे होने को थे। एक दिन बेटा बोला, "माँ सामान पैक कर लो, आपको जाना होगा। रीना की माँ आ रही है, उसकी देखभाल करने। रीना असहज महसूस कर रही है, इसलिए उसने अपनी माँ को बुला लिया। खर्चा पैसा आपके अकाउंट में रख दिया है। उसकी देखभाल, मानमनुहार बंधन थे क्या?

अगले दिन जानकी को वृद्धाश्रम पहुँचा दिया गया। दिन बीते, कोई खबर नहीं। जानकी हिम्मत करके घर पहुँची।

बेटा वहाँ नहीं था। पड़ोसी से मालूम हुआ, पोता हुआ था। जानकी ने पास के अस्पताल में नौकरी कर ली। तब से पैदा होने वाले हर शिशु को कुछ पल सीने से लगा अधूरी ख्वाहिश पूरी कर लेती है।

अनकही बातें

वीणा पाठक

इंदौर, भारत

रीना मशीन पर दोहड़ सिल रही है साथ ही गीत गुनगुनाती जा रही है। दो सूती साड़ियों को आपस में जोड़कर दोहड़ बनाते समय वह बहुत खुश है। इस दोहड़ में दो साड़ियाँ जुड़ी हैं, एक सास की और एक उसकी माँ की। ये साड़ियाँ उसने दोनों को खरीदकर दी थीं। दोनों की खुशी देखने लायक थी।

आज दोनो इस दुनिया में नहीं हैं; पर उनकी अनकही बातें रीना के मानस पटल पर अंकित हैं। माँ को साड़ियों का बेहद शौक था; पर पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को निभाने में कभी भी अपना शौक पूरा नहीं कर पाई। बहन शिक्षिका थीं, उनकी पुरानी साड़ियों से अपना शौक पूरा कर लेती थीं। पिताजी के पुराने शर्ट काटकर ब्लाउज भी बना लेती थीं। रीना की शादी में बहुत सालों बाद नई साड़ी खरीदी थी। उसने रीना के लिए जो साड़ियाँ खरीदी थीं, उन्हें रीना को देते हुए कहा था— "रीना इन साड़ियों के साथ मेरी शुभकामनाएँ भी दे रही हूँ। जीवन में तुम्हारे पास इतनी साड़ियाँ रहेंगी कि अलमारियों में भी नहीं समाएँगी।" आज उनके आशीर्वाद से उसके पास भारत के हर राज्य की साड़ियों के भंड़ार भरे हैं। पहनकर इतराते हुए फेसबुक पर फोटो पोस्ट करती रहती है। उसने शादी के समय सोचा था कि माँ के लिए नई-नई साड़ियाँ खरीदकर उनकी इच्छा पूरी करूँगी; पर उसकी शादी के चार साल बाद ही वे चल बसीं। मन में कसक हमेशा बनी रही कि काश मैं उनका शौक पूरा कर पाती।

इधर ससुराल में सास का भी यही हाल था। बड़ी बहू थीं। सास, ननद, रिश्तेदारों के यहाँ लेन-देन, राखी, भाई-दूज पर खूब साड़ियाँ उपहार में दीं; पर खुद वही चार साड़ियाँ पहनती रहीं।

बस, रीना ने ठान लिया कि माँ की तो नहीं कर पाई; पर सास की अनकही इच्छाएँ और शौक वह ज़रूर पूरे करेगी। सौभाग्य से रीना की अच्छी नौकरी भी लग गई, अब क्या था - सास को गुड़िया की तरह नई-नई साड़ियों से सजाने लगी। सास भी उसे जी भरकर लाड़ करतीं।

रीना ने सोचा कोई स्त्री अपनी अनकही बातें लेकर दुनिया से विदा हो जाए, ऐसा अभिशाप ईश्वर किसी को न दे। शादी के पंद्रह वर्ष बाद सास भी दुनिया से विदा हो गईं; पर रीना को अपार संतोष देकर। अब रीना ने सोच लिया है कि माँ और सास की साड़ियों को जोड़कर वह सुंदर दोहड़ बनाएगी और उनकी गरमाहट को सदा सहेजकर रखेगी।

अनकहे

सौरभ सोनी
मोरिस्विल, नार्थ कैरोलिना, यू.एस.ए.

सूबेदार प्रकाश दो हफ़्तों की छुट्टियों में गाँव आया था। दो हफ़्ते तो परिंदों की तरह पर लगा कर उड़ ही रहे थे। हर दिन प्यारी-सी बिटिया माही स्कूल खत्म होते ही सीधे प्रकाश की गोद में जा बैठती और फिर बाप-बेटी परियों के देश की सैर पर निकल जाते थे। माँ को तो दिन भर हर तरह का लजीज खाना बना कर प्रकाश को खिलाने से फुरसत ही नहीं होती। शाम को खाने के बाद पिता सूरज मल अपने बेटे के साथ बतियाते पता नही आधी रात कब गुज़ार देते थे। आधी रात के बाद मालिनी और प्रकाश चैन के दो सुकून भरे पल मानो चुरा कर ले आते थे।

सही मानो में तो इस दिन भर की गहमा-गहमी से किसी को थकान नहीं हो रही थी। पिछले दो-तीन दिनों से सरहद के आस-पास कुछ गतिविधियों की खबरें और अफवाहें भी जोर पकड़ने लगी थीं। प्रकाश को पता था कि सामान पैक कर जाने का वक्त कभी भी आ सकता है।

आखिर वह पल आ ही गया जब पूरा परिवार रेलवे स्टेशन पर बाहर से मुस्कराता और अंदर से रुआँसा, प्रकाश को विदा करने को तैयार था। सभी से मिल कर जब प्रकाश ट्रेन के डिब्बे में अपने आँसू छिपाता जेब से रुमाल निकालने गया, तो उसके हाथ में एक गुलाबी रुमाल खुशबू से भरा, जिस पर उसका नाम बड़ी ही बारीकी से काढ़ा हुआ था, आ गया। अनजाने में हाथ शर्ट की जेब में गया और वह पाँच सौ के एक नोट से टकराया जो पता नहीं कब पिता जी ने बड़ी ही सफाई से उसकी जेब में डाल दिया था। सीट पर बैठते ही थैले में से एक स्टील का डब्बा झाँक रहा था, जो बेसन के लड्डू से भरा था इसके बारे में माँ ने जिक्र तक नहीं किया था। टीटी के आते ही जैसे ही पास दिखाने जेब में हाथ डाला, एक खत हाथ में आया जिस पर माही के हाथों से बनी एक सुन्दर-सी गुड़िया की तस्वीर और पापा के लिए ढेर सारी बातें लिखी थीं। प्रकाश के पूरे सफ़र को काटने के लिए बहुत थी।

घर पर भी जब माही पहुँची तो एक बड़ी प्यारी गुड़िया उसके टेबल के पास रखी मुस्करा रही थी।

अनजाना भय

चित्रा गुप्ता

सिंगापुर

“अब और कपड़े नहीं खरीदूँगी। 75 वर्ष की हो चुकी हूँ और कितना जीऊँगी? शायद 10 वर्ष और... ” पार्वती ने अपने बेटे से कहा।

“मम्मी जब तक जीवित हो, स्टाइल से रहो।” विवेक ने मुस्कराते हुए कहा।

“विवेक! तीन अलमारियाँ कपड़ों से भर रही हैं जिनमें से कुछ तो मैंने पहने भी नहीं है। जब तक अलमारियाँ खाली नहीं हो जातीं तब तक मरूँगी नहीं समझ ले।” पार्वती ने आँखें घुमाते हुए कहा।

“कोई बात नहीं मम्मी थोड़े से और खरीद लो, और लंबा जी जाओगी। आपके जाने के बाद अच्छे वाले प्रीता (विवेक की पत्नी) पहन लेगी बाकी दान में दे देंगे।” विवेक ने ठहाका लगाते हुए कहा।

“मेरे पास तो भई कम कपड़े हैं मम्मी। कपड़ों के हिसाब से तो मेरा नंबर पहले आना चाहिए, मुझे ही पहले स्वर्ग में जाना होगा,” विवेक ने हाथ ऊपर उठाकर कहा। पार्वती की हँसी आँसुओं में बदल गई। “मम्मी आप मजाक कर सकती हैं तो मैं भी तो कर सकता हूँ,” विवेक माँ के गले लगकर बोला।

“नहीं मुझे इस तरह का मजाक बिलकुल भी पसंद नहीं है,” पार्वती ने क्रोध से कहा।

“मम्मी चिंता मत करो मैं अभी कहीं जाने वाला नहीं हूँ, आपके बाद ही जाऊँगा।”

पार्वती के मन में डर बैठ चुका था इस मजाक से। विवेक को घर आने में देर हो जाती तो वे घबरा जातीं। तरह-तरह के बुरे विचार उनके मन में आते। प्रीता देख रही थी कि कुछ दिनों से मम्मी का खाने-पीने में भी मन नहीं है, कहीं चलने पर भी आनाकानी करतीं। स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। चेकअप में कोई बीमारी भी नहीं आई। सारे आराम हैं, फिर भी मम्मी खोई-खोई सी क्यों रहती हैं?

“मम्मी हमसे कोई गलती हो गई है, आप उदास क्यों रहने लगी हैं?” प्रीता के पूछने पर पार्वती नहीं कहकर टाल देती थीं।

रविवार को लंच के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम था। रात को ही मम्मी को बता दिया था। मम्मी प्रातः जल्दी उठ जाती थीं और नीचे पार्क में व्यायाम के लिए चली जाती थीं। सुबह वे देर तक नहीं उठीं। प्रीता कमरे में गई; मम्मी आँखें बंद करे करवट से लेटी थीं। उसने आवाज दी, जब वे नहीं उठीं तो उसने हिलाया। कोई हरकत ना देख घबराकर उसने विवेक को बुलाया। पार्वती इस संसार से विदा हो चुकी थीं। बेटा उनसे पहले ना चला जाए शायद इस भय में...

अनपढ़

मधु जैन
जबलपुर, म. प्र., भारत

मैं प्लेटफार्म पर ट्रेन के इंतजार में चहल कदमी कर रहा था, तभी उद्घोषणा हुई ट्रेन एक घंटे लेट है। मैं बेंच पर आकर बैठ गया। इस ट्रेन से माँ पहली बार मेरे पास आ रही थी। माँ की याद आते ही मन खो गया। मैंने बचपन से ही माँ को पापा की एक नौकरानी के रूप में देखा है। पापा की हर बात को मानना, कभी भी कोई जवाब ना देना और यदि कभी कुछ कहना चाहा तो फिर तो पापा का कहना,“तुम अनपढ़ कुछ नहीं समझोगी।”

मैं छोटा था तो समझता था कि माँ पढ़ी-लिखी नहीं है; पर एक दिन मंदिर में माँ को रामायण पढ़ते देख मैंने कहा,“माँ तुम्हें तो पढ़ना आता है।” माँ ने कहा,“चार अक्षर पढ़ने से कोई पढ़ा-लिखा नहीं हो जाता।”

उस दिन पापा ने माँ को फिर अनपढ़ कहा तो मैं बोल पड़ा,“पापा, माँ को पढ़ना आता है।” पापा ने मुस्कराते हुए कहा—“देखा, बेटा अब माँ की वकालत करने लगा है।”

माँ को पहली बार मुस्कुराते हुए देखा था। माँ से मेरी बहुत कम बात होती थी; लेकिन जब मैं घर से हॉस्टल जाता था तो माँ बहुत सारे पकवान बनाकर रखती थी और अपने बचत के कुछ पैसे भी मेरे हाथ में रख देती थी।

मैंने शहर में पढ़कर वहीं पर नौकरी भी कर ली। मेरे ऑफिस में ही रिया भी नौकरी करती हैं। हम दोनों एक दूसरे को बहुत पसंद करते हैं; किंतु विजातीय होने के कारण मैं जानता था कि पापा अनुमति नहीं देंगे। रिया ने अपने पिता को मना लिया किंतु उन्होंने इस शर्त पर हाँ कहा कि मेरे माता-पिता रिया का हाथ माँगने आएँगे। जब मैंने पापा से इस संबंध में बात की तो वे गुस्से से लाल-पीले होते हुए बोले—“एक विजातीय से शादी कतई नहीं।”

काफी समझाने के बाद तैयार हुए।

बोले—“जाओ लड़की के पिता से कहो, आकर मुझसे बात करें।”

मैंने कहा,“वे नहीं आएँगे, आपको ही जाकर बात करनी होगी।”

पापा तो लगभग चिल्लाते हुए बोले,“फिर तो यह शादी हो ही नहीं सकती। मैं लड़के वाला होकर उनके दरवाजे पर जाऊँ, असंभव है।”

तभी माँ ने मेरी ओर देखा और बोली,“बेटा मैं चलूँगी उनके दरवाजे, लड़की का हाथ माँगने।” पापा ने घूर कर माँ की ओर देखा और कहा,“तुम मेरे विरुद्ध जाओगी?”

“हाँ, बेटे की खुशी के लिए आपके तो क्या, मैं तो भगवान के विरुद्ध भी चली जाऊँगी।”

तभी ट्रेन के आने का संकेत हुआ, मैं दौड़ कर पहुँचा। माँ के पैर छूते हुए बोल पड़ा,“माँ तुम अनपढ़ नहीं हो।”

अनुभव

सन्दीप तोमर
नई दिल्ली, भारत

यह एक मल्टीनेशनल कंपनी का एच.आर.रूम है। मेज के उस ओर इंटरव्यू बोर्ड बैठा हुआ है। वह इंटरव्यू बोर्ड के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।

"नाम?"

"जी, रामखिलावन।"

"आज के दौर में इस तरह का नाम?"

"जी, बचपन से यही नाम है।"

"घर मे कितने भाई-बहन हैं?"

"जी एक भी नहीं, अकेला हूँ।"

"सब आपसे बड़े होंगे, मतलब शादीशुदा।"

"नहीं, सर! एकदम अकेला हूँ।"

"ओह, दैट्स रियली गुड!"

"माँ-बाप क्या करते हैं?"

"जी, माँ-बाप नहीं हैं।"

"दैट्स अगेन गुड।"

"शादी हुई?"

"सर! फिलहाल तो नहीं हुई, अभी पाँच साल तक करने का इरादा नहीं है।"

"वैरी गुड।"

"सर! एकेडेमिक मेरा काफी अच्छा है, ये देखिये मेरे सर्टिफिकेट।"

"नो जेंटलमैन! इनकी कोई जरूरत नहीं। यू आर सूटेबल फ़ॉर दिस जॉब।"

वह रूम से बाहर आ जाता है। घर वापसी पर सोचता है, अब माँ-बापू का इलाज भी ठीक से हो पायेगा। भाई की ट्यूशन फीस भी दे पाएगा। छोटी बहन के पत्राचार कोर्स की फीस भर सकेगा। पत्नी तो नौकरी का सुन बहुत खुश होगी, कब से साड़ी खरीदने का प्लान कर रही थी, पैसे की तंगी से टाल रहा था।

अनोखी पाजेब

राजरानी शर्मा
ग्वालियर, म.प्र., भारत

"माँ! कहाँ हो? कहाँ हो? माँ!"

"जल्दी से कुछ भी खाने को दे दो मुझे, देर हो रही है माँ! शहर जाना है, आज मुझे पहुँचना जरूरी है।"

अचानक टाँढ़ से कुछ उतारने में गिरी माँ को देख चौंका ....

"लो माँ! पानी पियो ... कहना था न क्या निकालना है?"

माँ ने पथराई आँखों से बेटे को देखा ... सूनी आँखें कह रही थीं कि,"बेटा क्या है मेरे पास निकालने ....रखने को ...! आखिरी निशानी तेरे पिता की है ये पाजेब .... जो बडे अभावों में भी भाव से लाकर मुझे दीं।" बेटे के सामने आधा सेर चाँदी की पाजेब धर दीं। "ले ये तेरे काम आयेंगी रे ....फीस तो भर ही जायेगी।"

"माँ! ये इतनी सुंदर पाजेब! तुमने तो कभी न पहनी ....? क्यों माँ! और मैं तो कह रहा था न कि दोस्त से बात हो गयी है आज के लिये, फिर तुम्हारी पायल क्यो लूँ माँ?"

सावित्री दर्द से कराह उठी, एक पग भी चल न पाई।

"ओह! माँ, ज्यादा मोच आ गयी! मैं तेल लगा दूँ?" मनोज ने डबडबायी आँखों से माँ के पैर अपनी गोद में रखे .... उसकी आँखों से भी दर्द बह निकला! "अरे माँ! कितनी बिवाइयाँ फटी हैं। आज देख रहा हूँ इन पैरों को जिन्होंने मेरी हर जरूरत पूरी की ...उनकी बिवाई न देखी!"

माँ कहना चाह रही थीं, बेटा!....अभावों की बिवाइयाँ तो कलेजे में फटी-धरी हैं, ये पैर की बिवाइयों से ज़्यादा कसकती हैं। काम तो करने ही पडते हैं; पर सावित्री ने कहा कुछ नहीं।

"ये देख! जिन्दगी भर काम करते-करते ये बिवाइयों की पाजेब पहनी रे! यही आलता है और यही पाजेब हमारे गहने हैं बेटा!"

कलेजे से पाँव तक पहने गहने .... तभी तो हम सबके दर्द को सुन-गुन पाते हैं , चाहे सुबह-सुबह द्वार पर आये भूखे परिन्दों का हो, चाहे रँभाती गायों का हो .... अभावों में जी रही बहन-बेटियों का हो या रिश्तेदारों का ... अड़ोस-पड़ोस की करुण कथा हो ....! सब रच गयी हैं मन पर, इसी की बिवाइयाँ हैं बेटा ....! आदत है हमें इनकी ... दुःखती नहीं हैं ये अब .... मन से लेकर एड़ियों तक की परतें मोटी हो गयीं बेटा ....!

मनोज बिना कुछ कहे भीगी आँखों से उन कटे-फटे पाँवों को देखता ही रह गया ....! करुणा और मानवता के घुँघरुओं की खनकती पाजेब को सुन रहा था! कितने सुंदर हैं श्रम और संवेदना में रचे-बसे ये माँ के पाँव और उनकी अनोखी पाजेब!

अनोखी फीस

प्रतिभा त्रिवेदी
ग्वालियर, म.प्र., भारत

वह आज अपनी सारी जमा-पूँजी बटोर कर उस भव्य कोचिंग सेंटर के सामने आ पहुँची थी, जहाँ उस नामी संस्थान का प्रबल दावा था कि वहाँ मेधावी बच्चों के सपनों को हकीकत में बदला जाता है। सहसा अपने कपड़ों की ओर ध्यान गया था - मामूली सी सूती साड़ी पहने वह चली आयी थी। यहाँ तो ऐसा लग रहा था, जैसे अभिभावकों और बच्चों की कोई फैशनपरेड चल रही हो। डरते-डरते रुँधे कंठ से रिसेप्शन पर बस इतना ही वह कह पायी थी,"मुझे बड़े साहब से मिलना है।"

"नहीं, अभी नहीं मिल सकते, वो मीटिंग में व्यस्त हैं।" रूखा सा जवाब आया था। एक बार उसके मन में भी आया कि अभी ही घर लौट जाना चाहिए; लेकिन अंतरात्मा ने धिक्कार लगायी थी,"हुँह! तुम कैसी माँ हो जो जरा देर इंतजार भी नही कर सकतीं!"

अंततः उस महिला का नंबर आ ही गया। अंदर बड़े साहब के सामने बिना एक पल गँवाये उसने अपने थैले में से अपनी होनहार बिटिया के तमाम सर्टिफिकेट, मैडल और हाल ही में बारहवीं उत्तीर्ण की अंकसूची निकाल कर टेबल पर रख दी थी।

"ये क्या है और मुझे किसलिए आप ये सब दिखा रही हैं?" बड़े साहब यानी कोचिंग सेंटर के संचालक ने तनिक मुलायम स्वर में पूछा था। सद्भावना से भरी वाणी सुनते ही महिला के संयम का बाँध टूट पड़ा। उसने बहते आँसुओं के साथ जो कहा,"मेरे पति की लंबी बीमारी के बाद अस्पताल में मृत्यु हुई थी। तब उनकी अंतिम इच्छा यही थी कि हमारी बेटी भी बड़ी होकर डाक्टर बने। साहब सचमुच मेरी बेटी बहुत होशियार है, आप उसके सारे कागज देखिए; आपकी फीस हम गरीबों के लिए बहुत ज्यादा है। आप उसको अपने कोचिंग सेंटर में बस एक मौका दे दें। फिर धीरे धीरे सारी फीस चुका दूँगी।"

चमचमाते कार्पोरेट कोचिंग संस्थान में एक पल को सुई-पटक सन्नाटा-सा छा गया था। सहसा बड़े साहब की धीर-गंभीर आवाज गूँजी,"आप अपना बटुआ खोलिये।"

महिला ने चौंककर देखा था और निरीह भाव से अपना बटुआनुमा पर्स झिझकते हुए आगे बढा दिया। साहब ने बटुआ खोला और एक रुपये का सिक्का निकालते हुए कहा,"फीस तो मैं किसी की भी नही छोडता। आपसे भी मैने अपनी फीस ले ली है। कल से आप अपनी बिटिया को मेरे यहाँ पढने भेज दीजिए। ये एक रुपये का सिक्का ही मेरी फीस है।"

अपनी दीवाली

राजरानी शर्मा

ग्वालियर, म.प्र., भारत

"लो जी!"

"क्या रौनक़ों की दीवाली मनी है!" जी भर के खील-बताशे मिठाई-नमकीन सब बाँट के पटाखे चलवा के जानकी साँस लेती बोली! अभी पंद्रह दिन पहले की तो बात है ..

"कैसा है अमित? बहू-बच्चे ठीक हैं?"

"हाँ माँ! सब तुम्हारा ही आशीष है! अच्छा माँ! हम लोग आ रहे हैं, दीवाली पर। टिकिट हो गये। देखना; मैं, राखी और दोनो बच्चे इस बार घर सिर पर उठा लेंगे। तुमसे मिले भी इतने दिन हो गये।" पीछे से राखी की आवाज आ रही थी,"अरे! माँ से कह दो कि ज़्यादा काम न करें, किसी को बुला लें मदद के लिये, कहीं सफाई-वफाई में चढने-उतरने में गिर-गिरा गईं तो और आफत आ जाएगी।" नयी पीढी एक आशंका में ही जीती है कि कहीं बुजुर्ग माँ-बाप बिस्तर न पकड लें... अगर ऐसा हो ही गया तो न उगलते बनेंगे न निगलते और हमारी अच्छी-खासी हँसती-खेलती गृहस्थी पे ग्रहण सा लग जायेगा!

जानकी स्वयं ये सब अच्छी तरह समझ सकती है और अकेले ही अपने विधवा जीवन को सजाती रही है। सच पूछो तो जानकी कभी अपने को अकेला मानती ही नहीं। उसका एकल परिवार संयुक्त परिवारों से भी बडा और सुखद है। पडोस की बहुएँ न तो जानकी पर अधिकार रखती हैं, न कटाक्ष करती हैं और न ताने कसती हैं! न दूर का रिश्ता है न पास का; बस है विश्वास का!

आनंद की कुंजी है उनके पास। सुबह से उतावली सी जानकी इधर-उधर घूम रही थी कि बेटे का फोन आया... "कैसी हो अम्मा? क्या कर रही हो?" "अरे तू अभी कहाँ पहुँचा... कितने बजे तक आओगे तुम लोग?"

अरे माँ! मैने यही कहने को फोन किया कि मैं हजार कोशिश करके भी आ नहीं पा रहा। राखी को अचानक स्लिप डिस्क हो गयी है, हिल भी नहीं पा रही! "कैसे करूँ समझ न आ रहा है, हमने तो कोई तैयारी भी नहीं की दीपावली की! आने को तैयार ही थे!"

"कोई बात नहीं बेटा! ये तो हो ही जाता है, बीमारी पे अपना वश कहाँ? तेरी परेशानी अच्छी तरह समझ सकती हूँ, माँ हूँ तेरी! ...और तू मेरी चिन्ता मत कर। देख! तुम लोगों ने परदेस में सारा कुछ जमाया है। हम तो सदा अपने ही घर में रहे, जहाँ पास-पड़ोस से मिलकर चुटकियों में सब परेशानियों का हल हो जाता है! बहू का ध्यान रखना, मेरे पास तो बीसियों बाल-बच्चे, बहू- बेटे सब हैं!"

कहते-कहते गला रूँधने को आया तो फोन रख दिया जानकी ने... कहीं बेटे को दुख न हो!

अपनी संस्कृति

शीतल गुप्ता

जयपुर, भारत

रोहन, जो अपने परिवार के साथ रहता था, उसका आज अमेरिका की एक बड़ी कंपनी में चयन हो गया था। वह आज फूला नहीं समा रहा था। उसके माता-पिता भी बहुत खुश थे और क्यों ना हों, आज उनकी भी तो इतने वर्षों की तपस्या सफल हुई थी; लेकिन कहीं ना कहीं मन के कोने में बेटे के इतनी दूर जाने का गम भी था।

रोहन अपनी जाने की तैयारी कर रहा था। वह बहुत उत्साहित था, उसे लगता था कि वह एक नयी दुनिया में जा रहा है, जो कि बंधन-रहित थी। उसे सदैव ही बाहर की संस्कृति बहुत आकर्षित करती थी और माता-पिता का कुछ कहना बंधन के समान लगता था।

आज वह अमेरिका अपने घर पर पहुँच चुका था। कुछ ही समय में उसका उत्साह फीका पड़ने लगा था, जब उसने पाया कि उसे यहाँ सारे काम स्वयं ही करने पड़ेंगे। उसे अपनी माँ के हाथ का खाना याद आ रहा था। उसे इस देश में सब कुछ अजनबी-सा लग रहा था। धीरे-धीरे उसकी पहचान पास में रहने वाले एक अमेरिकन परिवार से हुई। उसने देखा कि उस अमेरिकन परिवार को भारतीय संस्कृति बहुत अच्छी लगती है। वे अक्सर रोहन से भारत की बातें करते थे। उन्होंने अपने बच्चों को भारतीय तरीके से नमस्कार करना, हिंदी गानों पर डांस करना आदि सिखा रखा था। यह सब देखकर रोहन को अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व होने लगा और उसे परिवार और परिवार के सदस्यों का महत्त्व भी समझ में आने लगा।

अब जब रोहन भारत आया तो उसका हृदय पूरी तरह से परिवर्तित हो चुका था।

अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे

सविता मिश्रा 'अक्षजा'
आगरा, भारत

"नमस्ते अंकल जी! पापा की तबीयत ठीक नहीं है। आप भीतर चलकर उनके कमरे में ही उनसे मिल लीजिए।"

"क्या बात है भई, आपके साहबजादे बड़े बदले-बदले से जान पड़ रहे हैं!" बेटे की ओझल होती पीठ पर नजरें गड़ाये हुए श्याम ने व्यंग्यपूर्वक अपने जिगरी मित्र रामलाल से पूछा।

"आओ श्याम! आखिर आज रास्ता भूल ही गए।"

पोता पानी और बेटा चाय-नमकीन लेकर एक ही साथ कमरे में प्रविष्ट हुए। चाय रखकर बेटे ने विनम्रता से कहा,"कुछ और तो नहीं चाहिए पिता जी?" बाहर जाते हुए पलटकर पुनः बोला,"ज्यादा देर नहीं बैठिएगा, पीठ में फिर से दर्द होने लगेगा।" कहते हुए पिता की कमर में बेल्ट बाँधकर चला गया।

श्याम ने अपनी छूट गयी बात को आगे बढ़ाया,"लगता है, दिवा-स्वप्न देख रहा हूँ मैं। पाँच-छह साल पहले तो यह साहब ऊँट की-सी अकड़ी गर्दन लिए ..." श्याम के कुछ और कहने के पूर्व ही रामलाल ने ठहाका लगाया।

"आप हँस रहे हैं, किन्तु इस प्रकार से आपकी सेवा-शुश्रूषा होते देखकर, अभी-भी मैं बहुत अचम्भित हूँ!"

"जड़ खोदकर ही मानोगे श्याम!"

"मैं भी तो जानूँ, आखिर बदल कैसे गए बरखुरदार?"

"बढ़ते बच्चों का बाप जो हो रहा है।" गहरी मुस्कान के साथ दोनो मित्र चाय सुड़कने लगे।

अबोध

वासवदत्ता अग्निहोत्री
ग्वालियर, म.प्र., भारत

"कब नहीं रहीं? कुछ बीमार थी क्या?"

ऐसे ही सामान्य से सवाल और वो ही जवाब, किसी-किसी को बोलते सुन रही थीं वे दोनो। एकदूजे से सटकर, घर के बाहर की एक टूटी सीमेंट की सीढी पर बैठी, चार-पाँच बरस की, कोमल, निष्पाप और बेहद दुबली सी दो नन्ही लड़कियाँ!

गरीबी का मारा एक कमरा, पलस्तर उखड़ी दीवारें, अलगनी पर मैले बेतरतीब कपड़े, कोने में रसोई के नाम पर एक चूल्हा और कुछ टूटे बर्तन, एक कोने में एक खटिया, मैले-फटे गद्देनुमा बिस्तर से अधढँकी! यही उस घर की कुल जमा संपत्ति थी। कई वर्षों की गरीबी झेल रही वो कुटिया!

पैंतालीस के करीब का व्यक्ति, करुण क्रंदन कर रहा था, सिर पर हाथ मारकर विलाप कर रहा था। साथ बैठी पत्नी उसकी पीठ पर सांत्वना का हाथ फेर रही थी और साथ ही नाक पर मैला फटा आँचल रख सुबक रही थी। आसपास चंद वृद्ध, दुर्बल औरतें अपने मलिन पल्लू को आँख-नाक से लगाए बैठी थीं, अपने हश्र को वे भी जानती बूझती, हताश-सी अपनी सखी को अंतिम विदा दे रही थीं।

बाहर बैठी नन्ही गुड़ियाँ एक तरफ रखी मटकी से आते धुएँ से परेशान थीं; पर फिर भी आपस में बतिया रही थीं,"क्या अब तेरी दादी कभी नही उठेगी?"

"हाँ, वो नहीं उठेगी, वो मर गई है ना..!"

"फिर तेरे बापू क्यूँ कह रहें है..उठ जा अम्मा...उठ जा माँ..."

"पता नहीं, कल तो माँ कह रही थी...कब मरेगी बुढिया; ...लेकिन अब उठेगी नहीं वो...। बड़ी अच्छी थी, मुझे बहुत प्यार करती थी।"

इतने में रुदन और तेज हुआ और थोडी हलचल के बाद मृत देह बाहर लाई गई और अर्थी पर रखी गई।

"सब परिकम्मा कर लो.." जो दो चार लोग कफन से कृशकाया को लपेट रहे थे...आदेश-सा कर उठे। सब मृतात्मा के अंतिम दर्शन करने लगे। रोता-गिरता बेटा माँ के सिर को अँजुली में पकड़कर बिलखने लगा... "मत जा मुझे छोड़कर माँ...! कैसे रहूँगा तेरे बगैर माँ...!"

अचानक एक नन्हे स्वर ने सबको शांत कर दिया,"बापू! मत रो बापू, अम्मा सो गई है ना..ये लो ये उसका तकिया उसके सिर के नीचे लगा दो...। पता है ना, इस तकिये के बिना अम्मा को नींद नही आती; ...और हाँ, सिर के नीचे ही लगाना...वैसे मत लगाना जैसे रात को तुमने उसके मुँह के ऊपर ही लगा दिया था...!"

अभागा

कान्ता रॉय

भोपाल, भारत

मैंने उसे देखा था कि वह किस तरह मिट्टी से रेशा बन कर जनमती है। धूप को देखकर वह जब निश्छल हँसती है, हवाएँ खनकने लगती हैं।

वह अक्सर धरती को अपने दोनों हाथों से जकड़े रहती। उसमें मुँह गड़ाये पूरे आत्मबल से पानी खींचती रहती। उसका मुख नवजात शिशु-सा कोमलता से भरपूर। मुझे उस पर बहुत प्यार आता था। वह धरती से इस तरह पानी खींचती, जिस तरह बच्चा माँ की छाती से दूध खींचता है। मुझे मालूम है, वह धरती के गर्भ में तरलता से बहती है। वह पोषित होती, बढ़ कर आकाश छूती हुई अब एक विशाल पेड़ है। मुझे बड़ी खुशी है, उसकी तपस्या पूरी हुई। उसे जो होना था, अब वह हो गई है।

मैं हर्षोल्लास से भरा जब उसके करीब गया तो मालूम हुआ कि वह हरदम अपने भाग्य को कोसती रहती है। मुझे ताज्जुब हुआ और पूछ बैठा। उसके बाद उसका जवाब पाकर मेरी तो बोलती बंद है। मेरी बोलती क्यों बंद है? आप तो पूछेंगे कि क्या कहा उसने? जनाब उसने जो कहा है वह आदम जात पर कई सवाल खड़े करती है।

"ऐसा भी क्या कहा उसने?"

"क्या बताऊँ! उसने कहा है कि जब से वह फलदार पेड़ बन गयी है, तब से उसे पत्थर खाने पड़ रहे हैं।"

अमीर

पूनम पाण्डे
अजमेर, राजस्थान, भारत

अलमस्त मौसम था। शाम के पाँच बज रहे थे। अमन और अनु सैर पर निकले थे। जरा सा आगे बढे तो पके हुए बेरों की महक ने दोनों को ही मदहोश कर दिया। मुँह में पानी आ गया। "वाह! पके बेरों की महक!" कहकर उन दोनों ने इधर-उधर झाँका तो एक गली की तरफ कुछ लोग एक डलिया के इर्द-गिर्द नजर आये। जल्दी चलकर दोनों करीब गये तो देखा कि एक युवती कागज मे रखकर पीले, नारंगी, हरे रसीले बेरों की पुड़िया बेच रही थी। अमन और अनु की बारी आने तक सब लोग खरीदकर जा चुके थे।

"लाओ, हमको भी बेर दे दो।" अच्छा,,, कहकर युवती ने एक पुड़िया बनाई और देते हुए कहा,"दस रूपये।" "हैं,,,ये क्या कह रही हो? एक मुट्ठी बेर और दस रुपये?" अमन के तर्क पर भी वो अडिग होकर बोली,"हाँ दस रूपये।" अनु ने कहा,"अरे,,अमन! ये लीजिए दे दीजियेगा दस रूपये। बेचारी गरीब औरत लग रही है।" "हैं…?" वो भवें तान कर बोली,"किसको बोला गरीब, गरीब मुझे बोला है?" वो बिगड गई…। "मेरे पास तीस बकरियाँ हैं, तीस, समझे! …और ठाठ से दो समय ताजा खाना खाती हूँ। आप मुझे ये बताओ कि बेर की झाड़ी पर गये हैं कभी? जाकर जरा चुनकर लाना कभी दस बेर, वो तो आप लोगों को रसीले ताजे बेर का स्वाद चखने को मिले, इसीलिए मेरी दादी की सलाह पर ये डलिया भरकर जंगल से चुनकर लाई। ये बेर तो मेरी बकरियों का नाश्ता है, समझ में आया?...और तुम हो कि मुझे गरीब कहते हो। देना है तो 'मेरी बेर तुड़वाई की मेहनत है', ऐसा बोलकर दस रूपये दो…और साफ सुन लो, गरीब तो मेरे पूरे खानदान में न कोई है, न कोई होगा।"

"बाप रे! क्षमा करें, हमसे गलती हुई।" अमन और अनु ने माफी माँगी और बेर खाते हुए हँसते-हँसते चलने लगे।

"झाँसी की रानी वाला देश है अपना।"

"हाँ अनु सच कह रही हो…", अमन ने सहमति दी।

बेरों का जायका दोनों के मुँह में घुल रहा था।

अमेरिका के स्कूल का एक दिन

रेखा भाटिया
शार्लिट, नॉर्थ कैरोलाइना, यू.एस.ए.

सुहानी धूप खिली थी। ग्यारह बजे वह गैरेज में बैठ कलात्मक घड़े बना, धूप में सुखा रही थी। तभी सामने सड़क के दायीं ओर से चौदह-पंद्रह साल के कुछ किशोर छात्र तेज़ी से सड़क पर इस ओर भागते हुए दिखाई दिए। वे हाँफ रहे थे, उनकी साँसें चढ़ रही थीं। उसके गैरेज का डोर खुला देखकर अचानक वे तेज़ी से उसके घर की ओर आने लगे। पहले तो वह टीनएज छात्रों का झुंड देखकर थोड़ा घबराई। पुराना अनुभव था, कभी सड़क पर स्मोक करते हैं, कभी स्केट बोर्ड चलाते हल्ला मचाते हैं, कभी पास के प्ले ग्राउंड में धमाचौकड़ी करते सभी को परेशान करते हैं; लेकिन आज बात कुछ और है शायद! तभी आसमान में पुलिस का हेलिकॉप्टर चक्कर लगाता नज़र आया, साथ ही वातावरण में अजीब-सा शोर और चीखें घुलने लगीं। वह भी फुर्ती से इन छात्रों के करीब आ गई। अँग्रेज़ी में उसने पूछा,"क्या हुआ? इस तरह क्यों भाग रहे हो? इस वक्त तुम्हें स्कूल में होना चाहिए, यहाँ क्या कर रहे हो?"

तभी भारतीय दिखने वाले एक छात्र ने अपनी साँसों पर काबू पाने की चेष्टा करते, हाँफते हुए कहा,"आंटी! मैं हिंदी में बोल सकता हूँ ..... वो स्कूल में एक शूटर गन लेकर घुस आया है, जब हम ग्राउंड पर लंच खाने बाहर आए थे, उसने गन निकाली और चिल्लाने लगा। हमारी टीचर ने चिल्लाया - रन फॉर योर लाइफ। हम वुड्स में से निकलकर यहाँ भाग कर आ गए। वो गन चला रहा था, हमने सुना....... आंटी क्या पानी मिल सकता है?"

"हाँ, हाँ! क्यों नहीं। आ जाओ, जल्दी से भीतर आ जाओ, घबराओ नहीं।"

उसने तुरंत छात्रों को घर के भीतर गैरेज में बुला लिया। वे बच्चे बहुत बुरी तरह से डर रहे थे, भयभीत हो रहे थे, घबरा रहे थे। उनके दिल की धड़कन ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी। वह खुद भी इस घटना के ख़ौफ़नाक वृत्तांत को सुनकर बुरी तरह से भयभीत हो गई। भागते समय फिसलने से किसी के घुटने से खून बह रहा था, कोई डर के मारे खाँस रहा था, कोई काँप रहा था... एक का फ़ोन झाड़ियों में गिर गया, एक का लंच पैक गिर गया। अब दो फिर तीन हेलिकॉप्टर आसमान में मँडराते पास के हाईस्कूल और आसपास चक्कर लगा रहे थे। कई पुलिस, फायर-ट्रक और एम्बुलेंस की गाड़ियों के सायरनों की आवाज़ें वातावरण को थर्रा रही थीं, मानो यह शांतिप्रिय इलाका अचानक से युद्ध-स्थल में बदल गया हो!

असर कहाँ तक

ऋता शेखर 'मधु'
बेंगलूरु, भारत

“अब मीना बड़ी हो गयी है। उच्च शिक्षा लेने के बाद अब नौकरी भी कर रही है। कोई ढंग का लड़का मिल जाये तो उसके हाथ पीले कर दूँ,” सरला ने चाय पीते हुए पति से कहा।

“हाँ, बेटी के पिता को मन पर कितना पत्थर रखना होता है। पढ़ाया-लिखाया, अब नौकरी भी लग गयी। फिर भी उसे विदा करना ही होता है।”

“किसे विदा करना होता है पापा,” जाने कब मीना कमरे में आ गयी थी।

“तुम्हें विदा करना है, वही बात हो रही है,” सरला ने कहा।

“पर मुझे तो यहीं रहना है। मैं अपना घर-द्वार, सखी-सहेलियों को छोड़कर दूसरे घर क्यों जाऊँगी माँ! मेरी नौकरी है तो आर्थिक रूप से किसी पर बोझ नहीं बनूँगी।”

“यही समाज का नियम है मीना! विवाह तो करना ही होता हैं,” सरला ने समझाते हुए कहा।

“यह नियम मानने से मैं इनकार करती हूँ माँ। विवाह करके मैं किसी को मानसिक प्रताड़ना नहीं दे सकती। कोई भी विरोध अपने घर से आरम्भ होना चाहिए,” मीना के स्वर में दृढ़ता झलक रही थी।

“कैसी प्रताड़ना देने की बात कर रही हो मीना?”

“वही, जो आज तक आप पापा को देती आयी हो।”

“मैंने क्या किया है,” बेटी के इस अचानक आरोप से सरला घबरा गई।

“आप हमेशा पापा पर अहसान जताती रहीं कि विवाह करके सभी अपनों को छोड़कर आप यहाँ आईं पापा उस समय खुद को अपराधी समझने लगते थे। आपको भी तो पता था कि यह समाज का नियम है। किसी को नहीं छोड़ना है तो अपने ही घर रहना चाहिए। माना कि पहले आर्थिक मजबूरी रहती थी तो लड़की विरोध नहीं कर सकती थी, अब तो ऐसी बात नहीं।”

“ये क्या बोले जा रही हो मीना?”

“सही कह रही हूँ माँ, विवाह सामाजिक चीज़ है। विवाह के बाद घर छोड़ने के त्याग को बार-बार कहकर किसी को अपराध बोध से ग्रसित रखना क्यों है। मुझे कोई जबरदस्ती तो अपने घर नहीं ले जा सकता। पहला विरोध मैं ही कर रही हूँ कि मुझे कहीं नहीं जाना।”

बच्ची पर उसकी कही बातों का इतना गहरा असर है, यह देख सरला स्तब्ध रह गयी। पिता ने पुत्री की पीठ पर स्नेह से हाथ रख दिया।

आईसोर

आरती 'लोकेश'

दुबई, यू.ए.ई.

"अरे! कब से पुकार रहा हूँ तुम्हें। पिताजी के श्राद्ध की पूजा होते ही कहाँ चली गई थीं तुम?" देवकीनंदन पत्नी शोभा को देखते ही बोले।

"आ गई बस, पास में ही गई थी। वह जो हमारे पार्क के उस छोर पर कॉलोनी में एक गरीब का घर है न, उन्हें खाना देकर आई हूँ। वे थोड़े ही पूड़ी-सब्ज़ी खाते होंगे, तो उन्हें खुशी होगी अच्छा खाना खाकर।" शोभा ने बताया।

"चलो अच्छा है, फेंकने की बजाय गरीब के मुँह में कुछ जाएगा तो कुछ पुण्य कमा लोगी इस बहाने।" देवकीनंदन ने हाथ जोड़कर ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा।

"मैं हर बार कंजक जिमाकर भी उन्हें हलवा-पूड़ी प्रसाद दे आती हूँ। उस छोटे-से घर में वे लगभग दस लोग रहते हैं, बूढे माँ-बाप उनके दो बेटे, दो बहुएँ और चार पोते-पोती। बड़े आशीर्वचन बोलते हैं मुझे देखकर।" शोभा का मुख गर्व की दीप्ति से दमक रहा था।

"चलो, ये तो बड़ा पुण्य का काम है। अच्छा करती हो। गरीब की दुआएँ मिलेंगी तो हमारे बेटे का कारोबार खूब फले-फूलेगा।" बेटे के कमरे की ओर नज़र घुमाते हुए देवकीनंदन ने उत्तर दिया। "बेटा शिरीष! आज ऑफ़िस नहीं जाना क्या?" चिंता जताते हुए वे बोले।

"जा रहा हूँ पिताजी! आज बिल्डर से फाइनल कोट्स लेनी है पूरी लागत की। बस, फाइल देख रहा हूँ।" शिरीष अपने कमरे से निकलते हुए बोला।

"वह नया रिक्रियेशन सेंटर अप्रूव हो गया?" वे प्रसन्न होते हुए बोले।

"हाँ जी, हो ही गया है। आज उस खंडहर-से मकान को गिराने के आदेश पास करवाने हैं कोर्ट से, जो खाली नहीं करवा पा रहा था इतने दिनों से।" फाइल बंद कर वह नाश्ता करने बैठा।

"हो जाएगा। कैसे न होगा? ईश्वर का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। सब अड़चनें हट जाएँगी। मुझे पूरा विश्वास है।"

"सड़क के उस पार वाला तो हमारी अनधिकृत कब्जे वाली धमकी से डर गया है। इस पार्क के पास वाले के लिए म्यूनिसिपैलिटी में कुछ ले-देकर बुलडोज़र चलवाना पड़ेगा।" पूड़ी-आलू खाते हुए वह बोला।

"गिरवा ही डालो इसे तो बुलडोज़र से। वैसे भी यह 'आइसोर' बना हुआ है हमारी इतनी सुंदर हाई-क्लास कॉलोनी की शान में।" ठठाकर हँस दिए देवकीनंदन जी।

आदमी बेचारा!

सुरेंद्र कुमार अरोड़ा
गाज़ियाबाद, उ. प्र., भारत

"बहुत भोला और ईमानदार आदमी था, कल रात मर गया बेचारा! हुआ ये कि पहले माले की रेलिंग से उसका पड़ोसी फिसल गया था। उसे बचाने के लिए वह आगे बढ़ा तो खुद भी फिसल गया, सम्भल नहीं पाया और ऐसा गिरा कि बेचारा खुद ही मर गया।"

"गरीब आदमी से रिश्वत लेते हुए टी.टी. से भिड़ गया था, बात तू-तू, मैं-मैं से मारपीट तक पहुँच गयी तो उसे पुलिस पकड़ कर ले गई। बेचारा कल रात से जेल में है।"

दोनों साथ ही रिटायर हुए थे। जब तक साथ थे, दोनों में बड़ी बेतकल्लुफी थी। आपस में खूब छनती भी थी।

रिटायरमेंट के बहुत दिनों बाद दोनों का मिलना एक पार्टी में अचानक हो गया। दोनो के बीच दुनिया-जहान की बातें होने लगीं। उसी बातचीत में कुछ ये किस्से भी आ गए। इसी बीच एक ने कहा,"बड़े जम रहे हो गुरु! लगता है घर बैठे को भाभी खूब पकवान ही नहीं खिला रही, कपड़े भी नए-नए लेकर दे रही है, जिससे एहसास बना रहे कि अभी तो हम जवान हैं।" कहकर ठहाका लगा दिया।

"अरे नहीं यार! ये जैकेट तो समधी साहब ने बहुत पहले गिफ्ट की थी और ट्रंक में नीचे दबी पड़ी थी। यहाँ आने से पहले आज नजर पड़ी तो निकाल ली। इसका टैग भी आज ही खोला है।"

"बड़ी जँच रही है गुरु! महँगी होगी। वैसे गिफ्ट मिला किस ख़ुशी में था?"

"ख़ुशी-वुशी कुछ नहीं। बड़े भले आदमी हैं, बहू जब भी मायके से आती है, बेचारे कुछ न कुछ मेरे लिए भी भिजवा ही देते हैं।" कहते हुए उनके शब्दों में अलग प्रकार की ख़ुशी का आलम था।

"यार! एक बात बता; तेरे समधी तेरे लिए अक्सर कुछ न कुछ भेंट भेज देते हैं, तो भाई 'बेचारा' तो लेने वाला होना चाहिए। देने वाला 'बेचारा' कैसे हो गया। जो दे रहा है, वह तो कोई समर्थ ही होना चाहिए।"

"बाल की खाल निकालने वाली तेरी आदत गयी नहीं।"

ठहाका फिर से लगा और दोनों खाने की टेबल की ओर चल दिए।

आदर्श और यथार्थ

हरिहर झा
मेलबर्न, आस्ट्रेलिया

तब मैं १२ वर्ष का था और कक्षा ५वीं में पढ़ता था। यह वह उम्र होती है जब अध्यापक की कही कुछ बातें दिल-दिमाग में बैठ जाती हैं। हिन्दी के अध्यापक ने गाँधीजी के बारे में बताया कि वे अहिंसा में विश्वास रखते थे, अत: वे अत्याचार का विरोध बिना हिंसा के करते थे, जिससे आततायी का हृदय परिवर्तन हो सके। यह दार्शनिक बात इतनी अच्छी तरह समझाई कि मेरे भेजे में बैठ गई क्योंकि मैं जीवन के व्यवहारिक पक्ष से अनजान था। हथियार लेकर अंग्रेजों से लड़ना गाँधीजी के लिये संभव भी नहीं था; उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन की राह अपनाई। पर वह उम्र विश्वास कर लेने की होती है।

एक बार मैं पाँच मित्रों के साथ बिट्टू के घर के बाड़े या बेकयार्ड में खेल रहा था और अपने मित्रों के साथ मेरा कुछ झगड़ा हो गया। वे मुझे डराने लगे कि मैंने उनकी बात नहीं मानी तो वे मुझे बाड़े में बन्द करके चले जाएँगे। मैंने उन्हें बाल सुलभ भोलेपन में कहा कि मुझे बन्द कर भी दोगे तो तुम्हारा हृदय परिवर्तन होगा तब तुम मुझे इस बाडे से मुक्त करने जरूर आओगे। वे हँसते हुए मुझे बंद करके चले गए। उन्हें क्या पड़ी थी अपने हृदय का परिवर्तन करवाने की।

मैं लगभग आधे घंटे तक वहाँ बाड़े में इंतजार करता रहा। मेरे मित्र उत्तरी मैदान में खेलने चले गए थे। मित्रता वश दया उन्हें भी आती होगी पर वे जिद में थे इसलिये मुझे बाड़े से छोड़ देने में उन्हें अपनी पराजय का बोध होता था। उन्होंने ठान ली थी कि उनका हृदय परिवर्तन नहीं होगा।

तभी बिट्टू की बड़ी बहन वहाँ से गुजरी। उसे सब माजरा समझ में आया। बिट्टू की बहन ने कुछ सोचा कि वहाँ से मेरे अपने घर के दो रास्ते हैं - उत्तर वाली या दक्षिण वाली गली से। उत्तर वाले मार्ग में मेरे बदमाश मित्र अब भी खेल रहे होंगे जो मुझे देख कर बखेड़ा खड़ा कर सकते हैं। मुझे अपने घर जाने के लिये दक्षिण वाला मार्ग ठीक होगा वह जानती थी। यह उसका बाड़ा था; साँकल खोल कर भीतर आई और बोली,"अगर तुम यहाँ से दक्षिण वाले मार्ग से अपने घर जाओ तो समझो मेरा हृदय परिवर्तन हो गया है। मैं तुम्हे आज़ाद करती हूँ।"

मैं धीरे-धीरे कदमों से बिट्टू की बहन को धन्यवाद देते हुये दक्षिण वाले मार्ग पर चल पड़ा।

आधा गिलास

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

घर पर बंदनवार लगे थे, दीवार पर ब्याह कर आई नई बहू के हल्दी के थापे लगे थे। मिठाई के टोकरों, शादी के उपहारों और आत्मीयों से भरे कमरे के बीच में अर्हत का निष्प्राण शरीर जमीं पर लेटा था। मीनाक्षी बार-बार अपने को कोस रही थी कि पहले बहिन चिनी का विवाह करने की जिस जिद में शादी को तीन साल से टाल रही थी, क्यों अर्हत की जिद के आगे मान गई? अभी घर से मेहमान विदा भी नहीं हुए थे, पीछे का सारा काम पापा अकेले कैसे संभालेंगे, अगले दिन ही हनीमून पर जाने क्यों दिया? कैसी दुर्भागिनी माँ, रोने के लिए उस मासूम लड़की को क्यों घर ले आई? रोने के लिए क्या हम दो काफी नहीं थे?

पास बैठी सहेली रेवती ने अपने कलेजे से उसे लगाकर मुँह पर हाथ रख दिया। बस मीनाक्षी! एक बात समझ ले, देख! तेरा बेटा कितना खुश गया है, उसे उसका प्यार मिल गया, उसने जो पल आयशा के साथ जिये। खुशियों के तीन दिन बहुत होते हैं, वो सेना में जाना चाहता था, तुमने रोक दिया! इन तीन दिनों में वो सेना की जीप में अपने प्यार के साथ हनीमून पर था, शादी की इसीलिए तो उसके प्रिय जनरल अंकल ने पहाड़ों की वादियों में उसे हनीमून पर अपने पास बुलाया। शादी न करती तो रोती कि शादी कर देती तो शायद उस लड़की के भाग्य से बच जाता। उसने प्रायश्चित्त या पश्चात्ताप कुछ भी तेरे लिए नहीं छोड़ा, जिन्दगी सालों में नही, खुशी के लम्हों में जीना है, मरण तो अल्प विराम है, जीवन में पूर्ण विराम तो कुछ होता ही नहीं। बस समझ, यही अर्हत कहकर गया है।

सही कहा, उसकी खुशियाँ मेरे गम से कहीं ज्यादा हैं, जीवन है, आधा गिलास खाली मान लो या आधा गिलास भरा, ये तो नजरिया है।

आरक्षण

सरिता श्रीवास्तव

जोधपुर, भारत

कुछ समय पहले की बात है - एक परिवार ने बैंगलोर से दिल्ली जाने का विचार किया। बड़ी मुश्किल से उन्हें फ्लाइट में रिजर्वेशन मिला क्योंकि बच्चों की छुट्टियाँ चल रही थीं। वे घर से एयरपोर्ट के लिए निकले। उन्होंने अपने घर में लड्डू-गोपाल रखे हुए थे। बहुत विधि-विधान से सेवा करते थे ठाकुर जी की। बहुत सेवा-भाव था उनके मन में। वे नहीं चाहते थे कि उनको छोड़ कर जाएँ। उनकी बेटी जिद पर अड़ गई कि लड्डू-गोपाल को लेकर ही चलेंगे ।

कान्हा को ले कर वे एयरपोर्ट पहुँच गए। वे भगवान को हाथ में लिए थे। जब प्लेन में जाने लगे तो एयर होस्टेस से पूछा कि इनको ले जा सकते हैं? … तो वह हँसी और बोली,"इनको कौन रोक पाया है!" सब हँसने लगे।

सब लोग बैठ गए तब उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब अचानक एक एयर होस्टेस आई और बोली आपके बगल वाली सीट खाली है आप लड्डू गोपाल को वहाँ बिराजित कर दें। कहाँ इन दंपत्ति का आरक्षण बहुत मुश्किल से हुआ था और यहाँ प्रभु की सीट पहले से आरक्षित थी!

आस्था

राजेश अरोड़ा

श्री गंगा नगर, राजस्थान, भारत

गर्मियों के दिन थे। लू आग उगल रही थी। एक यात्री रास्ते में एक प्याऊ देख, जल पीने को ठहर गया। प्याऊ पर एक ब्राह्मण जल पिला रहा था। उसने बड़े आदर और प्रेम से उस यात्री को कटोरे में जल भरकर पीने के लिए दिया।

जल पीकर जब वह यात्री विश्राम करने लगा, तो वहीं बैठे एक व्यक्ति ने उससे पूछा,"क्या काम करते हो भाई?" वह बोला,"मोची हूँ, जूते बनाने का काम करता हूँ।" यह सुनकर वह क्रोध से भर गया और ब्राह्मण पर बिगड़ता हुआ बोला,"पंडित जी! आपने जिस व्यक्ति को कटोरे में जल पिलाया है, वह तो मोची है। आपने तो हमारा धर्म ही भ्रष्ट कर डाला।"

यह सुन ब्राह्मण मुस्कुराया और बोला,"मेरे भाई! मैंने तो एक प्यासे को जल पिलाया है न कि किसी मोची को। मेरा काम जल पिलाना है, किसी का व्यापार पूछना नहीं। व्यापार पूछना तो व्यापारियों का काम है। रही धर्म की बात। वह तो आस्था की बात है। जिस व्यक्ति की सत्य में, सेवा में, सत्कर्मों में, आत्मा में और परमात्मा में धारणा पक्की है, उसके धर्म को जल से भरा एक कटोरा नष्ट नहीं कर सकता।"

इंसानियत तो बचेगी

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

खुले पार्क में युवा मिशेल लोगों को योग और प्राणायाम सिखा रही थी, बड़ी तादाद में एकचित्त सब मग्न थे कि मिशेल पर पत्थर फिंकने लगे। धर्मानुयायियों ने भाड़े के लोगों से वहाँ योग सीख रहे लोगों की चटाइयाँ उठवाकर फिंकवा दीं। भाड़े के धर्मानुयायियों से मिशेल ने पूछा, आप किससे नाराज हैं? मुझसे या मेरे तरीके से? आप किसके प्रति सशंकित हैं? अपने धर्म के प्रति या दूसरे के धर्म के प्रति? अपने विस्तार के प्रति अनिश्चित हैं या दूसरे के विश्वास के प्रति? लोग चिल्लाए, योग हमारी पद्धति नहीं है, हमारे धर्म की रवायत नहीं है, दूसरे धर्म की जीवन पद्धति को अपना लेंगे तो हमारा धर्म नष्ट हो जाएगा। योग ईसाई धर्म के लोगों के लिए वर्जित है, ईसाई धर्म के लिए खतरा है, योग हिन्दुत्त्व का प्रतीक है, योग के नाम पर ईसाइयत से ही दूर जा रहे हैं। मिशेल शांत थी, जो जीवन शैली एक के लिए अच्छी हो सकती है, वह दूसरे के लिए हानिकारक कैसे हो सकती है। योग जीवन शैली है, धर्मातीत है, व्यक्ति धर्म से ऊपर है, ईसाइयत से दूर जाकर यदि इंसानियत के नजदीक आ रहे हैं तो ये घाटे का सौदा नहीं है। छोटी पहचान खोकर बड़ी पहचान मिल रही है तो भय कैसा? कोई भी धर्म इंसानियत से बड़ा कैसे हो सकता है। पत्थर फेंकने के लिए उठे हाथ नीचे गिर गए थे।

इज्जत

रशीद ग़ौरी

सोजत सिटी, राजस्थान, भारत

"बेटी! मैंनें सुना है कि तुम शहर में किसी लड़के के साथ लिव-इन-रिलेशन में रह रही हो?" माँ ने दो दिन की छुट्टी पर घर आई शहर में नौकरी करने वाली अपनी लाड़ली बेटी से पूछा।

"हाँ माँ...। लड़का डॉक्टर है। हम साथ ही रहते हैं। वह बहुत अच्छा इंसान है माँ। वह मुझसे जल्दी ही शादी करेगा।" बेटी ने खुशी से चहकते हुए सहज भाव के साथ अपने मन की बात माँ के सामने रख दी।

"अगर उसका मन बदल गया और शादी नहीं की तो?" माँ ने सजल नेत्रों से अंदेशा जाहिर किया।

"नहीं माँ! ऐसा नहीं होगा और यदि ऐसा हुआ तो मैं किसी दूसरे लड़के के साथ शादी कर लूँगी... नॉर्मल...।"

"बेटी! लड़की की इज्ज़त शीशे की तरह नाज़ुक होती है… जो एक बार...।"

आधुनिक और उन्मुक्त विचारधारा वाली नौकरी-पेशा बेटी के लिए माँ की बात कोई मायने नहीं रखती।

"क्या माँ तुम भी! लेक्चर देने बैठ गईं। अच्छे-भले मूड की ऐसी की तैसी कर दी...।"

इफ़्तार पार्टी

ओमप्रकाश गुप्ता

ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

फरीदा एक अरसे के बाद आज ईद की इफ़्तार पार्टी में आई हैं। हमेशा की तरह पार्टी में सभी बड़े सज-धजकर आए थे। फरीदा लड़कियों के पहनाव देखकर दंग रह गई। ऐसी बढ़िया-बढ़िया पोशाक कहाँ मिलती है?

"बेटा फातिमा! यह सूट तुम पे बड़ा फब रहा है। कहाँ मिला?"

"खालाजान! अँमाजान से।"

"और आलिया! तुमने से कहाँ से लिया अपना सूट?"

"आंटी! मैंने भी अँमाजान से लिया है।"

"और नदीमा! क्या तुम्हें भी अँमाजान से मिला?

"जी खाला।"

घर आकर फरीदा ने अपनी अम्मी को फोन लगाया।

"अम्माजान! आदाब। आप से आज एक शिकायत है। आज इफ़्तार पार्टी में लड़कियाँ सुन्दर-सुन्दर सूट पहनकर आई थीं। सब को उनकी अम्माजान से मिले थे। आप ने मुझे क्यों नहीं भेजा?"
"अरे वेबकूफ़, उनको सूट अम्माजान से नहीं, ऐमज़ान (Amazon) से मिले होंगे।"

इवेंट वाली शादी

प्रेमलता माहेश्वरी
लुधियाना, पंजाब, भारत

रामलाल के पिताजी का देहांत जब वह पन्द्रह साल का था, तभी हो गया। उसका छोटा भाई श्याम उस समय बारह साल का होगा। पिताजी ने मरते समय छोटे भाई का हाथ रामलाल के हाथ में थमाते हुए उसकी जिम्मेवारी निभाने का वचन लिया। माँ भी दो साल बाद परलोक सिधार गई। पिताजी अपने पीछे दो एकड़ जमीन छोड़ कर गए थे। रामलाल को अपनी पढ़ाई छोड़कर खेती बाड़ी में लगना पड़ा; पर उसने पक्का निश्चय कर लिया था कि मैं अपने छोटे भाई को जरूर पढ़ा लिखा कर बड़ा आदमी बनाऊँगा। उसने भाई को गाँव के स्कूल के बाद शहर में पढ़ने भेज दिया। वहाँ जाकर उसने इंजीनियरिंग पास की तथा वहीं पर बस गया। रामलाल खुश था कि चलो, छोटा भाई शहर में अच्छे-से सेटल हो गया है। अब तक श्याम के पास बंगला, गाड़ी, नौकर-चाकर सब ठाठ हो गए थे। रामलाल के भी दो बच्चे थे; पर गाँव में कम कमाई के साधन होने से साधारण- सा जीवन व्यतीत कर रहे थे। रामलाल के बच्चों की शादी में श्याम अपने परिवार के साथ दो दिन के लिए आया और वापस चला गया।

कुछ दिनों बाद श्याम ने अपने बेटे की शादी शहर में ही धूमधाम से करने का मन बनाया। उसने बड़े भाई को शादी का निमंत्रण भेजा। इवेंट वाली शादी में हर फंक्शन में पहनने के लिए एक स्पेशल कलर रखा गया था - जैसे महिलाओं को मेहंदी में हरा, हल्दी में पीला, मायरे में लाल, बरात में वाईन कलर की साड़ी और पुरुषों को मायरे में कुर्ता-पजामा, जैकेट, बारात में काला सूट आदि कार्ड के पिछले हिस्से में लिखा हुआ था। रामलाल कार्ड पढ़कर असमंजस में पड़ गया, यह क्या! इतने कपड़े हमारे पास कहाँ से आएँगे? हम पूरे परिवार के लिए इतने कपड़े नहीं खरीद सकते। उसने अपनी पत्नी से बात करी। वह भी व्यथित हो गयी; पर निरुत्तर थी। धीरे-धीरे शादी का समय निकट आ गया। शादी के दो दिन पहले रामलाल की पत्नी ने श्याम को फोन किया,“तुम्हारे भाई साहब को अचानक छाती में दर्द होने के कारण अस्पताल में दाखिल किया है; इसलिए हम लोग शादी में नहीं आ पाएँगे। जब तुम्हारे भाई साहब ठीक होंगे, तब हम सब आकर बहू-बेटे को आशीर्वाद देंगे?”

उधर शहर में छोटे के बेटे की इवेंट वाली शादी इकलौते बड़े भाई के परिवार के बिना ही बहुत धूमधाम से संपन्न हो गई।

ईर्ष्या

मंजू राय शर्मा
मुंबई, भारत

फ्लैट के सामने का बैडमिंटन ग्राउंड आज भी अंधकार में डूबा हुआ है। जादव जी उदास हैं। हो भी क्यों नहीं। वे बैडमिंटन ग्राउंड के हीरो जो ठहरे। फ्लैट का बाहरी बल्ब 2 दिनों से फ्यूज है। बिजली मिस्त्री को भी कॉल किया गया था; लेकिन पता नहीं वह क्यों नहीं आ रहा। टिंग ....टौंग ... "ज़रा देखिए, कौन घंटी बजा रहा है?" सुधा ने अपने पति वाधवा को किचन से आवाज देते हुए कहा। पतिदेव ने किचन से लकड़ी का स्टूल ले जाते हुए कहा,"बाहर बल्ब लगाने के लिए जाधव जी स्टूल माँग रहे हैं।"

किचन का कार्य समाप्त कर सुधा ने बाहर आकर देखा, जाधव जी एक हाथ में बल्ब और दूसरे में स्क्रू-ड्राईवर लिए छत की ओर निरीह निगाहों से देखते हुए वाधवा जी से कह रहे थे,"तार की जाली निकल जाती तो बल्ब लगाना आसान हो जाता। आप स्टूल पर चढ़कर जाली हटाकर बल्ब लगा दीजिए।"

"देखते नहीं... मेरा शरीर कितना भारी है। स्टूल टूट जाएगा। आप तो दुबले-पतले हैं और मुझ से लंबे भी। यह काम आप आसानी से कर सकते हैं।" जादव जी हर काम में अपने को बहुत काबिल समझते थे और लोगों को भी यही समझाते थे कि वे ऑल राउंडर हैं। उन्होंने जवाब नहीं दिया। दरअसल उन्हें डर लग रहा था कहीं करंट न मार दे। "मेरे पैर में दर्द है। स्टूल पर खड़ा नहीं हो पाऊँगा।" झूठ को सच साबित करने के लिए वे बार-बार पैर सहलाने लगे। "क्या मैं आप लोग की मदद करूँ?" सुधा की बात पर जादव जी ने उपेक्षित नजरों से देखते हुए कहा,"भाभी! रसोई घर की बात नहीं है जो आप...।" वाधवा ने अपनी पत्नी का पक्ष लेते हुए कहा,"सुधा इन कामों में एक्सपर्ट है।"

सुधा ने बिना देर किये स्टूल पर चढ़कर जाली हटा दी और फिर बल्ब लगाने का प्रयास करने लगी। वाधवा जी स्टूल पकड़कर खड़े थे और जादव जी टॉर्च का प्रकाश जाली पर फेंक रहे थे; लेकिन डर के मारे उनका मुख खुला ही रहा। सुधा ने कुछ ही मिनटों में बल्ब लगाकर उसके ऊपर पुनः जाली लगा दी। बैडमिंटन ग्राउंड रोशन हो गया। फ्लैट के लोगों से सुधा को बहुत शाबाशी मिली, जिसे देख-सुनकर जादव जी कबाब बन गए। उन्होंने बेशर्मी से जहर-वमन किया,"बल्ब थोड़ा टेढ़ा है।"

लोगों ने देखा, बल्ब तो बिल्कुल सही जगह पर है!

ईश्वर का विश्वास

ओमप्रकाश गुप्ता

ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

डॉ. विलियम जॉनसन कैंसर के जाने-माने वैज्ञानिक हैं। उनके शोधकार्य से कैंसर के इलाज के कई नये तरीके ईजाद हुए हैं। वे लगभग 50 वर्षों से हार्वर्ड मेडिकल कॉलेज में डीन (निदेशक) हैं। बयासी साल की उम्र में भी प्रातः सात बजे अपनी लैब पहुँच जाते हैं, और देर शाम तक काम में लगे रहते हैं। उनके साथी वैज्ञानिकों को आश्चर्य होता है कि डॉ. जॉनसन निवृत्त क्यों नहीं हो रहे! इस अवस्था तक पहुँचने पर आदमी आराम करता है, घूमता-फिरता है, नाती-पोतों को खिलाता है। सोचा, आज पूछ ही लेते हैं।

लंच ब्रेक पर कुछ इधर-उधर की बातों के बाद चर्चा आरंभ होती है।

“विलियम! आपने विज्ञान के लिए बहुत कुछ किया है। आप के शोधकार्य से कैंसर साइंस ने बहुत प्रगति की है, इस के लिए समाज सदा आप का ऋणी रहेगा।”

“जी, जोह्न ठीक ही कह रहे हैं। अब आप के आराम का समय है, घूमिए-फिरिए, नाती-पोतों से खेलिए, बहुत काम कर लिया आपने।”

डॉ. जॉनसन चुपचाप सुन रहे थे। उन्हें शांत देखकर डॉ. हेमरली बोलीं,“विलियम! कुछ तो कहिए।”

“निवृत्त होकर भी क्या करूँगा? घूमने-फिरने का मुझे शौक है नहीं, आज तक बोस्टन के बाहर नहीं गया। नाती-पोते भी अब टीनेजर हो गए। खाली बैठे समय काटे नहीं कटेगा।”

“आखिर कब तक काम करते रहेंगे? हमें आप की चिंता है।”

“पता नहीं। जब तक ईश्वर करवाएगा!”

ईश्वर! सुनकर सब आश्चर्यचकित हो गए। मेडिकल कॉलेज के अधिकांश वैज्ञानिक ईश्वर में आस्था नहीं रखते थे, क्योंकि उनका मानना है कि ईश्वर के अस्तित्व का ठोस वैज्ञानिक प्रमाण अभी तक नहीं मिला।

“आप को ईश्वर में विश्वास है?”

“मुझे ईश्वर में विश्वास है या नहीं इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। पर एक बात निश्चित है, ईश्वर का मुझ में ठोस विश्वास है, मैं उनका विश्वास तोड़ नहीं सकता।”

उधारी

हरिहर झा

मेलबर्न, आस्ट्रेलिया

रामलाल की एक खूबी है। खूबी कहो या सनक कहो; वे काम सही करते हैं; कारण गलत बताते हैं। जैसे कि प्रश्न हो कि आप मास्क क्यों पहनते हैं? वे कहेंगे, ताकि मित्रों से मन के भाव न बोल दूँ! बोल दूँ तो मित्र से लड़ाई हो जाएगी। ऐसी ही आदत के कारण सुरेश से उनका झगड़ा हो गया। सुरेश ने रामलाल की किसी बात का शाब्दिक अर्थ ले कर इतना बुरा माना कि हाथापाई की नौबत आ गई। पूरे शहर में दुश्मनी के किस्से मशहूर हो गए।

सुरेश की इस शहर में नई-नई नौकरी लगी थी। परिवार को अपने गाँव में छोड़ कर आया था। अकेला होने से वह अपने खान-पान का ध्यान बिल्कुल नहीं रखता था। जब हालत बहुत खराब हो गई तो रामलाल दुश्मनी भूल कर खुद उसे अस्पताल ले गया। उसे कोरोना था और आई.सी.यू. में भर्ती करना पड़ा। ऑक्सीजन का प्रबंध रामलाल ने कहीं से कर दिया। सुरेश अकेला था तो कोई उसका प्रबंध करे तो ही वह बच सकता था।

सुरेश का स्वास्थ्य ठीक होता गया। उसे पश्चात्ताप हुआ कि वह रामलाल से व्यर्थ झगड़ बैठा। यह कल्पना करके वह काँप उठा कि उसकी मदद के बिना वह आज जीवित अवस्था में न होता। बीवी- बच्चों से दूर उसकी अंतिम क्रिया भी अस्पताल के प्रबंध से हो जाती। वह अपने बच्चों का मुँह भी नहीं देख पाता।

जब पूरी तरह ठीक हो गया तो वह रामलाल से मिला। अपने पुराने झगड़े के लिए क्षमा माँगी और आगे बोला,"देख रामलाल! मुझे पता है तूने मेरे लिए दौड़-धूप भी की है और सिलेंडर पर, दवाओं पर बहुत खर्चा किया है। मैं तेरा कर्ज तो उतार नहीं सकता। इसपर जो भी खर्च हुआ; कितना हुआ यह भी मुझे पता नहीं, वह तो मुझे लौटाना ही चाहिए। कृपया खर्च का हिसाब मुझे जरूर दे दो। तैयार न हो तो बाद में देना।"

इस पर रामलाल बोला—"जा-जा बड़ा आया ऋण उतारने वाला; नहीं चाहिए मुझे एक पैसा भी। तू क्या समझता है, मैंने तेरी जान तेरे भले के लिए बचाई। यह तो कर्ज-वसूली का मामला है। तू याद कर कि चाय वाले के नुक्कड़ के पास तूने मुझसे बीस रुपए उधार लिये थे। यह मत समझना कि वे बीस रुपए मैं जाने दूँगा। अभी नहीं पर एक न एक दिन तुझसे वसूल कर के रहूँगा।"

सुरेश की आँखों से मित्र-प्रेम के झर-झर आँसू बह रहे थे।

उम्र से बड़ा दबाव

रेखा भाटिया

शार्लिट, नॉर्थ कैरोलाइना, यू.एस.ए.

स्कूल से लौटकर राहुल माँ की उँगली थामकर घर की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए माँ का हाथ खींचने लगा। थका होने की वजह से वह सीढ़ियों पर चढ़ने में लगने वाली अपनी ताकत को खर्च नहीं करना चाहता था। अभी ट्यूशन के बच्चे आ जाएँगे, माँ भी जल्दी-जल्दी उसे पूरी ताकत से सहारा देती ऊपर ले आई।

"अब तुम बड़े हो गए हो, सीढ़ियाँ खुद चढ़ जाया करो, और भी ताकतवर बन जाओगे, नहीं तो देश की सेवा कैसे करोगे, फाइटर पायलट कैसे बनोगे?"

"माँ! सुभाषचंद्र बोस ने भी फाइटर पायलट बनकर देश सेवा की थी?"

"अरे वाह! सुभाषचंद्र बोस के बारे में तुम्हें कैसे पता?"

"आज जी. के. की क्लास में टीचर ने पढ़ाया। वो कहते थे – 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।' उनके पास क्या खून की कमी थी, सबसे खून माँगते थे?"

"बुद्धू! खून माँगने का मतलब अभी तुम्हें समझाती हूँ, पहले फ्रूट खा लो। अभी सब बच्चे आते ही होंगे," माँ ने हँसते हुए कहा।

ट्यूशन के सभी छात्र जब आ गए, राहुल की माँ ने समझाना शुरू किया - देश के लिए लड़ते हुए दुश्मन की गोलियाँ सैनिकों को लग जाती हैं। कभी बम फटता है और सैनिक जख्मी हो जाते हैं। खून भी बहता है। जैसे अभी पुलवामा में आतंकवादियों ने बम फेंका, चालीस सैनिक मर गए, फिर भी सैनिकों को देश की रक्षा की खातिर खून देकर भी लड़ना पड़ता है, यानि जान की कुर्बानी देनी पड़ती है, खून बहाना पड़ता है। सुभाषचंद्र बोस भी देश के लोगों से यही कहते थे - आज़ादी पाने की खातिर तुम्हें देश के लिए जान की कुर्बानी भी देनी पड़े तो दो; लेकिन अंग्रेजों से लड़ो। इसीलिए वे कहते थे - तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।

"माँ! जब मैं बड़ा हो जाऊँगा और फाइटर पायलट बन जाऊँगा, तब मैं फाइटर प्लेन उड़ाकर मेरे सारे रस्सी-बम आतंकवादियों के ऊपर जाकर फोड़ दूँगा और सैनिकों की रक्षा करूँगा।" राहुल का चेहरा गर्व से चमक रहा था भविष्य की कल्पना में।

"राहुल! तू रस्सी अपने पास रख लेना और बम दुश्मन पर फेंक देना। रस्सी तो बाद में दुश्मन को पकड़कर बाँधने के काम आएगी।" अक्षय ने राहुल को आइडिया दिया।

माँ सोचने लगी,"पहली कक्षा के मासूम बच्चे, उम्र कितनी छोटी है इनकी! इनमें समझ ही कितनी होती है यह समझने के लिए कि किस तरह के बम, कैसे बम, किस तरह की रस्सी आतंकवादियों पर इस्तेमाल होती है? हे भगवान! खून, बम, आतंकवाद! यह कैसा ज़माना आ गया है!"

उसकी दुआ

कोमल वाधवानी 'प्रेरणा'
उज्जैन, म. प्र., भारत

उस ठिगनी और काली-मोटी शांताबाई की शक्ल-सूरत किसी को भी अपनी ओर आकर्षित नहीं करती थी; परंतु उसकी बोली बहुत मीठी थी। अक़्सर वह दोपहर को दरवाज़े पर आकर दस्तक देती। उसके पास बरतनों का टोकरा रहता और कभी-कभार उसके सिर पर पुराने कपड़ों की पोटली नज़र आती।

"तुम्हारे यहाँ का ठंडा जल मुझे खींचता है, इसलिए चली आती हूँ।" ऊपर दूसरी मंजिल पर पहुँचते ही वह बोली। शांता बाई ठंडा पानी पीती, कुछ देर सुस्ताती और दुआ देकर चल देती। एक दिन उसकी आवाज़ सुनकर मैंने कहा,"शांताबाई! मेरे पास पुराने कपड़े नहीं हैं। रोज़-रोज़ कहाँ से आएँगे?" फिर भी वह मेरी बात को अनसुना कर सीढ़ियाँ चढ़ती रही।

उसकी चुप्पी को तोड़ते हुए मैंने पूछा,"क्या बात है? तुम हमेशा की तरह चहक नहीं रहीं? तुम्हारी आवाज़ भी डूबी हुई है।"

उसने इशारे से मुझसे पानी माँगा और गहरी श्वास लेते हुए बोली,"बाई सा! मैं तो सिरफ आपसे मिलने आई हूँ। मेरे आदमी का काम-धंधा यहाँ मंदा हो गया है। औलाद भी भगवान ने नहीं दी।" पल्लू से आँखें पोंछते-पोंछते फिर भरे गले से कहने लगी,"इसलिए सोचा है, राजस्थान छोड़ इंदौर चले जाएँ। कम-से-कम अपने रिश्तेदारों के बीच तो रहेंगे और फिर मरने पर कोई रोनेवाला तो होगा।"

अचानक एक बरतन उसने मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा,"ये ले लो।" मैंने कहा,"मेरे पास पुराने कपड़े नहीं हैं।"

"मैंने कब आपसे कपड़े माँगे? यह तो मैं उपहार स्वरूप दे रही हूँ। तुम्हारी शादी के समय मैं यहाँ थोड़े ना रहूँगी!"

"शांताबाई! तुम्हें पता है न कि मेरी आँखों की जो बीमारी है, वह लाइलाज है, इसलिए शादी का सोच भी नहीं सकती।" मैंने कहा।

"देखना, तुम्हारी शादी जरूर होगी। मुझे विश्वास है।" कहते हुए उसका चेहरा एक अपूर्व चमक से दमक उठा। बहुत मना करने के बावजूद भी शांताबाई नहीं मानी और बरतन मेरे हाथ में पकड़ाकर आँसूभरी नज़रों से मुझे देखती रही।

और...उसके कई वर्षों बाद अकस्मात मेरा विवाह हो गया। शायद यह उसी की दुआ का प्रत्यक्ष प्रमाण था। मैंने कई बार उसकी खोजबीन करने की कोशिश की। मैंने अब छह दशक पार कर लिए हैं। शांताबाई भी जीवित होगी तो अवश्य पचासी-नब्बे वर्ष के पड़ाव पर होगी।
काश! वह मुझे एक बार मिल जाए। सहेजा हुआ वह बरतन मैं उसे दिखाना चाहती हूँ।

उसके हिस्से की रोटी

रीता सिंह 'सर्जना'

तेजपुर, असम, भारत

रानी आम सहायिका की तरह नहीं है। रमण और मीरा दोनों ऑफिस में नौकरी करते हैं। इसलिए एक दिन ऑफिस के सहयोगी के कहने पर रानी काम करने लगी थी। पति शराब का आदी है। कुछ कमाता तो नहीं, ऊपर से उसकी पगार पर भी नजर रखता है। दो बच्चों की माँ रानी बड़ी मुश्किल से अपने बच्चों का पेट भर पाती है। एक-एक रोटी के लिए वह संघर्ष करती है। रानी जब से मीरा के पास आई है, पता नहीं क्यों उसके मृदु व्यवहार ने मीरा का दिल जीत लिया था। मीरा जब भी उसे खाने के लिए रोटी देती, वह थोड़ा खाकर चुपके से आधा आँचल में बाँध लेती थी। हमेशा की तरह आज भी वह सफाई के बाद रोटी बनाने के लिए आटा निकालने लगी, तभी अचानक सुबह का दृश्य उसकी आँखों के सामने उभर कर आया। उसके छोटे बेटे मन्नु ने आँचल पकड़ कर कहा था,"माँ रोटी दो न!" कहाँ से देती वह उसे रोटी! एक रुपये का चॉकलेट उसके हाथ में थमाकर वह तेजी से घर से निकल गई थी। काम खत्म कर वह जैसे ही जाने लगी मीरा की आवाज से वह ठिठक कर रुक गई,"यह क्या छुपाकर ले जा रही हो रानी?"

"कुछ भी तो नहीं दीदी।"

"झूठ क्यों बोल रही हो, मैंने अभी तुम्हें आँचल में कुछ छुपाते हुए देखा है," कहती हुई उसने आँचल की ओर इशारा किया। वह सकपका गई, जैसे आज उसकी चोरी पकड़ी गई हो। उसने दुःखी मन से आँचल से एक रोटी दिखाते हुए कहा,"दीदी मन्नु के लिए ले जा रही थी। उसकी भूख मुझसे देखी नहीं जाती।"

मीरा से उसकी घर की हालत छुपी नहीं थी। इसलिए उसने बस इतना कहा,"सुनो! अब से तुम चार रोटी ज्यादा ही बना लिया करना, ताकि उसके हिस्से की रोटी तुम्हें छुपाकर ले जानी न पड़े।"

एक नई सोच

कविता अग्रवाल

सूरत, गुजरात, भारत

रवि ने ऑफिस में कदम रखा और चपरासी को जल्दी से शर्मा जी को बुलाने भेजा। शर्मा जी सुनते ही दौड़ते हुए आए और बोले,"सर! गुड मॉर्निंग, आप कुछ परेशान लग रहे हैं।" रवि ने शांत स्वर से कहा,"शर्मा जी! मैं अपनी नौकरी से इस्तीफा दे रहा हूँ और अपनी पत्नी के साथ उसके मायके जा रहा हूँ, अब वहीं रहूँगा और वहाँ कोई नौकरी भी देख रहा हूँ।"

सुनते ही शर्मा जी अचरज भरे स्वर में बोले,"आपकी पत्नी तो एक छोटे से शहर की है और आप यहाँ दिल्ली में एक मल्टीनेशनल कंपनी के डायरेक्टर हैं, आप ये फैसला सोच समझ के ले रहे हैं न? फिर घर जँवाई को समाज अच्छी नज़रों से नहीं देखता।" रवि ने सीधा सा जवाब दिया,"जी, शर्मा जी! बहुत सोच-समझ कर लिया है।"

कॉलेज का अंतिम साल था, जब रवि की मुलाकात रश्मि से हुई। दोनों एक गाँव में साक्षरता-अभियान के प्रचार-प्रसार के लिए गए थे। इस प्रोजेक्ट को करते हुए दोनो की दोस्ती प्यार में बदल गई। अब रश्मि के माता-पिता रिटायर हो चुके थे और गाँव में ही अपने पुश्तैनी घर में रह रहे थे। रश्मि उनकी इकलौती संतान है। पेंशन से दोनो का गुजारा चल जाता है। अचानक मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा और रश्मि के पिता जी को आधे शरीर में पैरालिसिस हो गया। रवि और रश्मि को समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या करें।

रवि की माता जी ने उनकी परेशानी समझ ली और कहा कि तुम कुछ समय अपनी पत्नी के साथ उसके मायके रहो तो हमें कोई आपत्ति न होगी। हो सके तो तुम और रश्मि वहीं कोई नौकरी खोज लो। रश्मि को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए, क्योंकि बेटी-बेटा में कोई अंतर नहीं है। माँ की बात सुनकर रवि भावुक हो उठा और बोला,"हाँ माँ! तुमने सही कहा, मैं ऐसा ही करूँगा।" रवि ने नौकरी से इस्तीफा देने का मन बना लिया।

रवि ने रश्मि को सारी बात बताई और माँ का सुझाव भी सुनाया। रश्मि का मन अपनी सासू-माँ के प्रति श्रद्धा से भर उठा। रश्मि ने जब अपनी माता जी को यह बात बताई तो वे भी खुश हो गईं और बोली कि तुमने आज ये साबित कर दिया कि बेटियाँ भी माता-पिता के बुढ़ापे का सहारा बन सकती हैं।

एजेंडा
आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

"अच्छा हुआ अलका तुम आ गई समय से। मुझे आज ज़रा देर हो गई।" संस्था के कार्यालय में प्रवेश करते ही संगीता बोली।

"कहाँ रह गई थीं तुम? घरवालों से आतंकित महिलाओं का ताँता लगा है। अकेले सँभालना कठिन हो रहा है," अलका ने पूछा।

"घर में काम-काज भी बहुत था। पति की, बेटे की, सबकी फरमाइश का खाना बनाना और हरेक के कपड़े तैयार करना... घड़ी पर नज़र ही नहीं गई।" संगीता झेंपी।

"एक को तुम बुलाओ, एक को मैं। इन स्त्रियों की मदद करनी है पहले तो।" अलका ने निर्देश दिया।

"आज का एजेंडा क्या है? महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए आज क्या कदम उठाने हैं? यह बताओ तो मैं तुम्हारा हाथ बँटाऊँ।"

"अर्जी बनानी है सबकी। तुम संध्या के लिए अर्जी बनाओ। इनके लिए अस्पताल में अप्लाई करना है। पति करने नहीं दे रहा कि कहीं यह स्वावलम्बी होकर उसे छोड़ न दे।" अलका ने भूमिका बताई।

"ओह! डॉक्टर बहू को घर में बिठा रखा है और उसे चूल्हे-चौके में झोंक रखा है। पति कपड़े धुलवा रहा है। बताओ! कैसे आगे बढ़ेंगीं स्त्रियाँ?" आवेदन फ़ार्म भरते हुए संगीता बिगड़ी।

संध्या ने हाथ जोड़ दिए।

"नौकरी लग जाए तो छोड़ ही देना ऐसे स्वार्थी पति और ससुराल को।" अलका मुस्कराई।

"अगली महिला को भेजो।" अलका ने चपरासी को आवाज़ दी।

"जी कहिए, आपकी कैसे मदद करें?" अगली स्त्री को बिठाते हुए अलका ने पूछा।

"मैं प्राध्यापक के लिए आवेदन करना चाहती हूँ।" वह बोली।

"अनुभव?"

"5 साल का। शादी से पहले भी काम करती थी।" वह बोली।

"अब कौन रोकता है?" अलका ने पूछा।

"पति को मेरे ही हाथ का खाना चाहिए और मेरे ही हाथ की धुली हुई और इस्त्री करी हुई कमीज़ तो आवेदन करने का समय नहीं मिलता।" वह बोली।

"नाम क्या है तुम्हारा?"

"संगीता जी की बहू।"

कंप्लीट फैमिली

नमिता सिंह 'आराधना'

अहमदाबाद, भारत

"यार मुकेश! तूने बताया नहीं कि तूने यह पार्टी किस खुशी में दी है?"

"अरे मैंने बताया तो था रोहन कि मेरी फैमिली कंप्लीट होने की खुशी में मैं यह पार्टी दे रहा हूँ।"

"पर तेरी फैमिली तो छः महीने पहले ही तेरे बेटे की पैदाइश के साथ कंप्लीट हो गई थी।"

"अरे नहीं यार मुकेश! तुझे तो पता ही है कि मैं अनाथालय में पला बढ़ा हूँ और नेहा भी अनाथालय से ही है। मैंने जानबूझकर ऐसी लड़की से शादी की थी ताकि वह मेरी मानसिक स्थिति को अच्छी तरह समझ सके। अब हम दोनों की कोई फैमिली तो थी नहीं। बेटे के होने के बाद भी सब कुछ बहुत अधूरा सा लग रहा था। किसी बड़े का वरद्-हस्त हमारे सर पर नहीं था और बेटा भी बड़ा होकर दादा-दादी किसे कहता? फिर माता-पिता की कमी तो माता-पिता ही पूरी कर सकते हैं। इसलिए मैं वृद्धाश्रम जाकर एक वृद्ध दंपति को अपना माता-पिता बनाकर घर ले आया। बेहद ममतामयी माँ और स्नेह करने वाले पिता का साया अब हमारे सर पर है। उनका नालायक बेटा उन्हें बोझ समझ कर वृद्धाश्रम में छोड़ गया था।" मुकेश ने रोहन को नाश्ते की प्लेट पकड़ाते हुए कहा। 'नालायक बेटा' सुनकर रोहन के गले में कुछ अटका।

मुकेश फिर कहने लगा,"यार रोहन, मैंने तुम्हारे माता-पिता को कभी नहीं देखा। कहाँ हैं वे?"

"वे...वे तो गाँव में रहते हैं।"

"मेरी मानो तो तुम भी उन्हें अपने पास बुला लो। तुम्हारी भी फैमिली कंप्लीट हो जाएगी।" मुकेश ने हँसते हुए कहा।

"चाहता तो मैं भी यही था। लेकिन वे गाँव से आना ही नहीं चाहते।" फिर जल्दी से बात बदलते हुए पूछा,"मुकेश, तेरे नए माता-पिता कहीं नजर नहीं आ रहे हैं?"

"तू नाश्ता कर। मैं उन्हें अभी लेकर आता हूँ।" कहकर रोहन घर के अंदर गया। चंद पलों में ही बाहर आया और ऐलान किया,"अब आप सब मिलिए मेरे माता-पिता से।"

पर्दे के पीछे से एक वृद्ध दंपत्ति ने मुस्कुराते हुए कमरे में प्रवेश किया।

मुकेश के नए माता-पिता को देखते ही रोहन के चेहरे का रंग उड़ गया। उसके हाथ काँपे और नाश्ते की प्लेट जमीन पर।

कच्चा लालच

चित्रा गुप्ता
सिंगापुर

“तीन दिन से रसोई का नल टपक रहा है। प्लंबर के भी इतने नखरे हो गए हैं कि एक वॉशर बदलने के 500 रुपये माँग रहा है। कोई काम ही करने के लिए तैयार नहीं है।” सुनीता पति के सामने बड़बड़ा रही थी। “500 रुपये दे दो नल की टप-टप की इरिटेटिंग आवाज तो बंद हो जाएगी। दो बाल्टी भरने के बाद भी पानी बह रहा है,” पतिदेव ने झुँझला कर कहा।

“पाँच मिनट का काम है, 500 क्यों दूँ? वॉशर भी मुश्किल से 20-25 रुपये का आता होगा।” सुनीता ने पति को चाय पकड़ाते हुए कहा।

“जो मर्जी करो,” यह कहकर पति चाय में बिस्कुट डुबोकर खाने लगे। “आज एक और प्लंबर बुलाया है, देखो कितने लेगा,” सुनीता ने कहा। पतिदेव ने कोई जवाब नहीं दिया। जून की भयंकर गर्मी थी। प्लंबर आया, पसीने से उसकी कमीज भीगी थी। नल देखकर बोला 500 रुपये लूँगा। “क्या यूनियन बना रखी है? तीन दिन से सबने 500 की रट लगा रखी है। भैया 10 मिनट का काम है, 500 रुपये किस बात के?” सुनीता ने अकड़ते हुए कहा।

“दीदी! जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ सुबह चार बजे से आठ तक पानी आता है और शाम को पाँच से आठ तक। सुबह से अँधेरे में लाइन में लगकर चार बाल्टी पानी मिलता है और चार बाल्टी शाम को। हमारा पाँच जनों का परिवार है। आपके यहाँ तीन दिन से पानी नाली में बह रहा है। पानी का बिल ज्यादा आएगा, वहाँ तो आप मोलभाव नहीं करेंगे; पर मुझसे जरूर करेंगे।”

“भैया दस मिनट का काम है 400 में कर दो,” सुनीता इस बार नम्रता से बोली।

“कोई बात नहीं दीदी नल ठीक करके मैं चला जाऊँगा। आप मुझे कुछ भी मत देना।” गर्मी के कारण उसने अपनी बोतल से पानी निकाल कर पिया। नल ठीक हो गया, सुनीता उसे 400 देने लगी। “दीदी! पानी रुक गया, यही मेरी मजदूरी है।” प्लंबर यह कहकर अपना सामान समेट कर चल दिया। मुफ़्त में ही काम हो गया, यह सोचकर सुनीता अपनी चतुरता पर बहुत प्रसन्न हो रही थी। दोपहर को भोजन के बाद जब पानी लेने रसोईघर में गई तो अचानक उसका मन दुखी हो गया। प्लंबर को पैसे ना देकर अच्छा नहीं किया। उसने प्लंबर को फोन किया; लेकिन प्लंबर ने फोन नहीं उठाया। उससे पानी नहीं पिया गया।

कथनी और करनी

दीप्ति मिश्रा
वापी, गुजरात, भारत

"लो! अब ऐसा क्या हो गया जो सबेरे-सबेरे इतना शोर मच रहा है," कहते हुए नीला ने अपने कमरे की खिड़की का पर्दा हटाकर झाँका। सामने वाले घर में रहने वाले तिवारी जी के चबूतरे पर लगा नीम का पेड़ काटा जा रहा था और मोहल्ले के सारे बच्चे शोर मचा रहे थे। तिवारी जी बच्चों को डाँट रहे थे। नीला भी उत्सुकतावश बाहर निकल आई तो बच्चों ने उसे ही चारों ओर से घेर लिया।

वह अचकचा कर बोल पड़ी,"क्या बात है?"

"देखिए न आँटी जी! ये तिवारी अंकल पेड़ कटवा रहे हैं, वह देखिए, उस सामने वाली डाल पर कोटर से झाँकते तोते के छोटे-छोटे बच्चे कितने घबड़ा रहे हैं बेचारे, इनके माँ-बाप भी कहीं दाना लेने गए हैं शायद और उधर देखिए उन डालियों की तरफ, जहाँ चिड़ियों के घोंसले बने हैं। पेड़ काटने से तो सब उजड़ जाएँगे, घर से बेघर होकर कहाँ रहेंगे ये!"

बच्चों के कोमल संवेदनशील हृदयों की चिंतित व्याकुलता अब अधीरता की सीमा पार कर रही थी जिससे प्रभावित हो मैं तिवारी जी से मुख़ातिब हुई और द्रवित स्वर में बोली,"बच्चे बात तो सही कह रहे हैं, आप फालतू में पेड़ क्यों कटवा रहे हैं? कितने वर्षों में एक पौधा वृक्ष बन कर पक्षियों का आश्रय-स्थल और मनुष्यों के लिए छाँव, प्राणवायुदायी और आवश्यकता पूर्ति के लिए ईंधन आदि बनता है और आप हैं कि इतनी निर्ममतापूर्वक पेड़ कटवाए जा रहे हैं, रोकते क्यों नहीं मजदूरों को!"

तिवारी जी निर्लिप्त भाव से बोले,"अब क्या करें इतना बड़ा पेड़ हो गया है, दिन भर पत्ते गिरते हैं, पक्षियों की बीट से पूरा चबूतरा गंदा होता है, कितना भी साफ करो गंदगी बनी रहती है, ऊपर से सबेरे से ही पक्षियों के शोरगुल से नींद अलग खराब होती है। बहुत हो गया अब तो ये जी का जंजाल पेड़ कट कर ही रहेगा आज।"

मैं उनकी हृदयहीनता पर आश्चर्यचकित थी। यही वो तिवारी जी हैं, जो पर्यावरण दिवस पर बढ़-चढ़ कर कॉलोनीवासियों के सामने अपने नीम के पेड़ का गुणगान करते हुए वृक्षों के संरक्षण में अपने योगदान की महिमा बखान कर रहे थे।

कन्या पूजन

मीरा सिंह 'मीरा'
डुमराँव, बिहार, भारत

आठ वर्षीय फुलवा का मन ख़ुशी से बल्लियों उछल रहा था। सेठानी की कोठी पर कन्या पूजन था। एक लड़की कम हो रही थी। इसलिए फुलवा को ठीक से नहा धोकर आने के लिए कहा गया था। तरह-तरह के पकवान, मिठाइयाँ-- खोईंछा वाले रुपये उसकी मासूम आँखों में तैर रहे थे। अगल-बगल के दो अन्य घरों से भी उसका बुलावा आया था। उसकी अम्मा सेठानी के घर काम करती थी। काम पर जाते-जाते कह गई,"पहले घर का चूल्हा-चौका निबटा लेना। मंदिर का घंटा जब बजेगा, आ जाना। अभी मेरे साथ जाकर क्या करेगी? सेठानी तुझसे भी ऊल-जलूल काम करवाने लगेगी, अपना कपड़ा गंदा करेगी सो अलग।"

वह फुर्ती से चूल्हा-चौका निपटाने लगी, लग रहा था पाँव में पहिया लग गया। काम सलटाने के बाद जल्दी से नहा-धोकर सेठानी की बेटी वाली पुरानी फ्रॉक पहन कर तैयार हो गई। चौखट पर बैठी सोच रही थी "काश कन्या पूजन रोज होता, कितना मजा आता। सेठानी रोज मेरे पाँव धोती, अल्ता से पैर रंगती, पूजा करती, खाने को स्वादिष्ट भोजन देती, मुझे मत्था टेकती और खोईंछा ... आह, सच में बहुत मजा आता।" तभी मंदिर का घंटा बजा और वह नंगे पाँव हिरनी जैसी कुलांचें भरती अपनी मंजिल की ओर लपकी।

कर्त्तव्य और धर्म

रेखा सक्सेना
भोपाल, भारत

बमों के धमाकों से आकाश काला हो रहा था। ऊपर धधकता सूरज और नीचे रेगिस्तानी धरती पर आग उगलते बमों और मिसाइलों के निशाने पर दोनो देशों के सैनिक ठिकाने...!

एक धमाका हुआ और वह उछलकर दूर जा गिरा। शरीर के कितने अंग बचे यह तो अंदाज नहीं लगा पाया; किंतु होश में था। उठने की कोशिश की; किन्तु उठ नहीं पाया। उसे जोर की प्यास महसूस हुई। हलक जैसे सूखा जा रहा हो। पीठ पर लदे बैग को टटोला, सही सलामत था। पानी की बोतल में दो-चार घूँट पानी ही बचा था।

बोतल को सूखे होठों से लगाने ही जा रहा था कि पानी...पानी की घुटी-घुटी सी आवाज सुनाई दी उसे। पानी पीते उसके हाथ रुक गए। गर्दन घुमाकर देखा, कुछ ही दूरी पर एक घायल सैनिक पड़ा था। वर्दी से पहचाना, दुश्मन देश का था।

उसने पुनः बोतल मुँह से लगानी चाही, फिर से वही डूबती पुकार पानी…पानी। उसने बोतल को देखा, दो-चार घूँट पानी, उसका सूखता गला भी पानी माँग रहा था। पानी…पानी की करूण पुकार उसके कानों में हथौड़े की तरह बज रही थी, वह पानी नहीं पी सका। किसी तरह सरक कर वह उस घायल सैनिक के पास पहुँचा।

"ले भाई पानी पी ले" डूबती आँखों और टूटती साँसों के साथ उस घायल सैनिक ने देखा, सामने दुश्मन देश का सैनिक पानी की बोतल उसे दे रहा था।

"तुम तो दुश्मन हो, मुझे मारने आये थे, मुझे पानी क्यों दे रहे हो?"

वह बोला,"हाँ मैं तुम्हारे दुश्मन देश का सैनिक हूँ। तुम्हें मारना मेरा कर्तव्य था; लेकिन इस समय तुम एक घायल निस्सहाय इंसान हो और पानी के लिए तड़प रहे हो। तुम्हें पानी पिलाना मेरा धर्म है, इंसानियत का धर्म!"

दूसरे सैनिक ने बोतल लेकर होठों से लगा ली। शुक्रिया कहने के लिए उसने गर्दन घुमाई, उसे पानी पिलाने वाला सैनिक एक ओर लुढ़क चुका था। दुश्मन देश के सैनिक के हाथ सैल्यूट की मुद्रा में आ गए, अपने दुश्मन सैनिक को सलामी देने के लिए।

कर्त्तव्य बोध

अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
पटना, भारत

शंभू सिंह अमरौरी गाँव के मुखिया बन गये। आज उनके पाँव जमीं पर नहीं थे, वे बार-बार मूँछों पर ताव देकर मुस्करा रहे थे। अपनी सफलता और चालाकी के लिए खुद ही खुद को शाबाशी दे रहे थे। कैसे उन्होंने बुधिया की झोपड़ी में आग लगवायी फिर स्वयं अपने कामगारों के साथ आग बुझाने, सांत्वना देने जा पहुँचे, झोपड़ी में आग में झुलस रहे उसके बच्चों को बाहर निकलवाया, अपनी गाड़ी से हॉस्पिटल भिजवाया, इलाज के पैसे दिए। अब तो पूरा गाँव उनका भक्त हो गया है! जहाँ लोग उन्हें देखकर मुँह घुमा लेते थे, थूक देते थे, उनके मरने के लिए बद्दुआ देते थे, आज जयकार कर रहे हैं...।

इन दिनों उनकी हालत खस्ता हो चली थी, एक तो बगल के गाँव की दुश्मनी, दूसरी उनकी निर्दयता ने उनके प्रति लोगों के दिल पत्थर के कर दिये थे। जब उनकी हवेली में बगल के गाँव के लठैत घुस कर डकैती कर रहे थे, तो लाख चीखने-चिल्लाने पर भी कोई बचाने नहीं आया, लाखों की सम्पत्ति लुट गयी। उसी वक्त उन्होंने चुनाव जीत कर मुखिया बनने तथा गाँव की प्रगति के लिए सरकार से मिलने वाले करोड़ों रुपये हजम कर जाने की कसम खायी थी। गाँव के घरों में शौचालय बनवाने के नाम पर प्रत्येक घर के लिए 25-25 हजार रुपये की मंजूरी करवायी थी। खेती के लिए ट्रैक्टर और पम्पिंग सेट के लिए भी करोड़ों रुपयों की मंजूरी मिली पड़ी थी .. मुखिया की कुर्सी पर बैठने के बाद आज पहली बार उन्हें गाँव वालों को उक्त संसाधनों के लिए पैसे बाँटने थे ... वे फूले नहीं समा रहे थे। अँगूठे लगवा कर थोड़े-थोड़े पैसे देने और बाकी हजम कर जाने की उन्होंने जुगत लगा ली थी...

सबसे पहले बुधिया आया उसके मकान निर्माण के लिए लाखों रुपये आये थे, मगर पच्चीस हजार मंजूरी बताकर बाकी हड़प लेने को सोचा था...मगर कुर्सी पर बैठकर जैसे ही उन्होंने कलम उठायी, हृदय धड़क उठा, आत्मा में हलचल सी मच गयी, लगा कि कोई कह रहा है कि यह पद कितने विश्वास का है...मुखिया भगवान का प्रतिनिधि होता है, उसका तन-मन-धन जन कल्याण के लिए होता है। छीः वे गाँव वालों के हिस्से के पैसे चुराएँगे? अब गाँव वालों का उन पर कितना विश्वास जम गया है, वे उन्हें भगवान की तरह मानने लगे हैं...! नहीं .. नहीं वे उनके साथ बेईमानी नहीं कर सकते ..वे. उनके विश्वास की लाज अवश्य रखेंगे...गाँव वालों के हित के लिए हर संभव प्रयास करेंगे.. उन्हें नफरत नहीं, गाँव वालों के हृदय में स्थान चाहिए...कुर्सी के ...कर्तव्य बोध से उनका चेहरा दीप्त हो उठा..!

कलेजे का टुकड़ा

प्रीति अग्रवाल
अहमदाबाद, भारत

"हैलो मम्मी! मम्मी एक गुड न्यूज़ है।"

"हाँ मेरी गुड़िया! आज तेरी आवाज में अलग ही खनक है।"

"मम्मी! मैं अपनी कंपनी की सीईओ बन गई हूँ।"

सुनते ही रीना खुशी से उछल पड़ी। पलक! उसकी प्यारी इकलौती बेटी!

"अरे वाह! बहुत-बहुत बधाई मेरी बच्ची! तुम जिंदगी में हमेशा बहुत तरक्की करो, बहुत नाम कमाओ और हमेशा खुश रहो," रीना का गला भर आया।

"यह क्या मम्मी मैं तुम्हें गुड न्यूज़ सुना रही हूँ और तुम रोने लगीं," पलक भी भावुक हो गई।

"अच्छा मम्मी! पापा कहाँ हैं?"

"वे अभी ऑफिस में हैं। तू कब आ रही है यहाँ? सालभर हो गया तुझसे मिले हुए," रीना ने कहा।

"आज ही प्रमोशन का आर्डर आया है, अभी छुट्टी कैसे लूँ? तुम और पापा ही यहाँ आ जाओ ना!"

"अरे; पर तेरे पापा को ऑफिस से कहाँ फुर्सत है!"

"शाम को पापा से बात करती हूँ।"

फोन रखते ही रीना ख़यालों में खो गई। आज भी वो दिन याद करके वह सिहर उठती है। वो घटनाक्रम उसके मन में चलचित्र की भाँति घूमने लगा। रोज की तरह उस दिन भी वह मुँह अँधेरे घूमने निकली थी। अपने ही ख़यालों में मस्त, गुनगुनाती हुई, कि अचानक ही किसी के रोने की आवाज आई। उसने इधर-उधर देखा; पर कोई नहीं दिखा। उसे लगा कि शायद कुछ गलतफहमी हुई है। थोड़ा ही आगे बढ़ी कि फिर जोर से रोने की आवाज आई, साथ ही कुछ कुत्तों के भौंकने की भी। आवाज की दिशा में पहुँची तो वहाँ का दृश्य देखकर आश्चर्य और भय के साथ स्तब्ध उसके रोंगटे खड़े हो गए। एक नवजात शिशु को कुत्ते अपने मुँह से पकड़ने कोशिश कर रहे थे। उसने किसी तरह कुत्तों को भगाया और उस बच्चे को गोद में लिया। बच्ची रोए जा रही थी। उसे लगा मानो वह बच्ची उससे पूछ रही है कि मेरा क्या दोष है? मुझे क्यों कूड़े के ढेर में मरने के लिए फेंक दिया? रीना ने उसे अपने सीने से लगा लिया। उसके प्यार, देखभाल और प्रार्थना से बच्ची को नया जीवन मिला।

दरवाजे की घंटी की आवाज सुनकर रीना वर्तमान में लौट आई। उस मासूम बच्ची को आखिर एक बहुत अच्छा जीवन मिल गया था। उसके चेहरे पर संतोष भरी मुस्कान आ गई। उसके कलेजे का टुकड़ा, वही बच्ची पलक एक बहुराष्ट्रीय कंपनी की सीईओ बन गई थी।

कारण

हरिहर झा

मेलबर्न, आस्ट्रेलिया

मौसी पूरी तरह पागल हो चुकी थी। बच्चों को देखते ही मारने दौड़ती थी। कोई उसके चंगुल में फँस गया तो खैर नहीं। वस्त्रों की सुध नहीं। मैं इतना छोटा था कि पागलपन क्या होता है, मुझे मालूम नहीं था। मैं इस बात को मानता नहीं था कि बिना कारण मौसी किसी भी बच्चे को मारती हैं; पर एक बार ऐसा मैंने अपनी आँखों से देख लिया। फिर मुझे सभी पागलों से डर लगने लगा।

मेरी जिज्ञासा आज भी कायम है मौसी पागल कैसे और क्यों हुई? सुना है घर वालों ने मौसी के इलाज में कुछ भी नहीं छोड़ा, पूजा- पाठ, जंतर-मंतर करके भी देख लिया। एक बार मैंने मौसी के बड़े भाई कमल कुमार से हिम्मत करके पूछ ही लिया कि मौसी पागल कैसे हुई? कारण क्या था?

"हमारे और उसके करम ही खोटे थे। अब इसे पालने के अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं।"

तभी राम प्रसाद जी गुस्से में लाल पीले होते हुए आए,"आज फिर मौसी ने मेरे बेटे को पीटा। देखो मिस्टर! हमारे बच्चे तुम्हारी बहन की मार खाने के लिए नहीं है।" कमल कुमार ने अनुनय विनय की "अब क्या करें? वह पागल है। उसे बाँध कर तो रखा नहीं जा सकता।"

कमल कुमार जी भड़क गये "आप को जो करना हो करो। हमारा बच्चा मार खाने के लिए नहीं है।" फिर बोले "उस समय आपकी बुद्धि कहाँ गई थी जब इसे कमरे में ले जाकर पीटा था और फिर बाँध दिया था। तीन दिन भूखे और बँधे हुए रह कर उसकी हालत पागल जैसी हो गई। अब भुगतो। उस बेचारी का कसूर क्या था?"

"देखिये, राम प्रसाद जी हमारे घरेलू मामलों में मत पड़िये। हम आपकी इज्जत करते हैं।"

"अरे, भाड़ में जाए ऐसी इज्जत। मौसी का गुनाह क्या था? उसने एक इंजीनियर से प्रेम किया था यही न! आपको क्या तकलीफ थी? यही न कि वह नीची जाति वाला था। वह तो उसके साथ भागने वाली थी; पर एक बच्चे ने भोलेपन में बात उजागर कर दी तो मौसी पकड़ ली गई। पर याद रखो वह भोला बच्चा हमारा नहीं था फिर हमारा बच्चा क्यों मार खाए?"

कमल कुमार जी नत भाव से सब सुन रहे थे। कारण हर चीज के होते हैं; पागल होने के और मार खाने के भी!

कितने लोग

दुर्गा सिन्हा 'उदार'

सैन डिएगो, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

"मुबारक हो! आपने भी आख़िर हिम्मत कर ही ली, एक अपना नया ग्रुप बनाने की। साहित्य में भी अब भीड़ का बोलबाला हो गया है।"

निधि ने माधवी को बधाई देते हुए कहा तो माधवी चहक उठी और बड़े गर्व के साथ बताने लगी कि फ़लाँ ग्रुप 2016 से चल रहा है। अभी बड़ी मुश्किल से उनके ग्रुप में 150 सदस्य जुड़ पाए हैं और पता है न तुम्हें भी उस ग्रुप की सदस्या बनाया है, जिसकी संस्थापक वही मोटे दिमाग़ वाली महिला है। अपने आगे किसी को कुछ समझती नहीं। बात ऐसे करती है, जैसे बस वही ग्रुप बना सकती है और वही अच्छा चला सकती है। …और उनका ... उनका क्या हुआ? जैसे-तैसे 15 लोग रह गए हैं आज उनके ग्रुप में; सारे निकल भागे। भागते क्यों नहीं, बस हर मिनट पैसा माँगने का ही काम करती थी। अरे! कुछ वार्षिक सदस्यता फ़ीस भी लो तो समझ में बात आए। हर मिनट पैसा, हर मिनट पैसा! अरे भाई, सबके घर में क्या पैसे का पेड़ लग रहा है?
बात करती है। पहले मैं निकली, फिर धीरे-धीरे सारे ही निकल लिए।

"अच्छा! तो वो आप थीं जिनकी वजह से उन ऑंटी के सारे सदस्य छोड़ कर भाग गए।"

"मैंने थोड़े ही न कहा कि निकलो तुम लोग! न-न, मैं कभी न करूँ ऐसा; पर उसका काम ही ऐसा था कि कोई टिका नहीं।"

"आपके क्या प्रोजेक्ट हैं? आप भी तो वही सब ? बिना पैसा लिए तो कुछ काम होगा नहीं।"

"प्रोजेक्ट तो बहुतेरे हैं। बिना पैसे होंगे भी नहीं। पैसा भी ये लोग ही देंगे। मूर्खों की कमी नहीं है। इन्हें भावनात्मक बेवकूफ़ बनाना बहुत आसान होता है। ज़रा सा ग़रीबों की, ग़रीबी की बात कर दें तो बहुत से लोग आ जाते हैं मददगार बन कर। कुछ तो इस हद तक बेवकूफ़ होते हैं कि वे अपना नाम भी उजागर होने देना नहीं चाहते। उनकी जगह मेरा ही नाम उजागर होता रहेगा। इससे बड़ा सुख और क्या हो सकता है।" (शातिर हँसी हँसते हुए माधवी बोली)

निधि,"ठीक कहती हैं, आपके ग्रुप की क्या प्रोग्रेस है?"

माधवी,"बहुत बढ़िया प्रोग्रेस है। इस समय मेरे ग्रुप में लगभग 280 सदस्य हैं। सब एक से एक बढ़ कर। अभी कुछ सदस्य और जुड़ेंगे।"

"जब लोग निकलने लगेंगे तो उन्हें कैसे रोकेंगी आप?"

माधवी की भृकुटि तन गई; किन्तु जवाब कुछ न सूझा।

किस्मत वाला

शील कौशिक
सिरसा, हरियाणा, भारत

बीमार माँ-बाप ने राम-श्याम का स्कूल छुड़वा कर कोठी पर रखने का फैसला किया, ताकि घर का खर्चा-पानी चल सके। कोठी वाली मालकिन दोनों के स्वभाव से भली-भाँति परिचित थी क्योंकि उनकी माँ वर्षों से इसी कोठी पर काम करती थी। तब वे दोनों बच्चे अक्सर इस कोठी पर आते रहते थे। इसलिए मालकिन ने राम को अपने पास रखने और पगार देने के लिए चुना। श्याम बहुत रोया। जब से दोनों पैदा हुए राम और श्याम सदाबहार जोड़ी की तरह सदा एक-दूसरे के साथ रहे थे।

राम को गए लगभग 15 दिन हो गए थे। श्याम भाई से मिलने की जिद पर अड़ा था। हार कर उसकी माँ उसे मिलाने के लिए कोठी पर लेकर गई तो वह भाई के गले लग कर रोने लगा।

"क्यों रो रहा है भाई?"

"भाई तुझे तो इन्होंने अपनी कोठी पर रख लिया पर मुझे क्यों नहीं? हम बचपन से सदा साथ रहे हैं, अब मैं अकेला कैसे रहूंगा?"

राम ने उसे चुप कराते हुए कहा,"तू बहुत शरारती है न इसलिए तुझे कोई सहन नहीं कर पाता।"

"भाई! मैं अब बिल्कुल शरारत नहीं करूँगा। मालकिन को मेरी सिफारिश कर दे न," दोनों कान पकड़ते हुए श्याम ने राम को कहा।

राम के सब्र का बांध टूट गया।

"तू तो किस्मत वाला है रे! तू माँ-बापू के साथ है। अच्छा ही है तू शरारती है, खोटा है, लोगों को नापसंद है। तेरी यही पहचान ठीक है रे! मेरी शराफत ने मुझे..." कहते हुए सारा दर्द मासूम राम के दिल में उतर आया और अब वह उसे गले लगा कर फूट-फूटकर रोने लगा।

कुछ नहीं बदला

शैली

लखनऊ, भारत

दिसम्बर से काम करना शुरु किया है बिट्टो ने। पढ़ाई छूट गयी थी, ना ड्रेस बची थी ना फीस के पैसे। किसी ने जलती सिगरेट, झुग्गी के छत पर फेंक दी थी। ग्राहकों के कपड़ो सहित सब जल गया था,जब तक अम्मा-बाबू प्रेस की दुकान से भागते आते। ग्राहकों की जली चीज़ों का जुर्माना, कपड़े धुलाई और प्रेस कराई से कटवाना था। फीस के पैसे कहाँ से आते! स्कूल जाना नहीं था तो, अम्मा के साथ कपड़े देने चली आयी थी दस साल की बिट्टो, बारहवीं मंजिल के इस फ्लैट में।

दया दिखाते मालकिन ने कहा था कि,“बिट्टो को मैं रख लेती हूँ। खाना खायेगी और मेरी बेटी परी के साथ खेलेगी। तुम्हरा जुर्माना भी जल्दी चुक जायेगा।” तभी से काम कर रही है, खेलती तो परी है।

खिड़की के काँच से दिखते दूर तक जगमगाते बल्ब, उसे बहुत अच्छे लगते थे। इधर सर्दी कुछ कम हुई तो बालकनी में खड़ी रौशनी की जगमाहट देख रही थी। आज हाफ स्वेटर और फ्रॉक में भी सर्दी नहीं लग रही थी। अभी तक ठंड के मारे बालकॉनी में निकला नहीं जाता था। मौसम बदल गया है, उसकी जिंदगी बदल गयी, शहर भी बदल गया है...

“अरे बिट्टो, हरामजादी! कहाँ मर गई? देख परी ने कपड़े भिगो लिये हैं। बस बैठ के खाना और मगरूरी करना - - - - - - ।”

बिट्टो हड़बड़ा के भागी…शायद कुछ नहीं बदला!

कृतघ्न

निहाल चन्द्र शिवहरे
झाँसी, उ.प्र., भारत

रमेश - आप जेल से छूटकर मेरे यहाँ कैसे आ गये?

सिमरन - बेटा! मैं जेल से छूटकर अपने बेटे के पास नहीं आता तो कहाँ जाता? मैंने दस वर्षो से एक-एक पल जेल में इसी प्रत्याशा में काटा है कि मैं सजा पूरी होने के बाद अपने इकलौते बेटे के साथ-साथ अपने पोती एवं पोते के साथ रहूँगा।

रमेश - पिताजी! आप भूल गये हैं कि आप सजायाफ्ता कैदी हैं, जिसके यहाँ रहने से मेरे परिवार की प्रतिष्ठा के साथ-साथ ही मेरे बच्चों, पत्नी एवं समाज के सामने मेरी क्या इज्जत रह जायेगी? अत: आप अपना ठिकाना कहीं और ढूँढ लें। यहाँ आपके लिए कोई जगह नहीं है।

बेटे की बात सुनते ही सिमरन का दिमाग चकरा गया और उसके सामने पुरानी घटनायें चलचित्र की भाँति सामने आने लगीं जैसे कल ही की बात हो ।

रमेश घबराकर चिल्लाते हुए घर में पिताजी-पिताजी कहते हुए उसके पैरों पर गिर पड़ा। "पिताजी! मुझे बचा लो, मेरी मोटर साईकिल से दो लोगों की दुर्घटना में घटना-स्थल पर ही मौत हो गयी है। मैं किसी तरह वहाँ से भागकर यहाँ तक पहुँचा हूँ। मुझे अँधेरा होने के कारण कोई भी देख नहीं पाया है। आप ही मुझे बचा सकते हैं।"

सिमरन ने कहा - मैं क्या कर सकता हूँ?

रमेश - पिताजी! माँ के जाने के बाद आप अकेले हैं और मैं अभी बैंक में नया अधिकारी बना हूँ। अभी मेरा बेटा भी एक साल का है। मेरा भविष्य बच सकता है, यदि आप इस दुर्घटना का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेकर पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दें। मैं आपकी पैरवी के लिए महँगे से महँगे काबिल वकीलों की लाइन लगाकर आपको बरी करवा लूँगा।

नियति को कुछ और ही मंजूर था। लाख प्रयत्न करने के बाद भी सिमरन को दस वर्ष की सजा हो गयी और नियति ने फिर एक बार पुन: खेल खेला और कृतघ्न पुत्र सामने...

कैरम की रानी

ऋता शेखर 'मधु'
बेंगलूरु, भारत

दिनांक - १२/१२/२०१२, पटना
प्रिय सखी बेला!

सदा सुमङ्गल हो।

तुम्हारी चिट्ठी मिली। जब हम सपरिवार तुम्हारे शहर गए तो तुम्हारे घर भी रुके थे। मेरा बेटा और तुम्हारा बेटा हमउम्र हैं। वहाँ दोनो ने खूब मजे किये। कई खेल साथ-साथ खेले। मैंने तुम्हें बताया था कि जब हम वापस आये तो मैंने अपने बेटे की शर्ट के पॉकेट में कैरम की लाल रानी देखी। चूँकि हमारे घर कैरम बोर्ड नहीं है, तो बेटे से पूछा कि उसे कैरम की रानी कहाँ से मिली। पहले तो वह चुप रहा, फिर सख्ती से पूछने पर उसने बताया कि वह तुम्हारे घर से चुपचाप लाया है, क्योंकि वह गोटी उसे बहुत अच्छी लगी। मैंने तुम्हें लिखा कि वह रानी गोटी मैं कुरियर से वापस भेजूँगी; पर तुमने लिखा है कि इसकी कोई जरूरत नहीं, यह तो बहुत छोटी सी बात है। बच्चे को अच्छी लगी तो उसने ले ली।

बेला! मैं तुम्हारी बातों से सहमत नहीं। उसे अच्छी लगी तो माँगकर लेनी थी। मैं वह लाल गोटी बेटे के हाथों से ही पैक करवाके भेज रही हूँ। प्रथम ग़लती पर ही रोक न लगाई तो आगे उसे जो भी अच्छा लगे, उसे ले लेने में उसे कोई बुराई नजर न आएगी। कल को अगर कोई असली रानी अच्छी लग गयी तो? अच्छा, अब लिखना बंद करती हूँ।

अम्मा जी को प्रणाम और बेटे को प्यार।

तुम्हारी सखी -
रमा

बेला दस वर्ष पहले का यह पत्र हाथों में लिए रमा के इस सख़्त कदम पर सोच रही थी; तभी आवाज आयी,“बेला, आज एक वर्ष की कैद के बाद बेटा घर आ रहा है, उसे लाने चलो।” बेला सोच रही थी,“बेटे ने जब मुहल्ले की एक लड़की पर फब्ती कसी और उस लड़की की माँ ने शिकायत की तो उसने बेटे का पक्ष क्यों ले लिया था। यदि वह उस समय कड़ा कदम उठाती तो लड़की की माँ को छेड़छाड़ की धारा के तहत पुलिस में नहीं जाना पड़ता।”

तभी हवा का तेज झोंका आया और रमा का पत्र बेला के हाथ से छूटकर उड़ गया।

कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट

ज्योत्स्ना शर्मा

गाज़ियाबाद, उ.प्र., भारत

"दीक्षित जी! बताइए न क्या बात हुई। कुछ जवाब आया?"

"शुक्ला जी चिंता मत कीजिए। ऐसे मामलों में थोड़ा समय लगता ही है।"

"कितना समय दीक्षित जी!"

"अरे आप तो कुछ ज्यादा ही परेशान हो रहे हैं। लड़की का बायोडाटा और फोटो तो पसंद आ ही गया था, नापसंदगी की कोई गुंजाइश ही नहीं। देखिए, लड़के वालों से थोड़ा दबना ही पड़ता है।"

शुक्ला जी अटपटाते हुए बोले,"कैसी बात कर दी आपने... इसमें दबने वाली कौन सी बात है। मेरी बच्ची अच्छे कॉलेज से बी.टेक. है और कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट में एम.बी.ए. है। बहुत संस्कारी है। अच्छे-बुरे की समझ रखती है। महानगर की चकाचौंध का जरा भी असर मेरी बच्ची पर नहीं है।"

"अरे शुक्ला साहब, पढ़ाई किस चिड़िया का नाम है। लड़की वालों की लाइन लगी पड़ी है। बैग हाथ में लिए खड़े हैं। अब बताइए पढ़ाई से शादी होगी या बैग से..." इतना कहकर दीक्षित जी बड़ी ही चुटीली हँसी हँसने लगे।

इस बातचीत को सुनकर मुग्धा की माँ बिना कुछ कहे अंदर चली गई पर अंदर ही अंदर कुछ कचोट सी थी। मुग्धा की माँ का दर्द जुबान पर आ गया। देखो न, आज 21वीं सदी में भी स्थिति यथावत है। समझ नहीं आता कि आजकल 'समझ' को क्या हो गया है।

शाम के कोई छ: बज रहे होंगे। शुक्ला जी के फोन की घंटी बजती है। कोई अनजान नंबर मोबाइल पर बज रहा था। "अरे शुक्ला जी! कौशिक दिस साइड। मैं यह कह रहा था कि बच्चों की जन्मपत्री तो ठीक-ठाक मिल गई है पर बात आगे नहीं बढ़ा पाएँगे।"

"पर क्यूँ भाई साहब? क्षमा कीजिएगा; पर क्या मैं जान सकता हूँ कि आपने किस कारण से बात समाप्त कर दी। मैंने आपका तकरीबन एक माह तक इंतजार किया।"

कौशिक जी तड़क कर बोले,"लड़की वाले होकर मैं आपको कारण बताऊँ?" अबकी बार शुक्ला जी और दृढ़ता से पूछते हैं,"हाँ, मैं लड़की वाला हूँ इसीलिए आपको कारण बताना होगा। मुझे आपकी न से आपत्ति नहीं, जितना कारण न बताने से है।"

लड़के के पिता के शब्द फूट पड़े,"देखिए जी आपकी लड़की ने कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट किया है, यह बात हमारी समझ में नहीं आयी," और कहते हुए फोन काट दिया। स्थिति को समझते हुए मुग्धा की माँ ने कारण पूछा। मुग्धा के पिताजी हँसते हुए बोले,"भाग्यवान हमारी होनहार बच्ची की डिग्री उन पर भारी पड़ गई।"

कौन ऊँचा

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

"साहब! एक सज्जन आपसे मिलने आये हैं," चपरासी रमेश ने आ कर कहा।

"तुमने कहा नहीं कि मेरे मिलने के समय पर आयें, अभी मैं बहुत व्यस्त हूँ," प्रशासनिक अधिकारी उदित ने फाइल पर झुके-झुके कहा।

"साहब मैंने कहा था; पर वे कह रहे हैं, बस तुम मेरा नाम बता दो, मैं उनका ख़ास परिचित हूँ," रमेश बोला।

यह सुन कर उदित राय ने प्रश्नवाचक दृष्टि से रमेश को देखते हुए पूछा,"क्या नाम बताया?"

रमेश ने कहा,"जी उन्होंने अपना नाम सुन्दर सिंह बताया।"

उदित चौंक पड़े, उन्होंने कुछ सोचते हुए कहा,"सुन्दर सिंह? ठीक है उनको अन्दर भेज दो।"

सुन्दर सिंह ने आ कर कहा,"बेटा मुझे गर्व है तुमने तो हमारे गाँव का नाम ऊँचा कर दिया।"

"जी आप काम बताइये, मैं बहुत व्यस्त हूँ," उदित ने कहा।

सुन्दर सिंह ने खिसियाते हुए कहा,"वो मेरे बेटे विनय ने एम.बी.ए. किया है, उसे कहीं नौकरी दिलवा दो। आखिर तुम्हारे गाँव का है, तुम्हारे भाई जैसा।"

उदित ने सुन्दर सिंह की आँखों में आँखें डाल कर कहा,"आपके गाँव का तो मैं भी था; पर जब मुझे छात्रवृत्ति के लिए आपके अनुमोदन की आवश्यकता थी, तब आपको मेरी जाति याद आ गयी थी और आपने मना कर दिया था; पर मेरी जाति तो अभी भी वही है।"

सुन्दर सिंह समझ गये कि उदित अपना अपमान भूला नहीं है। वे सिर झुका कर लौटने लगे। तभी उदित ने कहा,"रुकिए, मुझे सब याद रहता है। यदि अपना अपमान नहीं भूला तो आप हमारे गाँव के हैं यह भी नहीं भूला हूँ। आप विनय का विवरण छोड़ जाइए। मैं जो कर सकता हूँ, अवश्य करूँगा।"

आज स्वयं को उच्च समझने वाले सुन्दर सिंह निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि यथार्थ में कौन ऊँचा है?

कौवे का न्याय
यूरी बोत्वींकिन
कीव, यूक्रेन

“आइना नम्बु नुंग्शी,” मैं बोला, जब वह मिली थी गली में। मणिपुरी में मुझसे “मैं तुमसे प्यार करता हूँ,” सुनकर शर्माकर भाग गई। मणिपुर से मध्य-भारतीय ग्वालियर पढ़ने आई थी और अचानक सुदूर यूक्रेन से वहीं पढ़ने आए एक विदेशी से दिल लगा बैठी थी...

विश्वविद्यालय में पूर्वोत्तरीय छात्र काफ़ी थे, यूक्रेन का मैं अकेला था। अब मणिपुरी लड़की से दिल की बात कह डाली थी। वह डर के मारे बात को नकारने लगी। कैंपस के पास मिली...

“कुछ नहीं हो सकता,” बोली – “तुम इतनी दूर से हो, मेरा परिवार कभी नहीं मानेगा”

“तो हमें कोशिश भी नहीं करनी चाहिए?”

“नहीं...” उसकी आँखें धरती पर टिकीं।

“प्यार करती हो मुझसे?”

“नहीं करती हूँ,” आँखें वहीं, नीचे...

“यह आँखें छुपाके नहीं बोलते!”

उसने झटके से आँखें उठाईं, पर मिलाने नहीं, दूसरी ओर कहीं दूर देखने के लिए। कई दिन निराशा में बीते... फिर मान गई।

“उस दिन मुझे पता था क्या बोलोगी,” - मैंने कहा, “बस यह देखना था, कैसे बोलोगी... कुछ नहीं छुपा सकती हो मुझसे...”

“उतना जान गए!..” – वह चौंकी मानो कोई राज़ खुल गया हो...

फिर वही छुपकर मिलना, फ़ोन करना... अब इसमें आशा की झलक भी थी...

एक दिलचस्प बात उसने यह बताई कि जिस दिन मुझसे ‘प्यार नहीं करती’ बोलकर जा रही थी तो अचानक एक कौवे ने उसपर हमला करके सिर पर चोंच मारी थी! गहरी चोट लगी थी, रक्त निकला था... सुनकर मुझे बुरा लगा पर साथ में ‘झूठ बोले कौवा काटे’ कहावत का इतना जीवंत उदाहरण पाकर हैरान रह गया... कभी-कभी वह फिर घबराकर पीछे हटने लगती तो हँसकर बोलता: और बोलो, कौवा आ रहा है!

आशा व्यर्थ निकली... यह स्पष्ट हुआ कि उसका परिवार नहीं मानेगा... मेरे जाने का भी समय आ गया था... रोए दोनों।

दिल में सँजोई यादों के बीच कभी कभी उस कौवे की भी याद आती है। चिढ़ होती है उससे। पहले से ही कोई आशा नहीं थी तो क्यों मारा था बेचारी को? किस बात का दंड था वह सच में, झूठ बोलने का या फिर एक विदेशी से दिल लगाने का? कौन था वह कौवा? झूठ पकड़नेवाला शुभचिंतक या फिर जातीय कट्टरता का रक्षक? यह बात मैं आज तक नहीं समझ पाया हूँ!

खरपतवार

विनीता राहुरीकर
भोपाल, भारत

कमल जब बंगले पर पहुँचा तो उसका मन बहुत ही खिन्न था। वो तो काम पर आना ही नहीं चाहता था; लेकिन सवाल ढाई सौ रुपए का था। बेमन से उसने बगीचे का दरवाजा खोला और गमलों के पास बैठकर पौधों की गुड़ाई करने लगा। बाहर खटपट की आवाज सुनकर मैडम बाहर आयीं।

"अरे कमल पीछे की गुलाब और रातरानी की क्यारियों में ढेर सारे खरपतवार उग आए हैं, उन्हें निकाल देना। गुलाब के सारे पेड़ों को घेर लिया है, पूरी क्यारी की सुंदरता खत्म कर रहे हैं।"

"जी, ठीक है मेम साहब!" कह कर कमल बगीचे के पीछे वाले हिस्से में गुलाब और रातरानी की क्यारी के पास बैठ गया। सचमुच वहाँ इस बार बीच-बीच में जंगली पौधे उग आए थे। पीले, नीले, बैंगनी रंग के नन्हे-नन्हे फूलों वाले।

उन्हें उखाड़ने के लिए आगे बढ़ा हुआ कमल का हाथ इस बार काँप उठा – "आज मैं इन्हें उखाड़कर कचरे में डाल दूँगा और कल कोई मुझे उखाड़ देगा।"

कल से ही बस्ती में सुगबुगाहट थी कि अब इस जमीन पर कोई बड़ी कॉलोनी बनने वाली है, तो उन्हें ये जगह खाली करनी पड़ेगी। पता नहीं अब शहर से बाहर कहाँ उन्हें फेंक दिया जाएगा, खरपतवार की तरह ही।

आज जाने क्यों उसका मन इन खरपतवारों के लिए संवेदना से भर आया। बेचारे बिना किसी के उगाए, बिना देखभाल के मिट्टी और पानी के लिए संघर्ष करके खुद ही उग आते हैं, किसी से कुछ नहीं माँगते, तब भी इन्हें बार-बार उखाड़कर दूर फेंक दिया जाता है। भले ही ये गुलाब जितने सुंदर नहीं, इनमें रातरानी-सी सुगंध नहीं; लेकिन ये भी तो जीवन से भरे हुए हैं। इन्हे भी जीने का, बढ़ने का अधिकार है, खरपतवार है तो क्या हुआ।

उसने अपनी हथेली से प्यार से उनके फूलों को छुआ और तेजी से बगीचे से बाहर निकल गया।

खिलवाड़

अलका प्रमोद

लखनऊ, भारत

सुनयना, एक बैंक अधिकारी जिसके कार्यालय पहुँचते ही सब खड़े हो कर अभिवादन करते हैं, आज थाने में सिर झुकाये बैठी है।

वही दरोगा जो अपना खाता खुलवाने के लिये उसको 'मैडम जी' कह कर सम्बोधित करता था, कड़क कर बोला,"खुद तो पैसा कमाने में लगी रही, बेटा क्या कुकर्म कर रहा है इसकी खबर नहीं।"

"अरे बेटा क्या जन दिया कमाल कर दिया, छोड़ दिया खुले साँड़- सा, जाओ बेटा जो मन आये करो, आखिर लड़के हो," पीड़ित लड़की की माँ ने नफरत से कहा।

"छोड़ूँगा नहीं तेरे लड़के को, फाँसी न दिलवायी तो मेरा नाम नहीं," लड़की के पिता गरजे।

एक और ज़हर बुझा तीर चला,"अरे इसके साथ भी यही करो तब पता चलेगा, इज्जत लुटना क्या होता है।"

सुनयना काँप उठी। सब ओर से अग्नि बाणों की वर्षा से उसके चारों ओर अपमान का धुँआ गहराता जा रहा था। यह क्या कर दिया उसके बेटे ने! कहाँ चूक हो गयी बेटे को संस्कारित करने में, जो उसने एक लड़की के साथ ऐसा कुकृत्य किया।

तभी इंस्पेक्टर आये। केस की जानकारी होने पर उन्होंने पूछा,"किसकी इज्ज़त से खिलवाड़ किया है लड़के ने।"

पीड़ित लड़की और सुनयना दोनो के मुँह से एक साथ निकला - मेरी।

खून से नहान

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

आज दीन दयाल जी के घर में कोहराम मचा था। घर से घर का मुखिया उठ चुका था। परिवार की धुरी भी वही थे। ऊँचे भी इतने थे कि उनके आगे उनसे ऊँचा कोई हो ही नहीं सकता था।

गरुड़ पुराण में नरक की यातनाओं को सारे परिवार ने कई बार सुना था; परन्तु दीन दयाल जी के लिए आज उनकी आत्मा काँप रही थी, वे व्याकुल ही नहीं भयभीत थे, दीन दयाल जी की आत्मा इस यात्रा में अकेली थी। उसे अकेला पाकर कितना सताया जाएगा! वो कोई अपने शहर की अदालत तो है नहीं, कि जुर्म कोई करे और अपने सिर जुर्म लेकर, सजा काटने के लिए मातहत-मुलाजिम जेल चले जाएँ!

स्वर्ग के सात द्वार हैं, परन्तु नरक के तो अनन्त द्वार हैं, कँटीले रास्ते हैं। वहाँ कर्मों के हिसाब से पता नहीं आत्मा को कितने गर्म कड़ाहों में तला जाता है, कितने राक्षस आत्मा में भाले घोंपते हैं। विह्वल घर वाले आत्मा की रक्षा के लिए, उन्हें दूध से नहलाये जा रहे थे, दूध के हंडे के हंडे उनके निर्जीव शरीर पर डाले जा रहे थे, गाँव का गाँव उमड़ पड़ा था, उनसे उमड़ने के लिए कहा गया था। सहसा लोगों ने देखा, चढ़ाए गए दूध का रंग कुछ लाल दिख रहा है, हल्का लाल रंग देख सब हतप्रभ दौड़ पड़े। अरे! ये दूध किसने डाला है, पकड़ो स्साले को, दूध में क्या मिलाया है। हल्ले से बेखबर, उनका परम प्रिय हयवदन, एकचित्त, आँखें बंद किये, अपने कलश से धार बनाए हुए था। "अरे! मारो स्साले को, ये दूध नहीं है।" हयवदन ने आँखें खोलीं, हुजूर! हमारे माई–बाप रहे, हमारे मालिक! सारी जिन्दगी हमने उन्हें अपना खून-पसीना दिया, मालिक आज आप इतने बेबस क्यों लेटे हैं? आज उन्हें बेबस मानकर, आप दूध से कैसे टरका सकते हैं; लेकिन सब सुन लो, आपको बहुत पाप लगेगा, मालिक की आत्मा बहुत गाली देगी, हमने पानी में कोई नकली रंग नहीं, अपना असली खून मिलाया है। हमारे रक्त की हर बूंद उनकी है। शरीर में इतना खून नहीं है, इसलिए पानी मिलाना पड़ा, लेकिन मालिक! खून की हर बूंद को एक नदी समझना! हम सब नरक में जायेंगे समझ लो! अगर मालिक को उस लोक में वैसे ही नही रखा, जैसे वो यहाँ रहे थे।

गंगू का चुनाव
रेखा सक्सेना
भोपाल, भारत

गंगू आजकल बहुत खुश है, चुनाव आ रहे हैं। रोज ही किसी ना किसी पार्टी की रैली और सभा होती हैं। एक रैली में जाने के सौ-दो सौ रुपये मिल जाते हैं, वह भी बिना किसी मशक्कत के। ... दिन भर की मेहनत के बाद रिक्शा चलाने में तो सौ-डेढ़ सौ ही कमा पाता है वह। .... चुनावी दिनों में वह रिक्शा रात में चलाता है, दिन में चुनावी रैलियों में जाता है।

... आज केसरिया टोपी वाली रैली है, केसरिया टोपी सर पर, केसरिया गमछा गले में डाल, जो पार्टी वालों ने उसे लाकर दिये थे, निकल पड़ा गंगू।

रैली के दिन उसका सामाजिक स्टेटस बढ़ जाता है, रिक्शेवाले से वह पार्टी का आदमी बन जाता है।

चुनाव आते है तो गंगू की कुछ मूलभूत जरूरतें पूरी हो जाती हैं। एक चुनावी सीजन में उसे दो-तीन हजार की कमाई तो हो ही जाती है। रिक्शा किनारे लगाकर वह अंदर आकर बैठ गया। नेताजी का भाषण चल रहा था “पिछले पाँच साल में हमने विकास की धारा बहा दी आपके शहर में…।”

.... गंगू की आजतक समझ में नहीं आया कि विकास की यह धारा उसे क्यों नहीं दिखाई देती है! उसकी रोटी के ऊपर रखी लाल मिर्च की चटनी, कभी दाल या सब्जी मे क्यों नहीं बदलती? टैम्पो चलने से उसकी आमदनी भी कम हो गई। वोट चाहे जिसे दे वह; पर हर पाँच साल में उसके मुँह से रोटी के निवाले की दूरी थोड़ी और बढ़ जाती है।

भला हो जो ये चुनाव पाँच साल में आ जाते हैं; इस बार दो रजाई बनाने का पैसा तो मिल ही जाएगा। पिछली सर्दी बड़ी मुश्किल से कटी, कई जगह पाला पड़ गया। पुरानी रजाई में, रात भर ठंडी हवा सुई सी चुभती रहती है। अब कहाँ तक चलेंगी? दो चुनाव पहले बनवाई थीं। तभी तालियाँ बजीं, यंत्रचालित-सा वह भी ताली बजाने लगा।

“हाँ तो भाईयो! वोट किसको?” नेताजी मंच से पूरी ताकत से चिल्लाये। “रजाई को!” गंगू के मुँह से निकला....। आसपास के लोग गंगू को विचित्र नज़रों से देखने लगे। गंगू हकबका गया...

रजाई की सुखद गर्माहट से बाहर आने में समय लगा गंगू की चेतना को।

गणित

दुर्गा सिन्हा 'उदार'

सैन डिएगो, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

"कितने वोटों से हम हार गए?"

प्रत्याशी ने बंद कमरे में बैठ कर अपने निजी साथियों के साथ चर्चा शुरू की।

"सर! ग्यारह वोटों से!"

एक साथी ने हिम्मत दिखाई; किन्तु डरते-डरते धीमे स्वर में बताया; मानो सारी गलती उसी की ही हो।

"यहाँ हम कितने लोग हैं अभी?"

प्रत्याशी ने नजर दौड़ा कर 11 की संख्या में उपस्थित आत्मीय-जन को उलाहना भरी नज़रों से देखते हुए कुछ ख़ास संकेत करना चाहा।

"जी … जी .. यहाँ …. अभी हम 11 लोग उपस्थित हैं।" एक भक्त ने तत्काल संख्या गिन कर घोषणा की।

"यही … यही तो बात है। साले अपने ख़ास ही तो धोखा देते हैं। बनते हमारे हैं, वोट किसी और को देते हैं। ख़ास बन कर वोट काटते हैं।"

प्रत्याशी ने कहते हुए सबकी आँखों में आँखें डाल कर देखने की कोशिश की तो सभी की आँखें नीचे की ओर झुकती चली गईं।

गणेश चतुर्थी

उषा श्रीवास्तव
बेंगलूरु, भारत

आज गणेश चतुर्थी के त्योहार पर रमेश ने खुशी-खुशी सवेरे जल्दी ही नहाकर साफ कपड़े पहने, उत्साह से गणेश मंदिर पहुँचा और लग गया दर्शन की लाइन में। मुहल्ले के बगीचे से थोड़े फूल लिए और किराने से अगरबत्ती और एक नारियल। दर्शन की लाइन में लगा वह सोच रहा था,“बप्पा! यदि मुझे पास की सीमेंट फैक्ट्री में मजदूर की नौकरी मिल जाए तो मैं माँ की नौकरी छुड़वा दूँगा।”

“सबका धर्म भ्रष्ट करेगा क्या? जा भाग यहाँ से, तू मंदिर के अंदर नहीं आ सकता।” पुजारी की तेज आवाज से उसके विचारों को ब्रेक लग गया, ‘अछूत’ जो था वह। वह एक किराना स्टोर में काम करता था और माँ लोगों के घरों में काम।

“ऐ रमेश! तू क्यों उदास बैठा है?” बूढ़े बाबा ने प्यार से पूछा।

“बाबा! मुझे पुजारी जी ने मंदिर के अंदर नहीं जाने दिया। मुझे देखना है मंदिर वाले बप्पा कैसे दिखते हैं?” रोते-रोते उसकी हिचकियाँ बँध गईं।

“बस, इतनी सी बात! ईश्वर सबके होते हैं, किसी जाति या समुदाय विशेष के नहीं।”

“लो यह बप्पा की मूर्ति, इसकी पूजा कर लो। गणपति बप्पा सबके हैं, किसी एक के नहीं और हाँ, मुझे प्रसाद का लड्डू अवश्य देना।”

गरीब का बेटा

रेणु चन्द्रा माथुर
फ्रीमॉन्ट, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

रंजन एक होनहार बालक था। उसके पिता ठेला चलाते थे और माँ मिट्टी के बर्तन बना कर गृहस्थी चला रही थी। रंजन शुरु से ही मन लगाकर पढ़ाई करता था। इधर-उधर की बेकार बातें उसे जरा ना भाती थीं। बारहवीं का परिक्षा परिणाम आया तो उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा। उसने पचानवे प्रतिशत अंक प्राप्त किये थे। यह शत प्रतिशत उसकी मेहनत का फल था। उसके मन में आगे पढ़ने और इंजीनियर बनने की इच्छा जागृत हो उठी।

उसकी माँ ने सुना तो कहने लगी,"बेटा क्या हमेशा पढ़ाई की बात करता रहता है, कभी अपने बाबा के काम में भी हाथ बँटाया कर। हम कब तक जी-तोड़ मेहनत करके घर का और तेरी पढ़ाई का खर्च उठाते रहेंगे?"

खुशी में माँ की बात अनसुनी करके वह अपने बाबा को कहने लगा,"बाबा मुझे आगे इंजीनियरिंग के फार्म भरने हैं। पैसों की जरूरत है।"

पिता ने पैसों का इंतज़ाम ना कर पाने की वजह से निरीह नज़रों से बेटे की हसरतों को ध्वस्त होते हुए देखकर कहा,"बेटा यह पढ़ाई का शौक कहाँ से पाल लिया तूने? तुझे देने को मेरे पास फीस के लिये इतने पैसे नहीं हैं। तेरी एक छोटी बहन भी है। परिवार का पेट पालूँ या तुझे पढ़ाऊँ? काश! तू किसी अमीर बाप का बेटा होता!"

रंजन हताश नहीं हुआ। कहने लगा,"बाबा आप तो बस हाँ कर दो, खाली समय में मैं बच्चों को पढ़ाकर अपनी फीस भर लूँगा। पर पढ़ूँगा जरूर। अब रुकूँगा नहीं।"

ग़लत-फ़हमी

रेखा भाटिया
शार्लिट, नॉर्थ कैरोलाइना, यू.एस.ए.

मयखाने के कानफोड़ू संगीत से दोनों की बातचीत बाधित हो रही थी। गिलास पकड़े दोनों बाहर आ गए।

पहला -"किसी ग़लत-फ़हमी में मत रहना भैया! बहुत ऊँची तोप है वह। उसके क़द से उसकी परछाई लंबी है। आजकल सोशल मीडिया पर फोटो डाल देने से बहुत ग़लत-फ़हमी छा रही है। आपको पता है, आपने देवपुरुष कहकर जिनके लिए कमेंट डाला; अपनी बीबी के नाम पर वो देवपुरुष की उपाधि लिए इतराते फिर रहे हैं। यही देवपुरुष इतने महान हैं कि छह साल तक अपनी पत्नी को प्रताड़ित करते रहे - शारीरिक और मानसिक रूप से ... उसे पागल घोषित कर जुड़वाँ बच्चों को अपने पास रखना चाहते थे, क्योंकि वे लड़के हैं और उस पागल पत्नी को यहाँ से भगाना चाहते थे। बहुत बड़ा केस चला था। जानते हैं चक्कर क्या था - दूसरी औरत और दहेज। माँ को तो पहले से ही रिश्ता पसंद नहीं था, दहेज की कमी के कारण। ऊपर से लड़की ठहरी सिरफिरी। आधी रात को मर्दों को फ़ोन कर धमकाती है। सबसे कहती है - मैं पुलिस वाले की बेटी हूँ, अंदर करवा दूँगी? मामला इंडिया में तो रफ़ा-दफ़ा हो गया। ये देवपुरुष भी कम नहीं हैं, बिज़नेस मैन हैं। अपना नुक़सान कैसे करते? लॉ के सारे लूप होल्स निकाल लाए पिछवाड़े से। एक इंडियन साइकेट्रिस्ट हायर कर ली और लगे अपनी सिरफिरी को पागल घोषित करने.... मामला बहुत आगे बढ़ गया था!"

दूसरा -"लेकिन यह सब आपको कैसे पता?"

पहला,"ऐसा है - वृक्ष कितना भी बड़ा और विशाल क्यों ना हो, जब उसकी जड़ें ज़मीन से बाहर निकल आएँ, तो वह ख़ुद ही उलझ जाता है। जड़ों की बात मन की मिट्टी में ही दबी रहे वही पेड़ के लिए अच्छा है। पेड़ थोड़ा हिल गया था, तूफ़ान में मिट्टी बह गई और मुझे पता चल गया। वो साइकेट्रिस्ट दूसरी औरत मेरी दोस्त थी। मुझे फ़ोन आया था उसका कि तुम घर जैसे हो, इसीलिए बता रहा हूँ। सोशल मीडिया पर जो लॉलीपॉप पकड़ाए उसे एकदम न चूसा करो भाई! थोड़ा सँभल जाओ, तुम बहुत वक्त से अमेरिका में हो। वो क्या कहते हैं आजकल का माहौल हैलोविन के जैसा है। सभी भूतों के लिबास पहने रहते हैं। किसी को किसी से डर नहीं लगता; लेकिन जो लॉलीपॉप पकड़ाए थैंक्यू तो बोल दो उसे, खाओ नहीं। घर जाकर फेंक देते हैं, समझे!"

गुरुदक्षिणा

सोनाली जोशी
बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

पूरा सेमिनार हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। आज बोर्ड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों का जिलाधीश महोदय व अन्य अधिकारियों के साथ सम्मान समारोह था। राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए शिक्षक की अहम भूमिका होती है।

"सर! हमारी सफलता का श्रेय हम हमारी क्लास-टीचर प्रीति मैम को देते हैं। उन्होंने न सिर्फ हमे अच्छा पढ़ाया; बल्कि हमे एक अच्छा नागरिक बनने और हमारे सफल भविष्य के लिए समय-समय पर उचित मार्गदर्शन भी किया।" सोनी के शब्दों से वहाँ उपस्थित उसी विद्यालय की प्रिंसिपल चौंक गयीं; क्योंकि ये वो ही अध्यापिका थीं, जिसे हर समय उनके द्वारा विद्यालय में अपमानित किया जाता था। वजह सिर्फ ये थी कि प्रीति कभी चापलूसी नहीं करती थी और अपना काम ईमानदारी से करती थी। प्रीति मैम के सभी बच्चे फैन थे। विद्यालय में कई बार सम्मान-समारोह आयोजित होता; लेकिन प्रीति को कई योग्यताएँ होने के बावजूद कभी आगे नहीं आने दिया जाता। बच्चे मन के सच्चे होते हैं। उनका मूल्यांकन, उनके द्वारा की गई प्रशंसा, एक अध्यापक के लिए कई उन खोखले सम्मानों से बड़ी होती है, जो सिर्फ पक्षपात और चापलूसी के फ्रेम से मंडित होते हैं। "सर! प्रीति मैम हमारी वो माँ हैं, जो हमें विद्यालय में सहेजती हैं।" साक्षी ने कहा जिसके उस विषय में शत-प्रतिशत अंक आए थे, जो प्रीति पढाती थी। जिलाधीश महोदय ने प्रिंसिपल को कहकर प्रीति मैम को बुलवाया। सभी के सामने उनका सम्मान किया गया। आज सच्चाई का सम्मान हुआ था और ये बच्चों की ओर से सच्ची गुरुदक्षिणा थी, जो कई सम्मानों से ऊपर थी।

गुलाम

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

इतवार की इतवार नियमित मम्मा के साथ हिन्दी की वर्णमाला का अभ्यास करती सात साल की बेटी ने पूछा,“मम्मा, हम हिन्दी क्यों पढ़ते हैं?”

“क्योंकि यह हमारी मातृ-भाषा है।”

“मातृ-भाषा क्या होती है?”

“माँ की बोली- हमारी अपनी बोली; जो हम अपने घरों में बोलते हैं।”

बेटी की अगली जिज्ञासा थी,“फिर अंग्रेज़ी क्यों बोलते हैं हम अपने घर में?”

“क्योंकि अंग्रेज़ी, अंग्रेज़ों की भाषा है, जिसे वह अपने साथ हिन्दुस्तान... हमारे घर और विद्यालयों में ले आए। जहाँ-जहाँ अंग्रेज गए, वहीं अंग्रेज़ी भी पहुँच गई। सैकड़ों साल हिन्दुस्तान अंग्रेज़ों का गुलाम रहा। कई-कई लड़ाइयाँ हुईं, लोगों ने बड़ी-बड़ी कुर्बानियाँ कीं, तब कहीं जाकर बड़ी मुश्किल से हिन्दुस्तान से खदेड़ कर इन्हें इंग्लैंड वापस भेजा गया। तुम्हारे दादा जी ने भी यह लड़ाई लड़ी थी,” पापा ने गर्व से बताया।

“ओह, और हमें पकड़कर ये अंग्रेज़ अपने साथ यहाँ इंग्लैंड में ले आए और हम अभी भी इनके गुलाम हैं?”

बेटी की बालसुलभ जिज्ञासा और निष्कर्ष पर मम्मी-पापा दोनों ही पूर्णतः निरुत्तर थे।

गृहप्रवेश

मंजु तिवारी कुमार
दुबई, यू.ए.ई.

भाईसाहब! आपका घर बनकर तैयार है। आप आखिरी पेमेंट कर दीजिए, मैंने कल सुबह ही चाबी आपके माता-पिता को दे दी थी। ठेकेदार का सुबह ही फ़ोन आ गया था। प्रकाश बेहद खुश हुआ सुनकर। उसकी सालों की मेहनत रंग लायी। उसने बिना किसी लोन के अपनी जमापूँजी से अपना दोमंजिला घर बनवा दिया था। पंद्रह साल लगे थे दुबई में रहकर घर के लिए पैसे जोड़ने में। भरा-पूरा परिवार था तो ज़िम्मेदारियों को निभाते-निभाते ही प्रकाश चालीस का हो गया था। बहनों की शादी के बाद उसकी शादी हुई, बच्चे अभी छोटे ही थे। पिता का बनाया हुआ घर अब काफ़ी पुराना हो गया था। हर बरसात में घर पानी से भर जाता और सभी लोग उस से ऐसे शिकायत करने लगते जैसे घर केवल उसी का है। कभी बड़ी बहन तो कभी छोटी बहन; सभी उसे फ़ोन करके बस घर बनाने को कहते रहते।

छोटे भाई की बात करो तो पढ़ने-लिखने में कमजोर था, तो हर बात में कमजोर ही रहा। माता-पिता का लाड़ उसे इतना मिला कि उसने कभी अपने लिए मेहनत करनी ही नहीं चाही। प्रकाश और पिताजी ही घर में आमदनी का ज़रिया थे। तीन साल पहले वो भी रिटायर हो गये थे। घर से जब भी फ़ोन आता, हर बार कोई नयी डिमांड होती।

ऐसे में प्रकाश के लिये दो-दो घर चलाना मुश्किल हो रहा था। थोड़ा सोच-विचार कर उसने ये निर्णय लिया कि पुराने घर को नया और बड़ा बनाया जाये, उसका परिवार भी माता-पिता और बाक़ी सब के साथ भारत में ही रहे। छह महीने बाद उसकी यही इच्छा आज पूरी हो गई थी।

अभी पति-पत्नी ख़ुशी बाँट ही रहे थे, तभी मम्मी का फ़ोन आया। अच्छा बेटा सुन! हम कल ही गृहप्रवेश कर रहे हैं, मुहूर्त अच्छा है। सामान भी सब शिफ्ट कर लिया है। तुझे ये भी बताना था कि ऊपर वाले हिस्से में तेरे छोटे दीदी-जीजा जी रहने आ गये हैं। अभी उनका समय ठीक नहीं चल रहा है। बहुत तैयारी करनी है कल के लिए... फिर बात करूँगी, कहकर माँ ने फ़ोन रख दिया।

ठगा हुआ-सा प्रकाश समझ नहीं पा रहा था कि खुशी मनाए या अफ़सोस !

घर

सुषमा देवी
सिकंदराबाद, भारत

वह बेतहाशा दौड़ रही थी। उसके हाथ में कैल्शियम सांड्यूज के सफेद रंग के डिब्बे थे, जो मिकी माउस के आकार में ढले हुए बड़े आकर्षक लग रहे थे। उस डिब्बे में सिक्के उसके दौड़ने के साथ ही खन-खन की आवाज कर रहे थे। वह गहरे हरे रंग की फूल-पत्तियों वाली फ्रॉक पहने हुए थी। वह अभी 10 साल की थी; लेकिन अपने आत्मसम्मान को लेकर बड़ी सतर्क रहती थी। उसके माता-पिता नहीं थे, सड़क दुर्घटना में चल बसे थे। वह मौसा-मौसी के साथ रहती थी। एक दिन मौसा ने उसे किसी बात पर झिड़क दिया था, जिससे आहत होकर वह घर छोड़कर भाग रही थी। कहाँ जा रही है... उसे नहीं पता है। गाँव की सीमा तक वह रोज की चाल से चल रही थी। रोज ही तो नित्य कर्म के लिए खेत में जाती थी, आज अपने अंतिम क्रिया-कर्म के विचार से निकली है। रोज की तरह आँगन में रखे गमले में पानी दिया, चाय के बर्तनों को साफ करके लालटेन के शीशे चमकाए, सारे काम पूरे करके अपने राखी और कजरी तीज पर मिले सिक्कों वाले डिब्बे को लेकर घर से निकल पड़ी।

वह गाँव से काफी दूर निकल चुकी थी। सुनसान रास्ते में झींगुर की आवाज़ सुनकर पहले ही सहमी हुई थी। उसी समय कुत्तों के झुंड को आपस में भौंकते-लड़ते हुए पीछे आते देख कलेजा मुँह को आ गया। उसने मन में विचार किया कि हो सकता है, ये कुत्ते उसे छोड़ दें या हो सकता है कि उसके शरीर को नोच डालें; लेकिन अपनी प्रजाति के कु… से तो उसकी आत्मा भी छलनी हो सकती है। भय ने उसके कदम घर की ओर मोड़ दिए। घर में कदम रखते ही मौसा चिल्लाए,“कहाँ मर गई थी, कब से तुम्हारी मौसी पुकार रही थी।”

घर वापसी

शबनम सुल्ताना
भोपाल, भारत

अपनी सीट पर बैठी मीरा सामने बैठी लड़की को कब से देख रही थी, जो आते जाते लोगों से नजरें चुरा रही थी। अपनी आँखों में आये आँसुओं को हाथ से रोकने की कोशिश करती डरी-सहमी सी। मीरा जो एक वैश्या थी और जमाने की बेरहमी से वाकिफ थी; अपनी सीट से उठकर उस लड़की के पास पहुँच गई।

"बेटा कहाँ जा रही हो और इतनी डरी-डरी-सी क्यों हो?"

"नहीं, नहीं तो!" लड़की हकलाई।

"अगर कोई बात है तो बताओ, कोई परेशान कर रहा है?"

"नहीं-नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है।"

"क्या मैं यहाँ आपके पास बैठ जाऊँ?"

"जी! बैठ जाएँ," लड़की ने थोड़ा सुकड़ कर कहा।

"मैं अम्बाला जा रही हूँ, मेरा नाम मीरा है।"

"जी, मेरा नाम ज्योति है।" थोड़ा सहज होकर लड़की बोली।

"अरे बड़ा ही प्यारा नाम है, 'ज्योति'! माँ-पिताजी ने बड़े ही प्यार से रखा होगा, है न?"

"मेरे माँ-पिताजी ने भी बड़े प्यार से मेरा नाम रखा था मीरा! बहुत प्यार करते थे वो मुझसे; लेकिन मुझे एक लड़के से प्यार हो गया। उसके प्यार में पागल हो मैंने घर छोड़ दिया। पैसे-ज़ेवर जो हाथ लगा, ले आई और उस लडक़े ने मेरा सब कुछ लूट कर एक कोठे पर बेच दिया।"

इतनी देर से चुप सुनती ज्योति एकदम से काँपती-सी खड़ी हो गई। मीरा,"अरे क्या हुआ बेटा आपको?"

"कुछ नहीं, मेरा कुछ सामान घर पर ही रह गया।"

"हाँ-हाँ, जाओ बेटा; वरना गाड़ी चल देगी।"

मीरा ज्योति को जाते हुए देखकर सोचती है,"मैं जानती हूँ बेटा, अब तुम कभी नहीं आओगी। मैं तो कभी घर न जा पाई; लेकिन किसी भी लड़की को यूँ अपनी तरह बेघर नहीं होने दूँगी। नादान उम्र में एक बचकानी हरकत हमारा सब कुछ छीन लेती है। जो मेरे साथ हुआ और जो मैंने अपने माँ-बाप के साथ किया; शायद एक लड़की को बचा लूँ तो प्रायश्चित्त हो जाए।"

चक्रव्यूह

दुर्गा सिन्हा 'उदार'
सैन डिएगो, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

"हलो! स्वागत है! आप एक महान साहित्यिक समूह से जुड़ रही हैं, आपका स्वागत है।" मैंने अभी WhatsApp खोला ही था कि पहले ही मैसेज से दिमाग़ झन्ना गया। ऐसा कौन सा महान साहित्यकारों का ग्रुप है जो मुझे भाग्यशाली बनाने का बीड़ा उठा रहा है। एक प्रश्न और मन ने दागा कि इसे कैसे पता चला कि मैं भाग्यशाली नहीं हूँ और इसने बिना मेरी अनुमति ठेका ले लिया, पूछा तक नहीं कि मैं ठेका उसे देना भी चाहती हूँ या नहीं। चलो, दुनिया में बहुत से परमार्थ करने वाले लोग हैं जो हर दिन हमारे जैसों का भला करते ही रहते हैं। दुनिया अच्छे लोगों से भरी पड़ी है। यह जान कर मन आनंद से झूम उठा।

आगे बढ़ी तो दूसरा नया संदेश - "नमस्कार! आप एक महान साहित्यकारा हैं। आप हमारे समूह से अतिशीघ्र जुड़ें। हम महान साहित्यकारों का सम्मान करते हैं।"

मन ने कहा - "ज़ाहिर है मेरा भी सम्मान यहाँ हो ही जाएगा। क्या बुरा है!"

लेकिन अगला संदेश पढ़ते ही फिर माथा ठनका, लिखा था,"आप जल्दी से अपना FB ID आदि डिटेल्स भेजें, ताकि मैं आपको अपना दोस्त बना सकूँ। फिर हम आराम से बातें कर सकेंगे।"

"क्या बातें करनी हैं?" यह समझ न आया। थोड़ी देर उलझी रही फिर "हुँह" करके आगे बढ़ गई।

मन ने कहा - इतनी भी क्या जल्दी है दोस्ती करने की और भला क्यों है? आराम से देखो, परखो, समझो, जानो, उसके बाद आगे बढ़ो, तो कुछ सोचा-समझा भी जाए। विचार कर दोस्ती की जाए। फिर समूह में दोस्ती ही तो है। आप हमारी रचना पढ़ कर दाद देते हैं, हम आपकी रचना पढ़ कर 'वाह! वाह!' करते हैं। इससे ज़्यादा तो हम कुछ करते भी नहीं, कर सकते भी नहीं। साहित्यकारों को प्रशंसा करने की तो छूट है; लेकिन आलोचना करने की इजाज़त नहीं। किया तो समूह से बाहर। दोस्ती ख़त्म। तभी तो मैं इससे आगे बढ़ी ही नहीं। सीखा भी नहीं। जिस ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं उसे सीखने का क्या फ़ायदा। मैं तो दो संदेशों से ही अभी उबर नहीं पाई थी कि आगे और संदेशों की घंटी बज गई। लगता है लोग सो कर उठ गए; मन ने कहा और मैंने मोबाइल को बंद कर दूर ढकेला और कॉपी-पेन ले कर कुछ लिखने बैठ गई। कलम चली तो आज की ही घटना लिखती गई। अब मेरे यहाँ तो रात होने लगी थी। दोनों देशों में रात-दिन का फ़र्क़ है, सो मैं चादर ओढ़ कर सो गई। आज तो मैं बच गई।

चश्मे का फ्रेम

राजरानी शर्मा
ग्वालियर, म.प्र., भारत

"अरे कुसुम!"

"दीदी! द्वार खोल दो। मैं थोडी मूँग की बडियाँ बना लाई हूँ।"

छाया ने दरवाज़ा खोला,"अरे! दूर बैठ जाना कुसुम! अंदर आ जाओ।"

"मुंगौडी तो रख दो, दो-तीन दिन बाद ही इस्तेमाल कर पायेंगे।"

"तू आजकल ज्यादा बना न, ये सब पापड़ भी बना, आलू अच्छा आ रहा है और लॉकडाउन में सस्ता भी है, तेरा लड़का बेच आयेगा।"

कह तो गयी मैं उत्साह में; पर कुसुम का चेहरा फक पड गया! मानो आँखें संवाद कर रही हों।

कहना चाह रही - "हम रोज कुआँ खोद के रोज पानी पीने वाले, कामगार मजदूर हैं, पर मौन!"

"हाँ सोच तो रही हूँ। रोज के खर्चे से उबर पायें तब न!" ... और छुप के आँखें पौंछ लीं!

मैं चुपचाप उठी और एक छोटी सी थैली थमा दी,"ले शायद तेरा काम चल जाये। तुझे मेरी कसम जल्दी उठा ले। छाया आ रही होगी।"

छाया अंदर से बहुत सा सामान देने को ले आई।

तीन-चार महीनो बाद एक दिन खुशी-खुशी फिर कुसुम आई...। "दीदी! बस दो मिनट को दरवाजा खोल दो...।"

कुछ पैकेट रखते हुए बोली,"ये बना लेना दीदी। घर में ही तैयार किये हैं हमने।"

छाया ने वेतन के अलावा उसके सामान के पैसे देने चाहे; मगर "काकी आपने हमारी खुद्दारी को बचा लिया, किसी के आगे हाथ न पसारना पडा।" आँखों ही आँखों में रोम-रोम से असीसती चली गयी! रिणिया रहूँगी सदा।"

"माँ ये तो कुछ ज्यादा ही धन्य नहीं हो रही?"

"ये खरे और संतोषी लोग हैं बेटा! मेहनत के दम पर जीने का मंत्र सिद्ध कर लिया है।"

"सच माँ , संतोष की पूँजी है इनके पास।"

"माँ कई दिनो से देख रही हूँ, आपका सोने के फ्रेम वाला चश्मा कहाँ गया? बहुत दिनो से आप ये पहने हो।"

"अरे मैने रख दिया उठा कर कहीं आना न जाना।"

चीख़

हरीश कुमार 'अमित'
गुरुग्राम, हरियाणा, भारत

"मैडम जी, पानी बहोत ठंडा होत है। गीजर लगवा लो ना रसोई मा!" कड़कती सर्दी की एक सुबह कामवाली बाई ने रसोई के सिंक में पड़े जूठे बर्तनों के ढेर की ओर देखते हुए कहा।

"एक-डेढ़ महीने ही तो पड़ती है ज़्यादा ठंड! उसके बाद गीज़र का क्या काम? और पानी भी कौन-सा इतना ठंडा होता है! शुरु में एकाध मिनट ही लगता है ठंडा, फिर कुछ पता नहीं चलता। तू जल्दी से माँज ले बर्तन, मैं नहाकर आती हूँ तब तक। ऑफिस को देर हो रही है।"

मधु की बात सुनकर बाई ने सिंक पर लगा नल खोला तो ठंडे पानी को छूते ही उसकी चीख़ निकल गई।

मधु नहाने के लिए बाथरूम में चली गई। नहाने के लिए उसने जैसे ही नल खोलकर हाथ पर पानी डाला, उसकी भी चीख़ निकल गई। बहुत देर पहले चलाए गए गीज़र का पानी जैसे ख़ौला हुआ था।

चीफ गेस्ट

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

"अगले महीने विश्व हिन्दी दिवस है। इस वर्ष हमें बड़े फ़ंक्शन का आयोजन करना है।" डॉ. राधारमण द्विवेदी ने कुछ चिंताजनक स्वर में अपनी बात से मीटिंग आरंभ की। वे अखण्ड भारत हिन्दी प्रचार समिति के अध्यक्ष हैं। मीटिंग में उनके साथी डॉ. राधा पंचोली, श्री इकबाल अहमद व सुश्री शोभा पंडित भी उपस्थित थे।

"आप की बात से सहमत हूँ। हमारा तो गोल ही हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। फ़ंक्शन बड़ा तब ही माना जाता है जब कोई बड़ा चीफ गेस्ट हो।" डॉ. पंचोली ने अपने विचार व्यक्त किए।

"क्यों न हम भारत के प्रेसीडेंट को इन्वाइट करें?" श्री अहमद बोले।

"प्रेसीडेंट को बुलाने से भला क्या लाभ? आजकल तो प्राइम मिनिस्टर ही सर्वे-सर्वा हैं। उनको ही आमंत्रित करना चाहिए," शोभा जी बोलीं।

"आप का प्रपोज़ल है तो एक्सलन्ट, किन्तु उनके पास इन सब के लिये समय कहाँ? वे तो चुनाव अभियान में अधिक व्यस्त रहते हैं, कभी यहाँ तो कभी वहाँ," डॉ. द्विवेदी ने कहा।

"तो फिर पार्लियामेंट के स्पीकर को ही इन्वाइट कर लेते हैं। 'स्पीकर' हैं, अच्छा ही स्पीक करेंगे," शोभा जी बोलीं।

"अरे नहीं! अभी पिछले सेशन में उनकी कुछ कमेंट्स से विरोधी पक्ष बड़े अपसेट हो गए थे। यदि अगले चुनाव में अपोज़िशन पार्टी पावर में आ जाती है तो हमारी संस्था को मिलनेवाला अनुदान बंद भी हो सकता है," श्री अहमद ने अपनी चिंता व्यक्त की।

"मैं एक सुझाव दूँ?" राधा जी ने कहा।

"जी अवश्य!" सब एक साथ बोल पड़े।

"दिल्ली के सबसे बड़े बिज़नेसमेन घनश्याम मदानी मेरे बेटे के फादर-इन-ला हैं। उनको कहूँगी तो रिफ़्यूज़ नहीं कर पाएंगे। उनसे बड़ा डोनेशन भी मिल सकता है।"

"क्या बात है! नेकी और पूछ-पूछ! हम अभी उनको इन्वाइट भेजते हैं। राधा जी, आप जरा फॉलो-अप कर लेना।" डॉ. द्विवेदी अब बड़े उत्साहित थे।

दूसरे दिन सेठ घनश्याम मदानी के सचिव का संदेश आ गया, लिखा था,"Thank you for the invitation. Mein Hindi ke prachar mei aap ki sahayata karne avashya aaunga."

चोट

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

बारह वर्षीय विपुल घर पहुँचा और पीछे-पीछे पहुँची उसकी शिकायत।

"सुनिए वर्मा जी! आपके विपुल ने मेरे टॉमी के गले से जंजीर खोल दी और उस पर हिंसा की।" मिश्रा जी शिकायती लहजे में बोले। साथ ही टॉमी भी गुर्रा-गुर्राकर शिकायत कर रहा था।

"पड़ी तो हुई है टॉमी के गले में जंजीर। कैसी बाते करते हैं? झूठी शिकायतें लेकर आते हैं मेरे बेटे की...। उस दिन आपके बेटे शानु ने ऐसी बॉल मारी कि हमारी बालकनी का गमला गिरकर टूट गया।" वर्मा जी ने उल्टा ही आरोप जड़ दिया।

"वर्मा जी! खेलने के कारण हुआ नुकसान और बात है और शैतानियों के कारण नुकसान होना और बात है। आप दोनों को एक नहीं गिन सकते। आपको अपने बेटे विपुल को समझाना ही होगा, वर्ना किसी दिन भयंकर नुकसान उठाना पड़ेगा।"

"किस नुकसान की बात करते हो? टॉमी सही-सलामत आपके पास है। अब क्या चाहते हो कि इस छोटी-सी बात पर मैं अपने विपुल को मारना-पीटना शुरु कर दूँ? अब वे ज़माने गए मिश्रा जी! जब पड़ोसियों की ईर्ष्या-द्वेष भरी शिकायतों पर घरवाले बच्चों की खाल उधेड़ दिया करते थे।" विपुल को अंदर खिसक जाने का संकेत करते हुए वर्मा जी बोले।

"खाली इतना ही रहता वर्मा जी तो भी मैं न आता। विपुल ने टॉमी की पूँछ उमेठी और उसे पार्क में उछाल दिया। ये तो वह घास पर गिरा और किसी तरह बच गया पर किसी के चोट लग जाती तो...?"

"तब की तब देखी जाती। अभी तो नहीं लगी न? आप निकलिए अब। बहुत हो गया। आप तो मेरे बच्चे के हाथ धोकर पीछे ही पड़ गए हैं। आपका तो कुत्ता भी बहुत प्यारा है और हमारे ये हाड़-माँस के बच्चे भी कुत्ते के सामने किसी मोल के नहीं हैं।" कहकर वे अंदर चले गए।

"अब तो मैं क्या ही समझाऊँ आपको, वक्त ही समझाएगा।" कहकर वे निकले तो किसी ने दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से खड़खड़ाया।

"अब कौन है? चैन नहीं है क्या आपको?" वे दहाड़ते हुए बाहर निकले तो देखा कि उनके पिता जी खून से लथपथ हैं और दो युवक उन्हें सहारा देकर लाए हैं।

"अरे! यह कैसे हुआ पिताजी? आपके चोट कैसे लगी?" साथ आने वाले युवकों से पूछा, "ये हाल कैसे हुआ इनका?"

"अंकल जी पार्क में थे तो एक कुत्ता इनके ऊपर जाने कहाँ से आ गिरा। ये डरकर भागे तो पत्थर से टकराकर गिर गए और सिर में चोट लग गई।"

छूट
मधूलिका श्रीवास्तव
भोपाल, भारत

प्रो. प्रोफेसर शर्मा और उनकी पत्नी शाम के समय बाहर बगीचे में बैठकर चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे, तभी सड़क पर 20-25 युवकों का झुंड आता नजर आया। अत्यंत संपन्न, स्वस्थ, मस्त हाथियों की तरह झूमते हुए वे फाटक खोलकर भीतर आए।

प्रोफेसर शर्मा ने पलट कर देखा, उनके चेहरे पर अप्रिय भाव उमड़ आया। वे लड़के धड़ाधड़ उनके पैर छूने लगे, कुछ उनकी पत्नी की तरफ बढे तो वे अंदर चली गईं। "आशीर्वाद दीजिए सर... कल हमारी परीक्षा है..."

"क्या आशीर्वाद चाहिए आपको..." प्रोफेसर साहब गुस्से से बोले।

"कल परीक्षा है ...और आज मस्ती में घूम रहे हैं! जाइए, चुपचाप पढ़िए और परीक्षा की तैयारी कीजिए।"

"कल के लिए ही तो आपका आशीर्वाद चाहिए सर..." उनमें से एक नेता टाइप युवक बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़ते हुए बोला। सभी के चेहरे पर उपहास करती हुई मुस्कान छपी थी।

"बाकी प्रोफेसरों का आशीर्वाद तो मिल गया है सर..., आपका आशीर्वाद भी मिल जाता…।"

प्रोफेसर के चेहरे पर घृणा का भाव उभर आया,"जाइए यहाँ से..." लगभग दुत्कारते हुए बोले - "यही चाहते हो ना कि कल परीक्षा हॉल में न आऊँ..., नहीं आऊँगा... अब निकलो यहाँ से...," कहकर प्रोफेसर अंदर चले गए।

"क्या जी! आपसे आशीर्वाद भी नहीं दिया गया, भगा अलग दिया…" उनकी पत्नी ने उलाहना दिया।

"कुछ पता भी है तुमको... आशीर्वाद का मतलब क्या है? ये सब कल के पेपर के लिए नकल की छूट माँगने आए थे... पता कर लिया होगा कि कल परीक्षा हाल में किसकी ड्यूटी है?"

छोटा घर

बृजबाला गुप्ता 'अर्चना'

इंदौर, भारत

आज नानी सुबह से ही बहुत खुश थीं, अमेरिका में रहने वाले बड़े मामा और उनके बच्चे घर जो आ रहे थे। सुबह से ही घर में पकवान बन रहे थे। घर में भीनी-भीनी खुशबू आ रही थी। सबकी पसंद का ख़याल रखा जा रहा था। घर की साफ-सफाई की जा रही थी। बार-बार सबको घर में बिखेरा न करने की हिदायत दी जा रही थी। नाना जी बोले सब घर के लोग हैं, उनका घर है, पर नानी जी कहाँ मानने वाली थी। शाम होते-होते सब काम से निपट कर इंतजार करने लगीं, ताकि बेटे-बहू ओर बच्चों के साथ अधिक से अधिक समय बिता सके।

तभी फोन की घंटी बज उठी। नानाजी ने फोन उठाया तो मामा जी बोले,"पिताजी हम शहर में आ गए हैं और आपसे मिलने थोड़ी देर में आते हैं।" बात पूरी होने से पहले ही नानी जी प्रसन्नता में नाना जी से फोन लेकर सुनने लगी। मामा बोले जा रहे थे,"घर छोटा है, बच्चों को असुविधा होगी। इसलिए हम होटल में रुक गए हैं, फ्रेश होकर आपसे मिलने आते हैं, सुनकर नानी की आँखों से आँसू बहने लगे। यह वही बेटा है जिसे हमारा पेट काटकर पढ़ने-लिखने के लिए, बड़ा व्यक्ति बनने के लिए अमेरिका भेजा था?"

जड़ें

योगेन्द्र नाथ शुक्ल

इंदौर, भारत

उस सरकारी भवन में विभाग द्वारा नया फर्नीचर खरीदा गया था। टेबल, कुर्सी, बेंच, स्टूल, अलमारियों आदि को साहब ने एक बड़े कमरे में रखवाने का आदेश दिया था। बाहर से तो उस कमरे में ताला लटक रहा था; परंतु अंदर से चहकने की धीमी आवाजें आ रही थीं।

"ईश्वर ने क्या संयोग बनाया कि लंबे समय के बाद हम सभी यहाँ मिल रहे हैं!"

"हाँ भाई हाँ! बहुत प्रसन्नता की बात है। कभी हमारा रात-दिन का साथ था, उसी जंगल में हम एक साथ बड़े हुए और...और एक साथ काटे भी गए!"

"तो क्या हुआ भाई? सिर्फ हमारा स्वरूप ही तो बदला है, हम हैं तो वही!"

"अरे जाहिलो! ज़रा समझो, अपनी जड़ों से अलग होने का मतलब होता है, अपने अस्तित्व का मिट जाना!"

उस कमरे से अब आवाज़ें आना बंद हो गई थीं।

जन्मोत्सव

शेफालिका श्रीवास्तव
भोपाल, भारत

नेहू प्रतीक्षा कर रही थी, कब कुंडी खटकेगी और सासू माँ की आवाज़ गूँजेगी - "आजा बेटा नेहू, केक काटेंगे।"

शाम से इंतज़ार कर रही नेहू की आस तब टूट गई जब सासू माँ ने कहा - "चलो बहूरानी! बेटा नेहू! खाना लगा लो, समय हो गया है।"

मम्मी का दिया गया आश्वासन - ससुराल में भी तेरा जन्मदिन ऐसे ही धूमधाम से मनेगा, एक झटके में टूट गया।

तभी दरवाज़े पर खड़े पति की आवाज़ आई - "माँ! अनाथ-आश्रम में आज का स्लॉट ख़ाली नहीं था, इसलिये मैंने कल का ही समय ले लिया है। कल आश्रम के बच्चों के साथ केक काट कर, उनके साथ ही स्वल्पाहार कर, कुछ खेल इत्यादि खेल कर नेहू के जन्मदिन को जन्मोत्सव के रूप में मनायेंगे।"

कुछ देर रुक कर फिर बोले - "नेहू! हम लोग ऐसे ही जन्मदिन मनाते हैं। तुम ख़ुश तो हो ना!"

और .. नेहू को लगा, वह एकदम से बड़ी हो गई। समझ गई, गुब्बारों और सखियों-सहेलियों के अलावा और भी दुनिया है।

प्रत्युत्तर में .. आश्चर्य मिश्रित ख़ुशी के साथ माँ और पति की ओर देख मुस्करा उठी।

जाड़ा

पायल गुप्ता 'पहल'
अजमेर, राजस्थान, भारत

पंखे ने अपनी पंखुड़ियों से कहा,"इन जाड़े के दिनों में तुम और मैं साथ-साथ और साफ-साफ रहते हैं।"

तब एक पंखुड़ी ने बुझे मन से कहा,"हम तीनों तो बिना हिले और चले बोर हो गयी हैं...जाड़े में हमें न हिलना और न हवा देना होता है।"

इस पर दूसरी पंखुड़ी बोल पड़ी,"अगर हम काम करेंगे तो हमें मिट्टी से जूझना पड़ेगा... तो अच्छा ही है न साफ-सुथरा रहना।"

तब तीसरी पंखुड़ी सबको सुनकर बोल पडी,"मिट्टी से जूझने के बाद जब कपड़े से हमारी सफाई होगी तब जो चमक हमारे तन-मन पर आएगी वह ज्यादा सुंदर होगी।"

अचानक कमरे में किसी ने गलती से पंखे का बटन चला दिया। जाड़े में तीनों पंखुड़ियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

जान-पहचान

शकुन्तला पालीवाल
उदयपुर, भारत

पति-पत्नी दोनों सरकारी नौकरी में थे। वे किसी नजदीकी स्थान पर स्थानांतरण करवाने की जुगत में बहुत समय से प्रयासरत थे; मगर सफलता नहीं मिली। एक दिन पति ने कहा - आज मेरी अपने एक पुराने दोस्त से मुलाकात हुई। उसकी बहुत ऊपर तक जान-पहचान है, वह जरूर हमारी मदद कर सकता है। चलो उसी के पास चलते हैं। यह बताते हुए पति गर्व अनुभव कर रहा था। पत्नी की आँखों में भी चमक आ गई; मगर बहुत प्रयासों के बाद भी काम नहीं बना।

एक दिन पत्नी ने पति से कहा - मुझे लगता है हमारे इस मामले में मेरे प्रिंसिपल साहब की बेटी हमारी कुछ मदद कर सकती है। वह काफी समय से राजनीति में सक्रिय भी है और उसकी जान-पहचान बहुत लोगों से है। पत्नी ने बहुत गर्व से बताया; मगर पत्नी की बात सुनते ही पति के चेहरे के हाव-भाव बदल गए। वह पत्नी से बोला - दूर रहना ऐसी चरित्रहीन औरत से। हमें किसी मदद की जरूरत नहीं। पत्नी ने प्रश्नवाचक नजरों से पति को देखा। पति कहने लगा - क्या तुम्हें लगता हैं इतने लोगों से जान-पहचान रखने वाली औरत का चाल-चलन ठीक होगा! इस पर पत्नी बोली - और तुम्हारे दोस्त के चाल-चलन के विषय में तुम क्या कहोगे? पति के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था।

जानवर

वासवदत्ता अग्निहोत्री
ग्वालियर, म.प्र., भारत

चारों दोस्त खूब हँसते-गाते, पीते-पिलाते, मस्ती करते, आधी रात के समय हाइवे पर लहराते हुए अपनी कार ड्राईव कर रहे थे, साथ बजता तेज संगीत, उन्माद में इजाफ़ा कर रहा था। अचानक सामने से तीन-चार कुत्ते तेजी से रास्ता पार कर झाड़ियों में घुस गए। वहाँ पर और कुत्ते थे, जो भयानक रूप से भौंक रहे थे। जो ड्राइव कर रहा था, अचकचाकर ब्रेक लगा बैठा, झटके से कार रुक गई।

"अबे क्या कर रहा है...मरवाएगा क्या," एक बहककर बोला।

"अरे देखो तो कुत्ते कैसे भौंक रहे हैं! शायद झाड़ियों में कुछ है...।" दूसरा बोला

"अरे कोई मरा हुआ जानवर होगा, उसके लिए ही लड़ रहे होंगे…, तू चला गाड़ी।" तीसरा बोला "अब गाड़ी रुक ही गई है तो ठहरो जरा...मै हल्का हो लूँ।"

उसके साथ सभी बाहर निकले। कुत्ते बेतहाशा भौंक रहे थे, गुर्रा रहे थे, लड़ रहे थे। लड़कों का ध्यान उधर गया; इतने में एक दबी लेकिन दर्दनाक चीख सुनाई दी। चीख वहीं से आई थी, जहाँ कुत्ते लड़ रहे थे। किसी लड़की की आर्त्त चीख! "कोई है वहाँ...," एक की घबराई-सी आवाज निकली... "शायद कोई लड़की…" दूसरा बोला।

"अरे यार! सारा नशा हिरन हो गया, क्या है?" चौथे ने इत्मीनान से सिगरेट सुलगाई.... "शायद कोई फेंक गया है किसी लड़की को....इस्तेमाल कर के" तीनों हैरत से उसे देखने लगे।

"क्या कहना चाहते हो?" दूसरा बोला "तुम्हारा मतलब गैंगरेप...?" चौथे ने धुआँ छोड़ा… "और क्या, ये सब तो चलता ही रहता है!" बाकी तीनो कुत्सित, वीभत्सता से हँस पड़े।

"अब तो अपने मतलब की भी नहीं रही...।" हँसते-खिलखिलाते सभी कार में बैठ गए और कार सरपट, हाईवे की छाती पर लहराकर दौडने लगी। इतने में एक और हृदय विदारक चीख सुनाई दी। कुत्तों का आदमखोर भौंकना, उन चारों की हँसी में घुल मिलकर वातावरण को जहरीला बनाता रहा।

जीवन मूल्य

उषा श्रीवास्तव
बेंगलूरु, भारत

वर्किंग आवर्स होने से बस में बहुत भीड़ थी। अगले स्टॉप पर एक गर्भवती महिला अपनी बूढ़ी माँ के साथ बस में चढ़ी। भीड़ भरी बस में गर्भवती स्त्री ठीक से खड़ी भी नहीं हो पा रही थी और बूढ़ी माँ भी मुश्किल से खड़ी हो पा रही थी।

पाखी भी उसी सिटी बस से कॉलेज जा रही थी। वह स्वयं खड़ी थी, अतः उसने एक-दो यात्रियों से उन्हें बैठाने के लिए कहा; पर कोई भी सीट छोड़ने को तैयार न था। इतने में उनका स्टॉप आ गया और वे धीरे-धीरे बस से उतरने लगीं तो कंडक्टर मदद करने की बजाए चिल्लाने लगा,"जल्दी उतरो, तुम्हारे लिए बस कब तक खड़ी रहेगी? कहाँ-कहाँ से उठकर आ जाते हैं ...!"

उनकी असहाय स्थिति एवं लोगों की बेरुखी देखकर पाखी के सब्र का बाँध टूट गया। वह जोर से चिल्ला पड़ी,"अगली बार किसी असहाय को देखकर अवश्य मदद करें; क्योंकि किसी दिन उनकी जगह आपके परिवार के सदस्य भी ऐसी स्थिति में हो सकते हैं। इंसान जीवन में जितना आगे बढ़ रहा है, उतना ही जीवन मूल्यों को पीछे छोड़ता जा रहा है।"

आगे जाकर उसने उन दोनों को नीचे उतरने में मदद की। महिला ने आँखों में कृतज्ञता लिए 'थैंक यू' कहा तथा उसकी माँ ने आशीर्वाद भरे हाथ पाखी के लिए उठाए तो उसे ऐसा लगा कि वह दुनिया की सबसे खुशनसीब इंसान है।

जीवनदान धरा का

मधूलिका सक्सेना 'मधुआलोक'
भोपाल, भारत

राम सहाय बहुत दिनों से इस विज्ञापन की राह देख रहे थे। उनके मित्र ने उन्हें पहले ही बता दिया था की शहर की एक बहुत मौके की जगह पर प्लॉट कटने वाले हैं, जिनका विज्ञापन शीघ्र ही अखबार में आएगा। उन्होंने पहले से ही पैसों का भी इंतजाम कर लिया था। हमेशा से वे सस्ती जमीन खरीद कर रखे रहते थे। समय से भाव बढ़ने पर उसका अधिकतम उपयोग कर बहुमंजिला इमारत बनाते और अच्छी कीमत पर फ्लैट बेच देते थे। इसीलिए पिछले दिनो उन्होंने अन्य विज्ञापनों को अनदेखा भी कर दिया था।

मोबाइल पर दोस्त का फोन देख वे खुश हो गए। कुछ ही देर में माँ लक्ष्मी के आने की खबर ही मिलने वाली थी। पेपर वाले को वे ताकीद भी कर चुके थे। अखबार के आते ही उन्होने सबसे पहले विज्ञापन का पृष्ठ खोला। विज्ञापन के अंत में लिखा था - ''निम्न नियम की अनदेखी पर कड़ी सजा का प्रावधान सरकार द्वारा किया गया है।'' वे आगे पढ़ते गए - ''प्लॉट के ऊपर आधे हिस्से में केवल एक मंजिला मकान और उसके चारों ओर बगीचा लगाना अनिवार्य है।''

जीवन रंग

उषा श्रीवास्तव
बेंगलूरु, भारत

"सुनीति बेटा! आओ, चलो होली की तैयारी में हाथ बँटाओ। ये रंग-गुलाल ले जाकर बाहर रख दो, मिठाइयाँ आदि प्लेटों में लगा दो और हाँ बेटा! प्लेट-चम्मच,पानी भी ध्यान से रखना। ऐसा न हो, समाज के लोग आने पर बार-बार हमें अंदर-बाहर भागना पड़े," अपनी ही धुन में रोहिणी बोलती जा रही थी।

"माँ अब ये रंग मेरे जीवन में कोई महत्त्व नहीं रखते, फिर क्यों आप ये सब मुझसे करवा रही हो? मुझे चुभते हैं ये रंग। लोगों की आँखें जब मुझे घूरती हैं तो आहत हो जाती हूँ। मैं..मैं बाहर नहीं आऊँगी..." सुनीति, भीगी आँखों से आहत-स्वर में बोली।

"देखो बेटा! नियति पर किसी का बस नहीं, जाने वाले के साथ कोई नहीं जा सकता। रमन को गए दो साल हो गए और हम सभी ने इस सच को स्वीकार कर लिया है।"

"नहीं माँ! मुझसे नहीं होगा।"

"तुम कब तक यूँ ही अतीत में डूबी रहोगी?"

"आगे बढ़ो, लोगों का क्या है, उनका तो काम ही दूसरों की ज़िंदगी में दखल देना है। यह हमें निश्चित करना है कि हम उन्हें ये अधिकार दें या नहीं।" पिताजी बोले।

"क्या हमने खाना-पीना और जीना छोड़ दिया है?"

"क्या तुम समझती हो यह सब नहीं करने से लोगों को विश्वास दिला पाओगी कि तुम्हें उसके जाने का बहुत दु;ख है?" माँ प्यार से माथे पर हाथ फेरते हुए बोली।

"जीवन न जाने कितना लंबा है, इस सच्चाई को स्वीकार करो और इन रंगों को एक बार फिर जीवन में उतार लो। समय के साथ परिवर्तन ही जीवन है," कहते हुए स्नेह से उन्होंने सुनीति के गालों पर गुलाल लगा दिया।

झुनझुना
रमेश यादव
मुंबई, भारत

मुसीबत भरी यात्रा करते हुए सेवानिवृत्त हिन्दी अधिकारी अनंत जी पसीना पोंछते हुए दक्षिण मुंबई के उस सरकारी कार्यालय के पास पहुँच गए जहाँ उन्हें आज बतौर निर्णायक एवं विशेष अतिथि आमंत्रित किया गया था। इमारत की तल मंज़िल पर हिंदी दिवस-पखवाड़ा-माह के कई नए-पुराने बैनर लगे थे। उनमें से कुछ झूलते हुए अपनी दुर्दशा बयाँ कर रहे थे। लिफ्ट की कतार में सूट-बूट, टाई और सजी-धजी महिलाएँ कॉर्पोरेट अंदाज में हिदी दिवस का गुणगान करते हुए अंगरेज़ी में संवाद कर रही थीं।

राजभाषा हिन्दी का उत्सव उनके लिए नया नहीं था। मसखरे हास्य कवियों की डिमांड जब बजट से बाहर हो जाती है, तब गम्भीर हिंदी सेवियों को बुलाया जाता है, जो भाव-ताव किए बिना सहजता से आने को तैयार हो जाते हैं।

प्रतियोगिता का विषय था- 'राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन योजनाएँ।' अन्य अनुभागों से कर्मचारियों को पकड़-पकड़कर लाया जा रहा था। प्रतिभागियों ने काफी अच्छे विचार रखे, जैसे प्रोत्साहन योजनाएँ ठोस स्वरुप की होनी चाहिए। मसलन इन्क्रीमेंट, पदोन्नति, नियुक्ति आदि। हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करना, राष्ट्राभिमान का एहसास होना, इसे रोजी-रोटी से जोड़ना, अंगरेज़ी स्कूलों पर नकेल कसना, पूरे देश में हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना आदि मुद्दे उठाए गए।

तीनों निर्णायकों ने विजेताओं के नामों की घोषणा करते हुए अपना-अपना वक्तव्य हिंदी में दिया। कार्यालय के महाप्रबंधक जी ने अपना अध्यक्षीय भाषण हिंग्लिश में देते हुए कहा,“यहाँ ठोस प्रोत्साहन देने का पॉइंट आया; बट इट्स नॉट इन माय पावर; परंतु मैं अपनी तरफ से कुछ देना चाहता हूँ।” बटुए से दो हजार रुपये निकालकर राजभाषा अधिकारी को देते हुए बोले,“इसे सभी प्रतिभागियों में इक्वली डिस्ट्रीब्यूट कर दो।” प्रत्येक के हिस्से में पचास-पचास रुपए आए और लोग इतने में ही खुश हो गए।

प्रतियोगिता समाप्ति के बाद तीनो निर्णायक नीचे उतरे और एक गुमटी पर चाय की चुस्कियाँ लेते हुए अपना-अपना कवर खोलकर देखने लगे। कवर में रखी राशि को देखकर चाय का स्वाद कसैला हो गया। चार घंटे की मेहनत के बाद पुनः टैक्सी, लोकल ट्रेन की नारकीय यात्रा की कल्पना मात्र से ही उन्हें पसीना छूटने लगा। सामने ठेले पर एक खिलौने वाला आवाज लगा रहा था - “बच्चों के लिए झुनझुना ले जाओ, झुनझुना...प्यारा-प्यारा झुनझुना...”

टाइम-बेटाइम

राम मूरत 'राही'

इन्दौर, भारत

"पापा! आप जब दस दिन के लिए टूर पर गए थे तो भैया ने अपने मकान के पीछे वाले वर्मा अंकल की मदद नहीं की थी।" चौदह वर्षीय अमन ने दीनदयाल जी के आते ही अपने बड़े भाई रोहित की शिकायत की।

"कैसी मदद नहीं की?" दीनदयाल जी ने चाय की चुस्कियाँ लेते हुए पूछा।

"क्यों छोटू, पापा के आते ही तूने मेरी चुगली करना शुरू कर दी?" रोहित ने अपने कमरे में से आकर दीनदयाल जी के पास बैठते हुए कहा।

"भैया! मैं चुगली नहीं कर रहा हूँ। मैं तो सच बोल रहा हूँ। आपने वर्मा अंकल की मदद न कर बहुत बड़ी ग़लती की है।" अमन ने कहा।

"साफ-साफ बता, क्या बात है?" दीनदयाल जी ने अमन से पूछा।

"पापा! एक दिन रात में अचानक वर्मा आंटी की तबीयत खराब हो गई थी, तो वर्मा अंकल अपने घर आये थे और भैया से कार से अस्पताल ले जाने के लिए कह रहे थे; लेकिन भैया ने बहाना बना दिया कि कार खराब है।"

"क्यों रोहित तूने ऐसा क्यों किया? तुझसे मैंने कहा था न कि कभी भी किसी बीमार के लिए टाइम-बेटाइम कार की जरूरत पड़े तो उनकी मदद कर देना, मना मत करना; फिर तूने उनसे झूठ क्यों कहा कि कार खराब है?" दीनदयाल जी ने रोहित को डाँटते हुए पूछा।

"पापा! गलती हो गई। आय एम सॉरी। अब मैं ध्यान रखूँगा।" रोहित ने कान पकड़कर माफी माँगते हुए कहा।

"ठीक है, इस बार तो मैं तुझे माफ़ कर देता हूँ, यदि अगली बार ऐसी ग़लती की, तो मैं तुझे माफ़ नहीं करूँगा।" दीनदयाल जी ने चेतावनी देते हुए थोड़ा रुककर फिर कहा,"कार मैंने सिर्फ अपने एशो-आराम के लिए नहीं, दूसरों की मदद करने के लिए भी खरीदी है, समझे?"

रोहित ने स्वीकृति में गर्दन हिला दी।

टिकट कलेक्टर

ओमप्रकाश गुप्ता

ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

"हैलो रमाकांत! जयपुर से शांतिलाल बोल रहा हूँ।"

रमाकांत और शांतिलाल बचपन के मित्र हैं। बड़े दिनों बाद मित्र की आवाज सुनकर रमाकांत प्रसन्न हो गए।

"हैलो, शांतिलाल! क्या बात है, बड़े दिनों बाद याद किया, सब ठीक तो है न?"

"हाँ, सब बढ़िया है। शुभ समाचार है, रश्मि बेटी का रिश्ता तय हो गया है। परसों सगाई है, भाभी के साथ तुम्हें अवश्य आना है।"

मित्र के साथ वर्षों बाद मुलाकात होगी सोचकर शांतिलाल बड़े हर्षित थे। ट्रेन आरक्षण करने के लिए लैपटॉप खोला, पर यह क्या? किसी भी ट्रेन में कन्फर्म्ड बुकिंग नहीं मिल रही थी। अहमदाबाद से जयपुर की लंबी यात्रा बिना आरक्षण के कैसे तय की जा सकेगी। दुबारा देखा तो आश्रम एक्स्प्रेस में RAC में दो सीट मिल रही थीं। अन्य विकल्प न देखकर रमाकांत ने उनको बुक कर दिया।

ट्रेन के चलते समय तक RAC बुकिंग के स्टैटस में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। खैर, पति-पत्नी अपनी सीट पर जा बैठे। कुछ मिनटों बाद टी.सी. (टिकट कलेक्टर) महोदय आए। उन्होंने बताया किसी बर्थ का आरक्षण कैन्सल नहीं हुआ है, अतः उन्हें जयपुर बैठे-बैठे ही जाना पड़ेगा।

जैसे ही टी.सी. आगे बढ़ा, सहयात्रियों में घुसर-पुसर होने लगी। अरे, भला कभी कोई टी.सी. ऐसे ही बर्थ देता है! 200 रुपये हाथ में थमा देते, आप का काम हो जाता। रमाकांत स्वयं आयकर विभाग में इन्स्पेक्टर थे। वे न तो स्वयं रिश्वत लेते, न ही अपने काम के लिए किसी को देते। सहयात्रियों को सलाह देने के लिए आभार प्रकट किया, साथ-ही-साथ उस पर अमल न करने में अपनी असमर्थता प्रकट की।

"ठीक है! बाबूजी, सारी रात बैठे-बैठे जाओ! हमें क्या?"

करीब एक घंटा बीत गया। रमाकांत ने टी.सी. को आते हुए देखा। इसके पहले वे कुछ कहें, टी.सी. ने बताया,"शर्मा जी, दो यात्री पालनपुर से चढ़नेवाले थे, वे नहीं आए। उनकी बर्थ 38-39 हैं। अटेन्डन्ट से कहकर आपका बिस्तर लगवा दिया है। गुड नाइट।"

टूटते तारे

चित्तरंजन गोप 'लुकाठी'
धनबाद, झारखंड, भारत

गोरेलाल की बचपन से एक ही तमन्ना थी, वकील बनने की। वह वकील को संसार का सर्वश्रेष्ठ इंसान समझता था। इसके पीछे उसका यह तर्क था कि वकील को मुँहमाँगी फीस मिलती है और पुलिस वाले भी उससे डरते हैं। पता नहीं, उसके कच्चे मन में यह विचार किसने भर दिया था। वह मुझे प्राय: कहता था-- देखना महादेव! मैं एक दिन वकील बन के रहूँगा, काले कोट वाला!

काले कोट की इस तमन्ना ने उसे पढ़ने को खूब प्रेरित किया। पढ़ाई में वह हमेशा अव्वल रहा। वकील बनने की इच्छा भी प्रबल बनी रही। लोग कहते हैं कि कमर कसकर खड़ा हो जाने पर, किसी भी काम को अंजाम दिया जा सकता है। इसलिए वह कमर कसकर ही खड़ा हो गया था। मगर परिस्थिति ने लाठी मार-मारकर उसकी कमर तोड़ दी। इंटरमीडिएट के बाद पढ़ाई छूट गई और उसके सिर पर घर-संसार का बोझ लद गया। इधर मैं भी पढ़ाई के सिलसिले में शहर आ गया। फलत: उससे संपर्क ही नहीं टूटा, बल्कि उधर से मेरा ध्यान भी हट गया।

एक दिन मैं नजदीक के सिनेमा हॉल में नाइट शो देखने गया था। लौटते वक्त एक बड़े फ्लैट के गेट पर नजर पड़ी। वहाँ का दृश्य देखकर मैं सिहर उठा। स्टूल पर एक आदमी काली पोशाक पहने बैठा था। उसके सिर पर टोपी थी और बाँह पर बैज़ लगा था। सामने एक छोटी-सी लाठी रखी थी। उस प्राइवेट गार्ड को देखकर मैं ठिठक गया। कुछ क्षण निहारता रहा। और निहारते हुए अनायास मेरी आँखों से आँसू छलकने लगे। एक लंबी साँस लेते हुए, मैंने आकाश की तरफ देखा। एक टूटते तारे पर नज़र पड़ी। उसके टूटने की ध्वनि कान तक पहुँची- देखना महादेव! मैं एक दिन वकील बन के रहूँगा, काले कोट वाला!

डर

शकुन्तला पालीवाल
उदयपुर, भारत

दीवार पर टँगी घड़ी रात के नौ बजा रही थी। घड़ी की सुई के साथ सुमित्रा की बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी। हर शाम सात बजे तक घर लौटने वाला उसका पति निलेश आज अभी तक बिना किसी पूर्व सूचना के घर नहीं लौटा था और उसका फोन भी बंद आ रहा था। सुमित्रा के मन में डर और घबराहट के साथ हजारों आशंकाएँ जन्म ले रही थीं। तभी डोरबैल बजी। भाग कर सुमित्रा ने दरवाजा खोला। सामने पति निलेश खड़ा था। सुमित्रा को यूँ परेशान देख वह बोला - आज अचानक एक पुराने दोस्त से मुलाकात हो गई। बातों ही बातों में समय का पता ही नहीं चला और बैटरी कम होने से फोन भी स्विच ऑफ हो गया। सुमित्रा की रुलाई फूट पड़ी। वह कहने लगी – निलेश! तुम जब देर से आते हो तो बहुत डर जाती हूँ मैं। ये दो घंटे न जाने कितनी भयावह आशंकाओं और डर के बीच गुजरे। तुम समय पर घर आ जाया करो। बस रोती हुई यही कह पाई वो।

सुमित्रा स्वयं भी एक मल्टीनैशनल कंपनी में काम कर रही थी। एक दिन बॉस ने ऑफिस में अर्जेंट मीटिंग रख ली। मीटिंग की तैयारी में वह निलेश को सूचित भी नहीं कर पाई। घर पहुँची तब तक घड़ी में दस बज गए। निलेश ने दरवाजा खोलते ही पूछा - कहाँ थी अब तक? तुम्हारा ऑफिस तो सात बजे तक खत्म हो जाता है। वह कुछ कहती, उससे पहले वह फिर बोला - सच-सच बताना किसके साथ थी? इस प्रश्न ने सुमित्रा को अंदर तक झकझोर दिया। वह निलेश की आँखों में देखते हुए बोली - तुम देर से आते हो तो मुझे डर लगता है। मैं तुम्हारी सलामती की प्रार्थना करती हूँ और जब मैं देर से आती हूँ, तब तुम मुझ पर शक करते हो। क्या तुम्हें कभी मेरे देर से आने पर डर लगता है? निलेश की झुकी नजरें निरुत्तरित थीं।

डॉल्फ़िन शो

आरती 'लोकेश'

दुबई, यू.ए.ई.

विद्यालय का वार्षिकोत्सव समाप्त हुआ और के.जी. में पढ़ने वाली नन्ही मिनी भागकर मीनाक्षी के गले आ लगी।

"मम्मी! भूख लग रही है। बहुत निन्नी (नींद) आ रही है। आप कहाँ थीं? मुझे जल्दी से लेने क्यों नहीं आयीं?" …आदि-आदि। उसके प्रश्न थे कि समाप्त ही न हो रहे थे।

"मुख्य अतिथि के लम्बे उद्बोधन के कारण बच्चे तैयार हो, बैठे-बैठे परेशान हो गए थे। कितनों ने कॉस्ट्यूम भी गंदे कर लिए। बड़ी मुश्किल से इन्हें समझाया है, सँभाला है और नृत्य करवाया है। एक महीने के अभ्यास पर पानी फिर जाता।" मिनी का हाथ मीनाक्षी के हाथ में थमाते हुए अध्यापिका ने अपनी तकलीफ़ तुरंत बताई।

"सफल कार्यक्रम की बधाई आपको।" नींद से बोझिल झूमती-झूलती मिनी को उठाए बोली।

"मम्मी चलो न!" मिनी आँखें मलते हुए बोली। उसका बदन भी तपता हुआ लगा मीनाक्षी को।

रंग-बिरंगा सुसज्जित विशाल मंच, पर्दों पर बने मेल खाते आलेख, शानदार सभागार, जगमगाती-नाचती बिजलियाँ, आलीशान सोफ़े और कुर्सियाँ, संगीत-तंत्र के उपकरण, क्लोन के जैसे नाचते-गाते यंत्रचालित से मासूम बच्चे; सभी विद्यालय की शान में चार चाँद लगा रहे थे।

"मम्मी! कल तो छुट्टी है न? हम दुबई डोल्फ़िनेरियम जा रहे हैं न? आपने प्रॉमिस किया था। पापा टिकट ले आए हैं न?" कहते हुए मिनी का सिर मीनाक्षी के कंधे पर ही लुढ़क गया।

"इस लड़की ने देर से बोलना, देर से चलना शुरु किया था, तब मैं परेशान थी कि कब चलेगी, कब बोलेगी और अब सोचना पड़ता है कि कब रुकेगी और चुप होगी।" कंधे पर निढाल सोती हुई मिनी को लेकर वह कार में बैठ गई।

अगले दिन वादे के मुताबिक मिनी को दुबई क्रीक पार्क में बने डॉल्फ़िनेरियम में 'डॉल्फ़िन शो' ले जाया गया। ताल से ताल मिला उछलती, छल्ले से गुज़रती, बॉल से खेलती, सलाई पकड़ स्वेटर बुनती, तमाम करतब दिखाती डॉल्फ़िनों की प्रशंसा में मीनाक्षी और नीलेश नए से नए उपमान गढ़ रहे थे कि वहीं मिनी एकदम शांत बैठी थी। मीनाक्षी को आश्चर्य हुआ कि कैंची-सी कतरनी जबान में आज कैसे ब्रेक लग गया! शायद थकान के कारण...

"देखो मिनी बेटा! ये डॉल्फिनें कितना बढ़िया शो कर रही हैं न! कल तुम्हारे स्कूल में हुए शो जैसा ही।" मीनाक्षी ने मिनी का ध्यान आकर्षित करना चाहा।

"मम्मी! क्या इनको भी इनकी टीचर ने दिनभर टिफ़िन नहीं खाने दिया होगा, बाथरूम नहीं जाने दिया होगा, खेलने नहीं दिया होगा? क्या ये भी भूखी होंगी, इन्हें भी निन्नी आ रही होगी? क्या इन्हें भी बुखार होगा?"

तमाचा

इंद्रजीत कौशिक
बीकानेर, राजस्थान, भारत

"ओफ्फो, कितना भयानक एक्सीडेंट है! अरे, इसके सर से तो खून बह रहा है।" तेज रफ्तार से आ रही कार ने बाइक सवार को टक्कर मार कर नीचे गिरा दिया तो लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। सड़क पर गिरे उस तड़पते हुए युवक को देखकर लोगों ने अपने-अपने मोबाइल निकाल लिए और उस घायल युवक का वीडियो बनाने लगे। कुछ खड़े-खड़े टिप्पणियाँ कर रहे थे, तो कुछ मुँह फेर कर अपने रास्ते चले गए; पर किसी का ध्यान इस बात पर नहीं गया कि उसे जल्दी से जल्दी किसी हॉस्पिटल तक पहुँचाया जाए ताकि उसकी जान बच सके।

"हटो, दूर हटो!" तभी एक नौजवान भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा और घायल युवक के पास आकर उसे 'सी.आर.पी.' देने लगा। इस बीच बाकी लोग तमाशबीन की शक्ल में खड़े तमाशा देखने में मशगूल थे। उस युवक ने किसी तरह उस घायल को अपनी पीठ पर लादा और अपनी टैक्सी में डालकर हॉस्पिटल की तरफ ले जाने लगा। एक अनजान नौजवान द्वारा अजनबी घायल की मदद करते देख वहाँ खड़े लोगों को लगा जैसे किसी ने बीच बाजार उनके गाल पर तमाचा जड़ दिया हो।

तस्वीर

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

"अरे, वह गाँधी जी की तस्वीर निकली नहीं अभी तक, वही बड़ी वाली! साल में एक बार ही तो जरूरत पड़ती है, वह भी नहीं हो पाता तुम लोगों से। सब कुछ मैं ही करूँ? कब पल्ली बिछेगी, बाकी इन्तजाम होगा, लोगों के आने का वक्त हो चला है।"

महापौर शिवमोहन जी का मानना था कि गाँधी और गोड़से दोनों ही सही थे, क्योंकि आदमी नहीं, वक्त ही सही या गलत होता है। इसलिए जिनके भक्तों के बीच होते उन्हीं के गुण गाने लग जाते। आज गाँधी दिवस मन रहा था उनके घर पर और वह परेशान व नाराज़ थे कर्मचारियों पर और तेजी से आगे बढ़ती घड़ी की सुई पर भी। अभी तक गाँधी जी चौकी तक पर नहीं विराज पाए थे।

"तस्वीर तो निकाल ली थी पापा, पर सामान के संग कोठरी में पड़ी-पड़ी तिरक गई है जरा-सी। सोच रहा था तिरकी तो ठीक नहीं लगेगी और अब इतनी जल्दी काँच बदलवा पाना भी संभव नहीं।"

बेटे ने दबी ज़ुबान से समझाना चाहा।

"वाह बेटे, वाह! शरम आती है कि तुम मेरे बेटे हो। कहाँ, कब क्या कहना और करना चाहिए, कोई शऊर ही नहीं। ठीक क्यों नहीं लगेगी! फूल माला से ढक दो तिरक को। दो माला और चढ़ा दो। एक-आध खरोंच आ भी आ जाए तो क्या फरक पड़ता है, जिन्दा तो नहीं, कि काँच चुभ जाएगा? एक-दूसरे को देखते हैं लोग ऐसी भीड़-भाड़ में, तस्वीर तो बस रख दी जाती है मालार्पण के लिए।"

फूल-माला से ढका तिरका फ्रेम और गाँधी जी दोनों सही ही दिख रहे थे चौकी पर अब उनकी नज़र में।

महापौर अब एक बार फिर सब भूल बाल काढ़ने लगे, गाँधी-टोपी ठीक करते हुए आदम-कद शीशे के आगे खुद को बड़ी बारीकी से निहारने लगे। कल गांधी जी के साथ उनकी तस्वीर भी तो शहर के हर अखबार में छपेगी, लापरवाह कैसे हो सकते थे वह अपनी ही छवि के प्रति!

सारी बात तस्वीर की ही तो है, जिसे न बनते देर लगती और ना बिगड़ते ही!...

तिकड़ी
यूरी बोत्वींकिन
कीव, यूक्रेन

आजकल मुझे अपने स्कूल के दो साथी प्रायः याद आते हैं, विक्टर और आलेक्स। ऐसा नहीं हैं कि मेरे बहुत पक्के मित्र थे; किंतु किशोरावस्था में काफ़ी करीब हो गए थे। आठवीं कक्षा में मुझे आधुनिक लोकप्रिय नृत्य का शौक चढ़ा जो हिप-हॉप संगीत के साथ तब पश्चिम से आया था। तभी हमारे शहर में पहली नृत्य-प्रतियोगिताएँ होने लगी, युवा पीढ़ी जोश में आकर मंच को चमका देती थी। मैंने ग्रुप-डांस के लिए उन्हीं दो लड़कों के साथ एक बेंड बना लिया था, उनको भी काफ़ी रुचि थी। मिलकर प्रस्तुति की तैयारी करने का कोई स्थान तो था नहीं, अतः एक दूसरे के घर जाकर ख़ूब नाचते। प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कोई बड़ी ऊँचाई तो प्राप्त नहीं की, किन्तु मज़ा बहुत आया था। आगे जीवन में गाढ़े मित्र न रहकर भी एक मंचीय तिकड़ी ज़रूर रहे।

स्कूल की पढ़ाई पूरी होने के बाद तीनों के रास्ते अलग-अलग हो गए। विक्टर, जो कि थोड़ा दबंग किस्म का लड़का था, सेना में गया था। वहीं अपने स्वभाव को सही दिशा दे पाया था। जब 2014 में यूक्रेन के पूर्व में रूसियों का अघोषित हस्तक्षेप शुरू हुआ था तो वह युद्ध में भी गया और घायल भी हुआ। आलेक्स शांत स्वभाव का था, मज़ाक-मस्ती का शौकीन। कॉलेज के बाद व्यापार में अपना स्थान ढूँढ़ लिया। उच्च पढ़ाई कर प्रोफ़ेसर बनना, भारत और हिंदी से अपने जीवन जोड़ना मेरे भाग्य में था। दशकों तक नहीं मिले थे आपस में हम तीनों, सिर्फ इतना पता था कि उन दोनों के बीवी-बच्चे हैं।

फ़रवरी 2022 को जब रूस का पूर्ण पैमाने पर आक्रमण किया, सब का जीवन बदल गया। शिक्षा-क्षेत्र से जुड़ा होने के कारण मैं मोर्चे से काफ़ी दूर रहता हूँ, युद्ध केवल समाचारों में सामने आता। पहला समाचार आया विक्टर का, युद्ध के पहले महीनों में वह शहीद हो गया था। आलेक्स का पता नहीं था, पर उसकी भी सेना में भरती हो सकती है, उतना मैं जानता था। युद्ध का दूसरा वर्ष समाप्त होने आया था तब उसकी भी शहादत की सूचना मिली।

मंच पर नाचती हुई, किशोरावस्था के जोश से भरी अपनी तिकड़ी याद आती है और मन असमंजस में पड़ जाता है। मिलकर बड़े हो रहे थे, भविष्य के सपने देख रहे थे। ''वीर कभी नहीं मरते'' यह नारा बहुत प्रचलित है यहाँ। पर उन दोनो और उन जैसे लाखों के परिवारों को क्या यह कथन शोक में मना पाया है? कभी मना पाएगा?

तुम्हारी माँ

दुर्गा सिन्हा 'उदार'

सैन डिएगो, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

"तुम्हारी माँ यहाँ कितने दिन रहने के लिए आ रही हैं?" निकिता ने पूछा।

"जितने दिन तुम्हारी माँ यहाँ रही थी," प्रश्नार्थ में ही जवाब दिया नीलेश ने।

"क्या मतलब?"

"क्यों, समझ नहीं आया?"

"आया तो; लेकिन इतने दिन के लिए क्यों आ रही हैं?"

"क्यों तुम्हें ज़्यादा लग रहा है?"

"तुम्हें नहीं लग रहा ज़्यादा?

"तुम्हें क्यों लगेगा?"

"जैसे तुम्हें नहीं लगा था!"

"दोनो में फ़र्क़ है।"

"यह तुमने बनाया है।"

"मैं इतने दिन उन्हें नहीं झेल सकती!"

"मैं भी यह वाक्य कह सकता था। लेकिन नहीं कहा।"

"माँ 'माँ' होती है। मेरी और तुम्हारी नहीं।"

निकिता रसोईघर में चली गई। माँ के स्वागत में पकवान बनाने व घर सजाने लग गई।

तैयारी का महत्त्व

अरविन्द रामगुलाम कुरील
पालघर, महाराष्ट्र, भारत

आर्यन का गाँव पाटन एक बड़े-से क्षेत्र का छोटा-सा हिस्सा था, जहाँ लोगों का जीवन सुखपूर्ण था; परन्तु शिक्षा का स्तर कम था। आर्यन ने बचपन से ही अपने मन में एक सपना पालना शुरू किया था - एक दिन वह विद्या के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाएगा।

गाँव के विद्यालय में सुविधाएँ कम थीं; लेकिन आर्यन ने इसे अपने लिए एक चुनौती माना, क्योंकि उसने अपनी दादी से सुना था कि तैयारी में ही सफलता की कुंजी होती है। इसी सोच के साथ आर्यन ने इन सबके लिए तैयारी करने की ठानी। वह अपने गाँव के मुखिया और विद्यालय के संचालक से मिला। उन्होंने आर्यन को चरणबद्ध तरीके के साथ तैयारी करने की सीख दी। आर्यन ने इस नए दृष्टिकोण की ओर बढ़ने का निर्णय किया।

आर्यन ने गाँव में एक शिक्षा-केंद्र खोला, जहाँ उसने बच्चों को मुफ्त में शिक्षा और साथ ही गाँव के छोटे-मोटे कार्य देने शुरू किये। उसने इस केंद्र को जल्द ही नई तकनीकों और नयी शिक्षा प्रणाली से भर दिया। गाँव के मुखिया ने भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अब तो 'तैयारी ही सफलता की कुंजी है,' यह आर्यन का मंत्र बन गया। उसने न सिर्फ शिक्षा से ही गाँव के बच्चों को नए सपनो की ऊँचाइयों तक पहुँचाया, बल्कि उन सभी को यह सिखाया कि सपनो को पूरा करने के लिए तैयारी महत्त्वपूर्ण है। सम्पूर्ण पाटन को उसके नेतृत्व में एक नए दृष्टिकोण की प्राप्ति हुई और कुछ वर्षों में ही सभी को अपने गाँव पर गर्व होने लगा। उसके शिक्षा केंद्र ने गाँव में एक संवैधानिक परिवर्तन किया, जिसने बच्चों के जीवन में नए रंग भर दिए। आर्यन की कहानी ने गाँव के लोगों में एक नए आत्मविश्वास का संचार किया। खेती के नए तरीके, पुस्तकालय, ऋण की सुविधा इत्यादि ने गाँव की प्रगति में चार चाँद लगा दिए| आर्यन की कहानी अब गाँव के बच्चों के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गई।

'तैयारी का महत्त्व समझो, सपनो की ऊँचाइयों में पहुँचो!' - यह विचार आर्यन की कहानी का सार है। उसने दिखाया कि सही तैयारी और समर्पण से हर कठिनाई को पार किया जा सकता है और साथ ही उसने शिक्षा के महत्त्व को भी समझाया।

त्याज्य

सुमन लता शर्मा
बूंदी, राजस्थान, भारत

“तुमने लिखा है कि सुबह जब तुम ऑफिस आ रहे थे, किसी ने तुम पर थूक दिया। इस कारण तुम्हें घर जाकर फिर से नहाना पड़ा। यही वजह है कि तुम्हें आने में देर हो गयी।” पढ़ते हुए ब्रांच मैनेजर विनय को अविश्वास से घूरने लगे।

“जी सर।” विनय ने नम्रता पूर्वक लेकिन दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।

“कैसी बातें करते हो विनय? कोई तुम पर क्यों थूकेगा भला?” बॉस का स्वर अभी भी अविश्वास से भरा था।

“सर जिसने भी थूका, उसने मुझ पर नहीं थूका था। दरअसल मेरे आगे बाइक पर तेजी से जा रहे एक व्यक्ति ने बिना पीछे देखे, बिना रुके, अपने मुँह को एक ओर करके 'पिच्च' से थूक दिया। जिससे मेरी पूरी शर्ट पर लाल लाल छींटे हो गए। यह तो अच्छा था कि चेहरा हेलमेट से ढँका था।”

“पता नहीं क्यों लोग गुटखा खाते हैं। खुद का स्वास्थ्य खराब, कार्यालय की दीवारें खराब और कभी-कभी तो मेरी तरह लोगों के कपड़े भी खराब कर देते हैं।” विनय का स्वर घटना के स्मरण से थोड़ा तल्ख हो आया।

स्थिति को समझते ही बॉस के मुँह से निकल पड़ा,“ओह, मुझे दुःख है कि तुम्हारे साथ बुरा हुआ।”

फिर कुछ सोचते हुए स्पष्टीकरण का पत्र दराज में रख, एक पुड़िया निकाल कर डस्टबिन में डालते और विनय की ओर मुस्कुराते हुए बोले,“मैंने भी कुछ ही दिनों से शुरू किया था।”

दान

माला प्यासी

जबलपुर, म.प्र., भारत

प्रायः सभी पुराणों में बैसाख माह में दान करने का बड़ा महत्त्व बताया है। मैंने सोचा एक दिन मैं भी अपंगों,अपाहिजों और बेसहारा लोगों को दान करके कुछ पुण्य अर्जित कर लूँ। नर्मदा जी के तट पर मिलने वाले भिक्षुकों को भोजन करवाने का मैने निर्णय लिया। सुबह जल्दी उठकर आलू की सब्जी और पूरियाँ बनाकर रख लीं और जाने के लिए तैयार हो गयी। ड्राइवर भी सही समय पर आ गया और हम लोग घर से निकल गये। ड्राइवर ने बोला,"मैडम जी! अपन ग्वारीघाट चलते हैं, वहाँ पर भोजन के इच्छुक बहुत लोग मिल जाते हैं।" मैंने भी अपनी स्वीकृति दे दी और लगभग एक घंटे में हम लोग निश्चित स्थान पर पहुँच गए।

वहाँ पहुँचने पर मैंने देखा कि दीन-हीन वृद्ध स्त्री-पुरुषों का अच्छा-खासा समवाय है। उनमें से कुछ तो घने-घने वृक्षों के नीचे टोलियाँ बनाकर बैठे हैं, कुछ ने सूर्य की प्रखर किरणों से बचाव के लिए छाते भी लगा रखे हैं, तो कुछ लोग अपने सिर पर पुराना कपड़ा रखकर ही सिर को ताप से बचा रहे हैं। मैने उनके पात्रों में भोजन परोसना शुरू किया ही था कि इसी बीच कुछ फरमाइशी वाक्य भी सुनाई देने लगे। किसी ने कहा दही-बड़े हों तो दे दो और कुछ नहीं चाहिए। किसी ने कहा आलू की सब्जी नहीं छोले हों तो दे दो। किसी ने पूड़ी के स्थान पर रोटी की माँग की। उनमें से किसी ने तो मिठाई की भी माँग कर ली। इतना सुनकर मुझे ये तो समझ में आ गया कि मेरे से पहले आकर ही कुछ लोग पुण्य कमा चुके हैं तथा यह भी सुनिश्चित हो गया कि अब हमारे देश में कोई भूखा नहीं सोता है। कम से कम शहरों के आसपास की तो यही सच्चाई है।

इतने में ही कहीं से बच्चों की एक टोली कूदते-फाँदते हमारे समीप आ गई। इस टोली में चार-पाँच साल से लेकर तेरह-चौदह साल तक के लड़के-लड़कियाँ दिख रहे थे। उन्होंने एक दूसरे को धक्का देते हुए अपने-अपने बर्तन हमारे सामने कर दिए कि हमें भी कुछ खाने को दीजिए। मैं सभी को भोजन दे रही थी; पर मन में एकाएक विवेकानंद जी का यह वाक्य बिजली की तरह करेंट मार गया था कि "देश के बच्चों को यदि शिक्षा का दान दिया जाएगा तो भोजन-दान की आवश्यकता ही नहीं होगी।"

दुःख का अंतर

करुणा पांडे

लखनऊ, भारत

राजो अपने खोखे में बैठी प्रेस कर रही थी। उसकी बेटी फूलों की माला बनाकर रख रही थी। उसके झर-झर आँसू बह रहे थे। उसे देखकर बरबस मुँह से निकल पड़ा,“अरे राजो! तू यहाँ? मैं तो तुझसे मिलने तेरे घर जा रही थी। बहुत बुरा लगा तेरे बेटे की मौत के बारे में सुनकर।” राजो काँपती हुई, सिसकती हुई, आँसू बहाती हुई प्रेस कर रही थी। उसको धैर्य बँधाते हुए मैंने कहा,“राजो! अब मत रो, जहाँ हमारा वश नहीं चलता, सब कुछ ईश्वर पर छोड़ना पड़ता है, उसको सहन करना ही होता है। अब धैर्य रख और सुन! अभी दो-चार दिन घर पर बैठ, क्यों काम कर रही है, इस तरह तो तेरी तबीयत खराब हो जायेगी। जब थोड़ा सँभल जायेगी तो काम पर आना।”

राजो सिसकते हुए बोली,“मेमसाहब! हम गरीबों का दुःख क्या और सुख क्या? अगर दुकान एक दिन भी बंद रखूँगी तो पेट की आग कैसे बुझेगी और लल्लू के अंतिम संस्कार के लिए जो उधार लिया है, उसे कैसे चुकता कर पाऊँगी? चार दिन में पैसे वापस करने के लिए लाला ने समय दिया है, वरना फिर ब्याज वसूलेगा। हमारे लिए तो सब दिन एक समान हैं। आँसू तो हमें पैदा होते ही घुट्टी में मिलते हैं, बस बहाने बदलते रहते हैं।” मैंने चुपचाप पाँच सौ रूपये उसके हाथ में रख दिए और कहा,“राजो! भगवान पर भरोसा रख, इस समय तो इतने ही पैसे हैं, कोई जरुरत हो तो बताना। कल मैं फिर आऊँगी।”... और मैं चली आई।

रास्ते में मुझे सेठ की बीबी याद आई, जिसका बेटा एक्सीडेंट में मर गया था। चार महीने तक सेठानी बिस्तर से उठी नहीं। न जाने कितने डाक्टर और सेवक तीमारदारी में लगे रहे। इधर राजो के बेटे को गुजरे अभी एक ही दिन हुआ था और उसे दुःख को बगल में दबाकर काम पर आना पड़ रहा था। मैं सोचने लगी - क्या दुःख भी गरीबी-अमीरी की सीमा-रेखा में बँधा होता है। दोनो ही माओं ने बेटे खोये, दोनों का दुःख समान था, पर अमीर का दुःख पहाड़-सा और गरीब का दुःख राई-सा क्यों?

दूध का कर्ज़

विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

ललिता के हाथों में दो सौ रुपये का नोट थमाते हुए निर्मला बोली,“लो, माँ जी! बाजार से सेवफल मँगवा लेना।” सुनिता, लक्ष्मी और सुमन ने भी कुछ रुपये इसी प्रकार ललिता के हाथों में थमा दिये। जाते-जाते सब कहती गयीं,“अपनी आँखों का ख़याल रखना..धूप और धुँआ मत लगने देना; वरन आपरेशन बिगड़ जायेगा।”

ललिता ने पैसे अपने तकिये के नीचे रखे और लेट गई। अभी भी उसकी आँखों पर काला चश्मा चढ़ा हुआ था। अचानक उसे लगा कि उसका तकिया कोई ऊँचा कर रहा है। उसने आँखें खोली तो देखा यह उसकी बहू नैना थी। काले चश्मों में नैना को यह आभास नहीं रहा कि ललिता की आँखें खुली हैं। तकिया ज्यादा ऊँचा करने पर ललिता जाग जायेगी ऐसा सोचकर तकिया छोड़ वह किचन में चली आई। वहाँ से उसने अपने पति को धीरे से बुलाया और कहने लगी,“देखो! माँ को मिलने दिनभर कितने लोग आ रहे हैं। कम से कम उनको चाय तो पिलानी ही पड़ती है। पहले ही उनके ओपरेशन में हमारे बहुत पैसे लग चुके हैं।”

“हाँ तुम सही कह रही हो; पर हम लोगों को मिलने आने से मना भी तो नहीं कर सकते न!”

“लोगों को मना नहीं कर सकते; पर अपनी माँ से तो एक बात कह ही सकते हो न!”

“माँ से..! माँ से क्या कहूँ? मैं कुछ समझा नहीं!”

“अरे माँ से कहो कि मिलने आने वाले लोग जो उनके हाथों में पैसे दे जाते हैं..वो पैसे माँ तुम्हें दे दें। कम से कम इन पैसों से दूध का कर्जा तो हम भर ही सकते हैं न!”

वह कुछ बोलता इससे पहले ही ललिता ने तकिये के नीचे रखे पैसे उठाये और अपने बेटे को बुलाने लगी,“बेटा! इधर आ।”

"हाँ माँ!”

नैना भी माँ की बात सुनने पास आ गई थी।

“ले! ये दूध के पैसे चुकता कर देना।”

“माँ! आप यह क्या कह रही हो?”

“बेटा! मेरे दूध का कर्ज़ तू न चुका पाये तो कोई बात नहीं; पर मैं तेरे दूध का कर्ज़ अवश्य चुकाकर जाऊँगी।”

ललिता ने पैसे अपने बेटे के हाथ में थमा दिये। बहू-बेटे के चेहरे शर्म से स्याह हो गये थे।

दूसरे की खाल में

मंजू राय शर्मा
मुंबई, भारत

रजनी सड़क पर शेखर का इंतजार कर रही थी। जैसे ही वह आया, उसने रजनी से पूछा,"सब कुछ ले लिया है न!"

"हाँ.... हाँ... मैंने सब कुछ ले लिया है, माँ ने मेरी शादी के लिए जो गहने बनवाये थे, वे भी।"

तभी शेखर का मोबाइल बजा।

"तुम कहाँ अहमद?"

"साले...मैं शेखर बोल रहा हूँ। रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ा हूँ, जहाँ एक बुक स्टॉल है, वहीं। रजनी भी मेरे साथ है। एक बुर्का भी लेते आना, ताकि रजनी को कोई पहचान नहीं सके। मुंबई वाली ट्रेन 10 मिनट में प्लेटफार्म पर आ जाएगी, जल्दी आओ।"

"ठीक है। 5 मिनट में आता हूँ।"

मोबाइल पर बात खत्म होते ही रजनी ने शेखर से कहा,"मैं बुर्का नहीं पहन सकती।" "यह सिर्फ इसलिए कि तुम्हारे घर वाले ढूँढते हुए यहाँ आ गये तो तुम्हें पहचान ना सकें। ट्रेन खुलते ही उतार देना बुर्का।"

"ग्रेट आइडिया। फुलप्रूफ सेफ्टी। ठीक है।"

कुछ देर बाद अपने दोस्त को आता हुआ देख शेखर ने उसे उँगली से इशारा कर रुकने को कहा,"वहीं रुको, मैं आता हूँ तुम्हारे पास।"

वह शेखर को अपने दोस्त के पास ज़ाते हुए देखती है।

एक दूसरे को अभिवादन करने के तरीके को देखकर रजनी को आघात लगा। वह पलकें झपकाना भी भूल गई। आज से पहले उसने शेखर को इस तरह से अभिवादन करते हुए नहीं देखा था। कुछेक शब्द भी उसके कानों में पिघले हुए शीशे की तरह पड़े,"अहमद...।"

बिना समय गँवाये वह तेजी से वहाँ से खिसक गई।

देशप्रेम

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

"आप कहाँ से हैं, पाकिस्तान से?"

"नहीं, भारत से। और आप?"

"आजाद कश्मीर से।"

"पर आजाद कश्मीर नाम की तो कोई जगह ही नहीं है। बताएँ कहाँ से, प्लीज़?"

बिना जबाव दिए ही उसने पलटकर देखा और वापस अपने काम में जुट गया, मानो याद दिला रहा हो,"देखो, मैं डॉक्टर हूँ और तुम मेरी मरीज, वह भी दिल की। इस समय तुम्हारी जान मेरे कब्जे में है। अभी भी मैंने तुम्हारे दिल के अंदर तार और कैमरा डाल रखा है। कुछ भी कर सकता हूँ मैं!"

पर वह चुप रहने वाली कहाँ थी, भारत का दर्द, भारत की बात उसकी अपनी बात थी, भले ही यहाँ परदेश में और उन नाजुक हालात में हो रही थी।

"कश्मीर में कहाँ से?"

दोबारा पूछने पर वह धीमे से बुदबुदाया,"अनंतनाग से।"

"अनंतनाग तो मैं जा चुकी हूँ। भारत का ही हिस्सा है और बेहद खूबसूरत है। क्या आप नहीं मानते कि कश्मीर और भारत दोनों ही हमारे हैं, हमारे अर्थात मेरे और आपके, हम दोनों के?"

उसके स्वर में औपचारिक विनम्रता के साथ अब एक निर्णायक दृढता थी। आश्चर्य हुआ उसे अपनी निडरता पर भी और सामने वाले की सोच पर भी। अगली कुछ मिनटों में ही जब उसकी हृदय की जांच मुकम्मल हो चुकी थी, वह दस्ताने उतारते हुए बोला,"फिक्र की कोई बात नहीं। सुरक्षित हैं अब आप।"

"और हमारा कश्मीर भी?"

चिंतित आँखें अभी भी जबाव चाहती थीं; पर उसने बस हाथ थपथपाया और कलाई से जुड़ा आखिरी ट्यूब भी निकाल दिया।...

देहरी लाँघ गयी

सविता मिश्रा 'अक्षजा'

आगरा, भारत

"यह किसके कहने से खरीद लाई? यह तो बच्ची के फ्राक-सा लागे है। इसके नीचे का कहाँ है?"

"अम्मा, यह घुटनों तक बस एक ही कपड़ा होता है। दिल्ली जैसे बड़े शहरों में सभी लड़कियाँ पहनती हैं, इसे वन-पीस कहते हैं अम्मा।" चहकती हुई सुमी बोली।

"तू यह पहनेगी? इस छोटे से कस्बे में! सब आँखें फाड़-फाड़कर तुझे ही देखेंगे बिटिया!"

"तो...!"

"तू बड़ी हो रही है बिटिया! सलवार सूट के साथ दुपट्टा डालकर घर से बाहर निकलाकर यहाँ।"

"अम्मा! जमाने के अनुसार चलना चाहिए। कोई आँखें फाड़े या मुँह! लोगों के कहने-देखने की परवाह मैं क्यों करूँ?"

"अब ये चाकू लेकर कहाँ चली...? अरे सुन तो...!"

"अम्मा जो छेड़ेगा या ऊटपटांग बोलेगा उसकी आँखें फोड़ दूँगी, जीभ काट दूँगी, कसम से।" कहते हुए अहाते तक बढ़ गयी थी।

"लड़की जात को ये कौन से संस्कार दिए तुमने। कहा था शहर पढ़ने न भेजो! वहाँ की हवा लग जायेगी इसे।" काम से लौटे पिता ने माँ को झिड़का।

"अरे बिटिया सुन तो, हमारी नियति में सहना-सुनना ही लिखा है। सदियों से यही परम्परा चली आ रही है। ...सुन तो री!"

"तो अम्मा, आज ही ऐसी एकपक्षीय परम्पराओं को चूल्हे में झोंक दो। और तुम तो प्रतिरोध करना अभी से ही आरम्भ कर दो, आखिर कब तक सहती रहोगी।" कहकर हाथ में चाकू लहराती हुई सुमी देहरी लाँघ चुकी थी।

दो बूढ़ी आँखें

मंजु महिमा भटनागर

अहमदाबाद, भारत

न जाने कैसा नाता जुड़ गया था संध्या का, बिल्डिंग की पहली मंजिल के फ्लैट की खिड़की से झाँकती एक वृद्धा की आँखों से...। रोज़ ही संध्या सैर को निकलती और उस फ्लैट की खिड़की में बैठी वृद्धा को अपनी ओर देखते पाती। दोनो की आँखें मिलतीं और एक मुस्कराहट बिखर जाती दोनो के होठों पर। दोनों में जैसे कोई तार जुड़ गया हो।

एक दिन उसने घूमते हुए ऊपर देखा तो पाया कि उस वृद्धा के होंठ फड़फड़ा रहे हैं, वह रुकी और इशारों में पूछा,"क्या बात है?" वृद्धा ने कहा,"क्या तुम एक मिनट के लिए ऊपर आ सकती हो?" उसकी आवाज़ में दयनीयता और करुणा थी। संध्या ने इशारों से ही कहा,"जी आती हूँ।" संध्या असमंजस की स्थति में ऊपर पहुँची, कृशकाय देह की वृद्धा दरवाज़े के पास की खिड़की में खड़ी थी, दरवाजे पर ताला लगा था। उसने विनीत स्वर में कहा,"मेरा एक काम कर दोगी?" ...और बिना सहमति माँगे ही एक कागज का टुकड़ा पत्र के रूप में और एक अन्य टुकड़ा जिस पर एक पता और फोन न. लिखा था तथा एक 10 रुपये का मुड़ा-तुड़ा नोट जल्दी से उसके हाथ में पकड़ा दिया और कहने लगी,"अभी कोई नहीं है घर में, तुम यह मेरा पत्र इस पते पर मेरी बेटी तक पहुँचा देना और इस न. पर फोन कर उसे बता देना। बहुत जरूरी है।" संध्या कुछ कह पाती, उसने जल्दी से दरवाज़ा भेड़ दिया।

संध्या से रहा नहीं गया, उसने वह पत्र पढा जो उन्होंने टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में अपनी बेटी को लिखा था कि तुम मुझे आकर ले जाओ। बेटे-बहू ने मुझे कमरे में बंद किया हुआ है, वे चाहते हैं कि मैं सारी संपत्ति उनके नाम कर दूँ; लेकिन मैं चाहती हूँ कि उसका एक हिस्सा तुम्हें भी मिले।

दूसरे दिन संध्या ने इशारों से बताया कि उसने पत्र पोस्ट कर दिया है और फोन भी कर दिया है। वृद्धा की आँखों से बहती जलधार और आशीर्वाद की मुद्रा में उठी हुई दोनो हथेलियाँ जैसे उसे वैतरणी पार करवा रही थीं।

धन्यवाद ताऊ जी

चित्रा गुप्ता
सिंगापुर

वृंदा की बोर्ड की परीक्षा आने वाली थी। उसके भाई की मेडिकल की एंट्रेन्स परीक्षा थी और छोटी बहन की आठवीं की। सबकी पढाई जोर-शोर से चल रही थी। "यदि तू बोर्ड की परीक्षा में प्रथम आई तो तुझे तेरी पसंद की कलाई घड़ी दिलवाऊँगा," ताऊजी ने वृंदा से कहा। यह सुनकर वृंदा खुशी से फूली न समाई। दरअसल ताऊ जी की कोई संतान नहीं थी, वे वृंदा से विशेष स्नेह करते थे। अध्ययन के साथ वह प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि वह प्रथम आ जाए।

बोर्ड का परीक्षा परिणाम आया। वृंदा के पिताजी समाचारपत्र लेकर बाहर से ही ऊँचे स्वर में उसके प्रथम आने की खुशी प्रकट करते हुए आये। अखबार में अपना नाम देखकर उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। तीर की तरह भागती हुई वह तीसरी मंजिल पर ताऊजी के पास पहुँची। हाँफते हुए उसने ताऊ जी को अपना परीक्षा-परिणाम दिखाया और उन्हें उनका वादा भी याद दिलाया। "कल तेरी घड़ी आ जायेगी।" उन्होंने वृंदा के सिर पर स्नेह से हाथ फेरते हुए कहा। यह सुनकर वह संतुष्ट हो गई। "मुझे आयताकार घड़ी चाहिए" वृंदा ने ताऊ जी को बता दिया था। एक सप्ताह तक प्रतिदिन पूछने पर हर दफा एक ही जवाब...ओह मैं भूल गया, कल जरूर लेकर आऊँगा। वृंदा की खीझ गुस्से में बदलने लगी थी। वह कुंठित होने लगी थी। वे प्यार का नकली दिखावा करते थे, वृंदा ने मान लिया था। वह इस बात से वाकिफ़ थी कि ताऊ जी आर्थिक रूप से मजबूत हैं, पिताजी की तरह बच्चों की जिम्मेदारी नहीं है।

"तू उनसे घड़ी माँगना बंद कर, तेरे पिताजी लाकर देंगे;" माँ ने एक दिन वृंदा को धमकाते हुए कहा। उस रात वह बहुत रोई; पर उसने एक निश्चय कर लिया था। "पिताजी अब मैं घड़ी अपनी कमाई से ही खरीदूँगी।" यह सुनकर पिताजी उदास तथा प्रसन्न दोनो हुए। इस घटना ने वृंदा को आत्मनिर्भर बनने और किसी से कुछ भी न माँगने की प्रेरणा दी। प्रवक्ता बनने पर जब वृंदा ने पहले वेतन से कलाई घड़ी खरीदी उसका सुख 'गूंगे के गुड़' की भाँति था। जिसकी अभिव्यक्ति शब्दों से नहीं हो सकती थी। उसके बाद उसने अनेक वस्तुएँ खरीदीं; किंतु उस घड़ी की खुशी आज भी उन सबसे पृथक है। इस घटना को लगभग 40 वर्ष हो चुके हैं। घड़ी काम नहीं करती; पर उसे देखकर वह हमेशा स्वर्गीय ताऊजी को धन्यवाद करती है।

नजरबट्टू

अंजु दुआ जैमिनी
फरीदाबाद, हरियाणा, भारत

चारों ओर गहमागहमी थी। लोग भाव-तोल कर रहे थे। शो-विंडो में तरह-तरह के ए.आई. सजे थे।

उसने पूछा,"इस वाले ए.आई. का क्या नाम है?"

"ए.बाई."

"ए.बाई.?"

"जी, आर्टिफिशियल बाई। घर का झाड़ू-पोंछा, बर्तन-खटका सब करेगी। बस एक बटन दबाने की जरूरत है। इसे इसी तरह प्रोग्रेम्ड किया गया है।"

"और ये ए.डी. क्या है?"

"आर्टिफिशियल ड्राइवर। जहाँ जाना है उस जगह का नाम इसमें फीड करो, ड्राइविंग सीट पर बैठा दो, यह आपको गूगल-मैप के सहारे आपके गंतव्य तक पहुँचा देगा। आप पिछली सीट पर बैठे खर्राटे ले सकते हैं।"

"और ये ए.टी.?"

"ये आर्टिफिशियल टीचर है। आपको जो सब्जेक्ट पढ़ना है उसे फीड करें। यह टीचर आपको पढ़ाना शुरू कर देगा। सर, यहाँ आपको आपकी जरूरत के हिसाब से 'आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस' मिलेगी।

"अच्छा!" उसकी आँखों की पुतलियाँ फैलती जा रही थीं।

"और ये अलग-थलग रखा 'ए.डब्ल्यू.' क्या है?" उसने टैग पढ़ते हुए पूछा।

"ये छोड़िए सर! ये बहुत सस्ता है। आपके काम का नहीं है।"

"फिर भी, बताइए तो सही। क्या पता मेरे काम का हो।"

"सर, ये आर्टिफिशियल राइटर है। इसके पास ए.डी. की डिग्री है। ए.डी. यानी आर्टिफिशियल डाक्टर। फर्जी यूनिवर्सिटी की डिग्री लेनी पड़ी इसके लिए, तब कहीं इसे चलाया गया। इसके नाम के आगे डॉक्टर लगाना पड़ता है, तभी लोग इसे लेखक मानते हैं। इसमें लेखक वाला कोई खास गुण नहीं है, बस ये अपनी फालतू कविताओं, कहानियों से आपको बोर नहीं होने देगा। मंच पर कवि गोष्ठियों में ले जाइए, लेखकीय लफ्फाजी कर के लोगों का खूब मनोरंजन करेगा। ले जाइए डॉक्टर लेख कुमार को और मंचों की शोभा बढ़ाइए।"

"रहने दीजिए। ऐसे फर्जी डाक्टरों की भीड़ आए दिन सम्मेलन करती है। इस ए.डब्ल्यू. को आपने रखा ही क्यों है यहाँ शो-रूम में? हटाइए इसे।"

"अरे, नहीं साहब! एक नजरबट्टू भी तो चाहिए शोरूम के लिए। हाँ, तो कौन सा ए.आई. दूँ?"

नया जन्म

अलका गुप्ता
नई दिल्ली, भारत

पारुल का विवाह बहुत धूमधाम से निर्विघ्न पूर्ण हो गया था। अब विदाई की घड़ी नज़दीक थी। पारुल अपनी माँ को एकटक देखे जा रही थी, जो कि उसकी विदाई की तैयारी करते-करते, अपने अंदर उमड़ते जज्बातों को अपनी आँखों की कोर पर रोकने का असफल प्रयास कर रही थी। इधर पारुल का भी कुछ ऐसा ही हाल था। कुछ ही देर में वो अपनी माँ से दूर हो जायेगी, हम दोनों एक दूसरे से दूर कैसे रह पायेंगे, सोचकर कुछ अश्रु-मोती पारुल के गालों पर भी ढुलक गए।

वो झट से उठी और माँ का हाथ पकड़ कर अपने पास बिठा लिया और उसकी गोद में किसी मासूम बच्चे की भाँति सिमट गई। माँ ने बेटी को दुलारा, प्यार किया और बोली,"लाड़ो! आयुष की माँ अब तेरी भी माँ हैं, आज से तेरी नई ज़िंदगी शुरु होने जा रही है.... जैसे मुझे प्यार करती है न बिटिया...." "क्या माँ... (पारुल माँ को बीच में ही रोकते हुये बोली) आप भी न... पुरानी फ़िल्मी माँ जैसे नसीहत देने लगीं।" पारुल माँ के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए बड़े ही भोलेपन से बोली... "देखो माँ! अभी आपने कहा कि मेरी नई ज़िंदगी.... मतलब नया जन्म... तो जब एक बच्चा जन्म लेता है, तब उसकी माँ उसे किस तरह से अपने सीने से लगा लेती है, कितना दुलार करती है। नवजात शिशु को तो इस दुनिया या कह लीजिए, किसी के बारे में कुछ भी पता नहीं होता; परन्तु उसे मिलने वाला स्नेह, प्यार, दुलार सब महसूस होता है और फ़िर धीरे-धीरे जिससे जैसी भावना उसको महसूस होती है और व्यवहार मिलता है, उनके लिए वैसी ही भावना उसके मन में भी घर कर जाती है।"

"अब देखते हैं... मेरी नई दुनिया में मेरी एक और माँ (सासू माँ) मेरा कैसे स्वागत करती हैं...सीने से लगाती हैं या...आप बिल्कुल भी चिन्ता मत करो माँ।" कहती हुई, पारुल माँ के आँचल में छिप गई।

अब दोनों माँ-बेटी की आँखे नम लेकिन होठों पर मुस्कान थी।

नवरात्रि का भंडारा

विनीता राहुरीकर
भोपाल, भारत

मंदिर के भंडारे में पैर पूजन करवा कर और खाना खाकर गौरी प्रसाद में हलवे का दोना और दक्षिणा लेकर घर आयी तो बहुत प्रसन्न थी। आज बहुत दिनों बाद उसने पेट भर कर खाना खाया था। हलवे, पूरी, चने का स्वाद अब तक मुँह में बसा हुआ था।

"आ गयी बिटिया खाना खाकर?" सुनीति ने प्यार से पूछा।

"हाँ माँ। अब शाम को पीछे वाली गली के मंदिर में भी सबको खाना खाने को बुलाया है। वहाँ भी हलवा पूरी मिलेगी।" प्रसाद का दोना माँ को देते हुए गौरी ने चहककर बताया।

"हाँ कल भी दोनों समय तुझे भंडारे में जाना है।" सुनीति मुस्कराती हुई बोली।

"ये दो दिन सब लड़कियों को हलवा पूरी क्यों खिलाते हैं माँ?" गौरी ने पूछा।

"इसलिए कि नवरात्रि के नौ दिन माँ दुर्गा धरती पर विराजमान होती हैं और अष्टमी-नवमी को उनको भोग लगाया जाता है। क्योंकि छोटी लड़कियों को देवी का रूप समझा जाता है, तो उन्हें भी भोग लगाया जाता है।" सुनीति ने अपनी समझ के अनुसार बताया।

"कितने दिनो के बाद इतना पेट भर कर खाना खाने को मिला है। माँ, यह देवी माँ पूरे साल भर धरती पर क्यों नहीं विराजमान रहतीं?" नन्हीं गौरी के इस प्रश्न का सुनीति के पास कोई जवाब नहीं था।

निगाह
मंजु महिमा भटनागर
अहमदाबाद, भारत

पत्नी और पति सुबह की सैर को एक पार्क में जाया करते थे। पति के घुटनों में दर्द रहता था, वे तेज़ नहीं चल पाते थे। पत्नी तेज़ चलती; पर परिचित के मिलने पर उससे बात करने रुक जाती। वह देखती कि उसे किसी से बात करता देख पति महोदय तेज़ कदम उठाने लगते और आकर खड़े हो जाते। पत्नी को यह बात बडी अटपटी लगती। एक दिन पत्नी ने पूछ ही लिया,"तुम्हारे घुटनों में यूँ तो इतना दर्द रहता है, तेज़ चल नहीं पाते हो, फिर जब मैं किसी से बात करती हूँ तो तुम ज़ल्दी चलकर क्यों आ जाते हो?"

"तुम नहीं जानतीं; पर मैं मर्दों की सोच और निगाहों को अच्छी तरह समझता हूँ।"

"ओह!" पत्नी सुनकर पहले तो खुश और आश्वस्त हुई और आगे बढ़ गई, फिर पलट कर पीछे देखा और पूछा,"क्या तुम भी?"

पति महाशय कहीं ओर देख रहे थे...और उनकी निगाह....

नीले टिक के निशान

राजरानी शर्मा
ग्वालियर, म.प्र., भारत

पूरे सप्ताह रविवार की प्रतीक्षा करती इंदिरा; बार-बार फोन कॉल कटते देख उसने सोचा, वीकेंड है, परिवार को भी समय देना होता है; नीता है, बच्चे हैं, खरीददारी का काम और न जाने हजारों काम हैं तो बात नहीं कर पाता होगा .... कोई बात नहीं! पर आज तीन हफ्ते बीतने पर भी नीतीश ने फोन न उठाया तो उसे आघात-सा लगा!

मन उदास हो गया इंदिरा का।

कहीं ये शुरुआत तो नहीं कि आज फोन काट रहा है, कल जड़ें काट दे। आकाश कुसुम-सा हवाओं में लटका रह जाये! न घर का न घाट का!

बुढापा समझौते का दूसरा नाम है! जी समझौता ही तो है कि तड़क के गुस्सा करके बेटे-बहू को डाँट भी न सकते - "शर्म लिहाज नहीं है तुम्हें? जो बडों का फोन काट देते हो? वो भी माँ का। जो सिर्फ दो बोल ही न दे सका, वो क्या अंतिम संस्कार करेगा! जाओ, आज से मैने अपनी तरफ से कभी फोन न करने की कसम खाई है। आत्मसम्मान के भाव में ममता न चाहिये। खुश रहो जहाँ रहो!"

ये वाट्सप के दो नीले टिक के निशान तो दुर्लभ हो गये। "हम तो सबर-संतोषी हैं! फिर भी मन की बेचैनी को कम करने को एक संदेश लिखा, व्हाट्सएप्प किया.... शायद मन हल्का हो जाए! नींद आ जाए!"

"बेटा! मुझे भी तुम्हारे व्यस्त जीवन का अंदाजा है। तुम्हारा समय बरबाद करना अच्छा नहीं लगता; पर मोह-ममता के कारण बार-बार फोन करती हूँ। मुझे अपनी स्थिति पता है! मैं स्वयं फोन नहीं करती; मगर आज बाईस दिन से ज्यादा हो गये बच्चों को देखे बिना, मन तो भटकता है न! चलो कोई बात नहीं, ठीक है! तुम माता -पिता हो, अच्छी देखभाल करते ही हो। सब ठीक होगा। खुश रहो! खुश रहो!"

व्हाट्सएप्प पर लिख कर इंदिरा सोच रही थी कि जग जीत लिया! नीतीश बहुत अफसोस करेगा .... जल्दी से वीडियो कॉल कर बच्चों को दिखायेगा।

आज सातवें दिन भी उसका वो संदेश अपठित ही रहा है ...! क्या करे? चिन्ता के आकाश में उड़ती फिरे रात-दिन कि प्रभु कृपा और विश्वास के कूप में छलाँग लगा कर निर्भार हो जाये! जो सारे जगत् की चिन्ता करता है, वही चिन्ता करेगा .... नीतीश को भी चिन्ता हो ही रही होगी कि महीने भर से माँ से बात न हुई।

इंदिरा तो आखिरी बार व्हाट्सएप्प पर नीतीश को कब देखा, यही पढ कर संतोष कर लेती है कि फोन तो कर रहा है, व्हाट्सएप्प भी.... बेशक मुझे न करे तो क्या!

खुश रहे स्वस्थ रहे.... जहाँ रहे... चाहे याद करे, बात करे या न करे!

न्यारा बँगला

कोमल वाधवानी 'प्रेरणा'
उज्जैन, म. प्र., भारत

मैं गर्मी की छुट्टियाँ अहमदाबाद में दीदी के यहाँ बिताती थी। हम सोसायटी में खेलते-दौड़ते थे तो वहाँ होनेवाला कंस्ट्रक्शन देखकर मैं सोचती कि ये किसका बँगला बन रहा है। दीदी से पूछा तो बोली,“गंगाराम जी का।”

“इतने सुंदर बँगले को क्यों पूरा-का-पूरा तुड़वाकर नया बनवा रहे हैं?”

मेरे इस प्रश्न का उत्तर कौन देता। ये प्रश्न तो मैं मन-ही-मन किया करती थी। अगले वर्ष उनका नया बँगला पूरा हुआ देखा तो निहारती ही रह गई। शायद इसी बँगले के लिए रेडियो पर गाना बजता था - “इक बँगला बने न्यारा।”

पहली पत्नी के देहांत के बाद गंगाराम जी ने दूसरी शादी की थी। उनकी दूसरी पत्नी स्वभाव से न जाने कैसी हो, हम बच्चों को वहाँ से हटकर खेलने की हिदायत दी जाती थी। बँगला इतना सुंदर, उसके भीतर रहनेवाले मिलनसार क्यों नहीं? बालमन इसी ऊहापोह में रहता और कोशिश करता रेशमी परदों के भीतर झाँकने की।

अगली गर्मी में जब वहाँ फिर गई तो मैंने दीदी से पूछा,“दीदी, जब हमारा सब घरों में आना-जाना है तो फिर इनके यहाँ क्यों नहीं?” जवाब में वे सिर्फ मुस्करा देतीं।

बचपन के रेत के घरौंदे अब ढहने लगे। मेरी गिनती सयानों में होने लगी। मैं साहस जुटा उनके बँगले के बाहर जा पहुँची। इस बार परदे खुले हुए थे। मुझे देख एक महिला बाहर आई। मीठी-सी आवाज़ में पूछा,“किसे तलाश रही हो?”

“किसी को नहीं। बचपन में हम यहाँ रेत में खेला करते थे। वह सब याद कर रही थी।”

“तुम्हें पहले तो कभी देखा नहीं?”

“पहले मैं हर साल दीदी के यहाँ सात नंबर बँगले में आती थी। इस बार कई सालों बाद आना हुआ।”

“अच्छा...अच्छा... तुम गुणवंती की बहन हो। आओ...आओ, अंदर आओ।” उनका आग्रह और घर देखने की पुरानी चाह मुझे अंदर खींचकर ले गई।

बातचीत के बीच अचानक फ़ोन की घंटी बजी,“ज़रूर मेरे बेटे का होगा।” कहकर वे फ़ोन की ओर लपकीं। उससे बातचीत में इतनी डूब गईं कि उन्हें मेरी उपस्थिति का भी भान नहीं रहा।

"संजू! तेरा जन्मदिन मैंने यहाँ बड़ी धूमधाम से मनाया। तेरे सभी दोस्तों को बुलाया, केक भी काटा। प्रॉमिस कर, अगला जन्मदिन तू हमारे साथ मनाएगा।”

दीदी का बताया मुझे याद आ रहा था,“ये गंगाराम की दूसरी पत्नी हैं। ये बच्चे इनके नहीं।”

पत्नी प्रेम

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

चार वयोवृद्ध मित्र रोज सुबह एक पार्क में मिलते हैं। बातों-बातों में आज इस विषय पर चर्चा होने लगी कि मृत्यु के बाद अपनी पत्नी के लिए क्या व्यवस्था करके जा रहे हैं।

"मैंने तो 50 लाख रुपये का बीमा करवा रखा है, इसलिए मुझे कोई चिंता नहीं है। वह आराम से रहेगी," एक मित्र ने कहा।

दूसरा बोला,"हम तो बेटे के पास रहते हैं। बहू-बेटे बड़ी सेवा करते हैं। मेरे बाद मेरी पत्नी की और भी अधिक सेवा करेंगे। मुझे भला क्या चिंता?"

"मैंने सावित्री वृद्धाश्रम में व्यवस्था कर दी है, जिससे मेरे बाद पत्नी वहाँ बिना किसी परेशानी के शेष जीवन आराम से व्यतीत कर सकेगी," तीसरे ने कहा।

चौथे मित्र को शांत देखकर तीनों सोचने लगे कि लगता है इसने अपनी पत्नी के बारे में कुछ सोचा ही नहीं। क्या इसे अपनी पत्नी की कोई चिंता ही नहीं है।

एक से रहा नहीं गया, पूछ उठा,"क्यों भाई! तुम शांत क्यों हो?"

"भैय्या! क्या बोलूँ? मैं तो यह सोचकर ही दहल जाता हूँ कि पत्नी मेरे बिना जियेगी कैसे? 55 वर्ष एक-दूसरे का साथ निभाया है। उससे एकाकी जीवन नहीं जिया जाएगा। भगवान पहले उसे उठा ले, जिससे मेरे वियोग का दुःख उसे झेलना न पड़े, मैं ही उस दुःख को झेलूँ!"... कहते-कहते वे फूट-फूटकर रोने लगे।

पथ प्रदर्शक

मधु जैन

जबलपुर, म. प्र., भारत

भावेश आज एक शादी में सपरिवार गया था। वहाँ की सुंदर सजावट देखकर माँ ने कहा,"बेटा पापा का हाथ पकड़कर उन्हें शादी की सजावट दिखा ला।"

"जिंदगी भर तो शादी की सजावटें देखी हैं अब क्या देखना? यहीं बैठकर देखो जो देखना है।" भावेश रुखा सा जवाब देकर आगे बढ़ गया।

"कैसे हो सुरेश? सामने क्या देख रहे हो?"

"देखो, कैसे अपने कपड़ों की परवाह किए बिना इतने बड़े लड़के को कंधे पर बैठाकर घूम रहा है।"

"सुरेश उसका बेटा एक आनुवंशिक बीमारी से ग्रस्त होने के कारण वह चल-फिर नहीं सकता।"

"तुम कैसे जानते हो उसे?"

"वह मेरे बेटे के साथ ही पढ़ता है।"

अब तक वह व्यक्ति उनके करीब आ चुका था।

"आप व्हीलचेयर क्यों नहीं ले लेते? कब तक इस बेताल को अपने कंधे पर लादे रहोगे?" कटाक्ष करते हुए सुरेश बोला। उसने शांत भाव से जवाब दिया,"जब तक इन कंधों में जान है।" और आगे बढ़ गया।

"सुरेश तुम्हें ऐसा नहीं बोलना चाहिए था।"

भावेश देख रहा था, वह व्यक्ति अपने बेटे को घूम-घूम कर शादी की रोशनी दिखा रहा था। उसके बाद बेटे को एक जगह बिठाकर उसके लिए खाने की प्लेट लगाकर लाया और फिर अपने लिए भी लाया दोनों बैठ कर बतियाते हुए भोजन करने लगे।

भावेश भी उनके पास पहुँचकर बोला,"सुरेश को ऐसा नहीं बोलना चाहिए था।" वह मुस्कराते हुए बोला,"कोई बात नहीं उसने अनजाने में ही मुझे विक्रमादित्य का ताज जो पहना दिया।"

"क्या तुम्हें सचमुच बुरा नहीं लगा?"

"बिल्कुल नहीं।"

"तुम किस मिट्टी के बने हो?"

"कुछ लोग दूसरों को खुश करके खुश होते हैं और मैं अपनों को खुश करके खुश होता हूँ।" उसकी बात सुनकर भावेश पिता के पास पहुँचा,"चलो पापा, मैं आपको शादी की सजावट दिखाता हूँ।" पिता ने उल्लसित होते हुए बेटे का हाथ ऐसे पकड़ा जैसे बालक मेले में जाने के लिए पिता का हाथ पकड़ता है।

परजीवी कीड़ा

पूजा अनिल भारवानी
मद्रिद, स्पेन

सिंह साहब सी.ए. वर्गीज़ को चार बार बुला चुके थे; लेकिन वर्गीज़ जी लाइव क्रिकेट मैच मिस नहीं करना चाहते थे। सिंह सर ने चपरासी को विशेष तौर पर कहलवाया कि उनसे तुरंत आने को कहे। चपरासी की भाव भंगिमा से वर्गीज़ जी समझ गये कि मामला गंभीर है, वे तत्काल सिंह सर के केबिन में उपस्थित हो गए।

सिंह सर ने पिछले महीने की रिपोर्ट पेश करने को कहा। वर्गीज़ जी ने बताया कि वह रिपोर्ट मिसेज़ जैन बना रही थी। इस उत्तर पर सिंह सर आपे से बाहर हो गए; किन्तु संयत हो कर बोले,"अच्छा! वह मिसेज़ जैन बना रहीं हैं, तो आप क्या करते हैं इस ऑफिस में?

"मेरा काम तो..."

"मिसेज़ जैन कर देती हैं..." सिंह सर ने बात बीच में ही काटकर अपनी बात कही।

"सर! मेरा काम बिलकुल अप-टू-डेट रहता है। मिसेज़ जैन ने मेरे बारे में ग़लत जानकारी दी होगी।"

"उन्हें इतनी फ़ुरसत मिलती है क्या? आपकी फ़ाइल तैयार कर देतीं हैं और आपके क्लाइंट भी वे ही अटैंड करती हैं न?"

"वे केवल काम करने का दिखावा करती हैं। किसी को बदनाम करने का कोई अवसर नहीं छोड़तीं। मैं तो कहता हूँ कि वे एक सड़ा हुआ आम हैं। बेकार और सड़ा गला आम। ऐसे लोगों को कंपनी में होना ही नहीं चाहिए। जितना जल्दी हो सके उन्हें दफ़ा करें यहाँ से।"

"क्या कहा? वे सड़ा आम हैं! इसीलिए इस समय मीटिंग रूम में आपके हिस्से का प्रजेंटेशन दे रहीं हैं और आप अपनी टेबल पर चाय के सिप लेते हुए क्रिकेट मैच देख रहे थे। है न?"

"सर...मैं..."

"जी, आपने उनसे कहा था कि आपका सिर दुख रहा है इसलिए वे यह प्रज़ेंटेशन बनाकर मीटिंग रूम सँभाल लें। झूठ है न? सोच समझ कर मुँह खोलना वरना सी.सी.टी.वी. कैमरा लगाने का यह लाभ है कि झूठ नहीं बोल सकते।"

वर्गीज़ निरुत्तर हो चुके थे।

"अपने बारे में क्या सोचते हैं आप? आप उसी आम पर पलने वाले परजीवी कीड़े हैं! परजीवी कीड़ा जानते हैं न? आपके बहानों को सच मानकर आपका अधिकतर काम मिसेज़ जैन ही कर देतीं हैं और आप बिना काम किए गर्व करते हैं। मैनेजमेंट ने डिसाइड किया कि कंपनी को आपकी आवश्यकता नहीं। कामचोर मानसिकता वाले लोग हमारी कंपनी में नहीं रह सकते। आप त्यागपत्र स्वयं लिखेंगे या मिसेज़ जैन से लिखवाएँगे?"

परवाह

प्रेमलता माहेश्वरी

लुधियाना, पंजाब, भारत

पिता-पुत्र की जोड़ी भी कमाल की होती है! दुनिया के किसी भी संबंध में अगर सबसे कम बोलचाल है तो वह है पिता-पुत्र की जोड़ी में।

ऐसा ही कुछ रमेश और उसके पिताजी के बीच का नाता था। रमेश हमेशा अपने पिताजी से कम ही बातचीत करता था। माँ ही उन दोनों के बीच की कडी होती थी। एक दिन रमेश बहुत हिम्मत करके अपने पिताजी से बोला कि मुझे मोटर-साइकिल चाहिए। पर पिताजी ने उसे बहुत डाँटा,"अभी स्कूटर है तो मोटर-साइकिल की क्या जरूरत? तुमने देखा नहीं मोटर-साइकिल युवा लोग कितनी तेज चलाते हैं, कहीं तुम्हें कुछ हो गया तो!" रमेश ने उस दिन खाना नहीं खाया तथा अपने कमरे में बैठ कर अपने पापा के व्यवहार पर दुःखी होता रहा। उसकी माँ खाना लेकर कमरे में आई तथा उसे प्यार से समझा कर खाना खिलाने लगी।

रमेश अपनी माँ से बोला,"पिताजी इतना गुस्सा क्यों करते हैं, वे मुझे बिलकुल भी प्यार नहीं करते।" माँ ने उसे समझाया, बेटा ऐसा नहीं है; वे तुम्हें बेइंतहा प्यार करते हैं; पर जताते नहीं हैं। तुम्हें इतना डाँटने का मतलब भी यही होता है कि उन्हें लगता है कि कहीं मेरे अधिक लाड-प्यार और कम शिक्षा से मेरा बेटा अभिमन्यु की तरह जिंदगी की लड़ाई में हार ना जाये, इसलिए कड़ा अनुशासन व सख्त रवैया अपनाते हैं। वे जानते हैं कि प्रेम कमजोर बनाता है, इसलिए उनका प्रेम झल्लाहट बनकर निकलता है; क्योंकि जब हम दोनो नहीं रहेंगे तो पूरी गृहस्थी का भार तुम पर ही आएगा। वे तुम्हें एक अच्छा जिम्मेदार इंसान बनाकर दुनिया के कड़वे सच के लिए तैयार करना चाहते हैं।

रमेश माँ की बात समझ गया; क्योंकि उसे अब तक अपनी माँ का इंतजार तो मालूम था पर रात भर जाग कर चहलकदमी करता पिता नहीं मालूम था। जिनकी उम्र और झुर्रियाँ अब बढ़ती जा रही हैं तथा बीमारियों ने भी शरीर घेर लिया था। अब उसे अपने सोच पर शर्मिंदगी महसूस होने लगी। वह जाकर अपने पापा के गले लग कर रोने लगा। "पापा मुझे नहीं पता था कि इस कठोर पिता के पीछे वह इंसान है जो अपने बेटे को मजबूत बनाना चाहता है, ताकि हम ग़लतियाँ ना करें और यदि गलती हो भी जाए तो उनसे सबक सीखें।"

रमेश जब पिता बना तो दुआ करता है कि उसकी संतान को अपने पिता में दादाजी की झलक हर छोटी परवाह में मिलती रहे।

पशु प्रेमी

अलका प्रमोद

लखनऊ, भारत

थोड़े दिन पूर्व एक मादा कुक्कुर ने दीपक जी के घर के फाटक पर बच्चे जन दिये। अब तो जो भी फाटक के पास आता वह अपने पिल्लों की सुरक्षा के दृष्टिगत उसको काटने दौड़ती।

उस मादा कुक्कुर का ऐसा आतंक हो गया कि कोई भी दीपक जी के घर आने से डरने लगा। दीपक जी ने पहले उसे भगाने का प्रयास किया पर जब सफल नहीं हुए तो नगर निगम में शिकायत की पर उनकी कोई सुनवाई नहीं हुई। वैसे दीपक जी को वह पहचानती थी और कुछ नहीं कहती। दीपक जी भी उससे दूर ही रहते पर हद ही हो गयी जब उनके घर काम करने वाली सहायिकाओं ने भी उसके भय से आना छोड़ दिया। उनका घर कुत्ते वाले घर के नाम से मोहल्ले में प्रसिद्ध हो गया। दीपक जी ने उसे लाठी ले कर भगाना चाहा तो उसने उनके पैर में काट लिया और उनको सुई लगवानी पड़ी।

तंग आ कर दीपक जी ने सोच लिया कि उनको कुछ करना ही होगा। वह एक पत्थर उठा कर आये और उस कुक्कुर को फेंक कर मारा। यद्यपि उनका इरादा केवल उसे भगाने का था पर दुर्योग से चोट कुछ अधिक लग गयी और उसके प्राण पखेरु हो गये।

बस फिर क्या किसी पशुप्रेमी ने उनके विरुद्ध निरीह पशु की हत्या की शिकायत दर्ज करवा दी। दीपक राय जी आज पुलिस थाने में बैठे हैं।

दरोगा जी ने उनको निष्ठुर, अपराधी के कठघरे में खड़ा कर दिया और उनकी निष्ठुरता पर क्या-क्या नहीं सुनाया, उन पर उस निरीह पशु की हत्या का केस दर्ज हो गया। दीपक जी ने जो यातना सही और उनकी मनोदशा की कोई सुनवाई नहीं थी किसी का उससे कोई सरोकार न था।

दीपक जी थाने में कार्यवाही की प्रतीक्षा कर रहे थे तभी दरोगा जी का खाना आ गया। दरोगा जी को भूख लगी थी अतः वे तुरंत डिब्बा खोल कर मुर्गे की टांग स्वाद ले-ले कर खाने लगे।

पहचान

उषा किरण

मेरठ, उ.प्र., भारत

राखी बाँधने के बाद देवेश, अनुभा के भाईसाहब और बच्चों की महफिल जमी थी। बाहर जम कर बारिश हो रही थी।

अनुभा गरम करारी पकौड़ी और चाय लेकर जैसे ही कमरे में दाखिल हुई सब उसे देखते ही किसी बात पर खिलखिला कर हँसने लगे।

"अरे वाह पकौड़ी! मजा आ गया!" भाईसाहब खुश होकर बोले, फिर प्लेट हाथ में लेकर कहने लगे, "आओ अनुभा! देखो ये देवेश और बच्चे तुम्हारे ही किस्से सुना-सुना कर हँसा रहे थे अभी।"

"अरे भाई-साहब एक नहीं जाने कितने किस्से हैं ...मेरे कपड़े नहीं पहचानतीं, दो साल हो गए नई गाड़ी आए; लेकिन अब तक अपनी गाड़ी नहीं पहचानतीं...और तो और इनको तो अपनी गाड़ी का रंग भी नहीं याद रहता...नहीं मैं शिकायत नहीं कर रहा; लेकिन हैरानी की बात नहीं है ये?"

"अरे ....ये तो कमाल हो गया, तुमको अपनी गाड़ी का रंग भी याद नहीं रहता? अनुभा! तुम अभी तक भी उतनी ही फिलॉस्फर हो ...हा हा हा...!"

अनुभा ने मुस्करा कर इत्मीनान से प्लेट से एक पकौड़ी उठा कर कुतरते हुए कहा,"हाँ, नहीं याद रहता...तो इसमें हैरानी की क्या बात है? अपनी-अपनी प्रायर्टीज हैं भई...कपड़े, गाड़ी, कोठी, जेवर पहचानने में ग़लती कर सकती हूँ भाईसाहब, क्योंकि उन पर मैं अपना ध्यान जाया नहीं करती; पर पूछिए, क्या मैंने रिश्ते और अपने फर्ज पहचानने और निभाने में कोई चूक की कभी? ये सब कैसे याद रहे; क्योंकि मेरा सारा ध्यान तो उनको निभाने में ही चला जाता है...खैर...और पकौड़ी लाती हूँ!"

अनुभा तो मुस्कुरा कर खाली प्लेट लेकर चली गई; लेकिन कमरे में सम्मानजनक मौन पसरा हुआ छोड़ गई! भाई-साहब ने देखा देवेश की झुकी पलकों में नेह व कृतज्ञता की छाया तैर रही थी।

पिता के सामने

पूजा अनिल भारवानी
मद्रिद, स्पेन

प्रतिभा और अनिमेष की शादी की पच्चीसवीं सालगिरह का उत्सव चल रहा था, बहुत से लोग आए हुए थे और पूरा परिवार आनंदित था। दोनों ही अपने सुखी वैवाहिक जीवन के लिए पहचाने जाते थे।

कई प्रकार के खेल और बातों के बीच परिवार में से किसी ने हँसी ठिठोली में उनसे कुछ सवाल पूछना आरंभ किया और अनिमेष से पूछा कि क्या आप शादीशुदा जीवन में प्रसन्न हैं?

अनिमेष ने बेहद उत्साहित होकर उत्तर दिया,"प्रतिभा के साथ मैं बहुत प्रसन्न हूँ और अगले सात जन्म तक या उससे आगे भी जन्म हो तो हर बार प्रतिभा को ही अपनी पत्नी बनाना चाहूँगा।" सबने खूब तालियाँ बजाईं। अनिमेष ने गर्व से प्रतिभा की तरफ देखा, वह प्रसन्नता से मुस्कुरा रही थी।

इसके बाद प्रतिभा से सवाल किया गया कि क्या आज तक उनकी शादी में उसे कोई पछतावा है?

प्रतिभा के खिले चेहरे पर अचानक उदासी छा गई, उसने नकली मुस्कान के साथ 'न' में सर हिला दिया। लेकिन पुनः पूछने पर उसने हिम्मत करके जवाब दिया,"मुझे अपनी शादी में केवल एक ही पछतावा है और वह यह कि शादी के बाद मैं अपना काम करने की स्वतंत्रता नहीं ले पाई। शादी से पहले मैं एक डिग्री कॉलेज में प्रोफेसर थी, जो मेरे पिता का सपना था; लेकिन शादी के बाद अनिमेष ने यह कहकर काम नहीं करने दिया कि उनके परिवार में औरतें बाहर जॉब नहीं करती हैं। मुझे बाहर काम करने से रोक दिया गया। मुझे इस बात का पछतावा है कि मैंने शुरुआत में ही अनिमेष से ज़िद करके पुनः जॉब क्यों नहीं ज्वाइन की? अपनी स्वतंत्रता के लिए ज़िद क्यों नहीं की?"

प्रतिभा रुआँसी होकर कहती चली गई,"मुझे इस बात का दुख होता है कि मरने के बाद अपने पिता को क्या मुँह दिखाऊँगी, जिसने मेरे लिए तमाम सपने देखे और उच्च शिक्षा दिलवा कर एक डिग्री कॉलेज का प्रोफ़ेसर बनाया। उस पिता के सामने मैं क्या मुँह लेकर जाऊँगी?" इतना कह कर प्रतिभा की आँखों में बरसों से ठहरे हुए आँसू झमाझम झरने लगे।

यह सुनकर एक चाचाजी आये और उससे कहा,"बस, इतनी सी बात! समझ लो कि तुम्हारा और तुम्हारे पिता का सपना पूरा हो गया! मेरे स्कूल के प्रधानाध्यापक अगले सप्ताह सेवानिवृत्त हो रहे हैं, तुम हमारे साथ काम कर सकती हो। अनिमेष की चिंता न करना, उसे मैं देख लूँगा।" प्रतिभा को लगा वह पिता के सामने है।

पितृदोष

उषा किरण
मेरठ, उ.प्र., भारत

"हैलो सुगन्धा! कल ग्यारह बजे पितृदोष के निवारण का अनुष्ठान है, आ जाना। लन्च भी हमारे साथ करना...क्या बताऊँ, पंडित जी ने बताया कि पितृदोष है, हम दोनों की पत्री में, जब तक उपाय नहीं होगा तब तक सुख-समृद्धि नहीं आएगी घर में।"

बाहर से ही विशाल कोठी की सजावट देख दिल ख़ुश हो गया। गेंदे और अशोक के पत्तों के बन्दरवार, फूलों की रंगोली, धीमे-धीमे बजता गायत्री मन्त्र और अगर-धूप की अलौकिक सुगन्ध ने मन मोह लिया। रसोई से पकवानों की मनमोहक सुगन्ध घर के बाहर तक आ रही थी। अन्दर दो पंडित पूजा की भव्य तैयारियों में व्यस्त थे। प्रफुल्लित चित्रा भाग-भागकर उनको जरूरत का सामान लाकर दे रही थी।

"ये लीजिए पंडित जी! आपने कहा था नाग का जोड़ा बनवाने को।" उसने एक छोटी मखमली लाल डिब्बी पंडित जी की ओर बढ़ाते हुए कहा, जिसमें नगीने जड़ा, सुन्दर सा सोने का नाग का जोड़ा रखा था।

"आ गईं तुम...अरे बबली! जरा आँटी के लिए ठंडाई लाना," चित्रा ने आगे बढ़ कर स्नेह से मेरे हाथ थाम लिए। मेरा गला सूख रहा था। कुल्हड़ में बादाम केसर की ठंडाई पीकर और ए.सी. से राहत पाकर मैंने अनन्या से कहा,"अनन्या बेटे! बाथरूम कहाँ है?" अनन्या मुझे अपने साथ ऊपर ले गई। सामने ही एक छोटे से घुटे हुए कमरे में कोई कमजोर से वृद्ध पुरानी, मैली सी धोती मात्र पहने बैड पर बैठे थे। छत पर पुराना सा पंखा खटर-खटर चल रहा था, जिसमें से आवाज ज्यादा, हवा कम ही आ रही थी। जून की तपती गर्मी से बेहाल लाल चेहरा, टपकता हुआ पसीना! उनकी उजाड़ बेनूर, फटी सी दयनीय आँखें मेरे चेहरे पर जम गईं, मानो भीड़ में खोया बच्चा मुझसे अपना पता पूछ रहा हो। अपना खाली गिलास काँपते हाथों से आगे कर सूखे मुँह से धीमी आवाज में कहा,"पानी...!"

"जी बाबाजी, अभी लाई...!" अनन्या ने कह कर गिलास थाम लिया।उन बेनूर, बेचैन आँखों की तपिश मुझसे झेली नहीं गई...मैं आगे बढ़ गई। नीचे से पितृदोष निवारणार्थ अनुष्ठान के पावन मन्त्रों की आवाजें तेज-तेज आनी शुरु हो गई थीं।

पुकार

उर्मिला त्रिपाठी
ग्वालियर, म.प्र., भारत

तन्वी आज बहुत प्रसन्न थी। बहुत दिनों बाद उसे अरुण भैया से मिलने जाना था। पिछले कुछ ही दिनों में भैया के तीन-चार फोन आ चुके हैं कि कब आ रही हो मिलने। भाभी कुछ ही महीनों पहले कोरोना बीमारी की शिकार होकर इस सारहीन संसार को छोड़कर चली गई थीं। तन्वी का बहुत मन था कि वह वक्त निकालकर अरुण भाई से मिल आए। जब पहुँची तो अरुण बोले, इस बीच मुझे तुम्हारी बहुत जरूरत महसूस हुई। तन्वी पहले तो कुछ अचकचाई, फिर उसने पूछा - बताइए कैसे?

वे बोले जब एक ही बात दिमाग में बार-बार, बार-बार रिकॉर्ड के रूप में चलती रहे तो क्या हो? तन्वी ने सवाल किया - सविता भाभी याद आती हैं?

भैया बोले - वो भी है और अपनी इस अपाहिज-सी हालत से मैं थक-सा गया हूँ। कभी-कभी तो दुनिया ही छोड़ जाने की इच्छा प्रबल हो उठती है। तन्वी को मानो एक झटका-सा लगा। वह सोच भी नहीं सकती थी कि भाई इतने परेशान होंगे, जो उन्होंने उसे तीन-चार बार फोन करके आने को कहा था। उसने मयंक भैया से भी अरुण भाई के इन टेलीफोन कॉल्स का जिक्र किया तो उन्होंने बताया था कि आजकल मेरे पास भी अरुण भाई के फोन अक्सर आ जाते हैं। खैर आज संयोग होने पर जब वह वहाँ पहुँच पाई, तभी तो उसे सच्चाई मालूम हुई। शायद वह आज भी ना पहुँच पाती, अगर पिछले फोन में अरुण भैया ने यह ना कहा होता कि मैं एक आध हफ्ते में शहर से चला जाऊँगा, अपने बेटे के घर।

अरुण भाई बोले - जब मन उदास हो तो अपनों को ही तो याद किया जाता है। यूँ तो शहर में बहुत से अपने हैं; पर मन की बात सबसे थोड़ी कही जा सकती है।

अरुण भाई के पास आज, भाभी को छोड़ कर भाई-बहन, बेटे-बेटी, नाती-पोते सब हैं, जब-तब उनसे मिलना होता है; पर अकेलेपन और निर्भरता के क्षण कभी-कभी बहुत भारी पड़ते हैं, इतने कि जीने का कोई चाव ही नहीं रह जाता प्रतीत होता है।

अगर स्ट्रोक के आघात ने उनके स्वास्थ्य को नज़र न लगाई होती तो बात ही अलग होती। बात छोटी-सी है पर हम लोग छोटी-छोटी बातें ही तो जिंदगी की आपाधापी में पूरी करने में चूक जाते हैं। न चाहते हुए भी अक्सर हमें देर हो जाती है। जिंदगी बहुत लंबी है या बहुत छोटी, यह तो तभी पता चलता है जब देर हो जाती है।

पुरस्कार
पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'
जयपुर, भारत

टर्न टर्न, टर्न टर्न। फोन की घंटी बड़ी देर से बज रही थी। "आता हूँ भाई, आता हूँ," बाथरूम से हड़बड़ाहट में मुँह पोंछते हुए निकले रवि ने फोन का चोंगा उठाया और पूछा,"कौन साहब बोल रहे हैं?"

"जी, मैं विशिष्ट साहित्य-संस्थान से संस्थान का सचिव, प्रकाश बोल रहा हूँ, कविराज रवि जी से बात करनी थी," फोन के दूसरी तरफ से आवाज आई।

"जी, नमस्कार, बोलिए मैं रवि ही बोल रहा हूँ। कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ," रवि ने कहा।

"सर! सेवा नहीं आपको बताना था कि हमारे संस्थान ने साहित्य-रत्न देने के लिए जो घोषणा की थी, उसके लिए पाँच सौ प्रविष्टियाँ आई थीं। हमारी साहित्यिक विशेषज्ञ समिति ने बड़ी मेहनत से कृतियों का मूल्यांकन किया और अंततः दो पुस्तकें चुनी जो समान रूप से पुरस्कार के योग्य लगीं। इसमें से एक पुस्तक आपकी है; पर पुरस्कार एक ही को देना है, बस इस संबंध में आपसे बात करनी थी। आपकी सहायता भी चाहिए थी।"

"प्रकाश जी! मैं इसमें आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?" रवि ने अचरज से पूछा।

"जी, आप ही हमें इस दुविधा से बचा सकते हैं और मदद भी कर सकते हैं," सचिव ने कहा।

"वो कैसे?" रवि ने पूछा।

प्रकाश बोले,"देखिए रवि जी! आप अन्यथा ना लीजिएगा, बात यह है कि पुरस्कार बड़ा है, पुरस्कार की राशि भी पूरे दो लाख रुपए है। यदि इसका पचास प्रतिशत आप संस्थान को दे सकें तो यह साहित्य-रत्न पुरस्कार आपका ही हुआ जानें!"

प्रणाम

हरिहर झा
मेलबर्न, आस्ट्रेलिया

मेरा मित्र राजू बड़ा विनम्र था। विनम्र होना अच्छा है। सामने वाला प्रसन्न होता है और नम्रताभाव रखने से किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? पर मुझे थी। राजू जिस किसी को भी मिलता उसे हाथ जोड़ कर प्रणाम कर देता। तब हमारी उम्र यही ग्यारह-बारह साल रही होगी। परिवार के बड़े लोगों और गुरुजनों के अलावा किसी भी बड़ी उम्र के व्यक्ति को प्रणाम करने से मेरे अहम को ठेंस पहुँचती। हर किसी को क्यों हाथ जोड़ें? मेरे मित्रों में कोई भी इस तरह हाथ नहीं जोड़ता था। कोई-कोई तो रोज दिन में तीन बार मिल जाते। रोज की झंझट हमारे रिवाज में नहीं थी। राजू किसी को हाथ जोड़ कर नमस्कार करे और मैं ठूँठ की भाँति! इसलिये मुझे तकलीफ होने लगी।

मैंने निर्णय लिया कि राजू जब भी मेरे साथ होगा तो मैं हर किसी को प्रणाम कर लूँगा ताकि मुझे खराब न लगे और सामने वाले के सामने मुझे नीचा न देखना पड़े। फिर एक समस्या आ गई! राजू यदि किसी को जानता ही न हो तो वह अभिवादन नहीं करता। ऐसे व्यक्ति को भी प्रणाम करके मैं घाटे में रहता। सामने वाला सोचता मैं पागल हूँ जो प्रणाम कर रहा हूँ! यह मेरी आदत तो नहीं है।

तब मैंने सोचा कि मैं देख कर प्रणाम करूँगा। यदि वह प्रणाम करता है तो ही मैं भी करूँगा। फिर क्या? कोई परिचित मिला, तो मेरी नजर राजू की ओर। अगर वह प्रणाम करता तो उसे देख कर मैं भी प्रणाम कर देता। मेरे प्रणाम में कुछ देरी हो जाती। सामने वाला समझ जाता मैं मित्र की नकल में प्रणाम कर रहा हूँ। असली प्रणाम वाली भावना नहीं आ पाती थी।

मैं हैरान! करूं तो क्या करूं? मित्र को समझाने की कोशिश की। हर एक को सर झुकाने की क्या जरूरत है? पर उसकी तो आदत थी। इस मित्र से मैं छुटकारा भी नहीं पा सकता; उसका स्वभाव बदल भी नहीं सकता। एक बार मैंने दूर से एक व्यापारी को आते हुए देखा। मुझ से न रहा गया। मैंने राजू से कहा "देख, वह व्यापारी सामने से आ रहा है। हम से मिलेगा तो सही। चल तू मुझे अभी और इसी वक्त बता दे, गारंटी से बोल तू उसे प्रणाम करेगा या नहीं?"

फरक

यशोधरा भटनागर
देवास, म.प्र., भारत

मेरा यार बना है दूल्हा और फूल खिले हैं मन के....

खुद को भूले बराती बेतहाशा नाच रहे थे।

वह भी अपने साथियों संग नीली-पीली, सुनहरी ड्रेस पहने, हाथ में लाइट थामे बरात के साथ चल रहा था। उसके ठीक पीछे लाची वैसी ही नीली-पीली, सुनहरी ड्रेस में लाइट थामे चल रही थी।

"जब लाची संग मेरा ब्याह होगा तब मैं भी ऐसे ही घोड़ी चढूँगा, सूटेड-बूटेड।" उसने नजर भर कर दूल्हे की ओर देखा।

"क्यों रे लाखन! आगे बढ़े न...। क्या लाखन तू फिर वही सोचने लगा। तुझे कहा था न इनमें और हम में बहुत फरक है रे। ये पैसे वाले लोग हैं।" लाची ने लाखन को ठेलते हुए कहा।

बारात दरवाजे पर खड़ी थी। तभी दूल्हे के पिता के दहाड़ते स्वर से चारों ओर सन्नाटा छा गया। "समधी जी आपने धोखा दिया है हमें। दरवाज़े पर कार देने का वादा किया था। अब आप अपने वादे से मुकर रहे हैं।"

"मैंने कार देने का वादा जरूर किया था समधी जी। पर अभी मैं कार देने की स्थिति में नहीं हूँ। दमाद बाबू प्लीज़ आप तो समझिए।"

दूल्हे ने मुँह फेर लिया।

"समधी जी शादी का खर्चा द्रौपदी के चीर-सा बढ़ता चला गया। घर गिरवी रख शादी का इतना इंतजाम कर पाया हूँ। साल भर में कार का भी जुगाड़ हो ही जाएगा...।" हाथ जोड़ गिड़गिड़ाते हुए लड़की का पिता बोला। काफी समझाइश के बाद लड़के वाले इस बात पर राजी हुए। द्वाराचार की रस्में आरंभ हो गईं।

लाखन ने एक नजर खुद पर डाली और लाची का हाथ थाम कर मुस्कराते हुए बोला,"तू सच कहती है रे। इनमें और हम में बहुत फरक है।"

बड़बोला

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

"चुपचाप निकल लो यहाँ से, बड़बोला इधर ही आ रहा है।" एक ने कहा। नीम की दातुन चबाते हुए उसने अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया, ताकि उसकी नज़रें बड़बोले से न टकराएँ।

"हाँ, आते ही बड़ा-बड़ा बोलना शुरू कर देगा। मैं यह कर देता, वह कर देता, मुझे क्यों नहीं बताया, तब क्यों नहीं बुलाया" दूसरा बोला और मुँह ऊँचा कर बोतल से पानी पीने लगा।

"इसकी तो बड़बड़ाने की आदत है। तुम लोग ध्यान मत दो। ठंड हो रही है। जल्दी-जल्दी घर की ओर निकल लो।" तीसरा मित्र बोला और अपने कंबल को कसकर लपेटने लगा। रास्ते में पड़े हुए मिट्टी के कुल्हड़ को उसने ठोकर मारकर सड़क के उस ओर पहुँचा दिया।

"जाने क्यों मुझे ऐसा लगता नहीं कि यह कोरी बकवास करता है। जितनी हो सके सबकी सहायता करते ही देखा है मैंने।" चौथे ने कहा और अपने बाँयें हाथ में पकड़ी दूध की थैली को सीधे हाथ में लिया। ठंडी थैली से उसके हाथ ठंडे पड़ रहे थे।

"अरे, तुममें से किसी ने बिल्ली को देखा क्या?" सामने से आते हुए बड़बोले ने इनसे पूछा।

"नहीं भाई! हमने नहीं देखा।" समवेत स्वर में आवाज़ें उभरीं और वे अपने-अपने रास्ते तेज़ी से कदम बढ़ाने लगे।

दो मिनट बाद ही बड़बोला भागा-भागा पीछे आया। उसके हाथ में एक बिल्ली का बच्चा घायल अवस्था में था।

"यह कहाँ मिला?" चौथे ने हमदर्दी से पूछा।

"वहीं जहाँ से आप सब अभी आ रहे हैं। जहाँ आपने मिट्टी का यह कुल्हड़ फेंका था न, यह वहीं था।" उसने बिल्ली के बच्चे के साथ ही हाथ में पकड़े कुल्हड़ की ओर इशारा कर कहा।

"ज़रा अपनी थैली से थोड़ा दूध तो डाल देना इस बेचारे के लिए इस कुल्हड़ में।" वह बोला।

उन्होंने थैली को दाँतों से काटा और थोड़ा दूध कुल्हड़ में पलट दिया और अपने बाकी तीन मित्रों की ओर देखा।

"अगर नीम की पत्तियाँ मिल जाएँ तो मैं इसके घाव पर पीस के लगा देता। ज़रा अपनी बोतल से पानी डालिए, घाव धो देता हूँ।"

पहले और दूसरे ने नीम व पानी उसे दे दिया।

"अब इस मरते हुए बिलौटे को बचाने के लिए आप अपना कंबल देंगे ज़रा। मैं होता तो दे देता।" उसने तीसरे की ओर देखकर कहा।

कंबल देने के साथ ही वे चारों उसे वहीं बिलौटे के साथ छोड़ बड़बड़ाते हुए आगे निकल गए।

बड़ी अम्मा

राजरानी शर्मा

ग्वालियर, म.प्र., भारत

मधु ने मेरी आँखों में झाँका और बोली,"आज बहुत याद आ रही है न बड़ी अम्मा की?" मधु जानती है कि साड़ियाँ चुनने के मेरे संवेगात्मक कारण रहते हैं।

"चल वीणा! बड़ी अम्मा से मिल कर आते हैं।"

नि:शब्द! "अरे लाड़ो काहे परेशान हुई?" ये उनकी आँखें कह रही थीं।

बड़ी अम्माँ अपने ही हाथों की कढी चादर बिछाये और बड़ी पुरानी-सी अपने हाथ की गोठ लगी दोहर ओढ़े... जैसे अतीत को ओढ़ बिछा रही हों....!

गोरे माथे पर बडी-सी बिंदी, बडे-बडे बालों का करीने से बनाया ढीला-सा जूड़ा...! कोटा चैक की कॉटन साड़ी और करुणा भरे मन और उदार-हृदय के तेज से दिपदिपाता मुख-मंडल! सेठानी सी मेरी बड़ी अम्मा, आज एक सादी सी सूती मैक्सी पहने, बेतरतीब कटे हुये बाल, काँपते से झुर्रियों वाले हाथ ....

मैं तो सिटपिटायी-सी, आँखें छलक न जाएँ बस!

"दरअसल दीदी! साड़ी पैर में उलझने से गिर गयीँ, तो ये मैक्सी पहनायी, सारे दिन एक दाना भी न लिया मुँह में!"

"परकटे पखेरू-सी ... मैक्सी से अपने बेतरतीब कटे बालों को छिपाने को तरस रही हैं। वक्त से समझौता करना ज़हर पीने के समान है।"

भाभी ने सफाई दी। "अरे दीदी! न जाने कैसे इनके सिर में जूँ हो गयीं तो बाल छोटे करने पड़े..."

हाय! नफासत पसंद बड़ी अम्मा ने घर में जगह-जगह बड़े-बड़े आइने क्यों लगवाये?

ग़ज़ब का चुम्बकीय आकर्षण रखने वाली अम्मा आज सहमी बैठी हैं! ऐसे राहगीर-सी, जिसे मंज़िल का बड़ी बेकरारी से इंतज़ार है।

काठ हो गया मन! तभी मैंने फ़ोन पर मैसेज देखने का बहाना किया और कहा,"ओह भाभी! निकलना पड़ेगा, ऋचा को चोट लगी है।"

मंजु भाभी का मन हल्का हो गया और मैं? मैं तो अपने आने को कोस रही थी।

तभी बड़ी अम्मा ने अपना तकिया उठाया, उसके नीचे अम्मा के हाथ का सिला जरी का बटुआ था, बड़ी अम्मा ने मुड़े-तुड़े से सौ-सौ के दो नोट निकाले, हम दोनों को दिये और एक-एक स्कार्फ़ भी दिया, अपने हाथ का बुना हुआ; पर कहा कुछ नहीं.. शायद गले की भाप ने शब्दों को रोक लिया हो... शायद 'मौन' वरदान लगा हो।

बाजरे की रोटी

अंजू अग्रवाल 'लखनवी'
अजमेर, राजस्थान, भारत

"सुनो! आज ठंड काफी है। नाश्ते मे बाजरे की रोटी गुड़ बना लूँ क्या?" शलभा ने किचन से आवाज लगाते हुए पूछा।

"नहीं!"

मेरे कुछ बोलने से पहले ही सुजय अपने रूम से चिल्लाया।

"क्या माँ! छुट्टी के दिन बोर मत करो। आज तो कुछ अच्छा बना लो जैसे पिज्जा या पास्ता।"

"अच्छा! पेपर पढ़ा है आज का?" शलभा ने बालों का जूड़ा बनाते हुए कहा,"चिकन पिज्जा और चीज़ की दोगुनी खपत से अमेरिका का भूजल स्तर कितना घट गया है!"

"उफ्फ माँ! अब अमेरिका के भूजल स्तर का भारत के अदना से शहर मे बैठे मुझ जैसे अदना इंसान का क्या लेना-देना! तुम भी माँ, बात को कहाँ से कहाँ ले जाती हो।"

"अरे! आज जो अमेरिका में हो रहा है कल भारत में होगा! इसी चीज पिज्जा की मांग के चलते 1980 के दशक से लेकर अब तक चिकन और चीज की खपत दोगुनी हो जाने के कारण गौशाला और चिकन फार्मिंग जैसे उद्योग विकसित हो रहे है जिसमे पानी का दोहन बहुत बढ़ गया है साथ ही अनाज की जगह पशुओं का चारा उगाया जा रहा है जिससे भूजल स्तर भी लगातार गिर रहा है। आज जो अमेरिका मे हो रहा है, देख लेना कल वही हमारे यहाँ भी होगा।"

"अरे वाह, माँ! तुम तो बड़ी समझदार हो गई हो।"

अब तक ध्यान से सुनते सुजय ने प्रशंसात्मक टिप्पणी की।

"और नहीं तो क्या! सुबह चाय के साथ पूरा अखबार जो एक साँस मे चट कर जाती है तेरी माँ, अरे तेरी माँ है ये, धरती माँ की पक्की दोस्त।" मैने भी चुटकी ली।

"बात खरी है पापा! हमे भविष्य के इन खतरों से बचने के लिए आज ही सुधरना होगा। मैं अपने दोस्तों को भी समझाऊंगा।"

"तो बाजरे की रोटी बना रही हूँ! पक्का ना," कहकर हँसती हुई शलभा रसोई की और चल दी।

बारिश और धूप

नमिता सिंह 'आराधना'
अहमदाबाद, भारत

एक हफ्ते पहले ही वह सामने वाले फ्लैट में आया था। वह भी इस महानगर में अकेली ही रह रही थी।

ऑफिस जाते समय एक बार दोनों की नजरें चार हुईं और युवती का दिल धड़क उठा। अच्छे-खासे डील-डौल वाला आकर्षक युवक था वह। जान-पहचान बढ़ने लगी। एक-दूसरे के फ्लैट में आना-जाना होने लगा।

प्रेम के बादल छाने लगे और फिर एक रात घनघोर बारिश हुई। उस बारिश में दोनों रात भर भीगते रहे। फिर तो अक्सर रातों को बारिशें होने लगीं, जिसमें भीग कर युवती सुबह निखर जाती। जिंदगी खुशनुमा लगने लगी थी।

बारिश के बाद ही धरती की कोख से हरित पुत्रों का जन्म होता है। वैसे ही एक रोज युवती को अपने भीतर बीज के अंकुरण का अहसास हुआ।

उसने युवक को बताया। उस रात से बारिश बंद हो गई। बादल छँट चुके थे। सामने वाला फ्लैट भी रातों रात खाली हो गया।

अब युवती के सिर पर प्रखर धूप थी, जिसका सामना उसे अकेले ही करना था।

बिना पते का ख़त
राजरानी शर्मा
ग्वालियर, म.प्र., भारत

ख़त लिखा है; पर चाहती हूँ, कभी न पहुँचे। पहुँच गया तो फिर क्या बात बचेगी ....!

मेरा सरमाया मेरा ख़ज़ाना चला जायेगा ...!

मन को चौराहे पसंद नहीं ... दोराहे पसंद हैं ...! जहाँ एक राह चुनने की तसल्ली होती है ...! चुपके से मुड़ जाओ!

उस दिन अचानक तुम्हें देखा और नज़रें झुका लीं! ऐसी अनजानी सी हो गई कि नहीं तुम्हें देखा ही नहीं है मैने! इतने लोगों की भीड़ में बैठे तुम्हें आराम से अनदेखा किया जा सकता था! बहुत सारे रिश्तेदार आये थे शादी में। मन बाबरा है न! बरसों से जिसकी एक झलक भर देख लेने को तरस रहा मन उसी के सामने आने पर यूँ पलट जायेगा, मुझे मन की इस हरकत पर खुद भी विश्वास नहीं आ रहा। कनखियों से तुम्हें देखा था ... तुम खड़े भी हुए अचानक इस उम्मीद में कि मैं तुम्हारे पास ज़रूर आऊँगी ... ऐसा हो ही नहीं सकता तुम जो मुझसे ही मिलने आये थे कि देखें कैसी लगती हूँ आजकल! तुमसे मिले कोई पन्द्रह बरस हो गये होंगे! मेरे मन में भी उतनी ही चाहत रही होगी कि तुम्हारा हाल जान लूँ! ऐसा मैंने सोचा तो तुमने भी सोचा ही होगा, इसीलिये आये पत्नी को लेकर ताकि कोई समझे सामान्य व्यवहार के लिये आये हो!

पर पता है? तुम्हारी ओर बढ़ने के पहले पैर ऐसे जकड़ गये कि क्या बताऊँ ... मन असमंजस को पार न कर पाया। एक सरसरी सी निगाह डाली थी; हमेशा की तरह उस दिन भी बहुत अच्छे लग रहे थे ... स्मार्ट! पर नहीं मिल सकी तो नहीं ही मिल सकी तुमसे ..! ये जानते हुए भी कि अब फिर बरसों नहीं मिलना होगा!

पर क्यूँ आज भी तुम्हारा खाने की मेज़ से झटके से खड़ा होना नहीं उतरता मन से! मन में तीस हज़ार बार वो दृश्य दोहराया है ... बार बार परतें भीग गयी हैं मन की!

कोई रिश्ता तो नहीं बस अनाम आकर्षण का रिश्ता ही तो है! क्यूँ खड़े हो गये तुम इतनी ललक से ... इतना अनुराग भर कर भाव में? क्यूँ मैं नहीं मिली? मिल लेती तो अनर्थ नहीं होता, न मिली तो अनर्थ नहीं हुआ; पर इस मन का क्या करूँ? काश! ये उस वीडियो को अपने अल्बम से डिलीट कर दे!

बस रोज़ तुम मेज़ से झटके से खड़े होते हो ... रोज़ मेरे वहाँ तक न पहुँच पाने पर बैठ जाते हो ... रोज!

ये बात ऐसे ही किसी ख़त में लिख कर रख देना चाहती हूँ जो तुम तक कभी न पहुँचे कि मैं आज भी बस उस वीडियो को बार बार चलता देखती हूँ!

पाकीज़गी की ये इंतिहा है! बिना पते का...

बिना विचारे जो करे

जयंती प्रसाद नौटियाल

देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

रमन एक गरीब छात्र था। उसने विधि परीक्षा पूरे विश्वविद्यालय मे अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा के लिए भी उसे छात्रवृत्ति की जरूरत थी; लेकिन सामान्य वर्ग में छात्रवृत्ति की संभावना नहीं थी, केवल अनुसूचित जाति के लिए एक स्थान खाली था। उसकी जाति का नाम अनुसूचित जातियों से मिलता जुलता था। उसने झूठा जाति प्रमाणपत्र बनवाकर अनुसूचित जाति के कोटे से एल.एल.एम. में प्रवेश ले लिया। इस आधार पर उसको छात्रवृत्ति भी मिलने लगी।

रमन एक अच्छा वक्ता भी था इसलिए छात्र संघ के चुनाव में वह अध्यक्ष पद पर चुन लिया गया। जवानी के जोश में अब उसे लगा की वह बहुत बड़ा नेता बन गया है। एक दिन उसकी क्लास की दलित छात्रा ने रमन से शिकायत की कि कालेज ने उसकी छात्रवृत्ति अस्वीकार कर दी है। रमन उसको साथ लेकर सीधे ही कुलपति के पास पहुँच गया।

कुलपति महोदय ने कहा कि इस आवेदन को कार्यालय के माध्यम से आना चाहिए। इस पर रमन ने कहा,"आपका कार्यालय इस मामले को नामंज़ूर कर चुका है। इसलिए ही इस छात्रा के साथ मैं खुद आया हूँ।" कुलपति महोदय ने कहा,"जब कार्यालय ने अस्वीकृत कर दिया है तो मैं कैसे स्वीकृत कर सकता हूँ।" इस पर रमन ने कहा,"आप अपने विवेकाधिकार का प्रयोग करते हुए इसे स्वीकृत कर सकते हैं।" कुलपति महोदय ने कहा,"ठीक है इसे कार्यालय में दे दो, मै उनकी राय जानने के बाद निर्णय ले लूँगा।" रमन जिद पर अड़ गया कि आपको आज ही इस पर हस्ताक्षर करने होंगे। इस पर कुलपति महोदय को क्रोध आ गया। उन्होंने रमन से कहा,"अपनी सीमा में रहो, आप मुझे निर्देश नहीं दे सकते हो।"

रमन की छात्रा के सामने बेइज्जती हो गई थी। ग्लानि से भरा रमन सीधे ही समाचार पत्र के कार्यालय में गया और उनसे कहा,"कुलपति महोदय ने एक दलित होने के नाते मेरा अपमान किया और मुझे अपमानित एवं प्रताड़ित किया।"

दलितों से जुड़ा मामला होने के कारण यह समाचार बड़ी सुर्खियों में छपा, पुलिस ने कुलपति महोदय को गिरफ्तार कर लिया, न्यायालय ने उन्हें जेल भेज दिया। नेताओं ने इस पर खूब राजनीति की, पुलिस ने रमन की जाति की खोज की और उन्हें नकली जाति प्रमाण पत्र का पता चल गया। जैसे ही रमन को इसका पता लगा उसने जेल जाने के डर से आत्महत्या कर ली।

बुद्धि का फ़र्क

रेखा भाटिया
शार्लिट, नॉर्थ कैरोलाइना, यू.एस.ए.

आज स्कूल की छुट्टी थी। चार साल का आदित्य घर के आँगन में खेल रहा था। आँगन के बड़े से लोहे के गेट पर आदतन भानु भिखारी आ गया और ऊँची आवाज़ देकर भीख माँगने लगा,"राम के नाम पर दे दे बाबा! राम के नाम पर दे दे बाबा! ओ माई सुनती हो?" आदित्य अभी भी खेलने में व्यस्त था। भानु भिखारी ने अपनी आवाज़ और ऊँची कर दी और ज़ोर-ज़ोर से वही वाक्य दोहरा कर भीख माँगने लगा। थोड़ी देर में आदित्य का ध्यान गया। वह गेट के पास आ गया।

भानु भिखारी—"जा बेटा! माँ से बोल, राम के नाम पर ग़रीब को कुछ दे दे।"

आदित्य ने कुछ सोच कर ज़वाब दिया,"कल आना भैया! राम चाचा तो आज दुकान पर गए हैं।"

भिखारी को हँसी आ गई,"बेटा! हम राम भगवान की बात कर रहे हैं। तुम्हारे चाचा की नहीं।"

आदित्य तपाक से बोल पड़ा,"बोला न भैया कल आना। भगवान भी आज दुकान गए हैं।"

अनभिज्ञ भानु भिखारी अब अपना सिर खुजाने लगा, जिसे पता नहीं था कि आदित्य के दादाजी का नाम है 'भगवान दास'।

बेटी

सरिता श्रीवास्तव

जोधपुर, भारत

बात उस समय की है, जब मैं अपने किसी रिश्तेदार के साथ हॉस्पिटल गई थी। उनकी बहू को बेबी होने वाला था। थोड़ी देर बाद मैने देखा एक संभ्रांत, संपन्न व सुशिक्षित परिवार के लोग अपनी बहू को लेकर अस्पताल में आए। उनकी बहू भी गर्भवती थी, उसकी भी डिलीवरी होने वाली थी, सब बहुत प्रसन्न नजर आ रहे थे। थोड़ी देर बाद बहू को तकलीफ हुई तो डॉक्टर उसे ऑपरेशन थिएटर में ले गए।

मुझे नींद आ रही थी, मैं सो गई। किसी के रुदन करने पर मेरी नींद खुली, मैंने देखा कि पूरा परिवार रो रहा है, जैसे कोई अनहोनी हो गई हो। सासू माँ तो बहुत जोर-जोर से रो रही थीं। बहुत गमगीन माहौल था। किसी अनिष्ट की आशंका से मेरा हृदय काँप गया। बहू अभी ऑपरेशन थिएटर से आई नहीं थी। इतने में एक नर्स आई, मैंने पूछा कि क्या हुआ, बच्चा तो ठीक है? वो हँस कर बोली - बेटी हुई है…!

बेबस लगाम

रेनू सक्सेना
मुंबई, भारत

रोटी को पानी से गीला कर उस पर बुकनू छिड़का। किसी तरह गले से निगलने का प्रयास करती सुनैना ने एक बार फिर भगवान को याद किया,"हे ईश्वर! हम ही रह गई हैं सब झेलना का, उम्र दिए हो तो पेट भरन को भी तो देओ। कैसन परमपिता हो, अपने ही बच्चन का भूखा रख मजा करत हो।" आखिरी निवाला मुँह में ही था कि ठेकेदार की बात याद कर सुनैना की आँखें चमक उठीं। कल सोमवार है, 1 तारीख! कल तो मुझे पगार मिलने वाली है। इस बार कुछ पैसे जानकी को भी भेजेगी। सावन की सौगात के खातिर। साड़ी, चूनर, बिंदी, चूड़ी, पायल और मिठाई के लिए। बेचारी जानकी कब से मायके नहीं आ पाई थी। सास छह महीने से बिस्तर पर और डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था; पर जानकी थी जो अपनी दिन रात की सेवा और देखभाल से सास को जिलाए रखी थी।

खाना खाते ही सोमवार और पगार के ख्वाब देखते-देखते न जाने कब सुनैना की आँख लग गई। सुबह-सुबह एक दुःखद खबर आ गई कि समधन रानी ने भोर में आखिरी साँस ली; सुनकर सुनैना धम्म से खाट पर बैठ गई। अब तो जाना ही होगा - रस्म पगड़ी, टीका-पटा, मिठाई और कपड़े लेकर। शायद इसी के लिए भगवान ने पिछले हफ्ते ज्यादा काम दिलवाया था। रस्म तो निभानी ही होगी। मायके के नाम पर वो ही तो है, सोचते-सोचते सुनैना जड़ सी हो गई।

रस्म पगड़ी और आत्मा की शांति के लिए तेरहवीं का भोज। पूरी-कचौड़ी, दो सब्जियां, दहीबड़ा, खीर, गुलाबजामुन और शरबत भी। सुनैना को तो खाना देखकर ही भूख महसूस होने लगी थी। कब से पूरी-कचौड़ी, खीर, हलवा देखा भी नहीं था, खाना तो दूर की बात.... बस खा लेने को जी मचल उठा; पर लाज और सभ्यता के नाते उतावलेपन को छिपाने का प्रयास करती रही। जब दामाद जी की मौसी ने दो-तीन बार आग्रह किया तो सुनैना अपने आप को रोक ना सकी। नजर बचाकर पूरी प्लेट में डालते हुए सुनैना सोच रही थी बावले मन खा ले, अब पता नहीं कब भरपेट खाना नसीब होगा। पेट की भूख खाना देखती है, अवसर नहीं। अब तो परिवार में सभी जवान और बाल बच्चे वाले हैं, न ढोलक की थाप, न दावत की आस। और बूढ़ी तो वही बची है, न जाने कब ईश्वर नेवता भेज दे।

सुनैना की पेट की भूख और जबान के स्वाद की बेबस लगाम छूटती जा रही थी।

बेस्ट फ्रेंड्स

अलका गुप्ता
नई दिल्ली, भारत

समय कैसे पंख लगाकर उड़ गया। मेरी गुड़िया अब कालेज जाने लगी थी और अभी कुछ दिन पहले गेट-टूगेदर पार्टी थी उसके कॉलेज में। तब अपनी बिट्टो के लिए कितना सुंदर सूट लाई थी मैं! जब वह पार्टी के लिए तैयार हो रही थी, तब मेरी नज़र बेटी से हट ही नहीं रही थी… और सोचने लगी, बेटियाँ कितनी जल्दी बड़ी हो जाती हैं! आज तो बिटिया की नजर उतारनी पड़ेगी। लेकिन बिटिया जब कॉलेज से लौटी तो बहुत अपसेट थी। मैंने कारण पूछा तो उसकी आँखें भीग गईं, रुँधे गले से उसने बताया कि सब फ्रेंड्स उसे 'बहन जी' कह रहे थे; क्योंकि पार्टी में सभी स्टूडेंट्स ने मॉडर्न कपड़े (गाउन, जंपसूट, मिनि स्कर्ट, वगैरा-वगैरा) पहने हुए थे। पल भर में, मेरी नजरों के सामने सारा दृश्य चित्रित हो गया। "अरे! मेरी टॉपर, परी सी बिटिया, किसी के कुछ भी कहने से, ऐसे रोएगी?" बेटी को गले लगाते हुए मैंने दुलार किया।

"और फिर जिसके जैसे संस्कार वैसे उसके बोल, हमें..." तभी बिटिया मेरी पूरी बात सुने बिना ही, मुझे ख़ुद से अलग कर, वॉशबेसिन पर मुँह धोती हुई बोली,"लेकिन माँ हमें भी 'लकीर का फकीर' नहीं बनना चाहिए। 'जैसा देश वैसा भेष' वाली बात पर भी अमल करना चाहिए। ये अलीगढ़ थोड़े ही है मम्मा; दिल्ली है। सूट क्यों लाए आप पार्टी के लिए?" कहते हुए अपने कमरे में जाकर, दरवाजा बन्द कर लिया। जब राकेश ऑफिस से आए तो मैंने उन्हें सब बताया।

आज जो कुछ भी हुआ उससे दिल, दिमाग में मची उथल-पुथल को भाँपते हुए, राकेश मेरे पास आ बैठे और मेरे हाथों को थामते हुए कहने लगे,"इस बदलाव की बयार के रुख़ को पहचानो अनु! इसके साथ बहने में हम दोनों को अपने बच्चों का साथ देना चाहिए।"

"क्या साथ देना चाहिए, इतना सुन्दर सूट...!" आगे के शब्द आँसू बन चेहरे को भिगो गए थे।

"यही तो समझना होगा डीयर," मेरी लाल-लाल नम आँखों में झाँकते हुए राकेश बोले।

"यदि हमनें साथ नहीं दिया तो वे ख़ुद ही इस बदलते दौर के साथ हो लेंगे; लेकिन फ़िर उसमें रिस्क होगा। जनरेशन-गैप का खतरा भी बढ़ जाता है। इसीलिए यदि बच्चों को अपने घर में ही माता-पिता के रूप में बेस्ट फ्रेंड्स मिल जाएँ तो फिर क्या बात है!"

फिर दूसरे दिन, हमारी सवारी मॉडर्न लेकिन डीसेंट-सी शॉपिंग के लिए निकल पड़ी।

बैकवर्ड इंडिया

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

“लेडिज़ एण्ड जेन्टलमन! अब कुछ ही देर में हमारा विमान न्यूयॉर्क के जे.एफ.के. इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लैंड होनेवाला है। कृपया अपनी कुर्सी की पेटी बाँध लें।” भोपाल यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग करने के बाद सतीश और मैं एयर इंडिया फ्लाइट 224 से कंप्यूटर साइंस में M.S. करने कोलम्बिया यूनिवर्सिटी जा रहे थे।

सतीश से मेरा परिचय चार वर्ष पहले कॉलेज में पहली बार हुआ। वह एक गरीब घर से आया था। चूँकि बोर्ड में उसके अंक अच्छे थे, उसे भारत सरकार से मेरिट स्कालरशिप मिल गई। यदि स्कालरशिप न मिली होती तो वह शायद कॉलेज पढ़ने नहीं आ पाता। हम दोनों में काफी भिन्नता होने के वाबजूद आपस में शीघ्र घनिष्ठ मित्रता हो गई। अक्सर वह मुझे पढ़ाई में मदद करता, मैं उसे इधर-उधर मौज-मस्ती के लिए ले जाता। देशभक्ति का बड़ा जज़्बा था उसमें, अक्सर देशभक्ति के गीत लिखता और हम मित्रों को सुनाता।

मैं पहले भी कई बार हवाई जहाज से यात्रा कर चुका हूँ। गर्मियों की छुट्टी में पिताजी हमें अक्सर विदेश ले जाया करते। सतीश गाँव जाकर अपने पिता की खेती-बाड़ी में सहायता करता। राज्य सरकार खाद-बीज आदि में गरीब किसानों को मदद करती जिसका लाभ सतीश के परिवार को भी मिलता। कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में हम दोनों को दाखिला मिल गया, सतीश को तो फुल स्कालरशिप के साथ!

विमान लैंड हो गया, इमिग्रेशन के बाद हमने अपनी सूटकेस एकत्रित की। कस्टम से बाहर निकलते ही हम न्यूयॉर्क का भव्य एयरपोर्ट देख रहे थे। चारों तरफ सजावट ही सजावट, रंग-बिरंगी रोशनी, तरह-तरह के गुब्बारे, गोरी-गोरी लड़कियाँ और स्वच्छता ऐसी कि ढूँढने से भी धूल-मिट्टी का एक कण भी न दिखाई दे। इस मनमोहक दृश्य को देख कोई भी अवाक हो सकता है, हमारी भी वही दशा थी।

नई भूमि पर कदम रखते ही सतीश चिल्ला उठा,“वाव! दिस इज़ हेवन। आइ अम नेवर गोइंग बैक टू दैट बैकवर्ड इंडिया।”

भविष्यवाणी

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

राजू गरीब घर का दस वर्षीय बालक है। वह सरकारी स्कूल में पाँचवी कक्षा में पढ़ रहा है और क्लास में हर साल अव्वल आता रहा है। पिता कालूराम फल का ठेला लगाते हैं, आस-पास की कॉलोनियों में घर-घर जाकर बेचते हैं। घर में राजू की माँ, दादा जी और दो छोटे भाई-बहिन भी हैं। कठोर परिश्रम के बाद भी दो वक्त की रोटी मुश्किल से निकल पाती है।

एक दिन पिता कालूराम ठेला लेकर निकला तो उसने देखा कि एक बंगले के आगे कई कारें खड़ी हैं। उत्सुकतावश घर की सेठानी से पूछा आज इतनी भीड़-भाड़ कैसे? पता लगा कोई बड़े ज्योतिषाचार्य आए हुए हैं, सटीक भविष्यवाणी के लिए उनका बड़ा नाम है। आज उनके घर कई मित्र ज्योतिष महाराज से अपना भविष्य जानने आए हैं। कालूराम ने डरते-डरते सेठानी से पूछा कि क्या वह अपने बेटे राजू को उसका भविष्य जानने ला सकता है, किन्तु दो-चार फल के अलावा फीस या दक्षिणा देने का उसका सामर्थ्य नहीं है। सेठानी दयालु स्वभाव की थीं, उन्होंने हाँ कह दी।

शाम को कालूराम बेटे राजू को लेकर ज्योतिष महराज के पास पहुँच गया। तब तक सेठानी महाराज जी को राजू और कालूराम के बारे में बता चुकी थी।

"महाराज! मैं बड़ा गरीब हूँ, बड़ी मुश्किल से मेरा परिवार चलता है। यह मेरा बड़ा बेटा राजू है। पढ़ने में अच्छा है, हर साल अव्वल आता है। कृपया बताएँ, इसका भविष्य कैसा है? पढ़-लिखकर एक दिन बड़ा आदमी बनेगा न यह?"

महाराज ने पहले राजू का हाथ देखा, फिर जन्मपत्री देखी।

"बेटा! हालाँकि तुम्हारा बेटा पढ़ाई-लिखाई में अच्छा है, पर हाईस्कूल से आगे इसके भाग्य में पढ़ाई नहीं है। बेहतर है इसे अपने साथ ठेले पर लगा लो, दो पैसे कमाएगा तो तुम्हारे काम ही आएँगे"

कालूराम बड़े हताश मन से घर लौट लाया; किन्तु उसने राजू को स्कूल से नहीं निकाला।

आज राजू – डॉ. राजेन्द्रप्रसाद वर्मा के नाम से जाने जाते हैं। वे आई.आई.टी. राजकोट के निदेशक हैं।

भिखारी

पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'
जयपुर, भारत

सेठ चमन लाल के यहाँ आज बड़ी रौनक थी। अलग-अलग शहरों से संबंधी आए थे। कुछ रिश्तेदार तो विदेश से भी आए थे। अवसर था, सेठ जी की एक और कम्पनी के उद्घाटन का। पंडित जी ने शुभ मुहूर्त निकाला था। समय से घर पर पूरे विधि-विधान से पूजा-अर्चना सम्पन्न हुई। मांगलिक यज्ञ भी पूर्ण हुआ। आरती हुई, बहन-बेटियों ने नज़र उतारी और भेंट पाई।

सेठ जी की कोठी के अहाते में एक से एक चमचमाती कारों का काफिला खड़ा था। कम्पनी जाने के लिए सब लोग इकठ्ठा हुए। तब पंडित जी ने सेठ जी को याद दिलाया - यजमान कम्पनी जाने से पहले मार्ग में मंदिर में दर्शन करके अपने इष्ट का आशीष जरूर लें, इससे काम में बरकत होगी।

सेठ जी की कार ज्यों ही गेट से बाहर निकली कि एक भिखारी सामने आ गया। फटा कंबल ओढ़े बाएँ हाथ में एक कटोरा लिए, बोला - बाबू जी! कुछ दे दो, बड़ी भूख लगी है।

सेठ का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। कहने लगे बड़ा अपशकुन कर दिया। तुम्हें शर्म नहीं आती भीख माँगते हुए, मुस्टंडे हो, कोई काम क्यों नहीं करते।

करता था सेठ जी, किसी सेठ के यहाँ काम ही करता था। मशीन में हाथ फँस गया था तो कटवाना पड़ गया। फिर सेठ ने नौकरी से निकाल दिया तो भीख माँगने को मजबूर हो गया। कहते कहते उसने कंधे से कंबल गिरा दिया। उसका सीधा हाथ ना था।

नाराज़ ना हों तो एक बात कहूँ सेठ जी! लाचार आदमी कोई अपशकुन नहीं होता। आप जायें आराम से जायें, सब मंगल ही होगा, वैसे आप जा कहाँ रहे हैं?

सेठ जी बोले, एक नई कम्पनी खोली है, भगवान से बरकत की दुआ माँगने जा रहा हूँ। अच्छा-अच्छा! तो आप भी भीख ही माँगने जा रहें हैं!- भिखारी बोला।

भुगतान

अंजु दुआ जैमिनी
फरीदाबाद, हरियाणा, भारत

"मिसिज मेहरा! बहुत-बहुत बधाई हो। आखिर पाँच साल बाद नानी बनने ही वाली हैं आप! कनिका ठीक है न? कितने महीने हो गए?" मैंने पूछा।

"न-नहीं ठीक है कनिका। उसका..." और वे हिचकियाँ भर-भर कर रोने लगीं।

"अरे मिसिज मेहरा! रो क्यों रही हैं आप? बेटी पड़ोस में ही तो है, हो आइए उसके पास या उसे ही यहाँ बुला लीजिए। क्या तबीयत ज्यादा खराब है?"

"हाँ, सब खत्म हो गया," अभी भी वे सुबक रही थीं।

"अरे! शांत रहिए। किसी अच्छे डॉक्टर से इलाज करवाइए उसका।"

"उसी को दिखाया है, जिसकी क्लीनिक पर मेरी कनिका हुई थी और मेरा कुन्नू भी वहीं हुआ था।"

"चलो कोई बात नहीं। लड्डू गोपाल अगली बार सब ठीक करेंगे," मैंने ढाँढस बँधाते हुए पुचकारा।

"कभी-कभी सोचती हूँ कि कहीं मेरे कर्मों का फल मेरी बेटी को तो भुगतना नहीं पड़ रहा है। आपसे तो कुछ छिपा नहीं। उस समय मेरी सासू माँ और मेरे पतिदेव को वंश-वारिस चाहिए था सो कनिका के बाद एक कन्या को गर्भ में ही..." वे और जोरों से फफक पड़ी और इस बार मैंने उन्हें रोने दिया।

भूख

शुभदा भार्गव
अजमेर, राजस्थान, भारत

“बेटा रमेश! भूख लगी है, तबीयत खराब हो रही है, दवाई भी लेनी है।”

“…क्या है माँ! इतना शोर मचा रखा है। सुबह आठ बजे तो चाय और दो बिस्किट खाए हैं, अभी बारह ही तो बजे हैं। काम ना धाम, पड़े हुए भी जाने कितनी भूख लगती है, यदि काम करती तो सारे दिन खाती रहतीं।” रमेश और प्रिया यह बड़बड़ाते हुए माँ के पास पहुँच गए और बोले,“अब चुपचाप पड़ी रहो, …हम अपना काम कर रहे हैं। जब खाली होंगे तो खाना-पीना सब मिल जायेगा।” रमेश, प्रिया और पाँच दोस्त मिलकर खाने के डिब्बे बंद कर रहे थे। उन्हें बजरंगगढ़ पर भिखारियों को बाँटते हुए फोटो खिंचवानी थी। चार माह बाद पार्टी की ओर से टिकट जो लेना था।

वे दो बजे घर लौटे तो सोशल मीडिया पर बहुत वाहवाही मिल रही थी। माँ की खैर-खबर…? माँ की रक्तशर्करा नीचे चली गई…और सदा के लिए भूख बंद हो गई।

भेड़िया

अलका प्रमोद

लखनऊ, भारत

स्कूल की छुट्टी होने वाली थी, रीना ने अपनी कक्षा के बच्चों से पूछा,"बच्चों तुम लोगों का छुट्टी में क्या प्लान है, कौन कहाँ जा रहा है?"

ऋचा ने हाथ उठा कर उत्साह से कहा,"मैम हम लोग कश्मीर घूमने जाएँगे।"

ऋषभ बोला,"मेरे पापा ने क्रिकेट की कोचिंग में मेरा नाम लिखवा दिया है, मैं क्रिकेट खेलना सीखूँगा।"

सुयश बोला,"मैं अपने मामा के घर जाऊँगा।"

सभी बच्चे अपनी-अपनी छुट्टियों की योजना बता रहे थे। रीना का ध्यान टिया की ओर गया। वह चुपचाप बैठी थी। जबसे रीना को ज्ञात हुआ कि टिया की मम्मी नहीं हैं, उसे अपना बिन माँ का बचपन याद गया। इसीलिए टिया से रीना का एक आत्मीय-सा रिश्ता जुड़ गया है। प्रायः वह टिया से कक्षा के बाद भी बात करती रहती है। रीना जानती है कि छुट्टियों में टिया की मौसी उसे अपने पास इंदौर ले जाती हैं और टिया आतुरता से प्रतीक्षा करती है, मौसी के पास जाने के लिए। रीना ने टिया से पूछा,"टिया तुम तो अपनी मौसी के पास जाओगी ना?"

टिया तुरंत बोली,"नहीं मुझे मौसी के पास नहीं जाना।"

रीना को बहुत आश्चर्य हुआ उन्होंने कहा,"पर तुमको तो मौसी के घर बहुत मज़ा आता है, तुम्हारे मौसा जी तुमको बहुत घुमाते हैं, चॉकलेट दिलाते है।"

सदा शान्त रहने वाली टिया ने अनायास ही बिगड़ कर कहा,"नहीं, मुझे मौसा जी अच्छे नहीं लगते।"

रीना को टिया का व्यवहार अजीब लगा। उसने पूछा,"पर वह तो बहुत अच्छे हैं?"

टिया रोने लगी,"आप सब लोग कहते हैं मौसा जी अच्छे हैं, मौसी भी कहती हैं, वे अच्छे हैं। पापा भी कह रहे हैं कि छुट्टियों में तुमको मौसी के घर जाना है पर मौसा जी बहुत गंदे हैं।"

"पर वे तो तुमको बहुत प्यार करते हैं।"

"मुझे उनका प्यार अच्छा नहीं लगता, मुझे मौसा जी से प्यार नहीं करवाना, मुझे उनके घर नहीं जाना," कहते-कहते टिया फफक-फफक कर रो पड़ी।

टिया के आँसुओं ने रीना को बहुत कुछ समझा दिया था उसने टिया को एक नन्हें खरगोश के समान अपनी बाहों में समेट लिया,"तुम्हारा मन नहीं है तो मैं तुम्हारे पापा से बात करूँगी, तुमको कोई कहीं नहीं भेजेगा।"

रीना ने मन ही मन तय किया कि वह टिया को किसी भी हालत में उस भेड़िया मौसा की मांद में नहीं जाने देगी।

मछेरे! बाँधो न जाल

दीप्ति मिश्रा
वापी, गुजरात, भारत

केरल का मनोहारी समुद्र तट और आसपास बसी मछेरों की बस्तियाँ, जहाँ रोज का संघर्ष। सुबह से अपने-अपने जाल समेट समुद्र में दूर-दूर तक मछलियाँ पकड़ने निकल जाना, यही जीवन यापन का एकमात्र साधन है।

मणिरत्नम मछेरे की पत्नी ने खाने का डिब्बा पकड़ाते हुए कहा,"लगता है आज तूफ़ान आएगा, ज्यादा दूर न जाना, जल्दी लौट आना घर।"

"हूँ! कुछ भी बकती है तू, मैं तो सागर की रग-रग से वाकिफ़ हूँ, मुझे नहीं पता क्या, अच्छा! चलता हूँ," कहकर कंधे पर जाल लाद मणिरत्नम चल दिया।

समुद्रतट पर जाकर अपनी नाव खोल कर बहाव में डाल दी और गुनगुनाते हुए नाव खेने लगा। काफ़ी दूर पहुँच कर नाव रोकी और जाल खोलकर समुद्र में बिछाने को तत्पर हो गया; पर समुद्री हवा का ऐसा तेज झोंका आया कि वह ख़ुद भी उसी जाल में फँस गया। अपने को जाल से मुक्त करने की प्राणपण की चेष्टा में आज वह जाल में छटपटाती मछलियों की वेदना और विवशता को गहराई से अनुभव कर रहा था।

मजदूर दिवस

मीरा सिंह 'मीरा'

डुमराँव, बिहार, भारत

मुझ पर नज़रें पड़ते ही मेरा दूधवाला चौंकते हुए पूछ बैठा,"मैडम जी! आज स्कूल नहीं गयीं क्या?"

"आज छुट्टी है ना।"

"छुट्टी? कौन सी छुट्टी? आज क्या है मैडम जी?"

"मजदूर दिवस है भाई।"

"का? मजदूर दिवस? यह क्या होता है?" उसकी आँखें आश्चर्य से फैल गई। हाव-भाव से मुझे यकीन हो गया कि वह सच में मजदूर दिवस के बारे में कुछ नहीं जानता। मैं समझाने की नीयत से बोल पड़ी,"मजदूर और श्रमिक हमारे समाज के अभिन्न हिस्से हैं। उनको सम्मान देने के लिए हर साल एक मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। आज के दिन जगह-जगह कई कार्यक्रम आयोजित होते हैं। मजदूर और उनके आश्रितों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा पर ध्यान देना हर सरकार की प्राथमिकता होती है।"

"यह तो अच्छी नौटंकी है मैडम जी। यह सब करने से फायदा? आज तक मुझे पता ही नहीं था, गरीब मजदूरों के लिए भी इज़्ज़त का कोई दिन होता है?" उसके चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कान थी। कुछ सोचते हुए पुनः कहने लगा,"खेत, खलिहान और भट्ठा पर जो मजदूर काम कर रहे हैं, आज मैं उनसे ज़रूर जाकर पूछूँगा इस दिन के बारे में? हरामखोर, मुफ्तखोर, कामचोर समझे जाने वालो में से किसको-किसको आज सम्मान और पुरस्कार मिला है? दिन भर खटने के बाद भी मजदूरी तो देते नहीं मैडम जी, सम्मान देंगे? सब ढकोसला है," बुदबुदाते हुए उसके चेहरे पर कड़वाहट उभर आई। मेरे कुछ कहने के पहले ही प्रणाम कह अपना मोपेड आगे बढ़ा दिया; पर उसकी व्यंग्य भरी मुस्कान मेरी आँखों में ठहर सी गई।

मदद

रजनी प्रभा

मुजफ्फरपुर, भारत

रामू की माँ रामू से कहती है,"बेटा! आज ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की गंगा दशमी तिथि है। मुझे गंगा स्नान करा दे तो बड़ा उपकार होगा। मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। मैं मुक्त हो जाऊँगी। तूने मेरे लिए बहुत किया है। ले चल बेटा!"

रामू आज्ञाकारी पुत्र था। वह अपनी माँ को ले गंगा स्नान को चल देता है। वहाँ भव्य मेले और यज्ञ का आयोजन किया गया है। मंत्री, विधायक सहित सभी बड़े पदाधिकारी वहाँ मंचन कर रहे हैं। पर्यावरण पर किए गए अपने-अपने कार्यों की सभी बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुति दे रहे हैं।

तभी भीड़ के पीछे बैठी एक महिला जोर-जोर से रोने लगी। उस महिला के कानों में कुंडल की जगह जाले लटके थे। टीके की जगह पत्तों ने ले रखी थी। कमरबंध को लताओं ने घेर रखा था। हाथों में पुआल ही पुआल था। पूरा बदन कीचड़ से सना पड़ा था। सिर के लंबे घने बालों पर छिलकों का राज था।

रामू ने पूछा,"आपकी ऐसी दशा कैसे? क्या आपके बच्चे नहीं? कोई परिवार नहीं?" महिला ने रुआँसी आवाज में कहा,"नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं। बहुत से बच्चे हैं मेरे। कुछ उच्चपदाधिकारी हैं, तो कुछ सामान्य जीवन जी रहे हैं। भरा-पूरा परिवार है मेरा; पर उन्होंने ही तो मेरी ऐसी स्थिति कर रखी है।"

भीड़ में से किसी ने कहा,"वे आपको कुछ देते नहीं? आपका ख़याल नहीं रखते?" महिला ने कहा,"देते हैं न," कहने के साथ ही एक पोटली खोली, जिसमें प्लास्टिक की थैलियाँ, दवाइयों की शीशियाँ, कुछ फटे-पुराने कपड़े, जूते-चप्पलों के साथ-साथ वह तमाम अवशिष्ट पदार्थ शामिल थे, जो घर-कारखानों में इस्तेमाल होते हैं। महिला ने कहा,"ख़याल रखते, तो यही सब देते मुझे?"

रामू का मन उन कचरों को देख भिन्नाने लगा। उसने तुनक कर कहा,"कितने निर्लज्ज और नीच बच्चों का परिवार है आपका। कोई अपनी माँ को भला इतना गंदा करता है क्या? घोर पाप के भागी बनेंगे वो। समाज को ऐसे लोगों को दंडित करना चाहिए।"

भीड़ में से किसी ने कहा,"हम आप को न्याय दिलायेंगे। बताइए क्या नाम है आपका? कौन हैं आप?" महिला ने भरे गले से कहा,"गंगा, तुम सब की माँ हूँ गंगा। तुम सभी मेरा परिवार हो और मेरी इस अवस्था के लिए जिम्मेदार भी। अब तुम अपनी शपथ भूल तो ना जाओगे। याद रखो, मुझे स्वच्छ और सुंदर बनाओगे तो ही मेरे साथ न्याय हो पाएगा।"

तभी रामू की तंद्रा टूटी। कोई उसे झकझोर रहा था। उसने देखा एक महिला हाथ फैलाए खड़ी कह रही थी,"बेटा! मेरी थोड़ी मदद कर दो।"

मन की संक्रान्ति

राजरानी शर्मा

ग्वालियर, म.प्र., भारत

"प्रणाम माँ! कैसी हो? संक्रांति मना ली?"

माँ की आवाज ही अनोखी आश्वस्ति है न; ...पर आज माँ की आवाज डूबी हुई-सी लगी...। उफ! हम बेटियाँ!...जगह की दूरी मिट भी जाये मगर संस्कारों की विवशता ... वो दूरी है, जो कभी किसी से न मिटायी जा सकेगी और हम बेटियों का जीवन गले में फँसी हिचकी-सा रह जायेगा ....!

"मैं ठीक हूँ, तू सुना क्या कर रही है? हो गया काम? कर लिया संक्रांति का दान धर्म?"

माँ हमेशा बात काट कर मेरी बात पर ले आती हैं, ... ताकि कहीं गलती से कोई अनचाहा प्रसंग न छिड जाए, मैं भाँप न लूँ माँ की आवाज के उतार-चढ़ाव से!

लाख चाहो कि हम कुछ कर दें, माँ-पापा जी के लिये तो इनके सरग-नरक आड़े आ जाते हैं...। "अरी बाबरी भई है तू? अब चौथेपन में बेटिन के पैसों से चलैगौ काम? सब ठीक है बेटा।"

शर्म आती है कि हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं! माँ! जरा भाभी को फोन देना; मुझे बैंक एकाउंट-नंबर दे दो मीना भाभी ...प्लीज ....। मैं ने आजिजी से कहा, माँ ने न जाने कैसे सुन लिया कि फोन काट दिया।" फिर पचासों फ़ोन किये; न उठाया, न उठाने दिया। गले में भाप ही भाप भरी है …मौन संक्रान्ति!

"…अरे! माधव! तू कैसे आ गया बेटा ...! कोरोना में ....!"

"तुम हो तो कैसा कोरोना माँ!" इतनी देर से बेटा बात करते हुए भी मेरा मन टटोल रहा था... अचानक बोला ... "दुखी लग रही हो माँ ... लाओ तुम्हें खुश कर दूँ; मेरा प्रमोशन हो गया ....!"

और मैं जो सुबह से दुःख में डूबी हूँ, सोच रही हूँ जिन्दगी की खिचडी को दान कहाँ किया जाता है; .... जिया जाता है....! माँ बाप के कर्ज को साथ लेके ही मरना होगा.... उतारना तो दूर उतारने की सोच भी न सके, वही हम बेटियों की बेबसी है ..।

"देखो! आज तुम्हारी कितनी बडी पॉलिसी मैच्योर होकर एकाउंट में आई है...!" पतिदेव ने कहा।

और मैं सोच रही हूँ, मेरा एकाउंट तो शून्य ही है! संक्रांति मनी और जिन्दगी की खिचड़ी भी पकी। अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो और बिटिया कीजो तो ऐसी बेबसी न दीजो!

बाप-बेटा चहक रहे हैं और मैं दूर कहीं मन के तहखाने में पड़ी, बर्फ की सिल्लियों के अंबार में दबी ही जा रही हूँ ... ख़ुशियों से दहकना इसी को कहते हैं...! सुख ज़्यादा है या दु:ख? जिन्दगी भी संक्रान्ति-सी, खिचड़ी-सी ही तो है।

मर्द साथ था न...

इन्दु गुप्ता
फरीदाबाद, हरियाणा, भारत

बहू के गर्भ में भ्रूण नया था; पर सबकी सोच पुरानी। वही पिछली बार की कहानी। बहू को अपने पति-गृह में महफ़ूज़ पनाह चाहिये थी, जिसकी एवज में सास को पोता ही चाहिये था और पति को पुत्र ही। सब उधेड़-बुन में थे। जाँच; जिसमें पता चल जाता है कि गर्भ में लड़का है या लड़की; परन्तु लड़की को लड़का नहीं बनाया जा सकता; उसकी हत्या करके हटाना ही पड़ता है। एक तरफ पूर्व-गर्भाधान और प्रसव-पूर्व-निदान-तकनीक-अधिनियम (पीसी-पीएनडीटी-एक्ट) और जन्म से पूर्व शिशु-जाँच पर पाबंदी हेतु लिंग-चयन प्रतिषेध-अधिनियम के अंतर्गत तीन से पाँच साल की कैद और दस से पचास हज़ार जुर्माने की सज़ा का प्रविधान, दूसरा पति सरकारी-नौकर। बड़े जतन से पति ने अग्रिम मोटी-रकम देकर गैरकानूनी सोनोग्राफी का इंतज़ाम तो करवा दिया; परन्तु संग जाने की हिम्मत न जुटा पाया। बारहवें सप्ताह में संध्या-समय सास और बहू लिंग-जाँच के लिए दूर-स्थित उस जाँच-शाला पहुँचीं।

अल्ट्रासोनोग्राफी में रिपोर्ट मनचाही यानि पॉज़ीटिव थी। सास की मुराद पूरी हुई,"अरे बहू मुबारक हो, अब कोई डर नहीं। तू खुशी से बच्चा जन...हमारी वंशबेल बढ़ा।" सास ने आशीष दिया या बहू को या माँ बनने की अनुमति, पता नहीं।

फिर खुशी के नशे से इतर ध्यान आया,"अरे रास्ता सुनसान और लम्बा है। जवान गर्भवती बहू और मैं दोनो अकेले!" सास के मुँह से निकलते ही मास्क से चेहरा ढँके डॉक्टर ने अपनी गौर-भरी बड़ी-बड़ी आँखों से उन्हें देखते हुए कहा,"अरे! तुम दोनों बस अकेली औरतें कहाँ, अब तो निश्चित-रूप से हम एक मर्द भी तुम्हारे साथ भेज रहे हैं, फिर घबराना कैसा?"

"हाँ रे..." मानो सास-बहू उठीं और दोनों ने एकबारगी अपने-अपने हाथ बहू के पेट पर धर दिये। कुछ देर बाद दोनो तनाव-रहित और निर्भय होकर रिक्शा में जा रही थीं... एक मर्द उनके साथ था न...!

मर्यादा

हरिहर झा
मेलबर्न, आस्ट्रेलिया

घर में खुशी का माहौल था। चार बेटों में दूसरे बेटे की शादी पिछले माह हुई थी। हमारे एक पड़ोसी रामलाल भी मित्रों में बैठे हुए थे; पर जाने क्यों वे मन ही मन चिढ़े जा रहे थे कि हमारी बहुएँ बड़ी उच्छृंखल हैं; न लाज न घूँघट। ससुराल में किस तरह रहना चाहिए न तो बहू के माता-पिता ने कुछ सिखलाया है और न ससुराल में यानि मैंने या मेरी धर्मपत्नी ने। वे कुछ बोलें तो मुँहतोड़ उत्तर देने का दिल कर रहा था।

बड़ी देर बाद बोले,“सोहन जी! क्षमा करना, मुझे देख कर आश्चर्य हो रहा है कि आपने बहुओं को मर्यादा नहीं सिखलाई।”

“क्यों? आपको क्या तकलीफ़ है? हमारी बहुएँ पढ़ी-लिखी हैं, समझदार हैं, घर की सदस्य हैं तो क्या उन्हें सोचने का हक नहीं?”

“फिर भी..”

“फिर भी क्या? वे कोई खराब या अपमानजनक बात नहीं करतीं।”

कोई जवाब न होने के कारण वे बोले,“बहुओं को इतनी छूट दे रखी है, देखना, आप किसी दिन पछताएँगे। हम तो बहुओं को सात गज़ लंबी साड़ी में ढँक कर रखते हैं। हमें बिल्कुल पसंद नहीं कि वे अपने बदन की नुमाइश करती फिरें।”

अब मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था,“आपको अनधिकार चेष्टा करने का कोई अधिकार नहीं है। हमारे यहाँ बहुएँ भी बेटी की तरह रहती हैं।”

तभी मेरी छोटी बेटी जो बोलने में बड़ी तेज-तर्रार है, चिहुँक उठी “रहने दो अंकल! मैं भी देखती हूँ। मेरी भाभी मेरे पापा की इज्जत तो करती है। मैंने पापा से पहले ही कह दिया है, मेरा ब्याह ऐसी-वैसी लाज-मर्यादा वाले घर में न करा देना। अंकल! आपकी बहू आपके सामने लम्बा-सा घूँघट निकालती है। कल शाम को भी तो निकाला था और बोल रही थी,“मेरे लिये कोई सोने का हार तो छोड़ो, इस परिवार ने कभी अच्छे कपड़े भी ला कर नहीं दिए। हैसियत नहीं थी तो अपने बेटे को गोदी में क्यों न छुपाए रखा। मेरे गले बाँध देने की क्या जरूरत थी?” मैं तो सुन कर शरम से गड़ी जा रही थी। अगर ऐसी होती है लाज-शर्म तो नहीं चाहिए हमें ऐसी मर्यादा।

माँ

विकास बिश्नोई
हिसार, हरियाणा, भारत

रमेश ने पार्क में एक कुतिया और उसके छोटे-छोटे बच्चों के लिए एक कटोरे में दूध और दो रोटी ला आवाज लगाई,“ए रामा! ओ टीनू-मीनू! कहाँ हो सब?” रामा, टीनू व मीनू कुतिया और उनके बच्चों का नाम रखा हुआ था। रमेश के आवाज लगाते ही सब एक साइड से निकल उसकी तरफ दौड़े चले आए। उसने सभी को दुलारा और दूध रोटी उन्हें खिलाने लगा। टीनू-मीनू ने कुछ दूध पिया ही था कि रामा ने सब रोटी-दूध खा कर खत्म कर दिया। उसके जाने के बाद एक व्यक्ति ओर आया, रामा ने इस बार भी यही किया।

अशोक यह सब देख रहा था। उसका मन बहुत भारी हो गया था। वो सोचने लगा कि देखो कैसा कलियुग आ गया है। माँ ही अपने बेटों को भूखा रख खुद खा-पी रही है। वो दुःखी मन से अपने घर चला गया।

एक घंटे बाद अशोक ऑफिस के लिए निकलने लगा तो उसने देखा कि टीनू-मीनू दोनों अपनी माँ रामा का दूध पी रहें हैं। माँ रामा भी कभी टीनू को चाटती तो कभी मीनू को। उन्हें देखते ही अब शर्मा जी के मन की सारी उलझन हल हो चुकी थी।

वह उनके पास जा उन्हें दुलारने लगा। इस बीच उसकी नजर रामा से मिली तो उसे लगा, मानो रामा कह रही हो “माँ तो बस माँ होती है।”

माँ का प्रसाद

उषा श्रीवास्तव

बेंगलूरु, भारत

"अरे! तो क्या भूखा मरेगा? तू तो देख ही रहा है कि मेरी हालत तो काम करने की नहीं है, कोई उधार भी नहीं दे रहा, इसीलिए माँ के मंदिर के सामने आकर बैठी हूँ कि कम से कम कुछ खाने को तो मिल जाएगा। पिताजी की हालत भी तुम अच्छी तरह जानते हो," विनीता ने करण को समझाते हुए प्रसाद का दोना उसके आगे बढ़ाया।

"पर मैं तो काम कर सकता हूँ ना? भीख में मिला हरगिज नहीं खाऊँगा माँ!"

"माँ! तुम्हीं ने मुझे सिखाया है कि मेहनत की रोटी खानी चाहिए और आज तुम्हीं भीख में मिला खाना मुझे खिलाना चाहती हो?"

"खाले बेटा! 3 दिन से भूखा है, यह तो देवी माँ का प्रसाद है।"

"मैं नहीं खाऊँगा, चाहे जो हो जाए।"

"हाँ, मैं जानती हूँ, तू छोटा है इसलिए तुझे कोई काम नहीं देता। यह तो दुर्गा माता का प्रसाद है, इसे भीख नहीं कहते|"

"बड़ी विडंबना है माँ! आप तो सब जानती हैं, माँ! हम सब भूखे मर रहे हैं। पानी पी कर कितने दिन जियेंगे माँ? इसीलिए आपके दरवाजे पर बैठ गई हूँ।"

"क्यों रो रही है बेटी?" रो-रोकर विनीता ने सारा हाल सुनाया।

"बेटी तुम माँ के दरबार से खाली हाथ नहीं जा सकती। तुम सवेरे-शाम मंदिर की साफ-सफाई करने में मदद कर दिया करो और बेटा छोटे-मोटे काम कर दिया करेगा तो इसके बदले तुम्हें मंदिर की रसोई से प्रतिदिन खाना और ज्यादा तो नहीं, करीब 8000/- महीना मिलेगा, बोलो मंजूर है?"

अंधे को क्या चाहिए, दो आँखें! विनीता और करण खुशी से उछल पड़े और आँखों से कृतज्ञता के आँसू छलक पड़े।

माँ का हौसला

ज्योति जैन
इंदौर, भारत

"मैं फिर कह रहा हूँ... तुम रहने दो... तुमसे ना हो पाएगा," जूते के फीते बाँधती रमा को अनिकेत ने फिर कहा। वे दोनों मैराथन के लिए तैयार हो गए थे।

"पाँच किलोमीटर तो मैं आराम से कर लूँगी," रमा ने कहा।

"हाँ! मगर नन्ही काव्या भी तो..."

"हाँ, तो क्या हुआ? थोड़ा-थोड़ा दोनों ले लेंगे," रमा ने सहजता से कहा।

"अरे मैं तो ले लूँगा .. मगर तुम.."

"मैं कर लूँगी।" रमा ने दृढ़तापूर्वक कहा तो फिर अनिकेत कुछ नहीं बोला।

सुबह 6:00 बजे मैराथन शुरू हुई। शुरू के एक किलोमीटर से भी कम समय में अनिकेत काव्या को लेकर दौड़ते हुए थक गया। तब रमा ने उसे अपनी गोद में सामने झोलीनुमा कुर्सी में लेकर सीने से लगा लिया और धीरे-धीरे दौड़ने लगी। साथ दौड़ने या चलने वाली महिलाएँ उसे चीयरअप करने लगीं यह प्रशंसा और प्रोत्साहन महिलाओं की फितरत में बदलाव की नई इबारत लिख रहे थे। फाइनली फिनिश पॉइंट पर पहुँचे। अनिकेत कुछ शर्मिंदा था,"सॉरी रमा मैं तुम्हें ज्यादा सपोर्ट नहीं कर पाया। पर तुम गजब हो यार..! कैसे आराम से कर लिया। इतना वजन लेकर चलना?"

रमा धीरे से हँस कर बोली,"पहली बात तो इतना सपोर्ट हमेशा करना कि मुझे कभी हतोत्साहित ना करना और जहाँ तक वजन लेकर चलने की बात है तो नौ माह माँ कोख में अपना बच्चा रखकर सारे काम कर सकती है तो यह तो चंद किलोमीटर दौड़ना था बस..!"

माँ की सज़ा

एकता अमित व्यास

गांधीधाम, गुजरात, भारत

अब समीर के पास ढेरों ऐसे ज़रूरी काम थे जो ज़रा भी ज़रूरी नहीं थे।

पढ़ाई के अलावा बहुत सारी ग़ैर ज़रूरी बातें समीर के लिए बेहद ज़रूरी हो गई थीं। घर से बाहर जाने की उसे इतनी जल्दी रहती कि घर का काम करना तो दूर, उसे काम को सुनने का भी वक़्त नही था। कुछ कहने पर वह अनसुना कर बाहर निकल जाता। यदि घर का कोई काम करने को तैयार हो भी जाए, तो कोई गारंटी नहीं कि उसे वह पूरा करके ही लौटेगा। लौटने पर एक ही जुमला - "सॉरी भूल गया!" न सोने का वक़्त न जागने, घर-परिवार के प्रति कोई ज़िम्मेदारी महसूस ही नहीं होती समीर को। समीर की माँ प्रमिला का बहुत मन करता था कि वह पास बैठे, कुछ उनकी सुने, कुछ अपनी सुनाए और माँ होने के नाते उनसे सलाह-मशवरा भी करे; पर वही 'ढाक के तीन पात'! इसलिए अब प्रमिला बेहद अकेला महसूस करने लगी थी।

आज भी समीर देर रात घर वापस आया और सीधा अपने कमरे में चला गया। दरवाज़ा उसने इतनी ज़ोर से बंद किया, जैसे प्रमिला के लिए अपने दिल का रास्ता बंद किया हो।

आधी रात का वक़्त है, माँ की डायरी हाथ लग गई है, वही पढ़ रही है प्रमिला। लिखा है - "बिटिया आज फिर तुम देर से लौटीं। तुम जानती हो, मुझे नींद नहीं आती, जब तक तुम लौट न आओ। तुम आयीं और सीधे अपने कमरे में चली गयीं। दरवाज़ा धड़ाम से बंद कर लिया। लगा, जैसे मेरे मुँह पर ही दे मारा हो दरवाज़ा तुमने। तुम्हारे इस व्यवहार ने मुझे तोड़कर रख दिया, बेहद पीड़ा हुई, अपमानित महसूस किया।"

शब्द अस्पष्ट से थे। शायद उन पर गिरे आँसुओं से धुलकर कागज़ में समा गए होंगे। उन्ही धुँधले अक्षरों पर आज मेरी ताज़ी गरम बूँदें गिरकर जैसे माफ़ी माँग रही थीं; पर आज क्षमा करता कौन? मुझे उस वक़्त अम्मा के साथ अपने किए की सज़ा आज मेरा बेटा मुझे दे रहा था।

माँ के कपड़े

शैली

लखनऊ, भारत

“माँ! तुम ऐसे कपड़ों में बाहर मत आया करो…” बेटे ने आजिज़ी से कहा।

घबरा कर वह जल्दी से अपने कमरे में आ गयी। बच्चों के पिता की एक्सीडेंट में मौत के बाद से वह बेटे बहू के साथ रह रही थी। अचानक मौत ने मोहलत नहीं दी कि, पति उसके बुढ़ापे का कुछ इंतज़ाम कर पाता। मजबूर थी वह।

सोचती रही, कपड़े धुले थे, अपनी शक्ति भर उसने सीधे कर तह किये, तकिये के नीचे रात भर दबा कर रखा था। फिर क्या हो गया? ये कपड़े तो बेटा ही देता है सालों से…।

पहले के सभी कपड़े रंगीन थे। “माँ! अब तुम ऐसे रंगीन कपड़े तो पहन नहीं सकतीं,”कह कर उन्हें बहू और बेटियों ने बाँट लिया था। तब से जो भी पहनती है, बेटा-बहू ही लाते हैं। वह सोचती रही…

माटी की गंध

त्रिलोक सिंह ठकुरेला
हाथरस, उ.प्र., भारत

बादल और नीचे झुक आये थे। अशोक ने एक बार आसमान की ओर देखा और अपने पिता रघुनाथ से कहा,"पिताजी! अब गाँव में रहने की जरूरत भी क्या है? आप मेरे साथ दिल्ली में भी तो रह सकते हो।"

"अशोक! यहाँ खेती करता हूँ तो हाथ पैर चलते रहते हैं। इसीलिए ठीक भी हूँ। शहर में तो बैठे-बैठे सारा शरीर बेकार ही हो जायेगा।"

"क्यों बेकार हो जायेगा? वहाँ पार्क हैं, सुन्दर सड़कें हैं। आप सुबह शाम घूम सकते हो।"

"फिर भी बेटा अपनी धरती की बात अलग होती है।"

"पिताजी! दिल्ली भी तो अपनी ही धरती पर है, वह कोई विदेश में थोड़े ही है।"

रघुनाथ थोड़ी देर चुप रहा। फिर बोला,"बेटा! किसानी से कुछ कमाता हूँ तो तेरी ही मदद करता हूँ न।"

"नहीं, पिताजी। आपके आशीर्वाद से मुझे कोई कमी नहीं है। अब आपको खेती करने की कोई जरूरत नहीं है।"

"अशोक! किसान केवल अपने और अपने परिवार के लिए ही नहीं जीता। अगर किसान अन्न नहीं उगाए तो लोग क्या खायेंगे?"

अशोक ने तर्क दिया,"केवल आपके गाँव छोड़ने से गाँव खाली नहीं होगा, पिताजी। गाँव में और लोग भी हैं किसानी के लिए।"

"अशोक! ऐसा सभी सोचने लगें, तब?"

अशोक ने झुंझलाकर कहा,"पिताजी! आपको वहाँ कोई कमी नहीं अखरेगी।"

तभी बादलों से नन्हीं नन्हीं बूँदें झरने लगीं। धरती की सौंधी गंध हवा में बिखर गयी। सहसा रघुनाथ ने कहा,"इस माटी की गंध दे सकोगे?"

मातृत्व

रेखा शर्मा

बूंदी, राजस्थान, भारत

"दीदी! कैसे निभा पाऊँगी तीन-तीन बच्चों के पिता के साथ इस शादी को। मेरा तो मन बहुत घबरा रहा है।" कस कर मेरा हाथ पकड़े अर्पणा की बेचैनी उसकी काँपती आवाज़ में झलक रही थी। "थोड़ी हिम्मत से काम लो, सब ठीक हो जायेगा। हम सब हैं तुम्हारे साथ, कोई परेशानी होगी तो मिलकर सँभाल लेंगे।" उसकी पसीजती हथेलियों को अपने हाथ से थपथपाते हुए मैंने उसे हौसला देते हुए कहा।

कैंसर से तड़पती बहन की मृत्यु के बाद उसके तीन छोटे-छोटे बच्चों को देख सबके दिल दहल रहे थे। बत्तीस पार कर चुकी शादी की राह देख रही अर्पणा को बड़ी मुश्किल से इस संबंध के लिए राजी कर पाए थे सब लोग। अपनी सुन्दरता पर इतराती अर्पणा की नजरों में कोई ठहरता ही नहीं था। बहनों में सबसे बड़ी, नौकरी कर अच्छा वेतन प्राप्त कर रही थी। घर में सब उसके नखरे उठाते थे। बड़ी सादगी से शादी संपन्न हो गई। मुँह-दिखाई में मिले तीनों बच्चों को सँभाल। हम सब के धड़कते दिलों को शांत करती अर्पणा अपनी गृहस्थी में मगन हो गई। आज दो साल बाद एक समारोह में 'मम्मी-मम्मी' करते बच्चों से घिरी अर्पणा को देख एकबारगी मन थम-सा गया। सुंदर साड़ी, गहनों में सजी लहलहाती भरी-पूरी फसल जैसी अर्पणा ममता की प्रतिमूर्ति नज़र आ रही थी। आत्म-संतुष्टि की अनोखी आभा से उसका चेहरा दमक रहा था। कदम खुद-ब-खुद उसकी ओर बढ़ गए। बच्चों को एक-एक कौर खिलाती उसकी ममत्वपूर्ण स्निग्धता को गौर करते मैने शरारत से पूछा,"क्यों भई! कोई खुशखबरी है क्या?" उसने अचरज से मेरी तरफ देखा, फिर मंतव्य भाँप धीरे से बोली,"दीदी, मैंने तो शादी के चार महीने बाद ही अपना ऑपरेशन करवा लिया था, ये तीनों भी तो मेरे ही बच्चे हैं।" कहते हुए वह बड़ी तल्लीनता से छोटे को आइसक्रीम खिलाने लगी।

मातृशक्ति

प्रतिभा जोशी
अजमेर, राजस्थान, भारत

"सब चुप हो जाओ, देखो चेतन आ रहा है। अगर उसने अपनी बातें सुन लीं तो उसे समझायेगा कौन कि हम क्या बात कर रहे हैं," दूसरी कक्षा में बैठे हुए बच्चे माला के संग आते हुए चेतन को देख खिलखिलाने लगे।

उन्हें हँसता हुआ देख माला इस बार भी समझ गई कि सब बच्चे चेतन की ही बातें कर रहे हैं। वह फिर वही मुस्कान लिए कक्षा में आई, क्योंकि उसे मालूम है कि चेतन का बचपन से कैंसर का इलाज चल रहा है और इन मासूमों को पता नहीं कि जिंदगी की जद्दोजहद में चेतन मानसिक रूप से अभी छोटा ही रह गया है। स्कूल भी उसे छोटी-छोटी रियायतें देकर संभालने की कोशिशें करता रहता है लेकिन बच्चे तो बच्चे ही होते हैं।

चेतन के स्कूल से लौटने तक माला रोज नेट पर सर्च करती रहती कि किस तरह चेतन सामान्य बच्चों की श्रेणी में आये। चेतन के स्कूल से लौटने के बाद दुपहरी ढलते ही दोनों माँ बेटे ईवनिंग कोर्सेस में मशगूल हो जाते और देर रात तक होती माला की अगले दिन की प्लानिंग कि चेतन के लिए क्या और नया करूँ ताकि....।

इस रात भी उसने बड़े शहर के विषय अनुरूप प्रख्यात डॉक्टर खोजना शुरू किया और उन्हीं में एक की विशेष ख्याति जानकर उसका अपॉइंटमेंट भी ले लिया। रात तैयारियाँ कर अगले दिन अलसुबह की फ्लाइट पकड़ वे वहाँ पहुँच गए। पहले से ली अपॉइंटमेंट के बाद भी शाम को नंबर आया तब सोए हुए चेतन को गोद में पकड़े विशाल और माला सारी मेडिकल रिपोर्ट्स लिए डॉक्टर के पास गए।

डॉक्टर ने इत्मीनान से सारी रिपोर्ट्स देख कहा कि आपका बेटा आइंस्टीन सिंड्रोम से ग्रस्त है। विशाल की पेशानी पर तो लकीरें उभर आईं; मगर माला के चेहरे पर असहनीय पीड़ा में भी संतोष नज़र आया।

"धन्यवाद डॉक्टर साहब, आपने यह बीमारी बता दी। बीमारी पता हो तो इलाज सुगम हो जाता है। अब तो मेरे लिए खुशी की बात यह है कि जब एक बीमारी आइंस्टीन बना देती है, तो मेरा बेटा भी कल कोई बड़ा आदमी बन ही जायेगा।" और उनींदे चेतन के सिर पर हाथ फेरते हुए माला की आँखों में आँसू आ गए।

"वेरी गुड। यह माँ होती है। मिस्टर विशाल! तुम निश्चिंत हो कर घर लौट जाओ, क्योंकि तुम्हारे आइंस्टीन के साथ भी उसकी माँ खड़ी है।" मुस्कुराते हुए डॉक्टर ने जरूरी हिदायतों के साथ कुछ दवाइयों के नाम लिख उन्हें पर्चा थमा दिया।

मायका

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

मनी आ गई थी सारे साजो-सामान के साथ, आखिर यह उसका भी तो घर था। हक था उसका, बेटी थी वह घर की। मायके आना तो जरूरत है हर बेटी की; पर अम्मा-बाबा क्या गए, उसे लगता है कि जगह ही नहीं बची थी कहीं अब उसके लिए। सामान कहाँ रखा जाए; यह तक एक बड़ा सवाल था।

कमरों की कमी नहीं थी घर में; पर बड़ी के भरे-पूरे परिवार में खाली कमरों में से एक बच्चों ने पढ़ने का और दूसरा बहू ने पूजा के लिए बना लिया था और छोटी की बेटी आ रही थी, वह भी नौकरानी के साथ, मझली तो वैसे भी महीने भर को अपने हिस्से में ताला लगाकर मायके चली गई थी। निश्चय किया गया कि सामान सीधा होटल ही भेज दिया जाए। सभी को आराम रहेगा।

ठगी-सी मनी चुपचाप जब सब की आँखों से आँख बचाती गाड़ी में बैठ रही थी तो घर का पुराना नौकर धीरे से बोला,"खुद को सँभाल बेटी। एक भी आँसू मत गिरने देना, वरना भाभियों को मौका मिल जाएगा यह कहने का कि मिलने नहीं, लड़ने आई थी ननदी।"

मास्क

अनिता कपूर

फ्रीमॉन्ट, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

"मुझे माफ कर दो, मैं स्वार्थी हो गया था। ज़िन्दगी भर ठीक से कमा नहीं पाया, इसीलिए डर गया था कि अगर तुम लोंगों के साथ हिस्सेदारी की तो मेरे हिस्से इतना भी नही आएगा कि मैं एक झोंपड़ी भी खरीद सकूँ।" भाई की बातें नीना के दिमाग में इतना शोर कर रही थीं कि जिसके सामने एयर-इंडिया के विमान का शोर भी वो सुन नहीं पा रही थी। नीना हमेशा की तरह इस वर्ष की शुरूआत में कुछ दिनों के लिए माँ से मिलने आई थी; पर क्या पता था कि उसके पीछे-पीछे वाइरस भी चीनी विमान से कुछ दिन में आने वाला था।

नीना ने घर पहुँच माँ से फोन पर बात की तो पता चला कि वे काफी बीमार हैं। यह सुनते ही वह तुरंत माँ को अपने घर ले आई। कुछ दिनों में लॉकडाउन हो गया। कोरोना के बादलों के बीच में जब भी माँ नीना को सेवा के बदले आशीर्वाद देती, तो लगता मानो बादलों को चीर सूर्य, उसके मन में झाँक गया हो। नीना वापस अमेरिका नहीं जा सकी; पर हर वक्त ईश्वर का शुक्र मानती रही और कहती रही की तेरी गणना तू ही जाने। इस बीच माँ की हालत बिगड़ने लगी। नीना ने भाई को कई फोन किये; पर वो हर बार बहाना बना देता कि लॉकडाउन में वो नहीं आ सकता, रास्ते बंद हैं। नीना ने एक दिन हिम्मत कर माँ को अस्पताल ले जाकर जैसे ही डॉक्टर को दिखाया तो उन्होने माँ को तुरंत एड्मिट कर खूब डाँटा कि माँ को पहले क्यों नहीं लाये आदि। नीना किस तरह बताती की भाई गैर-जिम्मेदार निकला। किसी को भनक भी नहीं हुई कि माँ की गैरमौजूदगी में माँ की अलमारी खोली गयी है और भोली माँ से कभी छल से करवाए गए हस्ताक्षर वाले पेपर गायब हैं। माँ अस्पताल में अंतिम साँसें गिन रही थीं, इधर नीना कोरोना के बादलों पर वाइरस की क्रूर हँसी सुन रही थी और भाई ने मकान की वसीयत अपने नाम बनवा ली थी।

नीना और उसकी बहनों ने स्वार्थी भाई की माली हालत को देखते हुए उसके वकील को रजामंदीनामा भेज तो दिया; पर नीना शून्यावस्था में काफी दिनों तक रही। बस यही सोचती कि कोरोना को किस रूप में देखूँ - 'जानलेवा महामारी' या 'रिश्तों का आईना' के रूप में?

नीना सोचती रही कि कोरोना ने सबके चेहरों पर तो मास्क लगवा दिये थे; पर रिश्तों के मास्क परत-दर-परत उतर गए थे।

मिलूँगी जरूर...

सुनीता शर्मा
ऑक्लैंड, न्यूजीलैन्ड

"पूरे दो साल हो गये। समय मिले तो एक बार अपनी बूढ़ी माँ से मिलने आ जाओ। दिव्य को देखने के लिए आँखें तरस रही हैं।" माँ का ख़त पढ़ा तो दीपक को याद आया - लगभग दो साल पहले माँ के आँसुओं की परवाह किए बिना उन्हें एक वृद्धाश्रम में छोड़ आया था।

"मुझे दादी से मिलना है; पर आप जाते नहीं।" बेटे दिव्य की ज़िद देख बहुत ही बेमन से दीपक ने अपनी पत्नी पूजा को जैसे-तैसे मनाया। बस, मिलने जा रहे हैं, उन्हें लेने नहीं। बेटे दिव्य के चेहरे पर एक उल्लास भरी हँसी देख पूजा भी मान गई।

"जया जी से मिलना है।"

जया नाम सुनते ही उस व्यक्ति ने आदर सहित सिर झुकाते हुए पूछा,"अरे आप भी उनसे मिलने आए हैं?... लेकिन आज तो वे बहुत व्यस्त हैं। वह देखो वहाँ - 'जया माँ'। ऐसी महान हस्ती के कदमों में तो सिर अपने आप झुक जाते हैं ..." इशारा करते हुए उसने कहा। दीपक व पूजा दोनो विस्मय से भरे एक दूसरे को देख रहे थे। क्या यह वही माँ है? आत्मविश्वास से भरा चेहरा, चाल में ठहराव!

"आप भी इस उत्सव में भाग लेने आए हैं..?"

"कैसा उत्सव..?"

"आज सालगिरह का उत्सव है।"

"किसकी और कैसी सालगिरह..?" दोनो ने भौंचक्के-से होकर पूछा ।

"दिव्य वृद्ध-बच्चे अनाथ योजना का।"

"अरे!...दिव्य तो मैं हूँ।"

"वाह, आप...!" अरे इसी मुहिम में ही तो जया माँ इतनी व्यस्त हैं...। अनाथ बच्चों व वृद्ध माताओं को एक साथ रखकर उन्हें एक-दूसरे का पूरक बना सकें। जब से उन्होंने इस 'वृद्ध-बच्चे अनाथ योजना' पर कार्य करना आरम्भ किया है, अनेक लोग उनके साथ जुड़ते चले गए।

"आपका नाम...?"

"दीपक..।"

"अच्छा! यह लिफाफा आपके लिए।"

"कुछ अपनो ने जिंदगी की आग में तपने के लिए वृद्धाश्रम में छोड़ मुझे खरा सोना बना दिया। तुम तो मुझसे मिलने नहीं आए पर मैं तो माँ हूँ ना! जब आओगे, तुमसे मिलूँगी जरूर..."

"दिव्य बेटा...तुम हमारे साथ आओ, जया माँ ने तुम्हें अपने पास बुलाया है। आप थोड़ा इंतजार कीजिये, वे आपसे शीघ्र ही मिलेंगी...।"

मुक्त

मंजु शर्मा जांगिड़ 'मनी'
जोधपुर, भारत

"रमा! जल्दी से टिफिन पैक कर दो। मुझे ऑफिस की देरी हो रही है।"

अजय के इतना कहते ही रमा फटाफट खाना बनाने लग गई। आज सारा काम लेट लतीफी से हो रहा है। सुबह देरी से आँख क्या खुली, उसका खामियाजा उसे अभी तक भुगतना पड़ रहा है। सब्जी बनकर तैयार हो गई। धनिया के लिए फ्रिज खोला तो याद आया धनिया तो कल ही खत्म हो गया था। इतने में घर के बाहर सब्जी वाले की आवाज सुन वह दौड़ी-दौड़ी सब्जी वाले के पास पहुँची।

धनिया देते हुए सब्जी वाला बोलने लगा,"मैडम जी! आपको पता है, मिश्रा जी की पोती की शादी हो गई।"

इतने में पास खड़ी मिसेज गुप्ता बोलीं,"उच्च कुल की होकर निम्न कुल में विवाह करना उचित नहीं है।"

तभी पास खड़ी चौधराइन बोलीं,"अरे! तभी तो किसी को बुलाया नहीं, परिवार के चंद लोगों में ही शादी संपन्न हो गई।"

"अरे! हाँ, लोग आते तो धज्जियाँ उड़ जातीं," पास खड़ी अन्य महिला बोली और सभी खिलखिला कर हँसने लगीं।

रमा अवाक्-सी रह गई। इन लोगों की बातों को अनसुना कर, धनिया लेकर तुरंत घर आ गई। अजय का टिफिन पैक करते हुए सोचने लगी - आजादी के इतने वर्षों बाद भी देश जाति-बंधन से मुक्त नहीं हुआ।

मुफ़्त की नौकरानी और चौकीदार

गोवर्धन यादव

छिन्दवाड़ा, म.प्र., भारत

"शीला! तुमने अपना ये क्या हाल बना रखा है?"

"क्या बताऊँ बहना, दिन भर जो खटती रहती हूँ।"

"मैं एक आसान-सा उपाय बतलाती हूँ; यदि तुम कर सको तो, दिन भर बस आराम ही आराम।"

"वो कैसे?" जानना चाहा शीला ने।

"तुम अपने सास-ससुर को बुला लो।"

"इससे क्या होगा?"

"तुम्हारी सास चौका-बरतन सहित बच्चों को सँभाल लेगी और ससुर दरवाजे पर बैठा पहरा देता रहेगा। तुम्हारा काम दोनों मिलकर निपटाते रहेंगे और तुम ठाठ से पलंग पर लेटकर स्वर्गीय आनंद उठाती रहना। ...लेकिन शीला! ये काम बड़ी सावधानी के साथ करना। उन्हें इस बात की भनक भी नहीं लगनी चाहिए कि तुमने उन्हें अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए बुलाया है। समझीं?" तालियाँ बजाती हुई शीला चहक उठी,"समझ गई...समझ गई मेरी प्यारी सखी...समझ गई...," कहते हुए उसने अपनी सखी को बाहों में भर लिया।

मुफ्त की शिक्षा
मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

सब खुश थे, गाँव का पहला प्राइमरी स्कूल खुला था, सरकारी शिक्षक नियुक्त हुए थे, घर-घर जाकर बच्चे ला रहे थे। माँ-बाप को समझा रहे थे कि बच्चों के नाम स्कूल में लिखवाओ, सरकार ने सबके लिए मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था की है। मुफ्त शिक्षा, मुफ्त किताबें, मुफ्त खाना, मुफ्त की छात्रवृत्ति!

ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी, बच्चे स्कूल पहुँच गए। फायदा ही फायदा था, शर्त कोई नहीं थी, फायदा सबको था। गाँव में सरकारी सहायता पहुँचेगी, सब एकजुट हो गए। सरपंच का वोट बैंक बढ़ेगा, किताबों और खाने से उनके हिस्से का कुछ कमीशन तो उनकी जेब में पहुँचेगा ही, माँ-बाप खुश थे, बच्चे के बहाने निगोड़ी सरकार से कुछ तो मुफ्त में मिला। बच्चे खुश थे, सबको ख़ुश देख कर। बच्चे खुश थे वहाँ की आजादी से, पिछले प्राइवेट स्कूल की तरह कोई रोक-टोक नहीं, कोई सजा-शिकायत नहीं। अपनी मर्जी से आते, बैठे तो बैठे, खाने लायक समझ आया तो खाते, नहीं तो अपने रस्ते।

सुबह आठ बजे से १२ बजे तक गेट खुला रहता। प्रधानाध्यापक-अध्यापक शिफ्ट में अपनी ड्यूटी कर लेते, सबको आने की जरूरत नहीं थी। सब कुछ सीधे-सीधे चल रहा था, अचानक हल्ला हुआ। आज विद्यालय का मुआयना है। विद्यालय तो रोज लगता था, आज कक्षाएँ भी लगीं। कक्षा में अध्यापक थे, अध्यापकों के हाथों में रजिस्टर भी थे। बच्चों से नाम पूछ-पूछ कर, रजिस्टर से मिलान और पहचानने की क़वायद कर रहे थे। बच्चों को नाम से पहचानना अध्यापन की अनिवार्यता थी। समय भी कम था, अध्यापकों के चेहरे पर पसीना था, अध्यापक हड़बड़ाये हुए थे। बच्चे अध्यापक की मुश्किल समझ रहे थे। विनय उनमें थोड़ा समझदार था। दुनियादारी समझता था। मुश्किल समझते हुए बोला,“मैडम आप हमारे नामों के लिए परेशान मत होइये, जब मुआयना टीम आएगी, तो रजिस्टर से आप कोई भी नाम लेकर, जिसकी तरफ देखोगी अथवा कोई भी प्रश्न करोगी, वो खड़ा होकर जबाब दे देगा।”

मुआयना टीम आई। सब कुछ दुरुस्त था। उनके लिए इतना ही संतोषजनक था कि यहाँ अध्यापक बच्चों को नाम से जानते हैं। संतोषजनक रिपोर्ट में लिखा था - यहाँ बच्चों-अध्यापकों के बीच संवाद तो है।

मुआयना टीम वापस चली गई, अध्यापक ने बच्चों से कहा,“थैंक यू! बच्चो! सब कुछ ठीक-ठाक निपट गया।” “अरे मैडम! मुफ्त की किताबें, मुफ्त का भोजन, मुफ़्त की छात्रवृत्ति बिना पढ़े पाते हैं तो बिना पढ़ाये, मुफ्त के वेतन पर आपका भी हक है, इतना तो यहाँ हमने पढ़ ही लिया है, विनय ने विनम्रता से उत्तर दिया।”

मुफ़्त शिक्षा

मधूलिका श्रीवास्तव

भोपाल, भारत

"दीदी! आज मेरी बिटिया का अँगरेज़ी स्कूल में दाखिला हो गया," काम वाली रानी ने नेहा को बताया।

"अरे वाह…! कहाँ और कैसे?"

"अरे दीदी! आजकल के मुफ्त शिक्षा-अधिकार में।"

"पर तेरे तो दो बच्चे पहले ही आर.टी.ई. से पढ़ रहे हैं ना ... तो तीसरे का कैसे हुआ?" नेहा ने आश्चर्य से पूछा।

"दीदी! पैसा हर जगह चले है…"

"हाँ ये तो है … पर एक ही घर के तीन-तीन बच्चे? ये कैसे हुआ?" नेहा भौंचक्की थी।

"अरे दीदी! पहले के समय तो ज्यादा पूछताछ थी नहीं। आय प्रमाण-पत्र लगाया और हो गया, दूसरे के समय विधायक जी का लैटर काम आ गया।"

"अरे वाह तू तो बड़ी चतुर है, पर तीसरे का कैसे हुआ ये तो बता?"

"इस बार आधार कार्ड से... उसमें दूसरे बच्चे कहाँ पढ रहे हैं और कैसे पढ़ रहे हैं, ये थोड़े ना लिक्खा होता है। बस आधार कार्ड जरूरी था, तो इस बार वो लगा दिया।" कह कर वह ताली पीटने लगी।

"पर ये तो धोखाधड़ी हुई, अगर पता चल गया तो?"

"अरे कुछ नहीं होगा। पैसे भी तो खिलाये हैं पैसे… बस अब आठवीं तक की फीस की झंझट खत्म।"

नेहा भौंचक्की उसका मुँह देखने लगी।

मुराद

सुरेंद्र कुमार अरोड़ा
गाज़ियाबाद, उ. प्र., भारत

“लगता है जिस बात का आपको इंतजार था, उसका समय आ गया है।”

“क्या मतलब?”

“अभी अभी छोटी भाभी का फोन आया है कि बड़े भैया दो दिन से अस्पताल में भर्ती हैं, एक बार फिर उसी बीमारी के चक्कर में।”

“मतलब तीसरी बार!”

“फिर तो बचना मुश्किल है।”

“मुकदमें की अगली डेट कब की है?”

“एक हफ्ते बाद की है।”

“तब तक तो काम हुआ समझो।”

“उम्मीद तो मुझे भी यही है।”

“अंतिम संस्कार में जाओगे या नहीं?”

“वो तो जाना ही है, मुकदमेबाजी अपनी जगह, दुनियादारी अपनी जगह। न गए तो लोग बातें बनायेंगें।”

“हाँ, मेरी भी यही राय है।”

“जो होगा अच्छा ही होगा। दस साल से चल रहे मुकदमे से छुट्टी मिलेगी। उसके बाद सारा मकान अपना समझो।”

“वो तो ठीक है जी। पर आप अपना भी ख़याल रखा करो। तबीयत आपकी भी ठीक नहीं रहती। एक बार तो आप भी अस्पताल में भर्ती हो चुके हो ...।”

“चुप कर! हमेशा नेगेटिव ही सोचती रहती है। अभी तो तू उन धक्कों से छुटकारे की सोच, जो इतने सालों से कोर्ट में खा रहा हूँ। अगर ये काम हो गया तो उन धक्कों से मुक्ति लाजिमी है।”

वो छोटी भाभी के अगले फोन के इंतजार में चाय बनाने चली गई।

मुर्दाघर
नितिन उपाध्ये
दुबई, यू.ए.ई.

चौकीदारी और वह भी मुर्दाघर की? आज जब उसे रोज रात सरकारी अस्पताल के मुर्दाघर की चौकीदारी का काम बताया गया तो उसकी तो हँसी ही छूट गई थी। अब भला बाहर से कौन जीवित व्यक्ति मुर्दाघर के अंदर जाना चाहेगा या कौन सा मुर्दा खुदबखुद बाहर आ जाएगा? फिर उसे याद आया की पिछले सप्ताह कुछ कुत्ते एक शव को लेकर भागे थे और उनकी तस्वीर छपने पर प्रदेश की विधानसभा में हंगामा हो गया था। इसीलिए अब उसे रहवासी कॉलोनी की बजाय यहाँ मुर्दों की रखवाली में रात गुजारनी पड़ेगी। अकेले खड़े हुए डर तो लग रहा था, फिर भी उसने मुख्य अस्पताल से दूर मुर्दाघर के आसपास दो-चार चक्कर लगाए और थक कर बैठ गया।

अंदर से कुछ आवाजें आईं, तो वह ताला खोलकर अंदर गया। क्या पता कोई कुत्ता खिड़की से घुस आया हो? अंदर चबूतरों पर तीन लाशें पड़ी थीं। उसने न चाहते हुए भी पहले शव पर से कपड़ा हटाया और चौंककर दो कदम पीछे हो गया। यह तो पीली कोठी वालों की नई-नवेली बहू थी। हर रोज रात को उसके कमरे से मार-पीट, ससुरालियों के चीखने-चिल्लाने और घुटी-घुटी सिसकियों की आवाजें आती थीं। कंचन की काया वाली, एक जली हुई लकड़ी की तरह चबूतरे पर पड़ी थी। उसे इस हालत में देख थरथराते क़दमों से वह दूसरे चबूतरे का सहारा लेने बढ़ा तो वहाँ पड़े हुए शव पर उसकी नजर पड़ी। मानव-कंकाल-सा वृद्ध पुरुष उसे जाना-पहचाना लगा। ध्यान से देखा तो कॉलोनी की दस-मंजिला इमारत में रहने वाले बाबा को पहचान गया। इनका बेटा दुबई में था और बहू खाने पीने को नहीं देती थी। उसने इन्हें कूड़े के ढेर से खाने की चीजें ढूँढते देखा था। आज शरीर पर पड़ी हुई चोटें कुछ और ही कहानी कह रही थी। पलटा तो पीछे के चबूतरे पर रखे शव पर गिरा। देखा तो कॉलोनी के बाहर फूल बेचने वाली लड़की थी। फूलों सी कोमल लड़की काँटों से बिंधकर कटी-फटी पत्थर पर पड़ी थी। उसने गली के शोहदों को कई बार उसे छेड़ते हुए देखा था। पर इस मोहल्ले के बाकी लोगों की तरह, ‘पराई आग में क्यों कूदना’ कहकर वह भी किसी मामलें में नहीं पड़ा था।

वह भागने लगा, तो कुर्सी से टकरा कर गिर गया। वह समझ गया कि उसने आने वाले कल का सपना देखा है। सूरज की किरणें उसके चेहरे पर पड़ीं और ड्यूटी के बाद वह मोहल्ले के थाने की तरफ चल पड़ा।

मृत्युभोज

राम रतन श्रीवास
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

गोधूलि बेला… खपरैल के घर में प्रवेश करते ही घनश्याम चटाई पर बैठा ही था कि बेटी दीपशिखा पानी देते हुए बोली... लीजिये!

घनश्याम पानी पी कर बाबूजी-माताजी के कमरे में दाखिल हुआ। मोतियाबिंद से ग्रसित घनश्याम की माँ ने आहट पा, आवाज़ लगाई,“बेटा!.... देख तेरे बाबूजी का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है। हमारी परिस्थिति अच्छी नहीं कि अच्छे डॉक्टर के पास इलाज करा सकें।”

घनश्याम ने कहा,“माँ! तुम चिंता न करो, मैं बाबूजी का अच्छे डॉक्टर के पास इलाज कराऊँगा, चाहे और भी कर्ज क्यों न लेना पड़े।”

माँ ने कहा,“बेटा! कुछ महीने पहले बहू इस दुनिया से चल बसी, तुमने उसके इलाज के लिए…, अब तुम्हारे बाबूजी के लिए… लेकिन ‘जब तक साँस तब तक आस’। बेटी के भी हाथ पीले करने हैं। न जाने भगवान किन कर्मों की सजा दे रहा है! हमारे सर पर तो मानो पहाड़ ही टूट पड़ा है।”

घनश्याम ने हाथ-पैर धोते हुए कहा,“दीपशिखा! बाबूजी के कमरे में खाना लेती आना। खाने के पश्चात सोचते-सोचते थकान से घनश्याम की कब आँख लग गई, पता ही नहीं चला। रात्रि में पिताजी का स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ गया। आनन-फानन में अस्पताल ले गया। डॉक्टर ने जाँच एवं इलाज शुरू किया; लेकिन उसके प्रयास पिताजी की साँसों को बचाने में असमर्थ रहे। किसी प्रकार से अंतिम संस्कार किया।

दशकर्म के दिन लोग कहने लगे,“देखो-देखो! पहले पत्नी फिर पिता स्वर्ग सिधार गया, बुढ़िया भी पके आम की तरह है, न जाने कब टपक जाए। बेटी विवाह योग्य है, ये मृत्युभोज भी कोई भोज है? मानो घनश्याम की तो किस्मत ही फूटी है, कंगाल हो गया है, हाय रे! अभागा...!”

शब्दों के तानों से आहत घनश्याम के अंत:करण को झकझोर दिया। दिन बीता, रजनी पाँव पसारने लगी। अंतस में विचारों का समुद्री तूफान, लहरों का सैलाब उमड़ रहा था... अंतर्मन मानों पीपल पत्ते की भाँति डोल रहा था.... कब तक हम जैसे अनेक लोग परिस्थितिवश ऐसे समय को गुजारेंगे? मृत्युभोज जैसे अभिशाप से कब छुटकारा मिलेगा? न्यायालय कब इस ‘सुरसा जैसी मुँह फैलाए राक्षसी’ से बचाएगी? कोई तो अधिनियम बनेगा?

अचानक बेटी के स्पर्श से भावों के उद्वेग को विराम मिला। वह बोली,“पिताजी रात्रि हो गई है, भोजन कर विश्राम कर लो।”

मेहनत का मोल

विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

बारिश की हल्की फुहारों के बीच आँगन में छतरी ओढ़े टहल रहा था। अचानक मेरी नज़र सड़क-किनारे पेड़ के नीचे मोटर साइकिल लेकर खड़े व्यक्ति पर पड़ी। मोटर साइकिल पर कुछ कुर्सियाँ लदी हुई थीं। आदमी के चेहरे पर चिंता दिखाई दे रही थी। उसका हाथ बार-बार अपने कंधे पर जा रहा था..मैंने ध्यान से देखा तो पता चला कि कंधे पर उसकी कमीज़ फटी हुई थी..जहाँ मच्छर बार-बार काटकर उसे परेशान कर रहे थे।

उसकी ऐसी दारुण दशा देख मेरा हृदय भर आया। वैसे मुझे कुर्सी की जरूरत नहीं थी;पर उसकी दीन दशा ने मुझे कुर्सी खरीदने के लिए विवश कर दिया।

“भाई! कुर्सी किस भाव से दी?”

“चार सौ रुपये की एक बाबूजी।” उसके चेहरे पर प्रसन्नता खिल गई।

“ठीक है ...एक कुर्सी दे दो।”

वह चार कुर्सियाँ लेकर मेरे पास आ गया और बोला,“इनमें से जो भी लेनी हो, ले लो और हाँ.. लोग भाव कम करवाते हैं, इसलिए हम कुछ अधिक कीमत बताते हैं...वास्तव में कुर्सी की कीमत साढ़े तीन सौ रुपये है।”

ऐसे हालात में भी उसने अपनी ईमानदारी का परिचय देकर मुझे प्रभावित कर दिया। मैं चुपचाप घर में गया और एक थोड़ी पुरानी कमीज़ लाकर उसके हाथ में देते हुए बोला,“भाई आपकी कमीज़ गीली हो गई है...अगर ठीक लगे तो यह पहन लो।”

“अच्छी बात है बाबूजी!...अब आप मुझे कुर्सी के केवल ढाई सौ रुपये दे दो,” उसके चेहरे पर स्वाभिमान का भाव आ गया था।

“ढाई सौ क्यों? मैंने यह कमीज़ यों ही दी है।”

“तो फिर रहने दो बाबूजी! मैं मेहनत का ही पहनता हूँ,” कहता हुआ वह उठने लगा।

मैं किसी तरह उसे इस सौदे में लाभ पहुँचाना चाहता था; किन्तु वह अपने सौदे में मुफ़्त की कमीज़ लेना बेईमानी समझ रहा था।

“अरे भाई सौ रुपये की कमीज़ कहाँ है यह?... रख लो सौ रुपये ..कुछ नहीं तो बच्चों के लिए कुछ खाने का ले जाना,” मैंने आखिरी प्रयास किया।

“बच्चों के लिए खाना! नहीं बाबूजी! बच्चों को मुफ़्त का खिलाऊँगा तो वो मेहनत का मोल क्या समझेंगे?”

मैं निरूत्तर हो उसे देखता रहा...वह साइकिल लेकर आगे बढ़ गया था।

मैसेज

प्रतिभा द्विवेदी
भोपाल, भारत

"सुप्रभात!"

"शुभरात्रि!"

प्रतिदिन उनके मैसेज आते और प्रति-उत्तर में मैं भी हाथ जोड़ देती।

कुछ समय बाद मैसेज आया,"कैसी हैं आप?"

मैंने पुनः हाथ जोड़े आभार के साथ।

अगले दिन मैसेज मिला,"परिवार में सब कुशल-मंगल तो हैं, आप इसी शहर में रहतीं हैं न?" इस स्नेहिल मैसेज के जवाब में मैंने भी सादर लिखा,"जी भाई साहब, ईश्वर की कृपा से सब ठीक है, इसी शहर में रहती हूँ। आप आइये न कभी भाभी जी के साथ, मैं आपको पता भेज दूँगी।"

...और फिर उनके मैसेज आने बंद हो गये।

मोर बोला

कैलाश गिरि गोस्वामी
बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

एकांत वन में दूर-दूर तक सन्नाटा पसरा हुआ था। वहीं एक मयूर ढाल की तरह अपने सुंदर पंख फैलाये थिरक रहा था। खेत में कटे हुए गेहूँ की पुलियाँ इकट्ठी करते-करते मैं उस जगह तक अकस्मात् ही जा पहुँचा। एक बार तो मैंने सोचा कि यह अपनी नृत्यकला की प्रस्तुति दे रहा है। ...मगर वहाँ तो सन्नाटा छाया हुआ था। चुपके से खड़ा रह कर मैं अभी ठीक से निहार भी नहीं पाया था कि वह मेरी उपस्थिति को ताड़ कर अपने सुंदर पंख समेट, भागने लगा। उसे भागते देख मैं चिल्लाया,"अरे मयूर राज! अपनी कलाबाजी का करतब यूँ अधूरा छोड़ कहाँ जा रहे हो? अभी ठीक से मैं देख भी नहीं पाया हूँ, तुम्हारा यह प्रदर्शन। तुम गाँव में आकर अपनी यह अद्भुत कला दिखाते क्यों नहीं? इसीलिए गाँव में कहते हैं न... "जंगल में मोर नाचा किसने देखा?"

मोर भड़क उठा, बोला,"अरे कविराज! आप तो जानते हैं दर्शन और प्रदर्शन में अंतर! आजकल समाज में दिखावा बढ़ रहा है। हमें ये सब पसन्द नहीं है। हम 'स्वान्तः सुखाय' ही नाचते हैं। फिर, हर छोटी-छोटी बात का प्रदर्शन ज़रूरी तो नहीं।"

मैं निस्तब्ध निःशब्द हो अवाक्-सा खड़ा था।

रंगों की दुनिया

उषा श्रीवास्तव
बेंगलूरु, भारत

"प्रिय मम्मी!
आई एम वेरी सॉरी!"

"मैं फर्स्ट टर्म में इंग्लिश और मैथ्स में फेल हो गई हूँ। मैं आपसे पढ़ाई का बहाना बनाकर ड्रॉइंग बनाती रहती थी। पापा को मत बताना, वरना वे मुझे मारेंगे और हॉस्टल भेज देंगे। मैं वादा करती हूँ, अगले टर्म में मेहनत करूँगी और अच्छे अंकों से पास होऊँगी।"
-समायरा

पत्र के अंत में एक रोता हुआ चेहरा और मार से बचने की कोशिश करते हाथ बनाए हुए थे। मृणालिनी के हाथ में पत्र देकर समायरा दौड़कर कमरे में चली गई और दरवाजा बंद कर लिया।

मृणालिनी के तो जैसे पैरों तले से जमीन ही निकल गई। सोचने लगी,"छोटी सी बच्ची के मन में इतना भय भरा है कि मुझे कहने की जगह चिट्ठी लिखी और चित्र बनाया। मनीष की सख्ती से वह इतनी डरी हुई रहती है कि पापा को अपने शौक के बारे में नहीं बता पाती और छुपकर यही सब करती रहती है।" वह ऐसा क्या करे कि दोनों को परेशानी न हो। उसे माँ की सीख याद आई कि "प्यार से बच्चे को आगे बढ़ाया जा सकता है, डाँट-मार से नहीं।"

दरवाजा खुलवाकर प्यार से समायरा को गोद में बिठाकर निश्चय पूर्वक बोली,"चिंता मत करो, तुम तो पढ़ने में होशियार हो, थोड़ा-सा ध्यान दोगी तो अच्छे नंबर ला सकती हो। अब तुम सब डर भुलाकर पढ़ाई में लग जाओ।"

"जो समझ ना आए, मुझ से पूछोऔर होमवर्क के बाद हर दिन एक घंटे और छुट्टी के दिन 2-3 घंटे ड्रॉइंग कर सकती हो। तुम्हारे पापा को भी मैं समझा दूँगी, तुम निश्चिंत रहो।"

माँ के ये शब्द सुनते ही समायरा खुशी-खुशी पढ़ाई करने चली गई।

राजा और ये सब!

चंद्रेश कुमार छतलानी
उदयपुर, भारत

वह एक बड़ी रियासत का राजा था।

आप भी सोचेंगे, राजा और आज के ज़माने में!

जी हाँ! वह राजा ही था, रियासत के दरबारियों के लिए। सभी दरबारी उससे बहुत खुश थे। उनकी तनख्वाह, उनका रहन-सहन, राजा के कारण बहुत ही अच्छा था।

एक दिन एक दरबारी ने राजा को बताया कि उसकी रियासत के एक छोटे से भाग में सूखा पड़ा है। राजा दुःखी हो गया और उसने अपने खजाने का कुछ हिस्सा उनके लिए भेज दिया।

कुछ दिनों बाद उसे पता चला कि रियासत के किसी और भाग में बाढ़ आई है। वह फिर दुःखी हो गया और उसने फिर राजकोष से कुछ धन मदद के लिए भेज दिया।

तीसरी बार राजा को यह पता चला कि उसकी रियासत के कुछ लोग भूखे हैं, गरीब हैं। यह सुनते ही राजा रोने लगा। उसका रोना सुनकर सभी दरबारी आ गए।

उसके पहले कि राजा कुछ कहता, दरबारियों ने आपस में बातचीत की और राजा को मार दिया।

अब वे सब के सब यह कह रहे थे,“राजा को रोने का हक़ नहीं होता।”

राष्ट्रधर्म

बृजबाला गुप्ता 'अर्चना'
इंदौर, भारत

आज सुबह से ही मोहल्ले में चहलकदमी हो रही थी। हर कोई खुश दिखाई दे रहा था। अब हमारे मोहल्ले में भी भागवत कथा होगी। सभी लोग प्रसन्नता पूर्वक बढ़-चढ़कर चर्चा में भाग ले रहे थे। सभी लोगों ने तय किया कि एक समिति बनाकर हर घर, हर दुकान से कुछ राशि एकत्रित कर, ज्ञान के इस यज्ञ में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करेंगे। समिति बनाई गई। वे मोहल्ले के हर घर, हर दुकान से सहयोग राशि लेने लगे।

उसी मोहल्ले में एक जनरल स्टोर था, जिसका मालिक अहमद नाम का व्यक्ति था। वह भी सहयोग राशि लेने वाली समिति का इंतजार करने लगा। जैसे ही उसकी दुकान का नंबर आया, सभी लोग उससे बिना बात करे आगे बढ़ गए तो अहमद से रहा नहीं गया। उसने समिति के लोगों को आवाज़ लगाई। फिर कहा,"आप लोग मुझसे सहयोग राशि नहीं लेंगे क्या? मैं भी तो इसी मोहल्ले में रहता हूँ।" सभी लोग अहमद को आश्चर्य से देखने लगे और बोले आप भागवत कथा के लिए सहयोग राशि देंगे! अहमद ने कहा,"क्यों नहीं, चाहे भागवत गीता हो या कुरान। हमारे ग्रंथ हमें सत्य और अहिंसा के मार्ग पर ही चलना सिखाते हैं। उसे समझाने वाले चाहे मौलवी हों या संत-महात्मा। सभी को ईश्वर ने बिना भेदभाव के बनाया है। जब ऊपर वाले ने भेदभाव नहीं किया तो हम क्यों करें? हमारा एक ही राष्ट्र है, एक ही धर्म है और वह है - राष्ट्रधर्म।"

रील्स

सीमा वर्मा

लखनऊ, भारत

“मम्मी! ऑफिस से वापस आते हुए रस्तोगी आंटी रास्ते में मिली थीं, कह रही थीं कि आपने कच्चे आम के मीठे अचार की जिस रेसिपी की रील इन्स्टा पर शेयर की थी, उसके सारे मसालों के नाम समझ में नहीं आये, इसलिए लिख कर मँगाये हैं।” रिया ने अपने मोबाइल से नज़र को बिना हटाये हुए कनक से कहा।

कनक ने, जो मसाला-भिन्डी की सब्ज़ी बनाते हुए अपने मोबाइल में स्टेप्स को रिकॉर्ड कर रही थी, वीडियो पॉज करके तरेर कर रिया को देखा और व्यंग्यात्मक लहजे में बोली,“शायद मिसेज़ रस्तोगी को पढ़ने में नहीं आया होगा कि ‘इन्ग्रीडीयंट्स इन कमेंट्स’, खैर मैं कॉल कर के बता दूँगी।”... और इतना बोलकर जल्दी से पुनः मोबाइल ऑन करके वीडियो बनाने में लग गयी।

रील को सभी सोशल साइट्स पर अपलोड करने के बाद बीच-बीच में कमेंट्स और लाइक्स देखने के लिए कई बार मोबाइल खोला और दो घंटे इसी प्रकार व्यतीत हो जाने के पश्चात चौंक कर समय देखते हुए रिया को आवाज़ दी,“अरे रिया! हर समय मोबाइल पर रील्स देखती रहती है, ऑफिस से आने के बाद कुछ समय मम्मी के साथ भी बिता लिया कर।”

किचन में फैले बर्तन और गैस पर जमी गंदगी को देखते हुए रिया बिना कुछ बोले ऑनलाइन चल रही अपनी मीटिंग में दोबारा व्यस्त हो गयी।

लक्ष्मण मन्दिर

ओमप्रकाश गुप्ता

ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

रमाकांत ऑफिस के काम से भरतपुर आए हुए थे। वे धार्मिक प्रकृति के थे, शाम हुई तो उनका मन हुआ कि किसी मन्दिर में संध्या-दर्शन कर आयें। होटल के रिसेप्शन से पूछा कि वहाँ मन्दिर कहाँ हैं।

"बाबूजी! भरतपुर में तीन मुख्य मन्दिर हैं; बिहारी जी का मन्दिर, गंगा मन्दिर और लक्ष्मण मन्दिर।"

'लक्ष्मण मन्दिर',- सुनकर रमाकांत को बड़ा आश्चर्य हुआ। राम मन्दिर तो लाखों की संख्या में हैं; पर लक्ष्मण मन्दिर का नाम कभी नहीं सुना। उत्सुकतावश वे वहीं पहुँच गए।

संध्या-आरती का समय था, लोग इकट्ठे हो रहे थे। ठीक 7 बजे पुजारी जी ने शंख बजाया और आरती आरंभ की।

"श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नव कञ्ज लोचन कञ्ज मुख कर कञ्ज पद कञ्जारुणं ॥

... ...
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अङ्ग फरकन लगे ॥"

आरती समाप्त होने पर पुजारी जी ने भक्तों को चरणामृत वितरित किया। रमाकांत सोच में पड़ गए, मन्दिर का नाम है लक्ष्मण मन्दिर, विग्रह भी लक्ष्मण और उनकी पत्नी उर्मिला का है; पर आरती राम की! लक्ष्मण के नाम का उल्लेख तक नहीं। उनसे रहा नहीं गया और पुजारी से पूछ बैठे - ऐसा क्यों?

"भैय्या! लक्ष्मण जी को भी अपने बड़े भ्राता श्री राम जी की ही आरती करना पसंद है, अपनी नहीं, हम करें भी तो क्या?"

लानत

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

रामखिलावन खेती-बारी बेचकर बेटे के पास रहने शहर आए तो वक्त पंख लगाकर उड़ने लगा। पत्नी से सराहना करते न थकते। बेटे को पढ़ाने-लिखाने में कितनी परेशानियां झेलीं, कितनी रात भूखे पेट सोए, पत्नी के जेवर क्या, घर के बर्तन भांडे तक सब गिरवी रख दिए और कैसे अभाव और दुःख के दिन बीते, धीरे-धीरे सब भूलने लगे।

ऊपर वाले का रहम है कि मेहनत रंग लाई और बेटा आज एक आला दर्जे का पुलिस ऑफिसर है। रुतबा और शान के साथ-साथ, नौकर, बंगला, गाडी, क्या नहीं है अब उसके पास। गाँव के सेठ-साहूकार जो उधार तक देने में कतराते थे, अदब से दुआ-सलाम करते हैं अब उन्हें। बाकी की सारी उमर यहीं बेटे के पास उसके बनाए बड़े से इस बंगले में, पोते-पोतियों के साथ हँसते-खेलते ही गुजारेंगे अब तो। सोच-सोचकर ही आँखें खुशी से छलकने लग जातीं, पोते-पोती के प्यार में इतने मगन हो गए थे।

उस दिन बंगले में खास बैठक थी। बेटे के सभी संगी-साथी, नामी-गिरामी अफसर आए हुए थे। रामखिलावन पोते को आइसक्रीम दिलाकर लौटे तो अचानक आइसक्रीम कमरे के ठीक सामने बरामदे में ही गिर गई। आदतन तुरंत ही कन्धे पर पड़ा अंगोछा उतारा और चमचमाता संगमर्मर का फर्श साफ कर दिया। फिर रोते पोते को गोदी में भरकर, पुचकारते हुए बोले,"चलो दूसरी दिला लाता हूँ, अभी तुम्हें।"

"बड़ा भला और मेहनती नौकर है तुम्हारा। लगता है गाँव से नया-नया आया है, अभी।" एक साथी अफसर उनकी तत्परता को देखकर, बोले बिना न रह सका,"कहाँ मिलते हैं ऐसे नौकर वरना! आजकल तो काम न करने का बहाना ढूँढते रहते हैं।"

गर्व और आत्मविश्वास के साथ उनकी नजर बेटे की तरफ घूम गई। पता ही नहीं, विश्वास था कि बेटा अभी कहेगा,"नहीं, नहीं, क्या कह रहे हो आप, क्यों अधर्म का भागी बनाते हो मुझे, मेरे पिताजी हैं यह।"

पर बेटा चुपचाप नजरें चुराए इधर-उधर देखता रहा। भरे बाजार अपनों के हाथों ही नंगे हो चुके थे रामखिलावन। इसके पहले कि मन बदले या पोते का मुँह देखकर कमजोर पड़ जाएँ, आँखें उसी गंदे अंगोछे से पोंछ, लड़खड़ाते-से उठ खड़े हुए और बोरिया-बिस्तर बाँधकर चुपचाप गाँव की ओर चल पड़े, इस प्रण के साथ कि 'मरते दम तक बेटे की तो शकल तक नहीं देखनी है उन्हें। लानत है इस पुत्र-मोह पर। ऐशो-आराम की जिन्दगी पर! धृतराष्ट्र तो जन्म से अंधा था, पर उनकी तो दोनों आँखें थीं, फिर वे इतने अंधे कैसे रह गए?'

लौटते कदम

रामकुमार घोटड़
चुरू, राजस्थान, भारत

वृद्धाश्रम कार्यालय से औपचारिकताएँ पूर्ण कर सुनील जब संचालिका-कक्ष के पास पहुँचा तो अपनी माँ को संचालिका महोदया से परिचयात्मक भाषा में बातें करते हुए पाया। तब वह जिज्ञासावश दरवाजे की आड़ में खड़ा होकर उनके वार्तालाप को सुनने लगा।

"हाँ जी, सरोज बहन जी! आज इधर कैसे आना हो गया? आप तो शहर की नामी-गिरामी हस्तियों में से एक समाज सेविका रही हैं। यहाँ आने का कैसे कष्ट किया?"

"मैं स्वयं चलकर नहीं आयी हूँ मैडम, बेटा लेकर आया है मुझे, यहाँ वृद्धाश्रम में छोडऩे।"

"क्यों? ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ आन पडीं कि आपको यहाँ रहने को मजबूर होना पड़े। परिवार कहीं बाहर रहता है क्या?"

"हाँ! बेटे का कनाडा में बिजनेस है और वो दो दिन बाद ही वहाँ लौटने वाला है।"

"घर में और भी सदस्य होंगे?"

"हाँ। है न, बहू और दो छोटे-छोटे बच्चे... "

"फिर तो घर में कोई अपना विश्वसनीय, एक बुजुर्ग अनुभवी व्यक्ति होना ही चाहिए।"

"बहू ने अपनी माँ को बुलाया है, वो कल आ जायेंगी।"

"खैर, बेटे की अपनी जो भी सोच है वो जाने, लेकिन आपके साथ ऐसा बर्ताव नहीं करना चाहिए।"

"ठीक है मैडम! बेटे को जिस काम में खुशी मिलती है, मेरी आत्मा को सुकून मिलता है और मुझे भी खुशी का एहसास होता है।"

"जैसा आपका मन माने, आपकी संतुष्टि सर्वोपरि; लेकिन सरोज बहन! आपका वो वाकिया मुझे आज भी याद आ रहा है, वर्षों पहले जब आप पहली बार यहाँ की संस्था अनाथाश्रम आयी थीं, तब आपने कहा था कि एक दुर्घटना में मेरे पति की मृत्यु हो गयी और मैं पुन: शादी करना नहीं चाहती। मैं आपके अनाथालय से एक लावारिस बालक गोद लेने आयी हूँ। विश्वास कीजिये मैं इसका अपनी सन्तान की तरह पालन-पोषण करूँगी। हर सुख-सुविधा देकर उसे पढ़ा-लिखाकर एक बड़ा इंसान बनाऊँगी।"

"जी मैडम, यह वही बेटा है।"

सुनील लौटते कदमों से वापिस वृद्धाश्रम कार्यालय की ओर लौटने लगा।

विकृत मानसिकता

राजेंद्र सिंह
हरियाणा, भारत

महानगर की भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर गाँव की मीठी छाँव भला किसे नहीं भाती! राज को भी जैसे ही होली की छुट्टी मिली, उसने अपनी कार निकाली और बिना किसी को बताए सीधा निकल पड़ा गाँव की ओर। सफर मे तीन-चार घंटे लगना तय था। राज लगभग आधा सफर तय करके जैसे ही झज्जर से कोसली रोड पर मुड़ा तो बायीं तरफ फलों की दुकानें और गन्ने के जूस की बहुत-सी रेहड़ियाँ लगी हुई देख रुक गया। चूँकि राज दो-ढाई घंटे से कार ड्राइव कर रहा था, तो थोड़ा विश्राम तो चाहिए था। अतः उसने एक जूस वाले के पास कार रोक दी I जैसे ही उसने कार को रोका और बायीं तरफ के खिड़की का शीशा नीचे किया तो एक नौजवान झट से दौड़कर खिड़की के पास आया और प्यार से बोला – "हाँ जी, सर!"

उसकी मुस्कान और सक्रियता से प्रभावित हो राज अनायास ही पूछ बैठा,"क्या नाम है आपका?"

"हनुमान।" उसने बड़ी तहज़ीब से उतर दिया। राज—"हनुमान! एक मीडियम ग्लास जूस बना दो।" जूस पीकर जब राज ने उसे तीस रूपये देने के लिए अपना पर्स निकाला तो पाया कि छुट्टे तो हैं ही नहीं। राज ने उससे कहा,"पेटीएम से ऑनलाइन ट्रान्सफर कर दूँ?"

"हाँ, सर! कर दो।" कहते हुए युवक ने जब अपना स्कैनर स्कैन कराया तो उसके अकाउंट का नाम 'अरमान अली' दिखा। राज पैसे ट्रांसफर कर कार स्टार्ट करके चल तो दिया; पर उसके मन में अनगिन सवाल उठने लगे - उसने अपना नाम शुरू में हनुमान क्यों बताया था? क्या वो अपना असली नाम अरमान अली मुझे बताता तो मैं उससे जूस नहीं लेता, क्योंकि मैंने कार पे भगवा लगा रखा है?... या उसको इस प्रकार की ट्रेनिंग दी गई है कि किसी भी तरह ग्राहक वापिस नहीं जाना चाहिए। आखिर इस विकृत मानसिकता वाले बाजारवाद का सच क्या है? तभी पीछे से हॉर्न की तेज आवाज़ आने लगी। राज की तंद्रा टूटी,"ओ भईया! सँभाल के। पी कर गाड़ी चला रहे हो जो सुध-बुध खो बैठे। अभी आपको टक्कर लग जाती तो?" पीछे की कार से जोर-ज़ोर से आवाज़ आने लगी।

"माफ़ कीजिएगा," कह वह चुपचाप आगे बढ़ गया और मन ही मन सोचने लगा सुध-बुध तो सच में खोयी थी; पर वजह पीना नहीं, पिलानेवाला था।

विवश

अलका प्रमोद

लखनऊ, भारत

नीलू बहुत ख़ुश थी, रेखा आंटी ने कहा,"तुम सबके काम छोड़ कर हमारे घर दिन भर काम करो, हम तुमको छः हज़ार महीना देंगे।"

नीलू ने मन ही मन सोचा कि वह चार घर काम करके भी इतना नहीं कमा पाती। उस पर से कभी कविता आंटी किसी काम के लिए रोक लेती हैं तो बनर्जी आंटी से डाँट खानी पड़ती है और कविता आंटी की बात ना मानो तो वे पैसा काटने की धमकी देती हैं।

नीलू ने सारे काम छोड़ दिये। अब वह एक घर में काम करेगी, दिन भर भाग-भाग कर अपनी जान नहीं देगी। महीने भर उसने जी-जान से काम किया। एक महीने बाद उसने अपनी तनख़्वाह माँगी तो रेखा आंटी ने चार हज़ार पकड़ा दिये।

नीलू ने आश्चर्य से कहा,"आंटी ये तो कम हैं।"

"अपनी शकल देखी है, चार हज़ार तक गिनती भी आती है? तुम दिन भर जितना काम करती हो उसके हिसाब से ज़्यादा हैं। करना हो करो नहीं तो जाओ।"

उसने साहस करके कहा,"पर आपने तो छः हज़ार देने को कहा था।"

"हाँ कहा था कि तुम्हारा काम देख कर छः हज़ार देंगे, हमको तुम्हारा काम चार हज़ार लायक़ ही लगा।"

नीलू को समझ ना आ रहा था कि वह क्या करे, उसने तो जो भी आंटी ने कहा काम किया, एक बार भी मना नहीं किया।

रेखा आंटी ने उसे खड़ा देख कर कहा,"खड़ी क्या हो, नहीं करना काम तो जाओ हम किसी और से बात करें।"

नीलू जाती भी तो कहाँ? सारी आंटियाँ तो उसके काम छोड़ने से नाराज़ हो गई थीं। वह थके कदमों से रसोई में बर्तन साफ़ करने चल दी।

विषाण
आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

"साहब जी! आप महान हो, आपसे बढ़िया कवि इस दुनिया में पैदा ही नहीं हुआ। आप न होते तो साहित्य का क्या होता? यह तो गर्त में समा गया होता।"

फेसबुक पर लिखे इस कमेंट को पढ़कर विक्रम लोट-पोट हो रहा था।

"किसी और की पोस्ट पर पढ़कर हँसी आती है और अपनी पोस्ट पर पढ़कर खुशी मिलती है।" निशांत ने जवाब दिया।

"अरे यार! लोग इतना झूठ कैसे बोल लेते हैं? समझ नहीं आता।" विक्रम सोचने लगा।

"चल छोड़! तेरी पोस्ट पर भी आते हैं ऐसे कमेंट तो।" सहज भाव से निशांत ने कहा। उसे लगा था कि विक्रम खुश ही होगा यह सुनकर।

"तेरा क्या मतलब है? मेरी कविताएँ इनकी तरह घटिया तो नहीं होतीं न! मेरी हर कविता में एक गहरी बात होती है। इन लोगों की तरह का सतही लेखन मैं नहीं करता।" विक्रम की आवाज़ में तल्खी पैदा हो गई थी।

"अरे! मैं यही तो कह रहा हूँ कि बिना पढ़े ही लोग कमेंट कर देते हैं। अब झूठे-सच्चे की पहचान थोड़े ही कोई कर सकता है। सब के सब पुच्छ-विषाण हीन हैं।" निशांत ने बात सँभाली।

"अगर भगवान मेरी बात मानें, तो इन सब झूठे लोगों के सींग उग आएँ।" विक्रम हँसा।

"हाँ! तब ठीक रहेगा। और चापलूसों के पूँछ भी।" निशांत ने सुर में सुर मिलाया।

"हाथी वाले दिखावे के दाँत भी..." विक्रम ने आगे बढ़ाया।

"अरे-अरे! बस भी कर। मेरे मुँह में बत्तीस दाँत हैं। कहते हैं कि बत्तीस दाँत वाले की जिह्वा पर एक बार सरस्वती विराजती है। तब कही हुई बात सच हो जाती है। कहीं ये भी..."

"अरे धत! ऐसा भी होता है कहीं। यदि हो भी जाए तो बहुत ही भला हो समाज का।" विक्रम ने खुशी जताई।

तभी घंटी बजी तो निशांत उठकर दरवाजा खोलने चला गया। जब वह वापस आया तो उसके हाथ में एक शीशा था।

"यह शीशा किसी ने उपहार में..." वह बोलते-बोलते चौंका। उसका चेहरा सफेद पड़ गया।

"अरे! यह क्या हुआ? विक्रम! ... तुम्हारे सिर पर यह सींग कैसे? इतने बड़े और भयावह...? और… और... और यह पूँ...ऊ...छ?" वह डर से चीख पड़ा।

निशांत के काँपते हाथों से शीशा धरती पर गिर पड़ा। उसके सैंकड़ों टुकड़े ज़मीन पर बिखर गए। निशांत को उसमें अपना अक्स दिखाई दे रहा था- छोटे-छोटे सींगों और दो नए दाँतों के साथ।

वैरी गुड
सन्तोष सुपेकर
उज्जैन, म.प्र., भारत

दफ्तर से लौटते हुए आज उसका मूड बहुत खराब था। हो भी क्यों न, छोटी सी गलती पर बॉस ने उसे बहुत फटकारा था, वह भी सहकर्मियों और मातहतों के सामने! दफ्तर से निकलते वक्त वे सारे सहकर्मी बड़े विचित्र भाव से उसे देख रहे थे। पता नहीं, उनके मन में उसके प्रति सहानुभूति थी या कुछ और!

शाम को मोबाइल फोन भी कई बार बजा था; पर चिढ़कर उसने उसे बन्द ही कर दिया था, एक भी कॉल अटेण्ड किए बिना! वापसी में रोज के मिलने वालों से भी उसने मरे मन से दुआ-सलाम की थी। जाने क्यों उसे लग रहा था कि ये राजू पान वाला, ये रफीक ऑटोमोबाइल वाला और पड़ोस वाले दुबेजी उसे मजाक की नजरों से देख रहे हैं....।

घर आकर जूते-मोजे बड़ी बेदर्दी से एक तरफ फेंककर खिन्न भाव से वह सोफे पर बैठा ही था कि सात वर्षीय चिंटू उसके पास आकर खड़ा हो गया और अपनी कॉपी उसे दिखाने लगा,''पापा-पापा! ये देखो, टीचर ने मुझे चार जगह वैरी गुड दिया।''

उसके मन में तो आया कि दे एक जोरदार थप्पड़ इस पिल्ले को और फाड़कर फेंक दे उसकी कॉपी; पर जाने कैसे उसने खुद पर काबू पाया। पसीना पोंछते हुए, बड़ी कठिनाई से चेहरे पर मुस्कान लाते हुए बच्चे को गोद में बैठाकर वह उसकी कॉपी का निरीक्षण करने लगा।

''हरामखोर, तुम्हारा इन्क्रीमेंट बन्द कर दूँगा, तुम्हे सस्पेंड कर दूँगा, तुम्हें नौकरी से निकाल दूँगा,'' कानों में अभी भी गूँज रहे थे बॉस के ये कठोर शब्द; लेकिन बच्चे की कॉपी पलटते-पलटते उसके मुँह से निकल रहा था,''वैरी गुड, वैरी गुड, वैरी गुड!''

शगुन से पहले

प्रतिभा त्रिवेदी
ग्वालियर, म.प्र., भारत

'बिंदल ब्राइडल लहँगा एम्पोरियम'- हाँ मेरे इस शोरूम में शायद ही कोई दुल्हन होगी जो लहँगे न खरीदे, वरना शादियों के सीज़न में पाँव रखने की भी जगह नहीं होती। तभी मेरी नजर प्रवेश द्वार पर पड़ी। बहुत बड़े व्यावसायी घराने की बुज़ुर्ग महिला थीं, जिनके पहनावे से कोई भी अंदाजा लगा सकता था कि शाही ठाटबाट से संपन्न हैं। उनके साथ बहुत ही कोमल और सुंदर-सी नवयुवती संकोच में सिमटी-सी मेरे शोरूम की भव्यता देख रही थी। तभी उन्होंनें मेरे करीब फुसफुसाते हुए कहा,"सेठ जी वो तो परंपरा चल पड़ी है कि बहूरानी की पसंद का ही सब कुछ लिया जाये, इसलिए साथ में लेकर आये हैं। वैसे लहँगा पसंद तो हम ही करेंगे; भला इसे लहँगा खरीदने का शऊर भी कहाँ होगा?"

भले ही उन्होंने बहुत धीरे से यह बात कही थी; लेकिन उनकी दर्पोक्ति से भरी बातें उसने भी सुन ली थीं। अब पासा पलट गया था, वो लडकी दामी से दामी लहँगे नकारती जा रही थी। अंत में साढ़े तीन लाख के लहँगे पर आकर खरीदारी रुकी थी। भावी दुल्हन का रवैया देखकर उन्होंने फोन कर अपने बेटे को भी बुला लिया था। नवयुवती होनेवाले जीवनसाथी को एकाएक सामने देख चौंक गयी थी। वह बोला,"ये क्या तमाशा है शालू? पागल हो गयी है क्या? इतने महँगे लहँगे किसलिए? बस थोडी देर के लिए?"

"हाँ विवेक! सुनो, मैं तो केवल शगुन के नाम पर ही लहँगा लेने आयी थी; लेकिन पता है; इन्होंने ही कहा कि मुझे खरीदने का शऊर नहीं है। अब तो मम्मी जी खुश हैं ना कि मैं उनके स्टेटस के काबिल हूँ।"

सैकडों दुल्हने यहाँ रोज आती हैं खिलखिलाती, मुस्कराती और थोड़ी लजाती हैं; लेकिन आज झूठे अहंकार से भरी खानदानी महिला को उस भावी दुल्हन ने झकझोर दिया था। होनेवाले दूल्हे ने कहा,"भरे बाजार में मम्मी की तुमने बेइज्जती की है; तुमसे तो रिश्ता रखना ही नही चाहिए।"

"अरे! आप क्या रिश्ता रखेंगे, मैं खुद अभी इसी वक्त ये रिश्ता यहीं खत्म कर रही हूँ। जिस दिन से शादी पक्की हुई है, बस यही बात सुन रही हूँ कि एक साधारण परिवार की लड़की ऊँची हवेली जा रही है। नहीं रखना ऐसा रिश्ता, जहाँ मेरे माता-पिता को बार-बार कमतर होने का अह्सास कराया जा रहा हो," तमतमाकर कहती हुई वो लड़की पल भर में शो रूम के बाहर थी। भले ही लहँगा मेरा नहीं बिका; लेकिन आज पहली बार अपने आत्मसम्मान के लिए रिश्ता तोड़ती दुल्हन देखकर मुझे जाने क्यों बहुत सुकून मिला था।

शराब बंदी

रेणु चन्द्रा माथुर
फ्रीमॉन्ट, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

सुमेर सिंह जी राजस्थान में अपने गाँव के सरपंच चुने गये। उन्होंने अपनी पैठ बनाने के लिये तथा गाँवों के विकास हेतु रात-दिन बहुत कार्य किया। गाँव के लोगों में शिक्षा एवं साफ-सफाई के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु कई अभियान चलाये गये। ग्रामवासियों के चेहरों पर संतुष्टि का भाव साफ झलक रहा था।

इधर गाँव की महिलाएँ गाँव के लोगों की शराब की लत से बहुत परेशान थीं, सो वे सभी एकत्रित होकर पंचायत में अपनी समस्या लेकर पहुँचीं। सुमेर सिंह जी ने ध्यान पूर्वक उनकी समस्या सुनकर, उन्हें पूर्ण रूप से आश्वस्त किया। उन्होंने शराबबन्दी को लेकर एक मुहिम चलाई। आस-पास के सभी गाँव तथा ढाणियों के लोगों को एकत्रित कर बहुत दिनों तक प्रभावशाली भाषण दिये और उन्हें पाबन्द भी किया।

देशी शराब के ठेके भी बन्द करवा दिये गये। इस प्रकार समझाइश का असर गाँव वालों पर काफ़ी हद तक दिखाई दिया। ग्रामीण महिलाओं ने प्रसन्न होकर सुमेर सिंह जी को धन्यवाद ज्ञापित किया। सुमेर सिंह जी ने चैन की साँस ली।

फिर उन्होंने अपने सेवक सत्य प्रकाश को बुलाकर कहा,"भाई सत्तू! हूं तो गाँव मा भाषण देतो-देतो घणो थाक ग्यो। शराब बन्दी रे खातिर गाँव का लोगाँ ने समझावता-समझावता म्हारो तो जीव निकल ग्यो। अठे तो इब मिलसी कोणी, तू शहर जार दारू री बोतलाँ लेर आ। देख जँवाई सा भी आ रया है। आपा ँ आज पार्टी करश्याँ।"

सेवक तुरन्त जीप लेकर शहर की ओर चल दिया।

शिंगल्स

चित्रा गुप्ता
सिंगापुर

रमेशचंद्र जी ने छाती पर कुछ दाने देखे, जब दो दिन में दाने बढ़कर बाएँ गाल पर आने लगे तो उन्होंने बेटे को बताया। मोहित उन्हें डॉक्टर के पास ले गया। डॉक्टर ने जाँचकर बताया कि इनको शिंगल्स हो गया है। खाने और लगाने की दवाई देकर उन्हें एक सप्ताह बाद आने के लिए कहा। वे पूरी तरह घबरा गए थे। इस उम्र में कोई भी शारीरिक बीमारी मानसिक व्याधि भी बन जाती है। रमेशचंद्र जी के कमरे में सब सुविधाएँ थीं, कमरे के दरवाजे से खाना दे दिया जाता था, दवाई लगाने के लिए एक परिचारक रखा गया, ताकि वह दस्ताने पहनकर उनकी पीठ और कंधों पर दवाई लगा सके। दानो में असहनीय दर्द होता था; पर इस बात को किससे कहते! धर्मपत्नी स्वर्ग सिधार चुकी थी। बीमारी दो सप्ताह में ठीक हो गई। "गद्दे हम बाहर फेंक देंगे क्योंकि शिंगल्स एक इनफेक्शियस रोग है। पापा के लिए नए गद्दे ले आयेंगे," मोहित ने अपनी पत्नी से कहा। गद्दे फेंक दिए गए, कमरा फिनायल के पोछे से चकाचक हो गया।

रमेशचंद्र जी के ठीक होने के एक सप्ताह बाद कुछ मवाद वाले दाने मोहित की पूरी पीठ पर फैल गए। डॉक्टर ने शिंगल्स का ऐलान कर दिया। "पापा जी! आपका कमरा सबसे अलग है, मैं उस कमरे में शिफ्ट हो जाता हूँ और आप स्टडी-रूम में चले जाएँ।" स्टडी रूम में सिंगल बेड था, रमेशचंद्र जी को किंग साइज बेड पर सोने की आदत थी; पर बेटे के आराम के लिए स्टडी-रूम में शिफ्ट हो गये। कमरे में टीवी, अटैच बाथरूम था ही। पत्नी खाना पकड़ा देती थी और दस्ताने पहनकर दवाई लगा देती। शिंगल्स में होने वाले दर्द को लतिका ससुर को बताती। 15 दिन में ठीक होने के बाद मोहित कमरे से बाहर आया तो सब प्रसन्न थे।

"लतिका! ऐसा करो पापा जी के कमरे के गद्दे धूप में रखवा दो और कमरा साफ करवा दो, धूप लगने से गद्दे अच्छे हो जायेंगे।" दो दिन बाद रमेशचंद्र जी अपने कमरे में सोने गये। मेरी तो वृद्धावस्था है, बीमारी का दर्द चुपचाप सहा। उन्हें जब शिंगल्स हुई थी तो गद्दे फेंक दिए गए और अब उनके कमरे के गद्दे धूप में रखकर कीटाणु रहित किये जाएँगे। उस दिन उनका मन किसी काम में नहीं लगा, उन्हें पत्नी की बहुत याद आ रही थी। हमेशा की तरह उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा। गद्दों की बात उन्हें शिंगल्स से भी ज्यादा पीड़ा दे रही थी।

शिखर

नितिन उपाध्ये
दुबई, यू.ए.ई.

धुँआ छोड़ती एक बड़ी सी गाड़ी उसके पास आकर रुकी और उसके आसपास उसके ही जैसे कई छोटे-बड़े आ गिरे। अब आ गिरे तो कहना पड़ेगा; क्योंकि जब भेड़-बकरियों की तरह से ठूँस के लाया जाएगा और वैसे ही उतारा जाएगा तो यही कहना पड़ेगा। उस जैसों की कीमत ही क्या थी। उसने आसपास नज़रें घुमाईं तो सब उसी के रंग-रूप के लग रहे थे, तो उसने अपने पास वाले से पूछा "कहाँ से हो भाई?" उसने जिस जगह का नाम बताया, वह उसके गाँव की पिछली पहाड़ी के पास की जगह थी। शहर में पहली बार आने की चमक थी या प्रदूषण रहित माँ प्रकृति का स्नेह, जिस वजह से उसके साफ और चमकते चेहरे के आगे उसे अपना चेहरा एकदम से और काला लगने लगा। बुझे मन से उसने पूछ ही लिया "अपनी माँ की गोद से दूर आते हुए तुम्हें कुछ नहीं लगा? क्या सोचकर आये हो? यहाँ शहर में कोई तुम्हें सर-माथे पर नहीं बिठायेगा।"

"अपनी जगह कौन छोड़ना चाहता हैं; पर अपनी मर्जी कहाँ चल पाती है," उसके नए पड़ोसी ने कहा।

"चलो, अब आ ही गए हो तो आराम से रहना; पर हमेशा भगवान से प्रार्थना करते रहना कि कभी किन्हीं गलत हाथों में न पड़ जाओ।"

"गलत हाथों में?" उसका मासूम सा प्रश्न सुनकर उसे हँसी आ गई। सच बात है, उसके गाँव की तरफ अभी ऐसा नहीं होता; पर क्या पता, यह बीमारी कल वहाँ भी पहुँच जाये।

"गलत हाथ, मतलब वे लोग जो तुम्हारा इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करेंगे, और अपने शैतानी दिमागों से तुम्हे विध्वंसात्मक कार्यों में लगाएँगे। अगर सही हाथों में गए तो शिखर तक जा पहुँचोगे, वरना लोगों के शरीर से लेकर मकान, दुकान, गाड़ियाँ, जो भी रास्ते में आएगा, तोड़फोड़ करते जाओगे और स्वयं के शरीर की भी दुर्गति करवा लोगे। बाद में सरकारी कर्मचारियों द्वारा ऐसे मसल और पीस दिए जाओगे कि कोई तुम्हारा नामोनिशान भी नही पा सकेगा।"

"पर हम कर क्या सकते हैं?"

"यही तो सबसे बड़ी परेशानी की बात है। चलो, माना हम तो मजबूर हैं; पर जिन को भगवान ने विवेक और बुद्धि दे रखी है, वे भी तो गलत लोगों के साथ चल पड़ते हैं। हम तो बस प्रार्थना कर सकते हैं।"

तभी तसले लेकर कुछ हाथ वहाँ आये और एक आवाज़ आई,"ज़रा बड़े-बड़े देखकर छाँटना, नए मंदिर की नींव के लिए चाहिए।"

संघर्ष की जीत

अलका श्रीवास्तव
जबलपुर, म. प्र., भारत

विद्या अपने सर पर टोकरी में कुछ सब्ज़ियाँ ले तीन छोटे-छोटे बच्चों के साथ सोसाइटी के नीचे आवाज दे रही थी। मैंने ऊपर से झाँक कर देखा तो वह बहुत ही विनम्र भाव से बोली,"दीदी! सब्जी ले लो बच्चे भूखे हैं।" यह सुनते ही मैं नीचे गयी और सब्ज़ियाँ लेकर बच्चों को कुछ खाने की चीज़ें दे आयी। दूसरे दिन सुबह वह फिर आई और मेरे अलावा पड़ोस के लोगों ने भी कुछ सब्ज़ियाँ लीं। उसने कहा,"दीदी! मेरे पास रहने की जगह नहीं है, मुझे दो-तीन दिन रहने के लिए थोड़ी जगह मिल जाए तो मैं आपका एहसान नहीं भूलूँगी।" उससे बात करने पर मालूम हुआ की वह बिहार के छोटे गाँव में रहती थी। पति की अचानक मृत्यु हो जाने पर घर के लोगों ने बच्चों के साथ बाहर निकाल दिया। "कहाँ जाऊँ?" यह सोचते हुए स्टेशन गई और जो ट्रेन देखी, उसमें बैठ गई और यहाँ अहमदाबाद उतर गई। "मेरा नसीब मुझे यहाँ ले आया है। आप मदद कर दो दीदी," उसकी बातें सुन मैं हैरान थी। नीचे कुछ जगह देखकर उसके रुकने के लिए इंतजाम करवा दिया, बच्चों को खाना, कपड़ा दे, उसे रहने के लिए कहा। वह भी सुबह-सुबह घरों में थोड़ा काम कर लेती और उसका दिन निकलने लगा।

मैं आते-जाते उसका हाल-चाल पूछ लेती और काम के लिए प्रोत्साहन देती। विद्या भी उत्सुकता से काम करने के लिए हमेशा तत्पर रहती। उसे आस-पास से सिलाई का काम भी मिलने लगा। थोड़े दिनों के बाद उसने एक सिलाई मशीन ले ली, जिस से उसकी आमदनी बढ़ने लगी। अब वह अच्छा घर लेकर रहने लगी, बच्चों को स्कूल भेज वह सारा दिन अपने काम में व्यस्त रहती। अपनी मेहनत और लगन के साथ विद्या ने अपना व्यवसाय और बढ़ा लिया, पैसे इकट्ठे कर उसने एक छोटी सी दुकान ले ली। 9-10 साल के बाद एक दिन वह मेरे घर हाथ में पूजा की थाली लिए हुए आई, वह बोली,"दीदी नीचे चलो", मैंने नीचे जाकर देखा तो एक लाल गाड़ी खड़ी थी। वह मुझसे लिपट गई और रोने लगी, उसे देख मेरी भी खुशी से आँखें भर आईं। वह कहने लगी, दीदी! आपने मुझे जीवन जीना सिखाया, मैं आपको कभी नहीं भूल सकती, लीजिए आप पूजा करिए और हाथ पकड़ मुझे गाड़ी में बैठा दिया।

उसकी खुशी को मैं शब्द नही दे सकती। उसे निःशब्द हो, निहारती रही। हमारी आँखों मे आँसू थे जो संघर्ष की जीत बता रहे थे...।

संवाद-विपर्यय

गिरिजा कुलश्रेष्ठ
ग्वालियर, म.प्र., भारत

"पापा! आप यहाँ अच्छे से रहे न? कितनी सारी अच्छी-अच्छी जगह देख आए। मेरी और आपकी बहू की पूरी कोशिश रही कि आपको कोई परेशानी न हो," कुमुद ने पिता को स्टेशन छोड़ने जाते हुए कहा। पिता को अनायास ही याद आया कि कई वर्ष पहले जब कुमुद के लिये लड़की देखने लखनऊ गए थे, गाड़ी से उतरते ही कुमुद ने अपने सामान के साथ पिता का बैग भी उठा लिया। रघुराज ने बेटे से बैग लेने की कोशिश करते हुए कहा था,"बेटा भारी है, कुछ सामान मैं उठा लेता हूँ।"

"अरे नहीं पापा! मैं उठा सकता हूँ; मेरे होते हुए आप उठायेंगे!"

दोनो के अपने-अपने संवाद। बेटे को सामान लादे देख पिता का हृदय द्रवित था और सामान उठाए बेटा उत्साहित। भाव-संवाद ऐसे ही बने रहें; कभी दूसरे का संवाद न बोलना पड़े तो जीवन उदारता और स्नेह से परिपूर्ण रहता है, पिता ने उस दिन सोचा था।

आज बेटे की बात सुनकर पिता ने कहा,"हाँ बेटा! तुमने बहुत ध्यान रखा...सदा खुश रहो।" लेकिन बोलते हुए लगा कि ये शब्द उन्होंने औपचारिकतावश सायास कहे हैं; क्योंकि वे जो कहना चाहते थे, वह तो कुमुद ने ही कह दिया।

सच्ची आहुति

अनिल कुमार जैन
सवाई माधोपुर, राजस्थान, भारत

वातानुकूलित ऑडिटोरियम में पण्डित भागवत कथा कर रहे थे। प्रथम सत्र पूरा करके 12 बजे करीब अपने विश्रामगृह जा रहे थे। अचानक उन्होनें देखा, एक बड़ी रिहायशी बिल्डिंग की पार्किंग में बच्चे इकट्ठे होकर बड़े कौतहूल से कुछ देख रहे हैं, पण्डित जी ने सेवक को इशारा किया। सेवक ने आकर कहा,"पण्डित जी, एक चिड़िया पड़ी हुई है, जिसे बच्चे देख रहे है।" पण्डित जी तुरन्त वहाँ पँहुचे। "अरे हटो बच्चो! पानी लाओ।" एक बच्चा पानी का गिलास लाया। पण्डित जी ने चिड़िया की चोंच पर थोड़ा-थोड़ा पानी डाला, हल्के-हल्के छींटे मारे, थोड़े प्रयास से चिड़िया की बेहोशी दूर होने लगी, वह फड़फड़ाई और उड़ गई। पण्डित जी ने देखा आस-पास पक्षियों के पानी पीने का कोई साधन नहीं है। उन्होंने दिन में आराम करने की बजाय भागवत कथा के अध्यक्ष को बुला कर चर्चा की। दूसरे सत्र की कथा पूरी करने के बाद प्रसाद वितरण का समय हुआ तो पण्डित जी ने दिन में घटित हुआ सारा वृत्तान्त श्रोताओं को सुनाया।

पण्डित जी ने कहा,"प्रसाद में प्रतिदिन की भाँति लड्डू तो मिलेगा पर लड्डू को रखने का पात्र दोना के स्थान पर मिट्टी का सकोरा है, जिसे आप सभी अपने घर ले जाकर ऐसे स्थान पर पानी भर कर रखें, जहाँ पक्षी आराम से पानी पी सकें, आस-पास के पड़ोसियों को भी इस पावन कार्य हेतु प्रेरित करें। यही भागवत कथा में सच्ची आहुति होगी।" पण्डाल में करतल ध्वनि गूँजने लगी।

सफ़ाई

टी. रवीन्द्रन

बेंगलूरु, भारत

विद्यालय के मुख्य द्वार के बाहर बच्चों के पेरेंट्स की भीड़ लगी हुई थी। सभी ज़ोर-ज़ोर से 'प्रिंसिपल मुर्दाबाद' के नारे लगा रहे थे। पेरेंट्स विद्यालय के भीतर घुसने के लिए बेताब थे; लेकिन वॉचमैन ने लोहे के गेट को सख्ती से बंद कर रखा था। भीड़ से रह-रह कर मिली-जुली आवाज़ें उठ रही थीं।

"हमारे बच्चे सफ़ाई-कर्मचारी नहीं हैं, जो उनसे ग्राउंड की सफ़ाई करवाई जा रही है।"

"बिलकुल सही, हम बच्चों को यहाँ पढ़ने के लिए भेजते हैं, न कि सफ़ाई करने।"

"आख़िर स्कूल वालों की हिम्मत कैसे हुई हमारे बच्चों से सफ़ाई करवाने की?"

"अगर इनका यही रवैया रहा तो हम अपने बच्चों को इस स्कूल से निकाल लेंगें।"

"हाँ निकाल लेंगे, निकाल लेंगें।"

तभी विद्यालय के प्रधानाचार्य वहाँ आये और अपनी दबंग आवाज़ में बोले,"हाँ..हाँ ...निकाल लो भई; आज ही निकल लो, अपने बच्चों को। आप लोग को यहाँ स्कूल के गेट के सामने नारेबाज़ी करते हुए शर्म आनी चाहिए। अरे! बच्चे ग्राउंड में खेलते हैं और अगर खेलने से पहले वो ग्राउंड को साफ़ करते हैं तो इसमें बुराई क्या है? कुत्ता भी बैठने से पहले ज़मीन साफ़ करता है।"

भीड़ चुप हो गयी थी। धीरे धीरे सब लोग खिसकने लगे। वॉचमैन ने लोहे का गेट खोला और प्रिंसिपल महोदय स्कूल में दाखिल हो गए।

समझदारी

मीरा ठाकुर
आबू धाबी, यू.ए.ई.

कल ही रामा अपने गाँव से वापिस आया, चार महीने पहले पिता का देहांत हुआ। वह काम कर ही रहा था कि उसका फोन आया और वह अपनी भाषा तेलुगु में कुछ बोलता रहा, जिसमें वह कुछ पेपर की बात कर रहा था। उसे हिंदी कम आती है तो हमारी आपस में बातचीत कम ही होती है। मैंने सहज ही पूछ लिया,"किसका फोन था? तब उसने बताया कि माँ का फोन था। कुछ पेपर्स बाकी थे, वही बात कर रही थी। बाद में मेरी रामा से हुई बातचीत से पता लगा कि उसके पिता की मृत्यु के बाद उसकी माँ के नाम कागजात बनवाने में कुछ काम बाकी रह गया था, वही काम चल रहा था। मैंने उससे कहा,"रामा! माँ के नाम क्यों कर रहे हो, सीधे अपने नाम क्यों नहीं करवाते? आखिर बाद में दोबारा पैसे और समय खर्च करने होंगे।" उसने बिना सोचे तुरंत जवाब दिया,"नहीं, मैडम! कम से कम जमीन के कारण उसे दो वक्त रोटी तो मिलेगी।" मैंने प्रश्न भरी निगाह उस पर डाली, तब उसने बताया कि जब तक जमीन उसके नाम है तब तक उसे समय से खाना मिलेगा, नहीं तो कोई उसे नहीं पूछेगा। मेरी बीबी भी नहीं। जब तक जमीन उसके नाम है, सब लोग उसका ध्यान रखेंगे। पैसे का जीवन में बहुत महत्त्व है।

समान अधिकार

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

नारी मुक्ति मंच का वार्षिक आयोजन था। इस अवसर पर नाटक, संगीत-परिचर्चा और काव्य-सम्मेलन के विभिन्न सत्र रखे गये थे। स्वाभाविक है कि प्रस्तुति की विधा कोई भी हो; पर विषय सभी के नारी विमर्श पर केन्द्रित थे। बड़ी-बड़ी बातें हो रही थीं, नारी के अधिकारों, नर और नारी के समान होने की आदि-आदि। सभी सदस्यों में उत्साह था, ऊर्जा थी। निया भी ऋतिका के साथ आयोजन में भाग लेने आयी थी।

आयोजन में ऋतिका की मुख्य भूमिका थी। उसे परिचर्चा में भाग लेना था जिसका विषय था 'नर और नारी के समान अधिकार'। ऋतिका ने ओजपूर्ण वाणी में बोलना प्रारम्भ किया,

''नर औ नारी एक समान
हक दोनों का ही सम्मान
नहीं है नारी कम जब नर से
मिले न क्यों अधिकार समान।

नारी किसी बात में नर से कम नहीं वह हर वो काम कर सकती है, जो नर कर सकता है...। अंत में उसने जोश से कहा,"नारी शक्ति जिंदाबाद।"

निया भी उसके भाषण से प्रभावित हुए बिना न रह पायी। लौटते में ऋतिका ने कहा,"निया रुको ज़रा बैंक में पैसे जमा करवा दूँ।" दोनों बैंक गयीं। काउन्टर पर लम्बी पंक्ति थी। ऋतिका सीधे आगे पहुँच गयी। कुछ लोगों ने आपत्ति की तो उसने आँखे तरेरते हुए कहा,"आपको पता नहीं हम महिलाओं को लाइन में प्राथमिकता दी जाती है, हमारी लाइन अलग होती है।"

सर्दी

मनीषा पाल
विश्वनाथ चारिआलि, असम, भारत

अपनी पत्नी की जलती चिता के सामने सुखिया गुमसुम बैठा है। उसकी आँखों में एक बूँद आँसू भी नहीं है। पिछले दो दिनों से वह अपनी प्यारी पत्नी को बचाने के लिए भगवान से प्रार्थना कर रहा था। उसकी पत्नी लक्ष्मी को दमे की बीमारी थी। सर्दी के मौसम में हर साल उसे इस बीमारी से जूझना पड़ता था। उनके टूटे-फ़ूटे झोंपड़े में ठंड से बचने के लिए वे एक-दूसरे से लिपट कर रातें गुज़ारा करते; पर इस साल की सर्दी ने तो उन पर कहर बरसा दिया। दो दिनों से लक्ष्मी मौत से लड़ने के बाद आज शांत हो गई।

'बापू-बापू!' सुखिया अपने चार साल के बेटे बिरजू की आवाज़ से होश में आया। बिरजू उसकी माँ की चिता को देखने लगा, फिर धीरे से उसने पूछा बापू! माँ को क्यों जलाया? सुखिया ने अपने बेटे को सीने से चिपका लिया और बोला,"माँ को सर्दी लग रही थी इसलिए आग जला दी, ताकि उसे ठंड न लगे।" बिरजू ने ठंड से ठिठुरते हुए कहा,"बापू! मुझे भी बहुत ठंड लग रही है, मेरे ऊपर भी आग लगा दो।" सुखिया सिहर उठा। वह अपने बेटे को सीने से लगा कर लक्ष्मी की चिता के और पास जाकर बैठ गया और सोचने लगा - जब तक यह आग जल रही है, तब तक कम से कम बिरजू को सर्दी से बचा सकता हूँ...

सर्वे परिणाम

आरती 'लोकेश'

दुबई, यू.ए.ई.

"अरे लता जी! कल आप सर्वे के लिए गयी थीं। क्या परिणाम रहा उसका?" प्रधानाचार्य दीनदयाल जी ने अध्यापिका लता को दफ्तर में आते देखा तो पूछा।

"जी सर! कल हमारी सभी अध्यापिकाएँ रेलवे प्लेटफ़ॉर्म के पास वाली बस्ती में गई थीं। वहाँ तो बहुत सारे बच्चे हैं, जो स्कूल नहीं जाते।" लता ने संक्षेप में बताया।

"हाँ, लता जी! उनका हमारे सरकारी स्कूल में दाखिला करने को ही तो भेजा था आपको। कितने नाम लिख के लाई हैं आप? हमें मुख्य कार्यालय में भी जवाब देना है।" प्राचार्य जी ने रौब दिखाया।

"जी, लिख के तो सभी के लाई हूँ। मगर सभी माँ-बाप तो भेजेंगे नहीं स्कूल।" लता घबरा गई थी।

"क्यों नहीं भेजेंगे? सरकार वर्दी, किताबें सब मुफ़्त दे रही है।" प्राचार्य जी ने दलील दी।

"ये बच्चे मजदूरी करने जाते हैं, चार पैसे कमाते हैं तो घर में आमदनी का रास्ता बनता है और दो रोटी का जुगाड़ हो पाता है। कल उन लोगों की बदहाली देख आँखें भर आयी थीं।" कहते हुए उसकी आँखें फिर नम हो उठीं।

"कितने बच्चे होंगे वहाँ?" दीनदयाल जी कुछ नरम पड़े।

"सैंकड़ों हैं दीनदयाल सर!" लता की आँखों में अब की बार चमक जाग गई।

तभी एक बच्चा स्कूल के अंदर आता हुआ दिखाई दिया।

"यह कौन है? उसी प्लेटफॉर्म वाले इलाके का बच्चा है क्या?" प्राचार्य गर्दन उचकाकर देखने लगे।

"हाँ जी सर! यह सोमू है। इसके पिताजी जो अभी साइकिल से इसे छोड़कर गए हैं न, प्लेटफॉर्म पर पकौड़े का ठेला लगाते हैं। यह भी उनके काम में हाथ बँटाता है। बहुत मेहनती बच्चा है।"

"अच्छा! चलो, अच्छा है जो यह तो स्कूल आ गया।" प्राचार्य का चेहरा खिल उठा।

"मुझे बहुत खुशी है कि इसका भविष्य सुधर जाएगा पढ़-लिखकर। कल के सर्वे का परिणाम अच्छा ही है, अगर एक बच्चा भी स्कूल आ गया।" लता बहुत प्रसन्न थी।

"अरे ओ सोमू! इधर तो आना।" प्रचार्य महोदय ने आवाज़ लगाई।

लता स्वयं उठकर सोमू का हाथ पकड़कर खुशी-खुशी उसे प्राचार्य जी के पास ले आई।

"कल पकौड़े के दो पैकेट लेकर आना। ...बल्कि ... लता जी! कल आप घर से बेसन ले आना। इससे यहीं पकौड़े तलवाकर गर्मागरम खाएँगे।"

सलाह

नीलम जैन
पुणे, भारत

मीठे-मीठे शीतल जल की सरिता तीव्रगति से इठलाती-बलखाती अपने तटों को स्पर्श करती हुई कल-कल करती बढ़ती जा रही थी। तटों पर लगे वृक्ष उसकी नमी को स्वयं में समाहित कर झूम रहे थे। कुछ अपनी पत्तियाँ गिरा-गिरा कर अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहे थे। सबको मुस्कराकर समेटती हुई अपनी ही धुन में बही जा रही थी।

अकस्मात एक बड़े-से पत्थर ने उसे रोक कर पूछा,"ए भागम-भाग मचाती नदिया! क्या मिलता है तुझे सागर से मिलकर? अपना मीठापन खारा कर देती है; मिटा देती है तू खुद को....!"

आँखें तरेर और झिड़क कर नदी घुड़की,"चल हट मुझे आदमी बनने की सलाह देता है!"

सही निर्णय

ममता जैन

पुणे, भारत

चुपचुप से रहने वाले श्यामलाल के चेहरे पर आज प्रसन्नता की एक अलग सी लहर थी। उसे देखकर राजदुलारी को अच्छा लगा। वह उनकी पसंद का चाय-नाश्ता बनाने में जुट गई। तभी श्यामलाल ने पुकारा,“यह सब छोड़ो, जल्दी से सामान पैक करो।”

“हम कहीं जा रहे हैं क्या? यह तो बताओ, तभी तो उसी हिसाब से सामान पैक करूँ।”

चेहरे पर बिना कोई अतिरिक्त बोझ डाले श्यामलाल धीरे से बोले,“मैंने समाचार पत्र में विज्ञापन दिया था, वर्किंग कपल दादा-दादी को अपने बच्चों के लिए रखना चाहे तो गोद ले सकते है।”

यह सुन भौचक्की सी रामदुलारी को लगा कि वह बेटे-बहू द्वारा छोड़कर जाने के कारण तनाव में रहते हुए अब पागल हो गए हैं।

“दिमाग तो ठीक है, क्या कह रहे हो? भला कहीं बूढ़े भी गोद लिए जाते हैं?”

“हाँ, हमें रोहित-रश्मि एक दंपत्ति ने इसके लिए बुला भी लिया है, वे दोनों वर्किंग हैं, उनके माँ-बाप नहीं हैं। वे चाहते हैं कि हम उनके जुड़वा बच्चों के साथ रहकर उन्हें पारिवारिक मूल्य सिखाएँ और उन्हें अपनत्व से पालें। चलो जल्दी करो, वे आते ही होंगे।”

कुछ देर में वे दंपत्ति सामने खड़े थे। दोनों ने उनके पैर छुए। स्वयं सामान गाड़ी में रखा। एक माह में बच्चे दादी-दादा से ऐसे घुल-मिल गए जैसे उनका परिवार हो। तभी एक दिन रोहित ने अचानक श्यामलाल से कहा,“अंकल जी! आज मैं अपने मित्र को घर लाऊँगा, वह भी बच्चों की सही परवरिश कैसे हो, इसे लेकर बहुत परेशान हैं। मैं अपना आदर्श उसको दिखाना चाहता हूँ।”

“हाँ, हाँ, क्यों नहीं, यह तो सच में समाज के लिए एक नया उदाहरण है,” हँसते हुए श्यामलाल बोले।

शाम को रोहित के साथ अपने पुत्र सचिन को देखते ही दोनों वृद्ध जड़ हो गए। फिर स्वयं को संभालते हुए मुस्कराए। रोहित कुछ कहता इससे पूर्व ही श्यामलाल बोले,“बेटा, तुम भी किसी वृद्ध दंपति को गोद ले लो, उनके संरक्षण में बच्चों का व्यक्तित्व अलग ही निखरता है।”

सही सोच

चित्रा गुप्ता

सिंगापुर

"सुन, सरोज! आज गूगल पर सर्च करेंगे किसी बढ़िया से वृद्धाश्रम की। अपनी उम्र के लोगों के साथ ठाठ-बाट से रहेंगे। अच्छे वृद्धाश्रम में बना-बनाया खाना मिलेगा। उनमें जिम, योग और ब्यूटी पार्लर सब होता है। पुस्तकालय भी जरूर होगा। टू-रूम फ्लैट लेकर वहीं पर रहेंगे।" संतोष ने सरोज से कहा।

"अरे अभी बूढ़े कहाँ हुए हैं?" समोसा खाते हुए वीणा जी बोलीं।

"बस कुछ सालों में हो ही जायेंगे," सरोज ने आँखें मटकाते हुए कहा।

किट्टी पार्टी में अचानक यह मुद्दा उठ गया। कुछ महिलाएँ इसके पक्ष में थीं और कुछ परिवार के साथ ही रहना चाहती थीं। तभी कांता ने कहा,"मैं तो बच्चों के साथ आजादी से रहूँगी। हमने तो ऊपर की मंजिल पर वन बैडरूम रसोईघर और बाथरूम का सेट बनवा लिया है, दोनों वहीं रहेंगे। वृद्धाश्रम में तो सब बूढ़े होंगे, ज्यादातर बीमारियों की बातें करेंगे, उनकी बीमारियाँ सुनकर हम भी अपनी बीमारियों की चिंता करने लगेंगे।" यह आइडिया सबको बेस्ट लगा। किट्टी पार्टी खत्म हो गई। पार्वती और वीणा का घर आसपास था। "कांता के सुझाव में दम है," टैक्सी में बैठकर पार्वती ने कहा। "कांता ठीक कह रही है, हम सबको ऐसा ही करना चाहिए। अलग के अलग रहेंगे और साथ के साथ। बहू-बेटे के कामों में भी टाँग नहीं अड़ाएँगे। तब वे भी खुश रहेंगे और हम भी," पार्वती ने हँसते हुए कहा।

"ठीक कह रही हो पार्वती। वृद्धाश्रम में बहुत अच्छी सुविधाएँ होंगी, पर पोते-पोती और परिवार का साथ तो नसीब नहीं होगा। उनके साथ हँस-खेलकर मेरे भीतर स्फूर्ति आती है। बच्चों से बहुत सारी नई-नई बातें भी सीखने को मिलती हैं। हम तो भैया अपने घर में ही रहेंगे," वीणा ने भी सहमति जताई।

"घर के सामने पार्क है। सब बूढ़े-बुढ़िया, जवान-बच्चे सब आते हैं, व्यायाम करते हैं और जोर-जोर से हँसते भी हैं। सामने एक छोटा सा स्टॉल है, वहाँ बैठकर कभी-कभी सहेलियों के साथ हम चाय-नाश्ता करेंगे तो इससे बढ़िया आराम कहाँ मिलेगा इस बूढ़ी जिंदगी में? वृद्ध आश्रम में तो मुझे नहीं लगता कि हमें जाना चाहिए। त्योहारों पर घर में पूजा में भी शामिल हो सकेंगे। घर में किसी को परेशानी तो नहीं होगी, ऊपर हम वन बेडरूम सेट बनवायेंगे और उसमें किट्टी पार्टी करेंगे।" पार्वती ने वीणा से हाई–फ़ाई करते हुए कहा।

सारे जहाँ से अच्छा...

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, टेक्सस, यू.एस.ए.

अमित यादव करीब 25 वर्षों से शिकागो में वकालत कर रहे हैं। इमीग्रेशन और सिटिज़नशिप के मामलों में उनकी अच्छी पकड़ है। विशेषकर भारतीय मूल के लोग ऐसे मामलों में उनकी सलाह लेते रहते। अमित स्वयं भी कई वर्षों से अमेरिका के नागरिक हैं।

आगामी पंद्रह अगस्त पर भारत के शिकागो कॉन्सलावास में हर वर्ष की तरह स्वतंत्रता दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन है। अमित यादव प्रायः इस प्रकार कार्यक्रमों में नहीं जाते। उनका मानना है- 'मैं स्वेच्छा से अमेरिका का नागरिक बना हूँ, मैंने अमेरिका की देशभक्ति का प्रण लिया है। यद्यपि मुझे अपनी मातृभूमि भारत से लगाव है; किन्तु 'भारत माता की जय' के नारे लगाना आडंबर-सा लगता है।' वैसे समय-समय पर भारत में जब कोई प्रकृति का संकट (बाढ़, तूफान, आदि) आते, वे अपना अनुदान अवश्य भेजते।

इस बार अपने एक परम मित्र के विशेष आग्रह पर वे स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम में चले गए। ध्वजारोहण के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन था। श्रीमती अंजली गौड़ ने जोशीले स्वर में मशहूर शायर इकबाल का प्रसिद्ध गीत 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोसिताँ हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी...' प्रस्तुत किया। खूब तालियाँ बजीं, श्रोता देशभक्ति में डूब गए। कार्यक्रम के बाद अमित ने अंजली को अपना परिचय देकर सुन्दर प्रस्तुति के लिए बधाई दी। अगले सप्ताह अमित के ऑफिस के फोन की घंटी बजी।

"हैलो, दिस इज़ अमित ला फर्म। मे आई हेल्प यू?"

"अमित जी, मैं अंजली बोल रही हूँ। आप से कुछ सलाह लेनी है, कब आ सकती हूँ?"

"जी, कल आ जाइए, 10 बजे।"

ठीक समय पर अंजली अमित के ऑफिस पहुँच गई। उनका वीसा तीन वर्षों पहले समाप्त हो गया था, इस समय वे अवैधिक रूप से अमेरिका में रह रही थीं।

"आप की क्या मदद कर सकता हूँ?"

"अमित जी, कुछ भी करके मुझे ग्रीन कार्ड दिलवाइए।"

"आप इस देश में इल-लीगल हैं, आप का केस थोड़ा टेढ़ा है। आप भारत वापिस क्यों नहीं चली जातीं? सुना है जब से मोदी सरकार आई है, भारत स्वर्ग बन गया है।"

"अमेरिका आने के बाद भारत कौन जाता है, वकील साहिब! वहाँ रखा ही क्या है? भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, जगह-जगह गंदगी और चारों तरफ करप्शन! मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ, मुझे हर हालत में अमेरिका ही रहना है।" अमित के मस्तिष्क में अंजली के जोशीले स्वर गूँज रहे थे, ... 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोसिताँ हमारा...!'

सूखे पत्ते

बबीता गुप्ता
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

पतझड़ के मौसम से बेरौनक हुये हरे-भरे बगीचे की सफाई कराते हुये निमिषा माली को सूखी पत्तियों के ढेर को गड्डे में डालते हुये बड़े ध्यान से देख रही थी। उसके ऊपर पानी डालते हुये माली ने निमिषा से कहा।

"मैडम! ये सूखी पत्तियाँ भी बड़े काम की होती हैं...सर्दियों में तापने के काम आ जावे और गर्मियों में गड्डे में पानी डालकर दबा दो तो खाद बन जावे।"

"हूँ।" कहते हुये निमिषा के मन में आसपास पड़ी सूखी पत्तियों को देखकर टीस-सी हुई। गला रुँध गया। पर्णविहीन होती शाखाओं को देख सोचने लगी ऐसे ही मेरी उजड़ी जिन्दगी... किसी काम की नही बस एक कोने में रखी कचड़ापेटी का कूड़ा-करकट बनकर रह गई।

सर्वगुणसंपन्न से विपन्नता को भरने में घरवालों की मर्यादा की गर्द ने उसकी आँखें किरकिरी कर दीं कि अबला किसके द्वार चाकरी करेगी? विद्रोही हवाओं ने स्वसहायता समूह में शामिल होने वाले कागजों को उड़ा दिया था। मुझसे अच्छे तो ये पीले पत्ते.. कम से कम छाँव नही दे रहे तो क्या किसी काम तो आ रहे हैं और मैं...।

अंतर्द्वंद्व में उलझी निमिषा हवा के झोंके से सिर के ऊपर गिरे सूखे पत्ते से चेती। झरे हुये पत्तों को हवा के रूख के साथ इधर-उधर उड़ते देख निमिषा के मन में कुछ कौंध गया। मेरी भी तो जिन्दगी ऐसी ही शाख से टूटी हुई... ये आजाद होकर उड़ सकता हैं...तो मैं क्यों नहीं! सोचते हुये अपने कमरे में गई और तरीके से रखे उस दिन के बिखरे पन्नों को लेकर बाहर निकल गई।

सेंसर वाला मोबाइल

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

"लो, आ गया मेरी सोच को साकार करता, नई खूबियों वाला मोबाइल। आज ही एक प्री-बुक करा लेता हूँ।" गिरिराज चहककर बोले।

"ऐसी क्या खूबी है इसमें ज़रा हम भी तो सुनें कि पापा नया मोबाइल लेने को मचल उठे जो हमेशा ही मेरा पुराना मोबाइल इस्तेमाल करने की ज़िद करते हैं।" पुत्र हिमांशु उत्सुक हुआ।

"इसे अमेरिका की सबसे बड़ी कार-कम्पनी टेस्ला बना रही है।" टेस्ला की वेबसाइट टटोलते हुए वे बोले।

"क्या? कार बनाने वाली कम्पनी का मोबाइल बनाने में क्या काम?" हिमांशु को अचरज हुआ।

"इंसान के मन में जो सपना हो वह कभी सच हो ही जाता है। उस दिन मैंने तुमसे कहा भी था कि एक ऐसा मोबाइल बनना चाहिए।" खुश होते हुए उन्होंने कहा।

"लेकिन इसमें क्या नई तकनीक है जो आप इतने उत्साहित हो?" हिमांशु ने स्क्रीन में झाँका।

"यह टेस्ला कार की टक्कर का है। इसमें स्वचालित कार की तरह सेंसर लगा हुआ है।"

"मोबाइल में सेंसर? सेंसर कार के स्वत: चलने के लिए होता है।"

"कार में बैठकर मनुष्य अपना मोबाइल देखता रहता है न? उसका मुख्य काम तो मोबाइल देखना ही है, कार चलाना नहीं। तभी तो अपने आप चलने वाली कार की खोज हुई।" वे हँसे।

"हाँ, वह तो ठीक है। इससे कार दुर्घटनाएँ भी कम होती हैं? मोबाइल में सेंसर की कोई ज़रूरत नहीं।"

"है बेटा! सड़क पर कारें ही नहीं चलतीं। स्कूटर, साइकिल, पैदल चलने वाले सब ही तो मोबाइल में सिर गढ़ाए ही चलते हैं। यह मोबाइल उन्हें टकराने से बचाएगा किसी के पास आते ही सेंसर की आवाज़ उन्हें सावधान कर देगी।"

"पर आपको क्यों ऐसी ज़रूरत लग रही थी जो आप इस नई खोज के लिए उतावले हो रहे थे?"

"तुम्हें मैट्रो स्टेशन तक जाते समय सड़क पार करते हुए खिड़की से देखता हूँ न! तभी इस आविष्कार की प्रार्थना कर रहा था।"

सेल्फ शिफ्ट

नीना छिब्बर

जोधपुर, भारत

सौम्य आज शांत, धीर और आजाद महसूस कर रहा था। घर के बगीचे में झूले पर बैठ कर हौले-हौले हिचकोले लेते हुए भीतर के ताप और बाहर की झुलसती जिंदगी से छुटकारा पाने का रास्ता उसने ढूँढ ही लिया था। वैसे तो मान-सम्मान, शोहरत और दौलत की कोई कमी नहीं थी; पर मंजिलों को पाने की चाह और दौड़ में कभी सिर्फ अपने लिए जिया ही नहीं। सबकी कसौटी पर खरा उतरने के लिए हर परीक्षा में अव्वल आने की आदत बना ली थी उसने। घर परिवार के सब लोग जब हँसी-ठट्ठा कर रहे होते, वो किसी ना किसी की समस्या सुलझाने या सलाहकार की भूमिका में रहता। सब उसे दंभी मानने लगे और उससे दूर छिटकने लगे। कभी वो उनके बीच आ भी जाता तो सभी के चेहरे गंभीर हो जाते।

आज अचानक पुराने एलबम में स्कूल बैंच पर पाँच दोस्तों को बैठा देखकर ‘शिफ्ट-शिफ्ट’ खेल याद आया और अंदर की आवाज ने धीरे से कहा, सौम्य! ‘सेल्फ शिफ्ट’ हो जा अब से। कुछ समय सिर्फ अपने लिए, अपने तरीके से बिताने की शुरूआत कर और सोचते ही चेहरे पर मुस्कान दौड़ गई।

सोच सर्जरी

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

मितवा अपनी चाय की बिक्री पर आज हैरान था। अजीब जमघट था। काम करते हुए छह वर्षों में उसने ऐसा कभी नहीं देखा था, दौड़-दौड़ कर अन्दर-बाहर चाय पहुँचा रहा था। डाक्टर भी कमोबेश उसे पहचानते ही थे। अस्पताल के सर्जरी विभाग में भीड़ थी, सर्जरी से मोटापे से तुरंत छुटकारे की खबर ने तहलका मचा दिया था। अनुपात से अधिक वज़न वालों के लिए एक बड़ी राहत थी, अपने को फिर से पाने की आस थी। सर्जरी ने कम से कम उस बड़ी आबादी वालों को एक वैकल्पिक उपाय तो दिया था कि वे सर्जरी द्वारा अपना वज़न कम कर सकें, स्वस्थ रह सकें। मोटापे की हताशा को स्वस्थ शरीर की आशा में बदल सकें।

मितवा को सबसे रोचक और प्रेरक बात बस इतनी समझ आई थी कि इस सर्जरी में आपको कुछ नहीं करना है, जो कुछ करना है डाक्टरों को करना है। वे शरीर से अनावश्यक मांस को काट कर निकाल देंगे और सर्जरी से दुबारा पेट की आँतों को इस तरह सिलकर छोटी कर देंगे कि आपकी थैली इतनी छोटी होगी कि निर्धारित मात्रा से ज्यादा खा ही नहीं सकेंगे। डाक्टर के हाथ में चाय पकड़ाते हुए वो अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं सका, बोला - साब! ये तो बड़ी मजेदार सर्जरी है, इस तरह का कोई कानून नहीं हो सकता कि ऐसी सर्जरी से सत्ता में आने वाले सभी भ्रष्ट संतरियों-मंतरियों का पेट इतना कम कर दिया जाए कि उनका पेट थोड़ा ही खाने में भर जाए। मंत्री-संत्री, लाल-नीली बत्ती वालों से लेकर, पंचायत-प्रधानो तक उनकी ये सर्जरी हो जाए, इन सबने जिन्दगी नरक बना दी है, वे मानक से अधिक खा ही न पाएँ, उनकी बुद्धि उससे अधिक खाने की सोच ही न पाए, दिल को उससे ज्यादा खाना गवारा ही न हो, ऐसा हो जाए तो हम सबका जीना कितना आसान हो जाएगा!

सोने की चेन

रेखा भाटिया

शार्लिट, नॉर्थ कैरोलाइना, यू.एस.ए.

कई वर्ष बीत गए हैं, उसकी सास को गुजरे हुए। सास की दी हुई सोने की एक मोटी चेन एक बड़े हीरे के लाकेट के साथ वह अनेकों अवसरों पर पहन कर उन्हें याद कर लिया करती थी। जीवन के कठिन क्षणों में वह यह चेन पहन कर बहुत सुकून महसूस करती थी, मानो उसे हौसला और सम्बल देने के लिए उसकी सास उसके पास हो।

कभी किसी विशेष अवसर पर, पूजा पर वह उसे पहन लिया करती और सोच लेती कि उसकी सास उसे आशीर्वाद दे रही हैं। उस सोने की चेन के साथ उसका मोह दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा था, जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ रही थी।

अब उसने ठान लिया था कि वह यह सोने की चेन अपनी पुत्री को उसके विवाह में देगी। वह अमूमन यह बात पुत्री के आगे दोहराती रहती।

एक दिन वह बीमार पड़ गई और डॉक्टर के ऑफिस गई। नर्स के कहने पर उसने सोने की चेन उतार कर पर्स में रख दी और बाद में निकालना भूल गई। कई दिनों बाद उसे पर्स के निचले हिस्से में हीरे का लॉकेट मिल गया, तब उसे चेन की याद आई।

उसने सभी संभव प्रयास किए। घर में, हर जगह, हर कोना, हर दुकान-स्थान, समारोह-स्थल, सभी से पूछा; लेकिन सोने की चेन का कोई सुराग नहीं मिला। वह सोचती रह गई, चेन ऐसे कैसे गुम हो सकती है? क्या पुलिस में रिपोर्ट लिखाई जाए? किसी अनहोनी के घटित होने के अंदेशे से उसकी रातों की नींद उड़ गई।

वह बेचैन हो उठी, उसके मन पर बहुत बुरा असर पड़ा। बार-बार वह भगवान से एक ही प्रार्थना करती, कैसे भी हो उसकी सोने की चेन मिल जाए। स्वप्न में उसे अपनी सोने की चेन दिखाई देती। कुछ दिनों बाद एक रोड एक्सीडेंट में उसकी कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। उसने इस अप्रिय घटना के लिए सोने की चेन के गुम हो जाने को मुख्य कारण मान लिया। उसने सोने की चेन गुम हो जाने के अपशकुन का अंदेशा परिवार के मन में भी उत्पन्न कर दिया। वह शायद यह भूल गई थी कि उस रोड एक्सीडेंट में उसकी जान भी जा सकती थी, लेकिन बच गई।

स्त्री

अंजू अग्रवाल 'लखनवी'
अजमेर, राजस्थान, भारत

आज बाहर तेज बारिश हो रही थी। वो बॉस के केबिन मे बैठी डिक्टेशन ले रही थी।

"सुनो! तुम्हे नहीं लगता कि काश हम पति-पत्नी होते!"

उसने चौंक कर उसे देखा और उसकी मुस्कराहट का मतलब निकालने लगी। ऑफिस की सबसे बड़ी पोस्ट, सुंदर-सुदर्शन व्यक्तित्व, यश और समृद्धि से भरा जीवन! भला कौन युवती ऐसे व्यक्ति की पत्नी नहीं बनना चाहेगी; लेकिन.. अब यहाँ इस प्रश्न का औचित्य?

वे दोनो ही अपना-अपना सुखी वैवाहिक-जीवन जी रहे हैं।

हाँ! ठीक है, कि नये बॉस के आने पर वो उसके सौम्य व्यवहार से प्रभावित हुई थी। शायद थोड़ा आकर्षित भी; लेकिन वो ना जाने क्यों उसकी ओर खिंचने लगा। वो तो आफिस की एक साधारण लिपिक थी। शक्ल-सूरत ठीक थी; पर ऐसी कोई खास भी ना थी। उसे तो याद भी नही कि उसने कभी बॉस की आँख मे आँख डालकर बात भी की हो। फिर...

"माफ करें। मुझे ऐसा कभी भी नही लगा। बल्कि मुझे तो आपमे अपने मृत भाई की छवि नजर आती है।"

उसने दृढता से उत्तर दिया और केबिन से बाहर निकल गई।

स्थितप्रज्ञ

अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
पटना, भारत

“अरी! कर्मफली तुम?” दशाश्वमेध घाट की सीढ़ियों पर एक कोने में मैली फटी-चिथड़ी साड़ी में लिपटी एक भिखारिन को देख, पास जाकर आश्चर्य से अभिभूत वसुंधरा ने पुकारा...! उसकी आँखों के सामने उसके कर्मजली से कर्मफली बनने के अनेक दृश्य गुजरने लगे...उसका असली नाम किसी को पता न था.. झाड़ू, पोंछा, बरतन, घर के सभी कामों को निपटाने के बाद सूखी-बासी-रोटी नमक के साथ उसे सौतेली माँ के द्वारा ‘कर्मजली’ संबोधन का उपहार मिलता था...! यों ही खटती, पिटती, कर्मजली संबोधन पाती, वह सयानी हो गयी और अपने से दोगुनी उम्र के चपरासी से ब्याह दी गयी।

वहाँ भी वह देह तोड़ काम करती, आठ-आठ लोगों से भरे-पूरे परिवार को संभालती, रोज रात बिना नागा शराबी पति से पिटती, फिर उसका आहार बनती..! . मगर जब क्रमशः तीन बेटियों और एक बेटे को जन्म दिया... तो उसका नारीत्व फुंकार उठा, उसे अपनी बेटियों को अपनी जैसी कर्मजली बनाना गवारा नहीं था...उसने डंडे उठाकर अत्याचारी सास और पति की खूब पिटाई की, आस-पड़ोस के लोगों की सहानुभूति और पुलिस का सहयोग भी उसे प्राप्त हो गया... फिर तो उसने घास काट कर, कई घरों में बरतन मांजकर, पकौड़ी बेचकर, गाय बकरियाँ पाल दूध बेचकर येन-केन-प्रकारेण बेटियों को पढ़ा-लिखा कर शिक्षिका, बैंक में ऑफिसर एवं कॉलेज में लाईब्रेरियन बनाया और अच्छी शादियाँ कीं। बेटे को डॉक्टर बनाया।

फिर तो वह खूबसूरत आलीशान बंगले में रहती, बेटे के साथ कार में घूमती फूली नहीं समाती वह ‘कर्मफली’ कहलाने लगी थी… मगर आज इस दशा में... “हाँ! मेमसाब! बेटे की शादी हो गयी, अब यह निरक्षर, निकम्मी माँ बहु-बेटे के लिए कलंक हो गयी थी, यहाँ आकर उसने कलंक धो लिए!”

न उसकी आँखों में आँसू थे, न चेहरे पर दयनीयता, बड़े तटस्थ भाव से कर्मफली ने बताया। शायद जीवन की इस कठिन कर्मसाधना ने उसे स्थितप्रज्ञ बना दिया था!

स्वयं में विश्वास

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

मोहित के बॉस पहली बार घर आये थे। मोहित ने अपने बड़े भाई रोहित को भी उनसे मिलवाने बाहर बुलाया। अपनी वैसाखी ले कर खट्-खट् करता रोहित कमरे में आया। मोहित ने अपने बॉस का परिचय करवाते हुए बताया,"भैया इनसे मिलिए मेरी कम्पनी के डायरेक्टर मिस्टर शलभ खन्ना हैं।"

तभी कहीं से मोहित की कोई कॉल आ गयी और वह क्षमा माँग कर कमरे से बाहर चला गया। कुछ बात करने के उद्देश्य से मोहित के बॉस शलभ खन्ना ने पूछा,"आप क्या करते हैं?"

रोहित ने कुछ क्षुब्ध वाणी में कहा,"देख तो रहे हैं मेरा एक ही पैर है, मैं क्या कर सकता हूँ।"

"नहीं मेरा मतलब है कि घर से ही कोई व्यापार आदि करते हों अपना खर्च उठाने के लिए।"

रोहित को शलभ का इस प्रकार पूछना अच्छा नहीं लगा। "मेरे निजी खर्च के लिए मुझे सरकारी पेंशन मिल जाती है। वैसे शायद आपको पता नहीं कि व्यापार के लिए धन चाहिए।"

शलभ भी बहस के मूड में था उसने कहा,"आजकल तो सरकार ने अनेक ऋण योजनाएँ चला रखी हैं।"

"आप शायद भूल रहे हैं कि वह धन लौटाना भी पड़ेगा," रोहित अपनी वाणी की कटुता छिपा नहीं पाया; पर शलभ भी पता नहीं किस मिट्टी का बना था, उसकी कटुता को नज़रअंदाज़ कर बोला,"अरे आप को जो व्यापार में लाभ होगा उससे लौटा दीजिएगा।"

अब रोहित की सहनशक्ति जवाब दे रही थी, उसने बात बदलने के लिए आवाज लगायी,"मुझे प्यास लगी है कोई पानी उठा कर दे दो।"

संभवतः अंदर किसी ने सुना नहीं, तब उसने शलभ को लक्ष्य करके कहा,"जब ईश्वर ने ही मेरे साथ अन्याय किया है तो किसी से क्या शिकायत।!" उसकी वाणी आत्मदया से ओत-प्रोत थी।

शलभ ने हँस कर कहा,"अरे इतनी सी बात के लिए ईश्वर से क्या शिकायत, स्वयं में विश्वास रखिए। मैं आपको पानी दे देता हूँ।" शलभ ने मन ही मन सोचा,"जाके पाँव न फटे बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।"

शलभ उठा और मेज पर रखा पानी का गिलास रोहित को पकड़ाया। रोहित ने देखा कि शलभ ने अपनी दोनों कोहनियों से गिलास पकड़ रखा था, क्योंकि उसके आगे के हाथ कटे हुए थे, जो अभी तक पूरी आस्तीन की शर्ट में दिखायी नहीं पड़ रहे थे। रोहित निःशब्द था।

स्वर्ग और नरक का द्वार

गोवर्धन यादव
छिन्दवाड़ा, म.प्र., भारत

चित्रगुप्त जी ने अपनी पोथी खोल ली थी। अब वे बारी-बारी से लोगों को बुलाते। बहीखाते में उस आदमी के पाप-पुण्य का लेखा-जोखा देखते और द्वारपाल को आदेश देते हुए कहते,“इसे नरक में ले जाओ...इसे स्वर्ग में ले जाओ।”

नगरसेठ भी लाईन में लगे थे। काफी इंतज़ार के बाद उनका नम्बर आया; लेकिन उनसे पहले एक गरीब किसान लाइन में लगा हुआ था। वह कई दिनों से नहाया नहीं था। उसके शरीर से उठती दुर्गन्ध से सेठ जी का हाल बेहाल हुआ जा रहा था। वे किसी तरह दम साधे खड़े रहे थे। चित्रगुप्त ने किसान का नाम पूछा और पोथी खोलकर उसके पाप-पुण्य की गणना करने लगे। उन्होंने द्वारपाल को आदेश दिया,“इसे स्वर्ग में ले जाओ।”

सेठ जी को पूरा विश्वास था कि उन्हें भी स्वर्ग में जाने का सुअवसर प्राप्त होगा।

चित्रगुप्त जी ने सेठ जी का बहीखाता खोला। पाप-पुण्य की गणना की और द्वारपाल को आदेश दिया,“सेठ जी को नरक में ले जाओ।” बस इतना सुनना ही था कि सेठ जी भड़क गए और तैश में आकर बोले,“महाशय जी! मैंने जीवन भर पुण्य के अनेकों कार्य किए हैं, फिर मुझे क्यों नरक में भेजा जा रहा है? एक अदने-से किसान को आपने स्वर्ग में भेज दिया? मैं नहीं समझता कि उसने मुझसे ज्यादा पुण्य के कार्य किए होंगे? मेरे साथ सरासर अन्याय हो रहा है?”

“अच्छा तो तुम जानना चाहते हो, उस किसान ने कौन-सा पुण्य का कार्य किया था? तो सुनो! अपनी दैनिक दिनचर्या के अनुसार वह नहा-धोकर भगवान के दर्शनों के लिए मन्दिर जा रहा था, तभी उसने देखा कि एक अपाहिज भिखारी सड़क पर पड़ा कराह रहा था। उसके शरीर में लगे घावों से मवाद बह रहा था। उसने तत्काल अपने सिर में बँधा गमछा निकाला। घावों से रिस रहे मवाद को साफ किया। फिर उसे सहारा देकर उठाया और उसे सड़क के उस पार ले जाकर, एक छायादार पेड़ के नीचे बिठा दिया। इतना कर चुकने के बाद उसने एक नल पर जाकर हाथ-पैर धोए और अब वह मन्दिर की ओर बढ़ चला था।”

किसान का किस्सा सुनाकर चित्रगुप्त जी ने सेठ जी से जानना चाहा,“क्या तुमने कभी अपने जीवन में ऐसा कोई कार्य किया है? तुम जो भी कुछ करते रहे हो, वह मात्र दिखावा था। पुण्य का एक भी काम तुमने किया नहीं, अतः तुम नरक के अधिकारी हो।”

हाउ डिड..

हरिहर झा

मेलबर्न, आस्ट्रेलिया

महेश अपने बेटे और पोते के साथ घूमने निकला था। अगले माह उसे सिडनी छोड़ कर भारत सदा के लिए जा कर बसना है। तो अभी परिवार के साथ समय बिताने का अच्छा मौका है। बेटा और पोता ब्रिस्बेन से इसलिए ही तो आए हैं। पत्नी और बहू शॉपिंग के लिए गए हैं तो वे भी समय अच्छा निकाल रहे हैं।

कुछ समय बाद महेश का पाँच वर्षीय पोता बोल उठा,"How did we end up here?" (हाउ डिड वी ऐंड अप हियर?)। महेश चौंक उठा। पाँच साल का बच्चा और कहता है,"हम ऐसी स्थिति में कैसे आ गए?" हे भगवान! आज के बच्चे भी इतने वयस्क हो गए हैं, जो स्थिति का आकलन करने लगे हैं! उसे किस बात का दुख है? इस बालक की तीक्ष्ण बुद्धि पर हँसूँ या रोऊँ? महेश सोच रहा था।

पर तभी महेश का बेटा हँस पड़ा और अपने बेटे की आदत बताने लगा। ब्रिस्बेन में जब घूम कर घर वापस जाने का समय आता है तो वह रोता है कि घर नहीं जाना है। रास्ते पहचान लेता है, अत: मैं उसे थोड़ा टेढ़ा-मेढा घुमा कर घर ले आता हूँ। फिर भी घर आता देख कर वह उदास हो जाता है। जैसे कि मुझे कुछ मालूम न हो मैं अभिनय करता हूँ और कहता हूँ, पता नहीं हम घर पर कैसे आ गए? "How did we end up here? " और इस वाक्य को पोते ने पकड़ लिया है।

इस तरह समझ में सब कुछ आ गया; पर इस बात ने महेश का गला पकड़ लिया। महेश इस स्थिति में कैसे आ गया?

उसे याद आ रहा है ऑस्ट्रेलिया आने की कितनी और कैसी जद्दोजहद की थी! बहू गर्भवती थी, फिर भी उसे लेकर भीड़ वाली ट्रेन में यात्रा करवाई, क्योंकि मेडिकल होना जरूरी था। आने को टिकट के पैसे पर्याप्त न थे; पर किस तरह जुगाड़ बैठाया था; पर अब उसे 'भारत प्यारा' एक ही धुन लग चुकी है। सब कुछ होते हुए भी रिक्तता खाने को दौड़ती है।

उसका अगले माह का भारत के लिए टिकट आ चुका है। जो विदेश के नाम से उछलता था, उसके पेट में मानो लड्डू फूटते थे पता नहीं आज किस स्थिति में आ गया है कि बेटे और पोते को छोड़ कर भी भारत जाने को बेचैन हो उठा है। वह फुसफुसाता है- "हाउ डिड वी ऐंड अप हियर"?

हैप्पी न्यू ईयर
रेखा भाटिया
शार्लिट, नॉर्थ कैरोलाइना, यू.एस.ए.

धड़ाम की आवाज के साथ मिसिज़ आहुजा को स्वप्न में लगा, उनका पोता स्वप्निल स्कूल बस से उतरते वक्त सड़क पर गिर पड़ा है। उनका दिल जोर से धड़का, कलेजा मुँह को आ गया, चीख के साथ आँख खुली।

"ओह स्वप्न था!" वो बुदबुदाई; परन्तु ड्रॉइंग रूम से सचमुच में कुछ अजीब आवाजें आ रही थीं और माहौल को डरावना बना रही थीं; जैसे कोई अंदर घुस आया हो। शायद अविनाश आया होगा, उन्होंने सोचा। घड़ी रात के डेढ़ बजा रही थी।

"कौन है? अविनाश!" जोर से मिसिज़ आहुजा ने पुकारा।

"हाँ माँ! मैं हूँ!" उधर से घुटी हुई आवाज़ आई जैसे अविनाश किसी बोझ के तले दबा जा रहा हो। अविनाश नशे में धुत्त मिताली को कंधे पर लादे लगभग ढोते हुए, खुद को घसीटते, दरवाजे से अंदर आया। मिसिज आहुजा मदद के लिए लपकीं।

"माँ! तुम रहने दो, मैं ठीक हूँ। दरवाजा, लाइट्स बंद कर तुम भी सो जाओ। कल स्वप्निल की छुट्टी है, प्लीज़ सुबह जल्दी नहीं उठाना। सिर घूम रहा है। मिताली! थोड़ा उठो भी, चलो यार, ऊपर जाना है, बहुत भारी हो!" लड़खड़ाता अविनाश आधी बेहोश, नशे में धुत मिताली को झिंझोड़ता हुआ बोला।

"बेटा! सुबह छह बजे से बड़े गुरुद्वारे में नए साल के लिए अखण्ड पाठ साहिब का भोग और अरदास है। मुझे जाना है, तू छोड़ देगा?" मिसिज़ आहुजा ने मिन्नत डाली।

"माँ! ओला बुला लेना, मुझे क्यों डिस्टर्ब करती हो? ओके! गुड नाइट, सिर भारी हो रहा है। ओह सॉरी! हैप्पी न्यू ईयर माँ! अब जाकर सो जाओ।" अविनाश के स्वर में भारीपन था।

"ठीक है बेटा। रब राखा। हैप्पी न्यू ईयर, गुड नाइट! हे सच्चे बादशाह! बच्चों नाल मेहर कर।" दुआएँ देती मिसिज़ आहुजा अपने कमरे की ओर चल दीं।

हैलो 911
अनिता कपूर, फ्रीमॉन्ट
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

"हैलो....क्या यह 911 है?"

"Hello....is this 911?" उधर से उत्तर मिला...."Yes..."

फिर उधर से अँगरेज़ी में ही पूछा गया "How can we help you? हाउ केन वी हेल्प यू? जी कहिए....हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं?"

"देखिए यहाँ ब्रूज़ ड्राइव स्ट्रीट के साइड वॉक पर मुझे एक बुजुर्ग महिला गिरी हुई दिखी हैं, मैं उन्हें हिलाने की कोशिश कर रही हूँ; पर उनकी तरफ़ से कोई रिस्पोंस नहीं आ रहा। आप कृपा करके जल्द आएँ।" "बस एम्बुलेंस पहुँचती ही होगी, तब तक आप वहीं रुकिए।"

"ओके धन्यवाद" कहकर मैं जैसे ही पलटी तो देखा वो मिसेज़ मेहता थीं, जिनको मैंने अक्सर सामने वाली बिल्डिंग, जो ओल्ड एज होम थी, से अक्सर आते-जाते देखा था। मैं अभी सोच ही रही थी....ऐसा क्या हुआ आज इनके साथ....कि इतने में देखा....स्ट्रेचर पर मिसेज़ मेहता को लिटा ऑफ़िसर ने उन्हें एम्बुलेंस में डाल भी दिया था और साथ ही फ़र्स्ट एड भी दी जा रही थी।

मैं हैरान हुई कि क्या फ़ोन में अली बाबा का कोई जिन्न घुस आया था।

उत्सुकतावश मैंने एक ऑफ़िसर से पूछ ही लिया की उनका घटनास्थल पर इतनी शीघ्र पहुँचना कैसे सम्भव हुआ? अभी तो बस मैं फोन बंद कर मुड़ी ही तो थी। उन्होंने बताया कि यहाँ अकेले रहने वाले बीमार बुजुर्गों की कलाई में एक चिप बैंड के साथ पहना दी जाती है, जिससे कोई भी मेडिकल इमर्जेन्सी होने पर चिप द्वारा अलार्म बजने से हम अलर्ट होते ही तत्काल निकल पड़ते हैं, ताकि समय रहते उनको अस्पताल पहुँचाया जा सके। ज़िंदगी बचाने के लिए इतनी तत्परता वाकई काबिले तारीफ थी।

"ओह! ओके धन्यवाद"... कहकर मैं रास्ते भर सोचती रही, हे ईश्वर! काश! बुजुर्गों के दुःख व अकेलेपन का अहसास कराने वाली, ऐसी ही कोई अलर्ट चिप, उनके बच्चों के लिए भी बन पाए जिसका एक तार 911 के पास नहीं बल्कि उनके दिल से जुड़ा हो।

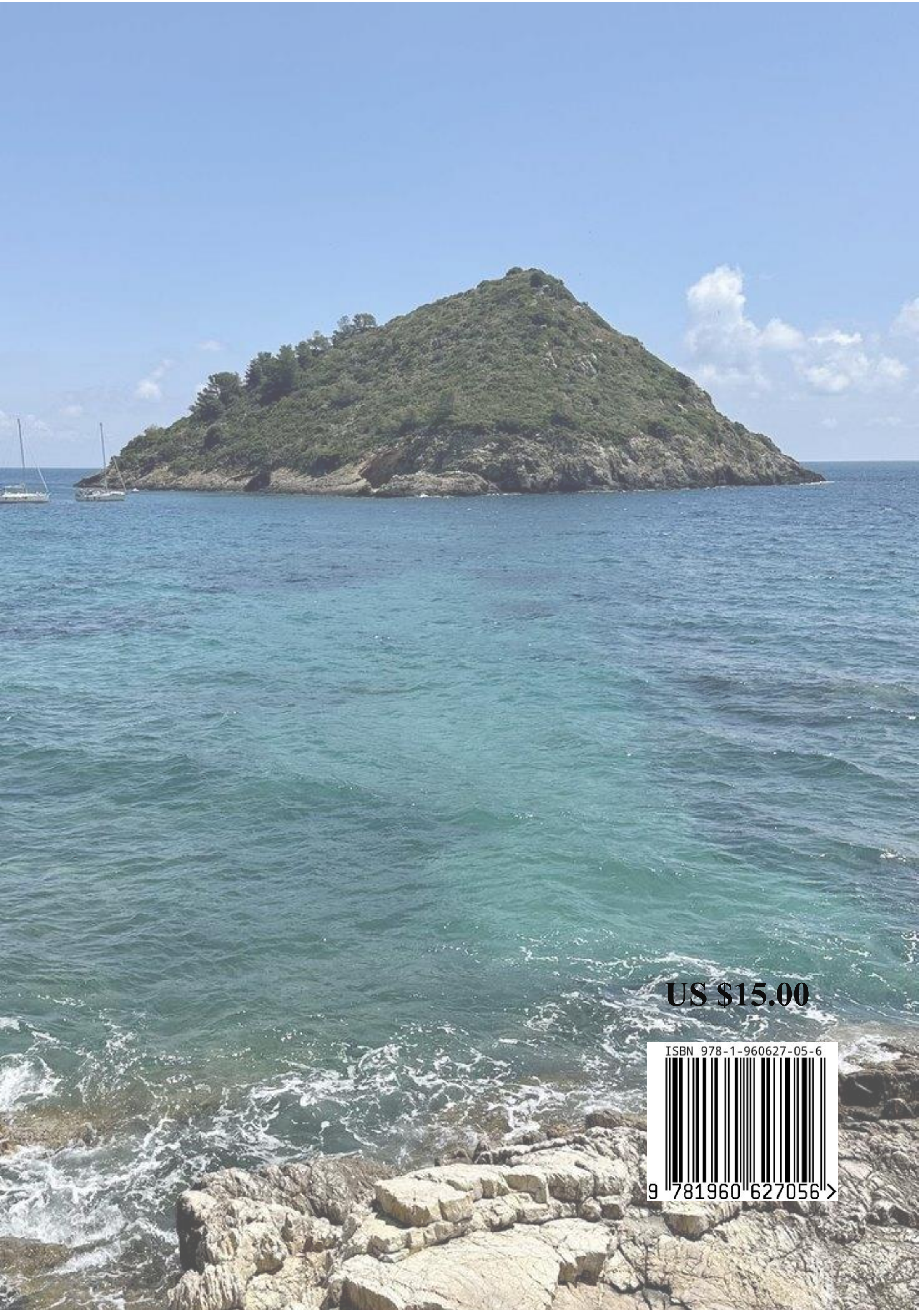

US $15.00

ISBN 978-1-960627-05-6
9 781960 627056